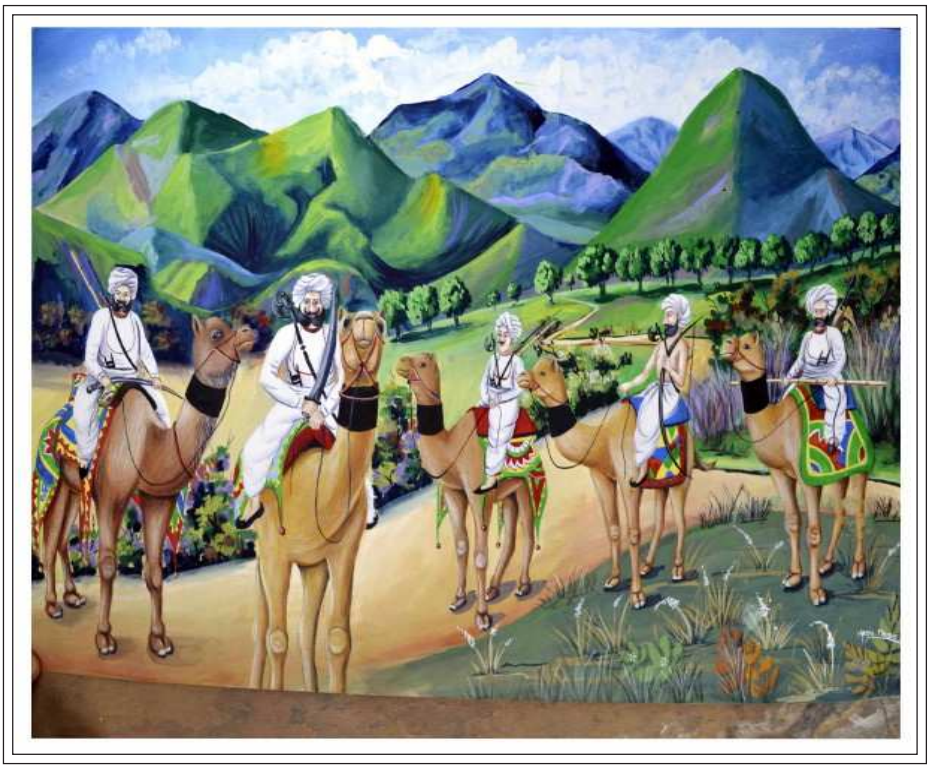

स्वतंत्रता सेनानी बांए से डूंगजी, जवाहरजी, लोटिया जाट, सांवताराम व करणाराम मीणा का सम्मिलित चित्र

ताराचन्द चीता
प्रधानाध्यापक प्रा.शि.
भूतपूर्व कॉन्स्टेबल (दिल्ली पुलिस)
बी.कॉम,बी.एड, एम.ए.हिन्दी व राजस्थानी, एम. एड.,
नेट, पत्रकारिता (जनसंचार) में स्नातक,
जल ग्रहण प्रंबध में डिप्लोमा

चीता प्रकाशन श्रीमाधोपुर

प्रकाशक : ISBN **978–81–909194–7–0**

चीता पब्लिकेशन शाखा कार्यालय,

प्रधान कार्यालय :– सुखसागर कॉलोनी, वार्ड न. 2

मु.पो. कंचनपुर, तह. श्रीमाधोपुर गौरव पथ चौराहा, बाई पास रोड़,

जिला – सीकर (राज.) श्रीमाधोपुर (सीकर–राज.)

मो. 09799257635

सर्वाधिकार सुरक्षित चीता पब्लिकेशन

प्रथम संस्करण : सन् 2015 – प्रतियां – 1000

मूल्य : दो सौ पचास रूपए मात्र (250.00)

कम्प्यूटर टाईपसैटिंग चीता कम्प्यूटर श्रीमाधोपुर सीकर राजस्थान

समर्पित

श्री जीण भवानी, माता–पिता, गुरूजनों एवं मित्रों के प्रति जिनकी अनुकम्पा एवं प्रेरणा से इस पुस्तक का प्रकाशन संभव हो पाया है।

पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा करवाया गया है । पुस्तक लेखन में लेखक, प्रकाशक, मुद्रक ऑपरेटर तथा प्रूफ रीडर द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी भूल वश गलती रहना या कमी रहना स्वाभाविक है । इस प्रकाशन को अथवा इसके किसी अंश को बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के किसी भी रूप (फोटोग्राफी, विद्युतग्राफी, यांत्रिकी अथवा अन्य रूपों) में उपयोग के लिए मुद्रित नहीं किया जा सकता । आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं। किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र श्रीमाधोपुर (सीकर) ही होगा ।

SEKHAWATI KE VEER SAVTANTRATA SENANI

TARA CHAND CHEETA

PUBLISHER : CHEETA PUBLICATION SHRIMADHOPUR

SIKAR (RAJ)

Mob. 09799257635 price Rs : 250.00

विवरणिका

क्र.सं.	शीर्षक	पृ.सं.
1.	प्राक्कथन	9
2.	भूमिका	12
3.	मीणा जाति का उद्‌भव एवं विकास	19
4.	मीणाओं का वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इतिहास	21
5.	मीणा जाति के नामकरण एवं गोत्र	22
6.	मीणा जाति का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में योगदान	23
7.	शेखावाटी के मीणों का स्वतंत्रता प्रेम	25
8.	शेखावाटी और तोरावाटी मीणों का इतिहास	26
9.	अंग्रेज इतिहासकारों द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों की उपेक्षा	32
10.	सांवताराम और करणाराम मीणा की संक्षिप्त वंशावली	34
11.	सांवताराम और करणाराम मीणा का जीवन परिचय	35
12.	सांवताराम मीणा का जीवन परिचय	40
I	सांवताराम व लोठू ने आगरा में अंग्रेज अफसर को लूटा	44
II	सांवताराम के द्वारा सेठों को झड़वासे के रास्ते में लूटना	47
I	सांवताराम के द्वारा रामगढ़ में रैकी	47
IV	सांवताराम के दल ने नसीराबाद छावनी में लूट की	48
V	सांवताराम ने जवाहरजी व डूंगजी को जोश दिलाया	48
VI	सांवताराम की जवाहरजी से बातचीत	49
VII	सांवताराम पर विशेष	50
13.	करणाराम मीणा का जीवन परिचय	51
I	करणाराम के द्वारा आडावल की घाटी में लूट	54
II	करणाराम का फिरंगियों के प्रति गुस्सा	55
I	करणाराम के द्वारा रामगढ़ में अनाज की जासूसी करना	56
IV	करणाराम अपने दल का वफादार साथी	57
V	करणाराम डूंगजी के प्रति चिन्तित	58
VI	करणाराम के द्वारा पान का बीड़ा उठाना	59

VII	करणाराम का आगरा के लिए प्रस्थान	60
VIII	करणाराम के द्वारा किले का अन्दर से अवलोकन	61
IX	करणाराम डूंगजी को ढूंढकर आगरा से वापस प्रस्थान	62
X	करणाराम का बठोठ में डूंगजी के परिवार से मिलन	62
XI	करणाराम के द्वारा काठ कोरड़ा की जानकारी देना	63
XII	करणाराम के द्वारा सेल्यूलर जेल की जानकारी देना	64
XIII	करणाराम के द्वारा सेना संगठित करना	65
XIV	करणाराम के द्वारा बारात की योजना बनाना	66
XV	करणाराम के द्वारा मींढा खरीदना	68
XVI	करणाराम द्वारा किले में प्रवेश की योजना बनाना	70
XVII	करणाराम मीणा के आगरा किले में प्रवेश पर संसार में नाम	71
XVIII	करणाराम मीणा पर विशेष	72
14.	आगरा के किले का इतिहास	74
15.	आगरा के किले का भितरी विन्यास और स्थल	76
16.	शेखावाटी के स्वतंत्रता सेनानियों के समय का सीकर का इतिहास	77
17.	डूंगजी व जवाहरजी की संक्षिप्त वंशावली	82
18.	डूंगजी व जवाहरजी का संक्षिप्त जीवन परिचय	83
19.	ठाकुर डूंगरसिंहजी का संक्षिप्त जीवन परिचय	85
I	डूंगजी की दांयी–बांयी भुजा लोटिया जाट व करणाराम	86
II	डूंगजी की करणीया से बातचीत	87
I	डूंगजी के दल द्वारा अंग्रेजों के घोड़े लूटना	88
IV	डूंगरसिंह का राजा बलवंतसिंह से संबंध	88
V	डूंगरसिंह द्वारा रामगढ की जासूसी कराना	89
VI	डूंगरसिंह द्वारा कई ठिकानों पर आक्रमण	90
VII	डूंगजी दुश्मन पर आक्रमण गुरूड़जी की तरह करते थे	90
VIII	डूंगजी का पता लगाने पर ईनाम	91
IX	डूंगजी के दल में कई योद्धा शामिल	91
X	डूंगजी के दल द्वारा नसीराबाद छावनी लूटना	91

XI	डूंगजी की क्षेत्रिय सामन्तों के प्रति ललकार	93
XII	डूंगजी की बहादूरी की प्रशंसा	93
XIII	डूंगजी का दल पुष्करजी के घाट	94
XIV	डूंगजी को झड़वासे जाने से मना किया करणिया मीणा ने	97
XV	डूंगजी ससुराल झड़वासा में	97
XVI	डूंगजी को पिंजरे में देख औरतें बातें करती हैं	105
XVII	डूंगजी की अंग्रेज अफसर द्वारा प्रशंसा	105
XVIII	डूंगजी को अंग्रेज अफसर द्वारा सुपरमैन बताना	106
XIX	डूंगजी को देश की चिन्ता	106
XX	डूंगजी को कैद में होली की याद आना	108
XXI	डूंगजी से लोठू की वार्तालाप	108
XXII	डूंगजी की कैदियों के साथ उदारता	109
XXIII	डूंगजी द्वारा युद्ध में कौशल दिखाना	111
XXIV	डूंगजी व उसके दल का आगरे से प्रस्थान	115
XXV	डूंगजी ने बींजवाड़ के जंगल से कैदियों को विदा किया	116
XXVI	डूंगजी का दल भुवाणां में	116
XXVII	डूंगजी के साथ बठोठ में जाट व मीणा का स्वागत	116
XXVIII	डूंगजी द्वारा भैरूसिंह को मारना	117
XXIX	डूंगजी के दल को पकड़ने के लिए A.G.G को पत्र	117
XXX	डूंगजी के दल ने मेजर फॉरेस्टर को तंग किया	119
XXXI	डूंगजी के दल द्वारा अजमेर का खजाना लूटना	119
XXXII	डूंगजी के नाम कैप्टन हाड़ केसल का सन्देश	119
XXXIII	डूंगजी के विरूद्ध पकड़ने का अभियान	120
XXXIV	डूंगजी द्वारा आत्मसर्पण	121
20.	जवाहरजी का संक्षिप्त जीवन परिचय	124
I	जवाहरजी द्वारा डूंगजी को झड़वासे जाने से मना करना	125
II	जवाहरसिंह का मालवा लूटने जाना	126
I	जवाहरसिंह व होली का त्यौहार	127

IV	जवाहरसिंह ठकुरानी की बात पर जोश में आ गया	130
V	जवाहरसिंह की प्रतिज्ञा	132
VI	जवाहरजी द्वारा पान का बीड़ा फेरना	132
VII	जवाहरसिंह का साथियों सहित आगरे आक्रमण के लिए प्रस्थान	134
VIII	जवाहरसिंह द्वारा अंग्रेजों को बणिया बताना	134
IX	जवाहरसिंह की वीरता में कवि द्वारा गाये गए गीत	135
X	जवाहरसिंह को तीन सेनाओं ने पकड़ा	136
XI	जवाहरसिंह का आत्मसमर्पण	136
XII	जवाहरसिंह का देहान्त	137
21.	लोठू जाट का संक्षिप्त जीवन परिचय	139
I	लोठू की सांड से कुश्ती	143
II	लोठू स्पष्ठ वक्ता व व्यवहार कुशल	143
I	लोठू ने नट का भेष करके रामगढ़ में जासूसी की	143
IV	लोठू द्वारा चारा व अनाज के लिए विचार विमर्श	144
V	लोठू द्वारा अंग्रेज अफसर को ठोकर मारना	144
VI	लोठू द्वारा पांच पान का बीड़ा उठाना	144
VII	लोठू जाट व ठकुरानी के बीच वार्तालाप	145
VIII	लोठू का आगरा में पहुँचना व साधु के भेष में तपस्या करना	146
IX	लोठू बाबाजी की पुलिस वालों में चर्चा	147
X	लोठू बाबा की अंग्रेज अफसर से वार्ता	147
XI	लोठू बाबा व चेला करणिया मीणा की डूंगजी से जेल में वार्ता	148
XII	लोठू की जेल में डूंगजी से वार्तालाप व विदाई	148
XIII	लोठू का साधुवेश जेल की रैकी को भोपाओं ने गाया है	149
XIV	लोठू बाबा के चमत्कार से अंग्रेज अफसर चकित	151
XV	लोठू व करणा मीणा की ठकुरानी से वार्तालाप	153
XVI	लोठू द्वारा बठोठ में फौज तैयार करना	154
XVII	लोठू द्वारा मींढ़ा के दाह संस्कार में परिक्रमा	158
XVIII	लोठू को धन का लोभ नहीं था	159

XIX	लोठू व मुहर्रम	160
XX	लोठू जाट व मीणा ने किले को सीढी लगाई	161
XXI	लोठू जाट व डूंगजी के द्वारा कैदियों को छुड़ाना	161
XXII	लोठू जाट का ठकुरानी द्वारा स्वागत	162
XXIII	लोठू को पकड़ने के लिए टीम गठित करना	162
XXIV	लोठू जाट देश के लिए शहीद	163
22.	बालूराम नाई	163
23.	सुरजाराम बलाई	165
24.	रावराज प्रतापसिंह सीकर	167
I	रावराजा प्रतापसिंह डूंगजी के सच्चे सहयोगी	169
II	प्रतापसिंह के पास अंग्रेजी फौज का आगमन	170
25.	भोपालसिंह	171
26.	ठाकुर खुमानसिंह लोढसर	178
27.	हणूतसिंह मेहडू	178
28.	ठाकुर सूरजमल	179
29.	ठीकाना सींगरावट	179
30.	बीदावत राठौर रिसाला	180
31.	लार्ड वेलेजली की सहायक संन्धि	181
32.	मि. ब्लक की हत्या व शेखावाटी ब्रिगेड का गठन	181
I	शेखावाटी ब्रिगेड का उद्देश्य	183
II	स्वतंत्रता सेनानियों को पकड़ने के लिए दल गठित	184
33.	रामगढ़ का संक्षिप्त परिचय	186
I	रामगढ़ क्यों बसा	187
II	डूंगजी की रामगढ़ के सेठों से मदद मांगना	192
I	करणा राम मीणा व लोठू जाट के द्वारा रामगढ़ में जासूसी	193
IV	दूर निमटण जाने का टैक्स	194
V	सेठ घुरसामल व अणतमल के गोदाम लूटना	194
VI	अंग्रेजों ने डूंगजी के दल को डाकू करार दिया	195

VII	सेठों का बड़े अंग्रेज साहब को पत्र लिखना	195
VIII	डूंगजी, सेठजी और अंग्रेज अफसर के बीच वार्ता	196
IX	डूंगजी के दल द्वारा नारी का सम्मान	196
X	सेठों के द्वारा डूंगजी की जासूसी	197
XI	डूंगजी के दल द्वारा सेठों के साथ दो–दो हाथ	197
XII	डूंगजी द्वारा सेठों को धमकाना	199
XIII	अग्रवाल सेठों के डकेती डालना	200
34.	नसीराबाद छावनी में डाका	200
35.	अजमेर का प्रथम सुपरिडेन्ट कर्नल निक्सन	202
36.	भैंरूसिंह झड़वासा	204
I	झड़वासा में अंग्रेजों द्वारा डूंगसिंह को पकड़ने की योजना	206
II	अंग्रेजी सेना द्वारा झड़वासा को घेरना	207
I	अंग्रेजों द्वारा झड़वासे के भैंरूसिंह को धमकी देना	208
IV	भैंरूसिंह व बिचोलिया के बीच वार्ता	208
V	भैरूसिंह द्वारा झड़वासे में डूंगजी की मनुहार	209
VI	भैंरूसिंह द्वारा कलालण से नशीली शराब बनवाने की योजना	209
VII	भैंरूसिंह द्वारा डूंगजी के लिए मीट बनाना	214
VIII	भैंरूसिंह द्वारा डूंगसिंह को हथकड़ी डलवाना	215
IX	भैंरूसिंह पर अंग्रेज अफसर की लताड़	216
X	भैरूसिंह ने अपनी आत्मा को कोसा	217
XI	पंडित रामनरेश द्वारा भैरूसिंह को फटकारना	218
XII	भैंरूसिंह की माँ व डूंगजी की सास को बड़ा दुःख हुआ	218
XIII	भैरूसिंह का माथा (सिर) डूंगजी द्वारा काटना	218
37.	जोधपुर नरेश तख्तसिंह	221
38.	बीकानेर के राजा रत्नसिंह	223
I	रतनसिंह के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या न करने की प्रतिज्ञा कराना	225
II	रतनसिंह के द्वारा दहेज प्रथा पर पाबन्दी लगाना	226
I	डूंगसिंह के साथियों को पकड़ने के लिए पुरस्कार की घोषणा	226
IV	राजा रतनसिंह का देहान्त	227

1.प्राक्कथन

शेखावाटी के वीर स्वतंत्रता सेनानी "पुस्तक पाठकों के सम्मुख रखते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है, सर्व प्रथम उन सभी महान् विभूतियों, व्यक्तियों, महानुभावों, गुरूजनों, प्रबुद्ध बुजुर्ग पुरूषों और महिलाओं का आभारी हूँ व साधुवाद देना चाहता हूँ, जिनके सहयोग से मेरी यह पुस्तक तैयार हो सकी है तथा मैंने विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं और विद्वानों के माध्यम से सामग्री संकलित कर सरल व सरस रूप में पुस्तक को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। भारतीय स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत राजस्थानी योद्धाओं में शेखावाटी, तोरावाटी के शासकों और अनेक स्वतंत्रचेता जागीरदारों को अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार नहीं थी। इनकी शक्ति बहुत क्षीण हो चुकी थी पर उनके व्यक्तित्व में स्वाधीनता की जो चिन्गारी शेष थी वह रह-रह कर दमक उठती थी। इसी चिन्गारी के फलस्वरूप यहाँ के वीरों ने गुलामी के नकाब को दूर फैंकने के लिए अपनी शक्ति का खुल कर परिचय दिया। इन वीरों में इस क्षेत्र के सांवता राम मीणा, करणाराम मीणा, ठा. डूंगरसिंह, ठा. जवाहरसिंह, लोठू जाट, बालिया नाई, ज्याना दरोगा, सुरजा बलाई और साखूं लुहार सरीखे इन देश भक्तों ने यह भलि-भाँति समझ लिया था कि ईस्ट इण्डिया कंपनी का विदेशी शासन ही हमारे दमन के लिए उत्तरदायी है।

अतः 150 वर्ष तक भारत से अंग्रेजी राज्य समाप्त करने के लिए देश के विभिन्न अंचलों से ऐसे वीर सक्रिय रहे। जिसमें राजस्थान में शेखावाटी, मारवाड़, मेवाड़, ढूँढ़ाड़, हाड़ोती और मेवात आदि जगह पर अंग्रेजी ठिकानों पर निरन्तर धावा बोलना जारी रखा। छापामार युद्ध से अंग्रेजी शासन कई बार हिल उठा। यदि अंग्रेजों के पीठ्ठू (चापलूस) राजस्थान के राजा महाराजा इन स्वतंत्रता प्रेमियों का नेतृत्व करते तो इतिहासकारों की मान्यता है कि भारत 1857 में ही स्वतंत्र हो जाता। यह कैसी विडम्बना है कि इतिहास में स्वतंत्रता और स्वाभिमान के प्रतीक अपनी मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले वीरों को ब्रिटिश शासन में अपराधिक (डाकू) नाम से गलत संबोधित किया गया। शेखावाटी के वीर स्वतंत्रता सेनानी पुस्तक लिखने में निरन्तर दो वर्ष पर्यन्त अथक प्रयास के पश्चात् इस

अनमोल धरोहर तक पहुँच पाया हूँ। इसके लिए मुझे काफी जगहों पर जाना पड़ा जहाँ-जहाँ पर भी जानकारी चाही वहां सभी ने मेरा सहयोग किया। शेखावाटी के कई गांवों में मुझे जाना पड़ा। काफी बुजुर्ग लोगों के मुखारविन्द से इन स्वतंत्रता प्रेमियों की वीरता के किस्से सुनने को मिले। पुस्तक को रोचक बनाने के लिए भोपों द्वारा गाये गए गीत राजस्थानी, ढूँढ़ाड़ी शेखावाटी भाषाओं में हिन्दी भावार्थ सहित उल्लेख दिए गये है। मैंने अपने ज्ञान के अनुसार उसको यथासंभव उचित तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। फिर भी भाषा शब्दों के अर्थ में गलती हो सकती है उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। पुस्तक में मीणा जाति का उद्भव एवं विकास, शेखावाटी के मीणों का स्वतंत्रता प्रेम, सांवताराम मीणा, करणाराम मीणा, ठा. डूंगजी, ठा. जवाहरजी, लोठू जाट आदि स्वतंत्रता सेनानियों का जीवन परिचय संक्षेप में दिया गया है तथा इनकी बहादुरी के किस्सों को प्रस्तुत किया गया है। इन स्वतंत्रता सेनानियों की वीरता की जानकारी दी गई है।

इस कार्य को करने हेतु सर्वप्रथम श्री कैप्टन जयनारायणजी मीणा सांगरवा एवं समाज के बुजुर्ग समाज सेवी श्री मालाराम मीणा कंवरपुरा सीकर वाले से विचार विमर्श कर जानकारी से प्रोत्साहित होकर यह पुण्य कार्य किया। मैं अपने इस प्रयास में कहाँ तक कामयाब होता हूँ। इसका निर्णय तो आप सभी पाठक गण ही कर पायेगें। इसमें संकलित सामग्री आपको कैसी लगी आप अपने विचारों से अवगत कराएगें तथा पुस्तक में कहीं विचारों से आप सहमत नहीं हैं या शब्दों में कमियां हो तो उनको आपके सुझावों द्वारा दुरूस्त किया जाएगा। मेरी जानकारी में पुस्तक में संकलित सामग्री को उचित जगह दर्शाया गया है। इसके बावजूद फिर भी कोई गलती (त्रुटि) आपको नजर आये तो कृपया आपके सुझावों

सहित मुझे अवश्य अवगत कराए जिससे अगले अंक में सुधार किया जा सके। अन्त में मैं उन सभी सहयोग कर्ता महानुभावों को पुनः साधुवाद प्रेषित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिनके लेखों को इस पुस्तक में सम्मिलित किया है तथा मैं सभी पाठक गणों से आशा करता हूँ कि समय समय पर आपके विचारों के सहयोग से मुझे आगे बढने की प्रेरणा मिलेगी। इसी आशा एवं विश्वास के साथ.....

धन्यवाद

आपका
ताराचन्द चीता
कंचनपुर

2.भूमिका

राजस्थान का इतिहास लोक कथाओं में बहुत पुराना है। पिछले सैंकड़ों वर्षों से यहाँ के गायकार अपने-अपने वाद्य यन्त्रों व तरह तरह की लोकगाथाओं के माध्यम से गाँव-गाँव ढाणी-ढाणी में जाकर यहाँ की संस्कृति, वीरता, बहादुरी, दानशीलता और वीर प्रसुता आदि की गाथाएँ बहुत ही सुन्दर ढंग से लोगों के मध्य पहुँचाते थे। जिससे जनता उनके द्वारा गायी जाने वाली गाथा को बड़े प्रसन्नचित मन से सुनती थी। इस तरह की गाथाओं को अधिकतर भोपा नाम की जाति के लोग गाया करते थे। जिनका सहयोग उनकी धर्म पत्नी भोपी देती थी। इस तरह इन जातियों के लोग पीढी दर पीढी इस तरह की गाथाएँ गाया करते थे। लोक कथा का मतलब है जन-मानस से जुड़ी हुई घटना जिसमें सुनने वाले व्यक्ति में वीर रसात्मक, पौराणिक, श्रृगारात्मक, प्रेम कथात्मक, रोमांचक और निर्वेदात्मक आदि का संचार होता था।

राजस्थान की लोकथाओं में से मुख्य रूप से गोगाजी चौहान, पाबूजी, तेजाजी, बगड़ावत, डूंगजी -जवाहरजी सावत्या मीणा, करणिया मीणा, लोठू जाट, ठाकुर कुसालसिंह, रणजीत सिंह, आदि यहाँ जिस लोक गाथा का वर्णन किया जा रहा है यह एक वीरत्वमूलक चरित्र के अनुरूप होने से राजस्थान में यहाँ के जन मानस के हृदय में बैठी हुयी है। यह गाथा शेखावाटी अंचल के सरदारों की जिन्होंने अपनी बहादुरी से यहाँ की जनता का दिल जीता है। शेखावाटी के वीर-बहादुर-खूँखार, जनता के चहेते व अंग्रेज सरकार के दुश्मन वीर सांवता मीणा, करणा मीणा, जवाहरजी, डूंगजी और लोठू जाट 19 वीं शताब्दी के आजादी के जन नायक रहे। इनकी लोक प्रियता के किस्से लोगों की जुबान पर रच बस गए। भोपाओं ने इनकी वीरता के किस्से चारों दिशाओं में पहुँचाने के लिए दोहे के माध्यम से गाया है :-

सिंवरू देवी सारदा कोई तनै भवानी ध्याऊँ।
जां मरदांरी छांवली मै च्यार कूंट में गाऊँ।।

अर्थात् :- देवी सरस्वती को स्मरण करता हूँ। हे भवानी! तुम्हारा ध्यान करता हूँ। जिससे वीरों की कीर्ति को में चारों दिशाओं में गा सकूँ। किसी भी इतिहास के लिए सामग्री इकट्ठा करना बहुत अधिक परिश्रम,समय और

व्ययसाध्य कार्य है। विषय वस्तु इतिहास संकलन में कितनी दिक्कतें है जिसके लिए कहा गया है :-

।।जाके पैर न फटी बवाई वो क्या जाने पीर पराई।।

जैसा कि मैंने महसूस किया है कि इतिहास निकालने में पांव में ही नहीं सारे तन-मन मे बिवाइयां फट जाती है। इतिहास लिखने में तथ्य संग्रह करने में कितना कष्ट उठाना पड़ता है, कितना धन,समय और श्रम लगता है यह वही जानता है जो इतिहास निकालता है। सन् 1857 से भारत के स्वंतत्रता संग्राम का आरम्भ मानने वाले इतिहासकार इस ओर ध्यान देवें कि शेखावाटी के वीर बहादुर डूंगजी, जवाहरजी, सांवताराम, करणाराम मीणा और लोठू जाट ने लगभग सन् 1832 में अंग्रेजों को भारत से मार भगाने की योजना बनायी थी और उस पर अमल भी किया था। शेखावाटी के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी डूंगजी, जवाहरजी, सांवता, करणा मीणा और लोठू जाट आजादी की क्रांति के अग्रदूत बने और अंग्रेजों व उनके पिछ लग्गू देशी रियासतों के अत्याचारों के विरूद्ध संघर्ष का बिगुल बजाया जो लगभग 18&20 वर्षों तक इनका तेज धावक ऊँटो का काफिला शेखावाटी क्षेत्र में बिना रोक टोक विचरण करता रहा। गाँवों के बाहर रेत के टीलों पर इनके रात्रि विश्राम की अनेक गांवो के बड़े बुर्जुगों से इनके किस्से, चर्चा सुनने को मिलती हैं। विदेशी शासन के अत्याचारों से संघर्ष और दीन दुखियों व असहायों की सेवा के कारण ये अपने समय के जन नायक बने और क्षेत्र की जनता का इनको भरपूर समर्थन मिलता था।

इन शूरमाओं की स्मृति में जन कवियों (भाट, चारणों) द्वारा रचित यशोगान गाँव अंचल, ढाणी-ढाणी घर-घर इनके गौरव गीतों को चारण, भाट भोपा आदि गाकर वीर भावना का विरद (सुनाते) करते रहे है। रावण हत्थे पर भोपा भोपी द्वारा इनका यशोगान गाया जाता है तब पुरूषों की भुजाएँ भी फड़क उठती है। जब उन वीरों की शेर की तरह दहाड़ गूँजती होगी तब क्या गजब होता होगा।आदि काल से जितने भी आज तक महापुरूष हुए, जिन्होंने नि:स्वार्थ व निष्काम भाव से जनहित के कार्य किए या करवाए, चाहे उन्हें कितना ही कष्ट सहना पड़ा हो, कठिनाईयाँ आई हों, कुर्बानी या प्राणों की

आहुती देनी पड़ी हो कारण चाहे कुछ भी रहे हों, चाहे देश रक्षा हो, आत्म सम्मान का हो या नारी के अपमान का हो चाहे स्वाभिमान का हो, उसके लिए उन्होंने सिर कटा दिए मगर जुल्म-अत्याचार अनाचार, अन्याय और अनैतिकता के आगे कभी लोभ लालच वश सिर झुकाये नहीं। ऐसे त्यागी तपस्वी बलिदानी सर्वस्व न्योछावर करने वाले महापुरूषों के जन्म दिवस को जयन्ती के रूप में या शहीद दिवस (मरणो परान्त) स्मृति के रूप में मनाते है, जिसका उद्देश्य वर्तमान जीवन जीने वाले जन मानुष को भविष्य के लिए सही दिशा दीक्षा शिक्षा की प्रेरणा मिल सके जिससे सभी का कल्याण हो सकता है। कई बार ऐसा होता है कि कुछ लोग कानून की नजर में अपराधी होते हैं लेकिन समाज एवं जन सामान्य के लिए वे आदरणीय होते हैं। ऐसे व्यक्ति साधारण जनता के हितों के लिए शासन के खिलाफ खड़े होते हैं।

देश की आजादी के लिए विदेशी सरकार के विरूद्ध बगावत करने वाले भी ऐसे ही लोग होते हैं तथा कथित डाकूओं में भी ऐसे लोग हुए जिन्होंने सेठ लोगों के अनेक घर लूट कर गरीब जनता में बाँटा और उनकी सहायता की। सामंत लोगों के जुल्मों के विरूद्ध आवाज उठाकर शस्त्र उठाने वाले कतिपय लोग ऐसे थे जो कानून के हिसाब से डाकू या अपराधी थे परन्तु गरीब लोगों में आदरणीय और लोकप्रिय हुए। सांवता मीणा, करणीया मीणा, डूंगजी, जवाहरजी और लोठू जाट नामक डाकू ऐसे ही हुए जिन्होंने गरीबों की बहुत मदद की व उनके दुख दर्द में काम आए। इसलिए बहुत लोकप्रिय हुए और लोक गाथाओं में उनकी प्रशस्तियाँ गाई जाती है। सावंता मीणा करणा मीणा दोनों भाई वीर होने के साथ -साथ साहसी थे। वे भली भांति जानते थे कि इतने बड़े तूफान (अंग्रेज सरकार) के सामने वे नहीं टिक सकेंगें लेकिन फिर भी साहस बनाए रखा। अग्रेंज सरकार ने भी उनको पकड़ने के लिए जासूस छोड़ रखे थे लेकिन उन्होंने कभी परवाह नहीं की। मुगल साम्राज्य के पतन के उपरान्त भारत में राजनैतिक गतिविधियों में मराठा शक्ति का उदय हुआ। भारतीय संस्कृति एवं धरातल पर जब तक मुगल शासकों का राज रहा तब तक यहाँ अन्य किसी शासक को प्रवेश नहीं होने दिया। परन्तु धीरे-धीरे इनकी शक्ति कमजोर हो गयी जिससे यहाँ कई शक्तिशाली शासक अपना

आधिपत्य जमाने लगे। जिसमें मुख्य रूप से मराठा शक्ति सबसे महत्वपूर्ण थी। जो एक आँधी की तरह पूरे भारत वर्ष में छा गयी। मुगल साम्राज्य के प्रति जनता में बहुत क्रोध छा गया था और उनके रक्त पात से जनता दुखी हो गयी थी। उस समय राजस्थान के राजपूत शासकों के हालात बहुत ही खराब थे। कई पीढियों से यहाँ के रजवाड़े मुगलों के शोषण व दमन से निष्प्राण हो गए थे। इस कारण राजपूत राजा आपसी फूट के कारण काफी कमजोर पड़ गए थे। इसी समय मराठों का मुगलों के साथ युद्ध व रजवाड़े पर आक्रमण करके उनकी धन सम्पति को लुटा जिससे रजवाड़ो को बहुत भारी नुकशान उठाना पड़ा। इसलिए कहा गया है कि -

।।कोढ़ में खाज उत्पन्न होना।।

जिससे रजवाड़े बरबाद हो गये। इधर अंग्रेज इस मौके की तलाश में ही फिर रहे थे। उन्होंने सभी राजाओं से संधियां कर ली और उनको सुरक्षा का वचन दे दिया। ''अन्धे को क्या चाहिए दो आंख'' राजाओं को क्या चाहिए था उन्होंने इस बात को सहर्ष स्वीकार कर लिया और अपनी सुरक्षा का जिम्मा अंग्रेजों को सौंपकर चैन की श्वांस ली। जब अंग्रेजों ने रजवाड़ों में चारों तरफ अव्यवस्था व आपसी फूट दिखाई दी तब उन्होंने रजवाड़े में आन्तरिक दखलंदाजी शुरू कर दी। देशी रियासतों के राजाओं को केवल अपनी सुरक्षा और आराम से मतलब था। उन्होंने जिस तरह मुगलों व मराठों द्वारा अत्याचार सहन किए थे। उसी तरह अंग्रेजों द्वारा भी अत्याचार व शोषण के शिकार होने लगे। परन्तु राजस्थान के स्वतंत्रता प्रेमी जागीरदार इस स्थिति से बहुत दुखी थे। देशी राजाओं द्वारा अंग्रेंजों के प्रत्येक काम को आगे रखना उनको अच्छा नहीं लगता था। स्वतंत्रता प्रेमीयों अंग्रेंजों के खिलाफ खुली बगावत शुरू कर दी। इनके पास ब्रिटिश शक्ति के सामने इतनी संगठन शक्ति भी नहीं थी परन्तु देश की स्वतंत्रता की भावना से मरण-मारण व बलिदान होने के लिए तैयार हो गये। इन जागीरदारों में शेखावाटी के बठोठ पाटोदा के ठाकुर डूंगजी जवाहर जी इनके साथी सावंता मीणा, करणा मीणा और लोठू जाट, बीकानेर के ठाकुर हरिसिंह बीदावत, भोजोलाई का आणदसिंह, सूरजमल ददरेवा, आऊवा का

ठाकुर खुशाल सिंह चापावत, बिशन सिंह मेडतिया, गूलर, शिवनाथ सिंह आमोय, श्याम सिंह चोहटण (बाड़मेर) नाथूसिंह देवड़ा भटाणा (सिरोही) बलवंत सिंह गोठडा और कोटा नरेश का छोटा भाई पृथ्वी सिंह हाडा आदि प्रमुख थे। उन्नीसवीं सदी के पूवर्द्धि में अंग्रेजों के खिलाफ एक संगठित और योजना बद्ध विद्रोह का आयोजन किया गया। जिससे अंग्रेजी सत्ता अचम्भित हो गई। इस संगठन में शेखावाटी क्षेत्र के कई प्रमुख जागीरदार शामिल हुए जिसमें स्वरूपसिंह खिरोड़ खडब, मझाऊ, देवता और मोहन वाड़ी आदि इन संगठनो के साथ छत्तीस जातियों का सहयोग था, इनमें मुख्य रूप से मीणा, जाट, राजपूत, गुर्जर, बलाई, लुहार, नाई आदि प्रमुख सहयोगी के रूप में बहादुरी से भाग लिया इसलिए यह आन्दोलन एक समाज विशेष का न रहकर आम जनता का हो गया था। डूंगजी, जवाहरजी, सांवतराम मीणा, करणिया मीणा और लोठू जाट की तारीफ में लिखी हुई काव्य सामग्री बहुत संख्या में है जिसकी महिमा डिंगल गीत, पवाडा और छावणियों में हैं। इनके अलावा इन बहादुर वीरों की बहादुरी के चर्चे राजस्थानी पद्य में बहुत है। जिनमें इनको अंग्रेज विरोधी हीरो बताया गया है और इनकी प्रशसां खूब की गई है। जिसमें अंग्रेजों के शोषण के खिलाफ समाज में बुराई फैल चुकी थी जिसके लिए एक कवि ने लिखा है।

"मिनखा निठगी मोठ बाजरी घोड़ा निठग्यौ घास"

अर्थात्:- मानव के लिए खाने को अनाज नहीं है और पशुओं अर्थात घोड़ों के लिए चारा भी खत्म हो गया है। शेखावाटी के वीर स्वतंत्रता सेनानी पुस्तक लिखने में लगाातार जिज्ञासा, ललक, लगन, सतत् प्रयास, मेहनत और रूचि के पश्चात सफलता मिली है।इस कार्य प्रयोजन में बठोठ, पाटोदा, कंवरपुरा, मगंलूना, आगरा, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, आमेर, सीकर और हरिद्वार आदि स्थानों से व्यक्तिगत जाकर जानकारियां हासिल की। मुगलों की राजधानी रही आगरा किले को दिन दहाड़े तोड़कर नसीराबाद की छावनी पर धाड़ा माकर अंग्रेजों की मजबूत सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न लगा दिया था। इन्हीं कार्यो का परिणाम 1857 की क्रांति हुई। सन् 1805 तक अंग्रेजों की राजस्थान में कोई विशेष दखल नहीं थी और 1819 तक यहाँ के सभी राजा आपसी लड़ाइयों

से तंग आकर मराठों के बढ़ते हुए लालच से छुटकारा पाने के लिए बड़ी आसानी से कम्पनी बहादुर की शरण में आ गए। कभी किसी ने विरोध भी किया तो इसी कारण कि तत्कालीन विकट परिस्थितियों में आखिरी रूप से यह तय करना मुश्किल था कि ऊँट किस करवट बैठेगा ? कम्पनी व मराठों में जो भी ताकत राजाओं को भारी लगती वे उसी के साथ हो जाते। मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के बाद राजस्थान के राजाओं की अपनी कोई ताकत शेष नहीं रही थी। केन्द्रीय सत्ता के सहारे बिना उनका जीना दूभर हो गया था। मुगलों के बाद उन्हें मराठों की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। मराठों और अमीर खां ने तो उनके पारिवारिक मामलों में हस्तक्षेप बढ़ाना आरम्भ कर दिया था। वे जैसे-जैसे उनका पीछा छुड़ाना चाहते थे।

अंग्रेजों से इस बाबत् आश्वासन मिलने पर उन्होंने निर्विलम्ब उनकी दासता मंजूर कर ली । आश्रित सेना की नीति ने तो राजाओं को अंग्रेजों की कठपुतली ही बना दिया। अंग्रेज तत्कालीन हिन्दुस्तान की हर नब्ज से वाकिफ थे। हर नई स्थिति का नए ही दांव पेचों से मुकाबला करते थे। और इसके विपरीत यहाँ का शासक वर्ग अपने में ही खोया था। नई परिस्थितियों का पुरानी मान्यताओं से ही सामना करना जानता था। शारीरिक ताकत से लड़ने भिड़ने से अधिक उनकी राजनीति का कोई दायरा नहीं था। लड़ाई के सिवाय सीधा आत्म समर्पण करना जानते थे। दूसरा मार्ग ही उन्हें अधिक सरल दिखाई दिया। जातीय संगठन पर किसी प्रेरणा मूलक उद्देश्य के अभाव में आपसी झगड़े तो कभी खत्म ही नहीं होते थे। राजा और बड़े-बड़े जागीरदारों के बीच हमेशा तलवारें तनी रहती थी। मारवाड़ के राजा मानसिंह की तो सारी उम्र ही जागीरदारों से युद्ध करने में बीत गई। जागीरदार बड़े ताकतवर थे। उन्होंने राजाओं के नाकों में दम कर रखा था या मराठों के सिवाय इन घरेलू आफतों से बचने के लिए भी राजाओं ने अंग्रेजों की सहायता ली। अंग्रेज ऐसे मौकों की तलाश में ही रहते थे। जरूरत पड़ने पर वे स्वंय भी ऐसी स्थिति पैदा करवा देते थे। चंद स्वार्थ के लिए देश का बड़े से बड़ा नुकसान कर देने की हिन्दुस्तान की स्थिति थी और अंग्रेजों ने उनका लाभ उठाया। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान रहा है अंग्रेजी आतताइयों के विरूद्ध एक और

जहाँ यहाँ के स्वतंत्रता सेनानियों ने तलवार के जौहर दिखाये, वहीं चारण भाटों आदि गीतकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से स्वतंत्रता की भावना जागृत करने में विशेष भूमिका निभाई सही अर्थों में देखा जाए तो इस राष्ट्रीय यज्ञ में आजादी के दीवानों का जितना महत्व रहा उतना ही महत्व इस प्रकार के साहित्य की रचना करने वाले कवियों का भी रहा क्योंकि इन्होंने केवल आजादी का अलख ही नहीं जगाया बल्कि इसे गतिमय बनाये रखने में भी अपना विशेष योगदान दिया। वास्तव में देखा जाए तो आजादी की लड़ाई का श्री गणेश उस समय ही हो गया था जिस समय आततायियों ने इस धरा पर आक्रमण कर यहाँ अपने पाँव जमाने का प्रयास किया।

शेखावाटी के वीर सपूत डूंगजी, जवाहरजी, सावंतराम मीणा, करणाराम मीणा, लोठू जाट, सुरजा बलाई, बाल्या नाई आदि ने अंग्रेजी सत्ता का घोर विरोध करते हुए स्वाधीनता की भावना का अनुकरणीय परिचय दिया तथा अंग्रेजों की छावनियों में लूट खसोट कर गोरों की सत्ता को हिला दिया। इनकी प्रशंसा में भाट, चारण कवियों ने जहां देश के इन सपूतों की वीरता अडिगता कर्त्तव्य परायणता और देश-भक्ति का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया है वहीं उन्होंने अंग्रेजों का पक्ष लेने वाले राजा महाराजाओं और स्वार्थी सरदारों की निन्दा करते हुए उन्हें गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ने की सीख दी है।इसमें यह तो निश्चित है कि संघर्ष के नायक अंग्रेजी सत्ता के घोर विरोधी थे। उनके मन में ऐसी कोई भावना नहीं थी कि अंग्रेजों की छावनियां लूटकर अपना नाम कमाना हो। उनका लक्ष्य केवल गरीब जनता की उनकी पेट की आग को बुझाना था व अंग्रेजों के द्वारा उनके साथ अत्याचार हो रहे थे उनको मिटाना था जबकि उनकी भावना में प्रजातंत्र स्थापित करने का कोई लक्ष्य नहीं था। जनता और सामाजिक समानता में समरसता की स्थापना मुख्य लक्ष्य था। इसको चारण भाटों कवियों आदि ने उनकी ख्याति को दूर-दूर तक फैलाया है। एक लोक साखी अनुसार :-

सिंवरू देवी सारदा कोई तनै भवानी ध्याऊ।
जा मरदा री छावळी मै च्यार कूंट में गाऊ।।

अर्थात् :- देवी सरस्वती को स्मरण करता हूँ। हे भवानी तुम्हारा ध्यान करता हूँ। जिससे वीरों की कीर्ति को चारों दिशाओं में गा सकूँ।

3.मीणा जाति का उद्भव एवं विकास

मीणा जाति विश्व की प्राचीनतम जातियों में मानी जाती है। इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक पौराणिक आख्यान प्रचलित है, जिन पर इस वैज्ञानिक युग में आसानी से विश्वास नहीं किया जा सकता, परन्तु किसी शब्द व धारणा के पीछे एक इतिहास अवश्य होता है तथा पौराणिक आख्यानों का विश्लेषण आवश्यक है। इस सम्बन्ध में मुनि मगनसागर जी महाराज ने अपनी पुस्तक " मीन पुराण भूमिका " में बहुत ही विस्तार से प्रकाश डाला है। उनकी मान्यता के अनुसार मीणा जाति शुद्ध आर्य है और देश के प्राचीनतम क्षत्रिय है। इसकी पुष्टि के लिए उन्होंने वेदों व पुराणों के अनेक आख्यान प्रस्तुत किये है। वेदों में " मेनि" शब्द का उल्लेख है। मेनि का अर्थ वज्र या वज्रकाय होता है। अतः वज्र के समान सुदृढ शरीर वाली जाति " मेना " मारण, मैना, मीणा व मीना कही जाने लगी। प्राचीन काल में मीणा जाति के शासकों के हाथ में वज्र, मुकुट तथा ध्वजाओं में मत्स्य का चिह्न रहता था। इसी आधार पर शास्त्रकारों ने इन प्राचीन शासकों को मैना, मीना, मीनकेतु, मीनकेतन, मीन ध्वजा आदि नामों से संबोधित किया है। यजुर्वेद के एक मन्त्र में "विषमेम्यो मैनालम्" शब्दों का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि यह जाति बहुत प्राचीन है। इसी ग्रन्थ में आगे लिखा है।

" अल वारेण मीनत्रान लति वारयतीति मीना लस्त दपत्यम् मैनालम्।"

अर्थात्:- जो अन्याय, अपराध षड्यंत्रों व पापों से मनुष्य को बचाए, मना करे, उस प्रजावत्सल क्षत्रिय जाति को मैनाल मीणा कहते है। वेदों के इन उद्धरणों से सिद्ध होता है कि मीणा प्राचीन क्षत्रिय जाति है। पुराणों में इस जाति पर और अधिक प्रकाश डाला गया है। मीन (मत्स्य) पुराण की एक कथा के अनुसार " शिवजी से वरदान पाकर शक्ति संपन्न शंखासुर राक्षस ने मदोन्मत होकर सभी देवों को परास्त कर दिया और ब्रह्माजी से चारों वेद छीन कर रसातल में ले गया। चारों ओर संसार में अज्ञानान्धकार छा गया। साधुजन को राक्षस अनेक प्रकार की यातनाएँ देने लगे। ऐसी स्थिति में भगवान विष्णु ने मीनावतार (मत्स्यावतार) लिया और शंखासुर राक्षस का वध करके न्याय व्यवस्था स्थापित की और " मनु" आदि को वेदों की शिक्षा दी। अतः आगे

चलकर मीन भगवान के वशंज ही मीना कहलाए। स्वयं मनु से मीना जाति की उत्पत्ति का उल्लेख भी मीन पुराण में मिलता है " मनुनीराणो मीन:पुराणा पुरूषोतम:- अग्नि पुराण में लिखा है कि उषा की पाँच कन्याएँ कश्यप जी को ब्याही गई थी। उनमें से पहली " मीना" दूसरी मैना नाम प्रसिद्ध है उन्हीं की संतान मीना, मीणा, मैना आदि क्षत्रिय जातियाँ है क्योंकि उस समय जाति का नामकरण माता के नाम से होता था। इसी तरह स्कन्द पुराण में मीना जाति का उल्लेख है।

मीनाय मीन नाथाय सिद्धाय परमेष्ठि ने ।
कामान्तकाय बुद्धाय, बुद्धिना पतये नम:।।

इसके अतिरिक्त एक अन्य स्थान पर उल्लेख है।

शिवोमीनस्म माख्यात: सर्वलोक पितामह: ।
महेशोपासका : मीन: क्षत्रिया वीर सम्माता।।

अर्थात्:- मीनों के नाथ शिवजी कैलाश पर्वत पर राज करते थे और उनके उपासक मीना कहलाए। शिव पुराण में मीनाओं की उत्पत्ति के संबंध में विस्तार से बताया गया है। नारद के प्रश्न करने पर ब्रह्माजी ने इस जाति की उत्पत्ति पर विस्तार से प्रकाश डाला। वे कहते है कि दक्ष के साठ कन्याएँ थी जो कश्यप आदि ऋषियों को ब्याही गई थी। इनमें मैना तथा कलावती सनतकुमारों के श्राप से मुक्त होकर मानवी रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुई। इनमें से मैना नामक कन्या राजा हिमाचल की पत्नी बनी, जिनसे पार्वती का जन्म हुआ। पार्वती के अतिरिक्त मैना के सौ पुत्र और हुए जो मैना कहलायें। इन मैनाक पुत्रों के वंशज ही मैना या मीना कहलाएं। श्रीमद् भागवत में मीना जाति के राज्य का उल्लेख हैं। बारहवें स्कन्ध में भावी राजाओं के प्रकरण में बताया गया है कि -

नवाधिकां चनवती मीना एका दश सितिम् ।
भोसन्तयब्द, शतांन्यगण भीणिते संस्थिते तत:।।

समस्त भारत पर मीना क्षत्रियों का राज्य था। जैन मतावलंबियों के अनुसार भगवान ऋषभ देव के सौ पुत्र थे, जिनमें से एक का नाम मत्स्य देव था जिन्होंने अपने नाम से मत्स्य देश बसाया। यहां के निवासी मीना

कहलाए क्योंकि मत्स्य को प्राकृत भाषा में मच्छ, मीन और मीणा कहते हैं। अतः मत्स्य मीणों का ही देश है। श्री चन्द्र राज भण्डारी ने " भगवान महावीर " नामक ग्रन्थ में स्पष्ट किया है कि " मत्स्य राज्य " कुरू राज्य के दक्षिण और यमुना के पश्चिम में था (वर्तमान में अलवर भरतपुर व जयपुर के क्षेत्र) यहाँ अधीश्वर मैना, मीणा कहलाए थे। वर्तमान में भी यहाँ मीणा जाति का बाहुल्य है। कुछ विद्वानों का मत है कि जब परशुराम जी ने क्षत्रियों के विध वंश की दृढ प्रतिज्ञा की तो अनेक क्षत्रियों ने "मैना" मैना मैना कहकर प्राणों की भिक्षा मांगी वे ही लोग मीणा कहलाए। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि बहुत से क्षत्रियों ने परशुराम जी को अवतार मान लिया और उनके सामने आत्म समर्पण कर दिया। उनके अनुयायी होने के कारण ही कार्तिक कृष्ण पक्ष चौदस को निशस्त्र होकर मीणा समुदाय अपने पितरो को तर्पण देते है क्योंकि इसी दिन परशु राम जी ने बद्रिकाश्रम में शरीर छोड़ा था। राजपूतों की उत्पत्ति के संदर्भ में विद्वानों की सम्मति है कि परशुराम जी के भय से जब अनेक प्राचीन क्षत्रिय छिप गये, उन्हीं को आबू पर्वत पर यज्ञ करके ऋषियों ने चार नवीन राजपूत शाखाओं में दीक्षित किया। चौहान, परमार, तोमर, पड़िहार। आधुनिक मीणा जाति के सभी गोत्र इन राजपूतों के गोत्रों से मिलते जूलते है। अनेक विद्वानों की यह भी मान्यता है कि इनके आदि पुरूष का सुमेरू पर्वत पर राज्य था। अतः उसके उत्तराधिकारी मैर कहलाये"। भाटों की ख्याति के अनुसार इन्द्र की रक्षा पराक्रमी भगवान विष्णु ने अपने मुकुट की मणी से एक पराक्रमी पुरूष पैदा किया, जिसकी संतान ही आगे चलकर मीणा कहलाई।

4.मीणाओं का वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इतिहास

इतिहासकारों ने भारत को आदिवासियों का उल्लेख करते हुए इन्हें दो भागो में बांटा है - आर्य तथा अनार्य। आर्यों के आदि ग्रन्थ "ऋग्वेद" मे मत्स्य नामक जाति का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त दस राजाओं के युद्ध में भी मत्स्य राज का उल्लेख है। जब भारत वर्ष के राजा सुदास के विरूद्ध दस राजाओं ने संघ बनाकर युद्ध किया, उसमें मत्स्य राज भी था। ऋग्वेद में एक स्थान पर लिखा गया है कि मत्स्यों पर तुर्वस नामक राजा ने आक्रमण किया था। भाष्यकार सायण ने भी वेदों में मत्स्यों के पराक्रम की बड़ी प्रशंसा

की है। इतिहासकार हरमन गोयज ने अपनी पुस्तक " दि आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर" मे मीणा जाति की उत्पत्ति का उल्लेख किया है। उसके अनुसार मीणा जाति उस मत्स्य जन जाति की संतान है जो ऋग्वैदिक काल में थी " दस राजाओं के युद्ध" में भरतवंश के राजा सुदास द्वारा यह जाति पराजित हो गई थी तथा जिसने महाभारत के युद्ध में पाण्डव पक्ष का साथ दिया था। इसके विपरीत आर्यों से भी प्राचीन मानी जानी वाली " सिन्धु घाटी" सभ्यता के सुप्रसिद्ध नगर मोहनजोदड़ो से प्राप्त चिह्नो से इस जाति का अस्तित्व प्रमाणित किया गया है। इसका अर्थ यह है कि यह आर्येतर थी और आर्यों के आने से पहले ही भारत में निवास करती थी।

5.मीणा जाति के नामकरण एवं गोत्र

विशुद्ध धार्मिक धारणा के अनुसार मत्स्य भगवान के नाम पर ही ये लोग मीना या मीणा कहे जाने लगे। यह जाति अनेक नामों से संबोधित की जाती है। कर्नल टॉड ने इन्हें मेर, मेरा, मेना, मैना, मैरोत, मेराउत, मैरावत, माइना, मैरा मीना और मीणा के नाम से संबोधित किया है। मेरा संस्कृत बाड्•मय में एक पर्वत है। मेरा के निवासी होने के कारण ही इनको मेरावत व मैरात कहा गया है। इस जाति की एक मुस्लिम शाखा है जिसे मेव या मेवाती कहते है। महमूद गजनवी के सेना नायक मसूद ने मीणा जाति पर आक्रमण किया और लम्बे संघर्ष के बाद अनेक मीणाओं ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। वे मेव कहलाये। मुसलमान बनने के बाद भी इनके रीति रिवाज हिन्दू मीणा जैसे ही है। अपने आपको मीणों के वंशज मानते हैं। मुनि मगनसागर जी के अनुसार इनके बारह पाल एवं बावन सौ ग्रोत्र हैं। राजपूतों के 12 पाल भी इनके जैसे ही हैं। मेवों के 12 पाल में से 6 पाल मीना जाति जैसे ही है। इनका लम्बा इतिहास हैं। वर्तमान में इस जाति के दो प्रमुख वर्ग जमींदार और चौकीदार मीने हैं। इनके 32 तड़े हैं। मीणा जाति में राजनीतिक और सामाजिक जागृति की ज्योति जगाने वाले समाज सेवी लक्ष्मीनारायण झरवाल (लेखक) के अनुसार जमींदार तथा चौकीदार मीणा का भेद निम्नलिखित आधार पर हुआ। 11 वीं से 16 वीं शताब्दी तक राज सत्ता हाथ से निकल जाने के बाद मीणों ने हार नहीं मानी और गुरिल्ला प्रणाली से निरन्तर छुट-पुट

शत्रुओं पर आक्रमण करते रहे। इस छापामार युद्ध प्रणाली में स्वभावतः मीणा गण दो भागों में विभाजित हो गये, एक वे जो मोर्चे पर लड़ते रहते थे। दूसरे वे जो पीछे शस्त्र एवं रसद आदि पहुँचाते थे। कालान्तर में रसद पहुँचाने वाले केवल खेतीहर हो गए और राजसत्ताओं ने उन्हें भूमि देकर बसा दिया। भारमल ने गुरिल्ला युद्ध करने वालो से तंग आकर शासक वर्ग से समझौता किया, जिसके अनुसार इनको जनता से चौथ वसूल करने का अधिकार मिला और बदले में उन्होंने शान्ति व सुरक्षा का उत्तरदायित्व संभाल लिया । बाद में इनमें कुछ मतभेद उभरने लगे। एक वर्ग इस मत का था कि हम मरते मर जायेंगे परन्तु स्वाधीनता के लिए सघंर्ष जारी रखेंगे। कुछ लोग इस विचार के हो गए थे कि सघंर्ष कब तक चलेगा ? सत्ता मिलने वाली नहीं है। ऐसे विचार वालो को राजपूत भी प्रलोभन देकर फुसलाते रहे और जमीनें देकर शांत कर दिया। अतः इस संघर्ष से घबराकर वे कृषक जीवन व्यतीत करने लगे और जमींदार मीणा कहलाए। किन्तु जो लोग लड़ते रहे उनसे भी अतं में राजपूत शासक तंग आ गए और विवश होकर इनसे संधि की और इनको राजसी ठाट-बाट से विभूषित कर राज्य के रक्षक नियुक्त किए। राज्य की आय का चौथा भाग हथपल्ला और जमीनें इनाम दी। राज्य की आय का एक भाग स्वायत्त शासन, दूसरा प्रशासन, तीसरा भाग राजा को और चौथा भाग मीणा सरदारों को दिया।

6.मीणा जाति का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

सन् 1818 ई. से ही सहायता संधि की जाल में फंसकर राजस्थान के बड़े -बड़े महाराज अंग्रेजों की शरण में जा चूके थे। परन्तु यहां के आदिवासी विशेषकर मीणा जाति ने कभी विदेशी शासन स्वीकार नहीं किया। क्योंकि उनको साधन सुविधा के स्थान पर अपनी परंपरा व लोक संस्कृति अधिक प्यारी थी। यहाँ शेखावाटी ढूँढाड़, खेराड़ एवं तोरावाटी के मीणों ने अंग्रेजी शासन को हिलाकर रख दिया था। क्रांति में आदिवासी जनता ने बहुत ही बढ़ चढ़कर भाग लिया क्योंकि अंग्रेजी शासन से उन्हें सबसे अधिक हानि थी। पहले राज्य की रक्षा का उत्तरदायित्व आदिवासी मीणा जाति पर ही आश्रित था। परन्तु देशी राजाओं को अंग्रेजों का संरक्षण प्राप्त होने

से इनका प्रभाव कम होने लगा। अंग्रेजी राज में नवीन औद्योगिक नीति से परम्परागत उद्योग धन्धे चौपट होते जा रहे थे। नमक एवं अफीम का व्यवसाय सीधा अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत चला गया था। भूमि किसानों के हाथ से निकल कर पूँजीपतियों एवं जमींदारों के हाथ में जा रही थी। आदिवासी किसान तिहरी गुलामी में जी रहे थे। राजा महाराजा अपने निजी खर्च का समस्त भार किसान जनता पर डालते जा रहे थे। ऐसी स्थिति में जनक्रांति के लिए उचित वातावरण तैयार होता जा रहा था। इधर कुछ स्वाभिमानी सामन्त भी अंग्रेजी शासन के विरोध में उठ खड़े हुए कि बड़े राजा महाराजाओं को अंग्रेजों का संरक्षण प्राप्त होने से इनका प्रभाव कम होता जा रहा था। ब्रिटिश शासन की स्थानीय व्यवस्था में रात -दिन के हस्तक्षेप से भी कुछ सामन्त अंग्रेजों से नाराज थे। इनमें आउवा के ठाकुर कुशल सिंह, सलूंबर, कोठारिया, आसोव गूलर के सामन्तों का नाम विशेष उल्लेखनीय है। ये अकेले सामन्त अंग्रेजी शासन से लोहा कैसे ले सकते थे। इनकी शक्ति तो आदिवासी जनता ही थी।

देखा गया है कि डूंगजी जवाहरजी के साथ मीणा जाति के लोग ही अधिक थे। उस समय भारत के प्रत्येक कोने में आदिवासी जनता अंगेजी शासन की घोर विरोधी थी। विचारणीय प्रश्न है कि इस स्वतंत्रता सग्रांम में सामन्तों के शौर्य का तो बढ़ा चढ़ाकर वर्णन किया गया है। परन्तु जिस मीणा जाति के बल पर सामन्त अंग्रेजों से लड़ रहे थे। उनका इतिहास में बहुत कम उल्लेख मिलता है। क्योंकि उच्च वर्गों के लोगों को ही सफलता में अधिक स्थान मिलता आया है। अतः यह अभी तक शोध का विषय बना हुआ है कि मीणा जाति का इस क्रान्ति में क्या योगदान रहा? परन्तु यह निश्चित है कि क्रांति के पहले भी खेराड़ के मीणों ने अंग्रेजी शासन और उनके आश्रित मेवाड़ के महाराणा की सत्ता को गंभीर चुनौती दी थी। इसी तोरावाटी के मीणों, विशेषकर शाहजहाँपुर के रणबांकुरों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। जयपुर में मार्टिन ब्लक का वध मीणों द्वारा किया गया था। यह उनके व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण नही हुआ परन्तु अपने स्थानीय शासन कि रक्षा के कारण किया गया था। अतः इन सभी घटनाओं से स्पष्ट है कि **1857** की क्रांति में मीणा

जाति का योगदान अवश्य रहा होगा। जब वे सामान्य दिनों में ही विदेशी शासन के विरोधी थे तो क्रान्ति के समय में वे कैसे चुप बैठ सकते थे ? राजस्थान में भारत के अन्य प्रान्तों की भांति क्रान्ति का श्री गणेश सैनिक छावनियों से हुआ, परन्तु धीरे-धीरे स्थानीय जनता भी इस स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेती रही। इनमें निश्चित रूप से आयुध जीवी मीणा जाति का अवश्य हाथ था। राजस्थान में जहां सैनिक छावनियों में क्रान्ति की ज्वाला प्रज्वलित की वे क्षेत्र आदिवासियों के ही थे।

7.शेखावाटी के मीणों का स्वतंत्रता प्रेम

राजस्थान के अन्य जगहों के मीणों की भाँति ही शेखावाटी के मीणा भी साहस व वीरता में किसी से कम नहीं थे। राजपूतों से उनका कोई विरोध नहीं था, परन्तु जब बड़ी-बड़ी रियासतें अपना स्वाभिमान खोकर अंग्रेजों की संरक्षण संधियो में बंध गयी, तब मीणों के आक्रोश का कोई ठिकाना नहीं रहा। वे अंग्रेजी राज के प्रबल शत्रु के रूप में उभरने लगे। संयोग से अंग्रेज विरोधी जागीरदारों का भी उनको समर्थन मिल गया। इनमें बठोठ ठिकाने के जागीरदार डूंगर सिंह व जवाहर सिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इस क्षेत्र के आदिवासी मीणा जाति के नवयुवक इनके साथ थे। इस दल में लगभग 1000@ एक हजार मीणे थे, जिनका मुख्य कार्य अंग्रेजी छावनियों एवं खजानों को लूटना था। इस लूट के माल को वे जनता में बाँट दिया करते थे। स्वतंत्रता प्रेमी यह दल देखना चाहता था कि अंग्रेजी शासन अपने संरक्षित शासकों की कहाँ तक रक्षा कर सकता है। 1857 की क्रांन्ति के पहले ही राजस्थान के मीणों ने आजादी का शंखनाद 1837 ई. में सांवता राम मीणा और करणा राम मीणा अपने नेता डूंगजी के साथ कर चूके थे। शेखावाटी क्षेत्र के कई गाँवो के मीणे आजादी की लड़ाई में बढ - चढकर भाग लेते थे। उनके जीवन का आदर्श था :-

काची काया को बण्यो, मानखा पेट दुख मर जाय रे।
एक बार में लूँटू छावणी, करूँ मुल्क में नाम रे ।।

अर्थात् :- मानव के शरीर का कोई पता नहीं कब मृत्यु को प्राप्त हो जाये, मनुष्य पेट दुखने से भी मर जाता है इससे तो अच्छा अंग्रेजों की छावनी लूट कर मृत्यु को प्राप्त होवे उससे देश में नाम तो होगा।

8.शेखावाटी और तोरावाटी के मीणों का इतिहास

प्राचीन काल में राजस्थान के शेखावाटी और तोरावाटी क्षेत्र मत्स्य महाजन पद के अन्तर्गत आते थे। कछवाहा वंश के राव शेखा के वंशजों की उपार्जित भूमि "शेखावाटी" में वर्तमान सीकर, चूरू और झुंझुनू जिले आते हैं। तोरावाटी के अन्तर्गत सीकर जिले की "नीम का थाना" तहसील और जयपुर जिले का कोटपुतली शाहपुरा तथा विराट नगर का क्षेत्र आता है। प्राचीन काल में इस सम्पूर्ण क्षेत्र पर मीणों की शासन-सत्ता थी, उनका राज्य था। पुराने जमाने में शेखावाटी का छापोली कस्बा मीणों का एक प्रमुख स्थान रहा है। इसी गांव के पीछे मीणों की एक प्रसिद्ध खाँप छापौला कहलाई। चौदहवीं शताब्दी में मुसलमानों के साथ युद्ध होने पर छापौली से मीणों का राज्य उठ गया और वे इधर-उधर बिखर गये। दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समय में छापौली पर छापौला गोत्रीय मीणा राजा उमाऊराव का राज्य था। अलाउद्दीन खिलजी को विशेष रूपवती महिलाओं को अपने हरम में लाने का बड़ा शौक था।

राजा उमाऊराव की पुत्री चन्द्रमणि पद्मिनी श्रेणी की सुन्दर कन्या थी। अलाउद्दीन खिलजी के पास जब उसकी सुन्दरता की चर्चा पहुँची तो उसने मीणा राव से उसकी पुत्री का डोला मांगा। मीणा राव के मना करने पर अलाउद्दीन खिलजी ने बुलेल खाँ के अधीन, इस आदेश के साथ, सेना भेजी कि वह उमाऊराव को गिरफ्तार करे और उसकी रूपवती पुत्री चन्द्रमणी को दिल्ली ले आये। नवाब बुलेल खाँ ने छापौली के गढ़ पर आक्रमण किया तो बारह गाँवों के मीणों ने इकट्ठे होकर उसका सामना किया। इस लड़ाई में 140 मीणे खेत रहे। उमाऊराव अपने चारों बेटों सहित मारा गया। पर उमाऊराव की रानी विश्वस्त मीणों के सहयोग से अपनी पुत्री चन्द्रमणि, चार पुत्रवधुओं और एक बच्चे सहित गाँव चिलावरी सुरक्षित पहुँच गई। उमाऊराव के उस पुत्र का नाम अलगरा था। शेखावाटी क्षेत्र में स्थित गुड़ा, पोंख, जहाज, गिरावड़ी, मावंडा, पापरोणी, तोंदा, खेड़, गणेसर, गाँवड़ी, बागौर आदि गाँव छापौला गौत्रीय मीणों द्वारा ही बसाए गए हैं। डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा ने "तोरावाटी का इतिहास" में लिखा है। जिस समय अनंगपाल द्वितीय के

पुत्र तोरावाटी प्रदेश में आये, उस समय आमेर पर मीणों का अधिकार था। साँखला राजपूतों ने उनसे तोरावाटी का प्रदेश छीन लिया और बेदा (पाटन) को अपनी राजधानी बनाया। डॉ शर्मा के अनुसार कछावा कांकिल देव ने सन् 1207 में नाण (अमरसर) के मीणों को पराजित कर इस क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाया था। नाण एक प्राचीन नगर था। नाण शब्द को कुछ लोग प्राचीन नगर नारायनपुर से भी जोड़ते हैं। नाण में विक्रमी संवत् 1111¼सन् 1054) में निर्मित लक्ष्मी नारायण का मन्दिर है। शेखावाटी और तोरावाटी दोनों ही क्षेत्रों के मीणे अपनी दिलेरी, संघर्ष शीलता और जुझारूपन के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। राजपूतों द्वारा छल-कपट से सत्ता-च्युत करने के पश्चात भी इस क्षेत्र के मीणों ने राजपूतों को कभी चैन से नहीं बैठने दिया और हमेशा उन्हें नाकों चने चबाते रहे। मीणों के अन्तहीन संघर्ष से तंग आकर अन्ततःराजपूतों को उनसे समझौता करना पड़ा। इस व्यावहारिक समझौते के कारण मीणों की आर्थिक समस्या हल हो गई। इस क्षेत्र के गाँवों की सुरक्षा-व्यवस्था मीणों को सौंप दी गई, जिसके बदले में उन्हें गाँवों से एक प्रकार की 'लाग' (टैक्स) वसूल करने का अधिकार मिल गया।

अंग्रेजी राज्य की स्थापना तक यह व्यवस्था निर्बाध रूप से चलती रही थी और इस क्षेत्र के मीणा शान्तिपूर्वक जीवन-यापन करते रहे थे। 21 जून, 1818 को जयपुर राज्य और अंग्रेजों के बीच संरक्षण-सन्धि हो गई। जयपुर के तत्कालीन महाराजा ने अपने अधीन ठिकानेदारों (जागीरदारों) को उक्त सन्धि से परिचित कराया और उस पर उनके भी हस्ताक्षर करवायें। शेखावाटी के कुछ शेखावत सरदार इस सन्धि से नाखुश थे। उन्होंने दवाब में आकर इस पर हस्ताक्षर किए थे। परन्तु तोरावाटी के पाटन ठिकाने के राव अथवा उनके किसी प्रतिनिधि ने इस सन्धि पर हस्ताक्षर नहीं किये। फिर भी सामान्यतः यह सन्धि सभी ठिकानेदारों पर लागू मानी गई। इस सन्धि पर हस्ताक्षर न करने वाले पाटन ठिकाने को सन् 1835 में जयपुर राज्य के मारफत पहले अंग्रेजों का करद राज्य बनाया गया और तत्पश्चात् सन् 1837 में सीधे जयपुर के अधीन कर दिया गया। जयपुर राज्य की अंग्रेजों से सन्धि हो जाने के बाद अंग्रेजों ने राज्य के कामों में दखल देना शुरू कर दिया।

धीरे-धीरे वे अपने समर्थकों को राज्य के महत्त्वपूर्ण पदों पर बैठाने लगे। प्रशासन में अंग्रेजों की इस दखलन्दाजी को लेकर रियासत के जागीरदारों में असन्तोष पैदा होने लगा। अंग्रेज-विरोधी सामन्तों द्वारा भड़काए जाने पर मीणों ने महसूस किया कि देर-सबेर सन्धि का प्रभाव उन पर भी पड़ेगा ही, अतः उन्होंने अंग्रेज विरोधी सामन्तों की सलाह के अनुसार अंग्रेज-समर्थक जागीरदारों के क्षेत्र में लूटमार, डाकाजनी आदि विरोधी गतिविधियाँ शुरू कर दीं। वे उनके क्षेत्र की फसलें नष्ट कर देते थे, उनके क्षेत्र में लूटमार करते थे, और वहाँ से जानवरों को उठा ले जाते थे। अंग्रेज-विरोधी सामन्तों का उन्हें खुला समर्थन मिलता रहा था। वे उन्हें अपने गढ़ों में शरण देते थे। नीम का थाना क्षेत्र में तो मीणों ने अपने खुद के शरण स्थल बना रखे थे। लूटपाट करके या डाका डालकर मीणे जो कुछ भी लाते, उसमें से एक हिस्सा उस क्षेत्र के जागीरदार को दे देते थे जो उन्हें शरण देता और शेष भाग आपस में बाँट लेते थे। अपने हिस्से में से वे गरीबों की भी मदद करते थे। सन् 1831 में कर्नल लाकेट ने अपने 'जनरल' में लिखा है-'साथ ही यह भी कहना होगा कि तोरावाटी के लोग कुछ शरारती प्रवृत्ति के थे। इनमें अधिकांश चोरी और डकैती करते थे और इस चोरी और डकैती में राव साहब पाटन का भी हिस्सा था।' **"तोरावटी का इतिहास"** में नीम का थाना के आस-पास की लूटपाट का वर्णन थोरन महोदय के शब्दों में प्रस्तुत है-

The least accessible parts are inhibited by a tribe, called meenas for formally subsisted by cattle stealing and plunder and who in the exereise of these avocation undertook long journeyes either on mounted on small dark coloured camels of great speed and endured. United at some settled points, committed their depredations and returned sometimes singly, sometimes in small bodies to their fortres.where they desired spoil. these marauders however, have been much checked by the british, forces, so that many necessarily have had resources to agriculture for subsistance.'

जयपुर रियासत में शेखावाटी का सीमा-क्षेत्र व्यापारिक मार्ग के लिए महत्त्वपूर्ण था। यह सीमा बीकानेर और जोधपुर राज्य से मिलती थी। इस क्षेत्र में अव्यवस्था का मतलब था तीनों राज्यों में अव्यवस्था। कर्नल लॉकेट की रिपोर्ट पर नसीराबाद छावनी से तोपखाना और घुड़सवार सैनिकों सहित ब्रिटिश सेना की एक ब्रिगेड भेजी गई, ताकि शांति और व्यवस्था पर प्रभावशाली नियन्त्रण रखा जा सके। आगे चलकर कर्नल लॉकेट के तहत इस व्यवस्था को स्थायी कर दिया गया। इस ब्रिगेड का मुख्यालय झुंझुनूं में था। कर्नल लॉकेट के बाद यह ब्रिगेड मेजर फॉरेस्टर के तहत काम करती रही । झुंझुनूं में वह स्थान जहाँ इस ब्रिगेड का मुख्यालय था आज भी फारेस्टरगंज के नाम से जाना जाता है।

रतनलाल मिश्र ने "शेखावाटी की कला और समाज" में लिखा है- "चूँकि लूटमार और अराजकता को रोकने के लिए यह ब्रिगेड बनी थी, अतः इसका भार इस प्रदेश पर ही डाल दिया गया। इसका कुल खर्च 73]500 रूपये का था जिसमें से 22]000 रूपये का अर्थभार बीकानेर राज्य पर और 51]500 रूपये का भार शेखावाटी के सरदारों पर डाला गया। ब्रिगेड जहाँ लूटमार होती थी, वहाँ कार्यवाही करती थी। इस कार्यवाही के रूप में अनेक सरदारों के गढ़ तोड़ दिये गये, क्योंकि वे लोग इन गढ़ों में या चोर लुटेरों को छिपाते थे या स्वयं लूटमार करके इन गढ़ों में छिप जाते थे। फल-स्वरूप शेखावाटी ब्रिगेड का विरोध होता रहा। सन् 1843 में यह ब्रिगेड तोड़ दी गई और इसकी जगह पैदल सिपाहियों की एक रेजिमेंट रख दी गई। इसका भार ब्रिटिश सरकार स्वयं वहन करती थी।" डॉ प्रकाश व्यास ने "राजस्थान का स्वाधीनता-संग्राम" में लिखा है- जयपुर राज्य में शांति और व्यवस्था के नाम पर राजमाता के समर्थक सामन्तों को कुचलने के लिए शेखावाटी और तोरावाटी पर आक्रमण किया गया और इस सैनिक अभियान के खर्चे की वसूली के लिए साँभर झील तथा जिले को ब्रिटिश सरकार ने अपने नियन्त्रण में ले लिया।" डॉ व्यास का यह कथन पूर्वाग्रह से ग्रस्त है। सन् 1835 में शेखावाटी और तोरावाटी पर अंग्रेजों के आक्रमण का कारण वस्तुतः मीणों की विद्रोही गतिविधियाँ थी जिन्हें राजमाता समर्थक सामन्तों ने समर्थन दे रखा था। मीणा लोग अंग्रेज-समर्थकों को ही लूटते थे और अंग्रेज समर्थक सामन्तों के क्षेत्र में ही अशान्ति तथा अव्यवस्था पैदा करते थे।

इनकी इन विद्रोही गतिविधियों पर नियन्त्रण पाने के लिए ही शेखावाटी और तोरावाटी पर आक्रमण किया गया और इनके सुरक्षा स्थलों को नष्ट किया गया। डॉ. एस. एल. नागौरी ने सन् 1834 के समय की तोरावाटी की समस्या (महाराजा बन्नेसिह के शासन काल में) का जिक्र अपनी पुस्तक 'अलवर राज्य का इतिहास' में किया है-"तोरावाटी के मीणे अंग्रेज सरकार के आदेशों का पालन नही करते थे और वहाँ की फसल को चुराकर ले जाते थे जिससे वहाँ का राजस्व जमा नही होता था। इसलिए अंग्रेज सरकार ने उनकी डकैतियों को समाप्त करने तथा फसल पकने तथा सुरक्षा प्रदान करने के लिए कुछ अंग्रेजी सेना को वहाँ रखने का निश्चय किया। इस पर अंग्रेज सरकार के आदेशानुसार राव राजा अलवर ने तोरावाटी में दो रिसाला घुड़सवार सैनिक-सहायता भेजी जिसने तोरावाटी में मीणों की डकैतियों को समाप्त कर शांति-व्यवस्था कायम की। 4 जून, 1835 को कर्नल एल्विन तथा उसके सहायक ब्लैक पर जयपुर में घातक हमला हुआ जिसमें ब्लैक और उसके पाँच नौकरों को दिन-दहाड़े बीच शहर में मीणों ने मार डाला। मीणों ने यह कार्रवाई राजमाता समर्थक संधी झूथाराम के उकसाने पर की थी।

शेखावाटी और तोरावाटी के मीणों पर अंग्रेजों के आक्रमण ने जयपुर के मीणों को उत्तेजित कर रखा था, अत: वे केवल अवसर की तलाश में थे। प्रसंगवश यहाँ ये बता देना असंगत नही होगा कि उस समय अल्प-वयस्क महाराजा रामसिंह द्वितीय का राज था। अंग्रेज-समर्थक रावल बैरीसाल उनका संरक्षक बना हुआ था। अंग्रेज-विरोधी गुट राजमाता माँजी चन्द्रावत को राज्य की रिजेन्ट बनाना चाहता था। इसी कारण वहाँ अव्यवस्था फैली थी। इतिहासकार जगदीश सिंह गहलोत के अनुसार ब्लैक की हत्या का कारण जयपुर के शासक द्वारा अंग्रेजो को साँभर झील दिये जाने के प्रति तीव्र आक्रोश था। अंग्रेजो ने शेखावाटी और तोरावाटी के सैनिक अभियान के खर्चे की वसूली के लिए साँभर झील तथा जिले को अपने नियन्त्रण में ले लिया था। पर राजस्थान के स्वाधीनता संग्राम के अनुसार - सन् 1835 में साँभर झील पर अधिकार, शेखावाटी और तोरावाटी पर नियन्त्रण, शेखावाटी ब्रिगेड का गठन आदि ऐसी घटनाएं थी जिनमें रानी मां की स्थिति को दुर्बल बनाया था। आखिरकार, सन~ 1835 में

रानी के विश्वास पात्र झूंथाराम को अल्पवयस्क शासक को जहर देकर मारने के आरोप में राज्य से बाहर भेज दिया और बिना मुकदमा चलाए उसे बन्दी रखा। इस विवरण से यह निष्कर्ष सहज ही निकाल सकते हैं कि शेखावाटी और तोरावाटी के मीणों कि अंग्रेज विरोधी गतिविधियाँ राजमाता के समर्थन में थी, न कि मीणों द्वारा आदतन गैर कानूनी गतिविधियों में लिप्त रहने के कारण जैसा की सरसरी तौर पर अधिकांश इतिहासकारों ने माना है। वस्तुतः यह शासन में अंग्रेजों कि दखलन्दाजी का नतीजा था। जयपुर रियासत के सामन्तों में अंग्रेजों के खिलाफ सबसे पहले विद्रोह का बिगुल बठोठ के जागीरदार डूंगरसिंह ने बजाया। उन्होंने सन् 1837 में सिंगरावट के किले से अंग्रेजी सेना का सामना किया। जागीरदारों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप को लेकर ही डूँगरसिंह विद्रोही बने। जवाहर सिह उनके भाई थे। शेखावाटी के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी इन दोनों भाईयों के प्रमुख साथियों में करणिया मीणा और सांवता मीणा भी थे। इनकी गैंग का उस समय ऐसा आंतक था कि जयपुर, बीकानेर और जोधपुर के महाराजा भी उनसे डरते थे।

शेखावाटी क्षेत्र में डूँगजी-जवाहरजी से सम्बन्धित गाए जाने वाले लोक-गीतो में करणियां मीणा और सांवता मीणा के नाम भी आते हैं। यह लोग धनवानों को लूटते थे और लूट का धन गरीबों में बाँट देते थे। सन् 1847 में अपने चार-पाँच सौ साथियों के साथ इन्होंने नसीराबाद की अंग्रेजी छावनी को भी लूटा था। इस क्षेत्र के मीणों के अतीत से इस अवधारणा को बल मिलता है कि सन् 1835 में शेखावाटी और तौरावाटी के क्षेत्र में अंग्रेजों के सैनिक अभियान से ज्यादा-समय तक शान्ति स्थापित नहीं रह सकी थी। इसके बाद भी मीणों ने अपनी विद्रोही गतिविधिया सांवता-करणियां मीणा और डूँगजी-जवाहरजी के संयुक्त नेतृत्व में जारी रखी थीं। शेखावाटी और तोरावाटी क्षेत्र के मीणों की सूझ-बूझ और दिलेरी के अनेक किस्से इतिहास की पुस्तकों एवं जनश्रुतियों में बिखरे पड़े है जो किसी भी शोधार्थी के लिए रोचक विषय बन सकता है।जिस काम को अन्य कोई करने के लिए तैयार नहीं होता था, वह राजा-महाराजा या सामन्तों द्वारा मीणों को ही सौंपा जाता था और उसे वे अचूक रूप से सम्पन्न करते थे। एक और उदाहरण प्रस्तुत है शेखावाटी क्षेत्र के

मीणों की दिलेरी का। बढ़ती हुई क्रांतिकारी गतिविधियों को दबाने के लिए मेजर फॉरेस्टर की नियुक्ति शेखावाटी (शेखावाटी ब्रिगेड, झुन्झुनूं) में हुई। मेजर ने गुढ़ा (पूँख) के ठाकुर धीरसिह की गढ़ी पर तोपों से गोले बरसाये और उसे ढ़हा दिया व ठाकुर का सिर काटकर झुन्झुनूं ले गया और उसे सैनिकों के पहरे में रखवा दिया। ठाकुर के दाह-संस्कार के लिए, सिर आवश्यक था। इसलिए एक मीणा युवक को भेजा गया जो सैनिक छावनी से सैनिकों की पहरेदारी में रखे ठाकुर के सिर को रात के समय उठाकर ले आया और तब राजपूतों ने ठाकुर का दाह-संस्कार किया। दूसरे दिन सुबह मेजर फारेस्टर दंग रह गया कि मीणा युवक कड़े पहरे के बीच से ठाकुर का सिर कैसे ले गया। उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट हो जाता है कि जयपुर रियासत में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष शेखावाटी और तोरावाटी के मीणों ने किया था जिसे अंग्रेज-विरोधी जागीरदारों का खुला समर्थन प्राप्त था। परन्तु इतिहासकारों और वर्तमान लोकतन्त्र के ठेकेदारों ने शेखावाटी के विद्रोही ठाकुरों को तो स्वतन्त्रता-सेनानी का खिताब दे दिया और उसी शेखावाटी के मीणों का अंग्रेजों के खिलाफ इतना व्यापक विद्रोह उनकी उपेक्षा का ही शिकार बना रहा और उन्हें चोर डाकूओं का ही खिताब दिया जाता रहा। आधार-विहीन मान्यताएँ, जातीय विद्वेष और पूर्वाग्रह की मानसिकता के अलावा इसका और क्या कारण हो सकता है?

9.अंग्रेज इतिहासकारों द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों की उपेक्षा

अंग्रेज इतिहासकार तथा उनके कृपा पात्र भारतीय इतिहासकार लेखकों ने सांवताराम मीणा, करणाराम मीणा, लोटू जाट, डूंगजी और जवाहरजी को डकैत, धाड़वी, लूटेरे आदि हीनतापूर्ण संबोधनों से अपने इतिहासों में वर्णित किया है। भारतीय स्वतंत्रता तथा राष्ट्र प्रेम पूर्ण ऐसे कार्यों को विदेषी शत्रु और कृतध्न देशद्रोही ही डकैती कर-कर उनकी राष्ट्र-भक्ति पर सफेदी पोत सकते हैं। राजस्थान में सत्ता के अन्याय के प्रतिकार स्वरूप विप्लव(विद्रोह)करने वाले योद्धा को “ बारोठिया ” शब्द से घोषित किया जाता रहा है। जन मानस उन्हीं की वन्दना करता है जो महान लक्ष्य के लिए उच्चादर्शों पर गमन करते हैं। सांवताराम मीणा, करणा राम मीणा, डूंगजी,

जवाहरजी, सुरजाराम बलाई, सोबन्यों सुनार, सांखू लुहार, लोठू जाट, बाल्यो नाई आदि उच्च कोटि के मातृभूमि प्रेमी वीर थे। सुतरा उनके समकालीन राजस्थानी इतिहासकारों, विशिष्ट, राष्ट्रीय कवियों और लोक कवियों ने मुक्त स्वर से उनके वीर कार्यों की श्लाघा के दोहे, सौरठे, गीत, कवित्त और छावलियां रचकर उनकी वीरता को अनुकरणीय तथा प्रेरणीय रूप में प्रस्तुत किया। तब शिष्ट समाज में उनके प्रति कैसी श्रद्धा थी उसकी साक्षी संगृहीत वीरगीतों में मुखरित हैं।

10.सांवताराम मीणा व करणाराम मीणा मंगलूणा की संक्षिप्त वंशावली

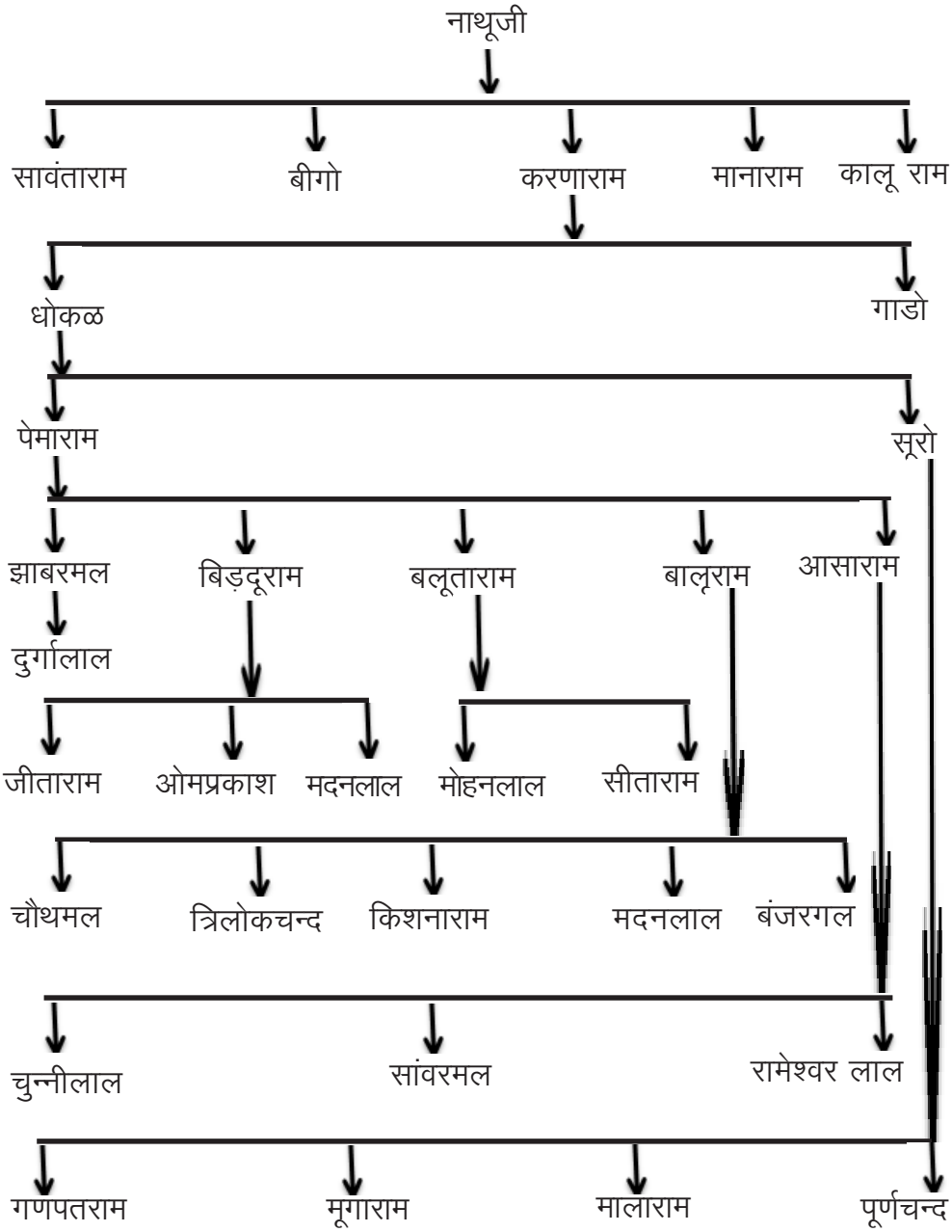

11-:सांवताराम और करणा राम मीणा का जीवन परिचय :-

सांवताराम मीणा शेखावाटी के वीर वर श्री नाथूलाल जी के ज्येष्ठ पुत्र थे और करणाराम नाथूलाल जी के पांच सन्तानों में से तीसरे पुत्र के रूप पैदा हुए। इनकी माताजी का नाम श्रीमती हाला था। साँवताराम का जन्म लगभग सन् 1795 व करणा राम का जन्म लगभग सन् 1800 में गाँव मंगलूणा तह. लक्ष्मणगढ़ जिला सीकर राजस्थान में हुआ। टांई पाटोदा जिला झुंझुनू के नाथूराम जी मीणा जिनका कांगस गोत्र में जन्म हुआ जब ये बड़े हुए तो जीवनोपार्जन हेतु आदिवासी घुम्मकड़ जीवन बिताते हुए अपना गुजर बसर करते हुए रोजगार की तलाश में सन् 1790 के आस-पास ग्राम मंगलूणा में पहुँचे। यहाँ एक झोंपड़ी (कुटिया) बनाकर अपना आशियाना बनाया और पास के गांव बठोठ पाटोदा के सामन्त ठाकुर दलेल सिंह व उदय सिंह से रोजगार के लिए सम्पर्क किया, ठाकुर दलेल सिंह ने नाथूराम का सुदृढ शरीर तथा आचार -विचार देखकर अपनी जागीर में उनको चौकीदार के पद पर नियुक्त कर लिया।

नाथूराम अपनी बहादुरी, विश्वसनीयता, कर्मठता एवं त्याग की भावना से ठाकुर दलेल सिंह व उदयसिंह के दिल को भा गए और उसको एक वफादार सेवक मानकर अपनी सेना में फोजदार के पद पर रख लिया। उधर समय अपनी गति से व्यतीत हो रहा था। भगवान की कृपा से नाथू राम को पुत्र रत्न के रूप में सन् 1795 के आस-पास एक लड़का पैदा हुआ जिसका नाम सेलो रखा गया। इसके उपरान्त चार और पुत्रों ने नाथूराम जी के घर में जन्म लिया जो बीगो, करणो, मान और कालू हुए। सभी बालक समय के साथ-साथ बड़े होने लगे। इनमें से सेलो और करणा बालक जन्म से ही होनहार थे। माता श्रीमती हाला ने इनकी परवरिश बड़े ही लाड़ चाव से और संस्कार पूर्व की थी। ये बालक जैसे -जैसे आयु प्राप्त कर रहे थे। इनकी होनहारी, बहादुरी, वीरता, उद्दण्डता आदि से माता रोज परिचित होती रहती थी। अपने नन्हें-नन्हें बच्चों के करतब देखकर माता काफी खुश होती थी। उधर ठाकुर दलेल सिंह व उदयसिंह के भी विजयसिंह, जवाहरसिंह, ज्ञानसिंह, डूंगरसिंह व रामनाथ सिंह नामक बालक पल बढ़ रहे थे। नाथूराम का ठाकुरों

के सम्पर्क में रहने से उसके बालक भी राजकुमारों के सम्पर्क में आने लग और धीर-धीरे इन बालकों में घनिष्ठ दोस्ती हो गई। बालक ज्यों ही बड़े हुए यौवनावस्था पार की तो जवाहर सिंह, डूंगरसिंह और सेलो (सावतांराम) व करणा में घनिष्ठ मित्रता हो गई। डूगरसिंह बड़ा हुआ तो उनको सीकर ठिकाणे की जागीर बठोठ ठिकाणै की शेखावाटी ब्रिगेड की घुड़सवार फौज का रिसालदार के पद पर 16 वर्ष की उम्र में नियुक्ति मिल गई थी। शेखावाटी ब्रिग्रेड की स्थापना अंग्रेजों की संधि में रावराजा सीकर से थी। डूंगजी शेखावाटी ब्रिग्रेड में काम करता था परन्तु धीरे - धीरे अंग्रेजों की चाल समझ गया और अंग्रेजों की इस ब्रिगेड से सन् 1834 में डूंगजी ने त्याग पत्र दे दिया और बागी बन गया क्योंकि अंग्रेजों की नीति थी फूट डालो और राज करो। इस तरह डूंगजी अपने गांव बठोठ में ही अपने भाई जवाहर सिंह को साथ लेकर अंग्रेजों के विरूद्ध एक दल की स्थापना की और उसी समय तक सांवताराम मीणा व करणाराम मीणा भी होशियार हो गए थे।

जब डूंगजी का इन से सम्पर्क हुआ और दोनों भाईयों की बहादुरी, वीरता शारीरिक गठन, वाक्पटुता चंचलता सर्वगुण सम्पन जानकर इनको साथ लेकर अंग्रेजों के खिलाफ एक दल का गठन किया। इस दल में साखूं लुहार, सोबन्यो सुनार और लोठू जाट आदि जवानों को भर्ती किया और अंग्रेजों के शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई, दलों में अलग -अलग जिम्मेदारी सोंपी गई, और आप दल के अग्रणी नेता बने । सावत्यां व करणिया मीणा और इन्ही के साथ लोठू जाट नाम का जवान था। इन तीनों की बहादुरी देखकर डूंगरसिंह ने इनको अलग -अलग दलों का सरदार नियुक्त कर दिया। एक दल में डूगरसिंह अपने साथ करणिया मीणा व लोठू जाट को रखने लगा व दूसरे दल में जवाहर सिंह अपने साथ सावत्या मीणा को सरदार बनाकर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष का अभियान छेड़ा। इनका मुख्य लक्ष्य अमीरों का माल लूट कर गरीबों को बाँटना तथा अंग्रेजों की छावनियां लूटकर हथियारों को अपने कब्जे में रखना तथा धन असहाय गरीब जनता में बांट देना यही इनका प्रमुख उद्देश था। डूंगजी, जवाहरजी अपने साथियों को साथ रखते थे किसी भी जगह वारदात करते तो एक साथ करते थे। इनके साथी वफादार थे कोई भाड़े के टट्टू नहीं थे, वे देश की स्वतंत्रता के पहले सिपाही थे।

ये स्वतंत्रता आन्दोलन की नींव के पत्थर थे। स्वतंत्रता की लड़ाई में मीणों की अहम भूमिका रही किन्तु एक साजिश के तहत उनके नामों का उल्लेख इतिहास में नहीं मिलता। कही थोड़ा बहुत मिलता है तो नाम मात्र का! भारत के बुद्धि जीवियों ने अपना वर्चस्व बनाने के लिए स्वतंत्रता आन्दोलन में मीणों के सहयोग को इतिहास का हिस्सा नहीं बनने दिया। इतना ही नहीं उन्होंने अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचारी कृत्यों को भी देशी राजाओं के नाम डालकर उनको भी बदनाम करने और आम भारतीय में उनके प्रति घृणा का प्रसार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अंग्रेज स्वंय लुटेरे थे जो भारत का धन लूटकर इंग्लैण्ड ले जा रहे थे और कई देशी रियासतों के राजा उनके पिछलग्गू बने हुए थे। अतः सांवताराम करणाराम का दल अंग्रेजों के राज्य में अजमेर, मेरवाड़ा, जयपुर, जोधपुर, पटियाला आदि क्षेत्रों में डाका डालकर धन लाते और शेखावाटी क्षेत्र में गरीबों की पुत्रियों की शादी करने भात भरने और असहायों की मदद करने में खर्च करते थे।

शेखावटी में इन्होंने गरीबों को नहीं सताया। इसलिए यहाँ की जनता ने इनको मान सम्मान दिया। उनका प्रारम्भिक ध्येय असामाजिक तत्वों एवं सूदखोर सेठों में भय बिठाना था। नैतिकता की रक्षा करने का उनका प्रयास था। बड़े सेठों के यहां डाके डालते और उनकी काली करतूतों के लिए उन्हें फटकारते, उनके बही बस्ते अग्नि देवता को सौंप देते जिससे गरीबों पर तकाजा न कर सकें यदि उनको धन से मोह होता और धन प्राप्ति के लिए डाके करते तो उनकी बहियाँ क्यों फूँकते। उनकी इस प्रकार की कार्यवाही से गरीब लोगों को राहत मिली वे सांवतराम व करणाराम के पक्षाधर बनने लगे। जहाँ बात चलती वहाँ प्रंशसा करते। सेठों को और बदमाश लोगों को आँख दिखाने लगे। यद्यपि उनका ध्येय नैतिकता बनाए रखने का था लेकिन फिर भी अच्छे विचार रखते हुए उनसे कही भूल भी हुई होगी। मानव स्वभाव भूल करना है। भले काम करने वाला कभी -कभी गलत काम भी कर बैठता है जानबूझ कर या अनजाने में। लोठू जाट, डूंगसिंह, जवाहर सिंह इनके विश्वास पात्र साथी थे ये सदा उनके साथ रहते थे। धीरे धीरे उनकी गैंग में दूसरे लोग भी शामिल होने लगे। उनके ऊंट इतने तेज थे कि जब चलते थे

तो हवा से बात करते थे। उनके ऊँट चारा कम खाते थे घी ही पीते थे। चारा चराने के लिए समय भी उनके पास कहाँ था। डाकों में लूटा हुआ धन प्राय: गरीबों में बाँट दिया करते थे। अपने लिए या अपने परिवार के लिए उनको फिक्र नहीं रहती थी। ऊँटों के लिए घी खरीदने के सिवाय उनका अन्य कोई खर्च नहीं था। उनको आर्थिक सहयोग दूसरी ओर से मिलता था। आस-पास के जागीरदार गुप्त रूप से मदद करते थे। शेखावाटी के जो सेठ अंग्रेजों के खिलाफ थे वे अपनी रक्षार्थ उन्हें धन भेजते रहते थे। इससे उनका तथा उनके परिवार का खर्चा चलता था। उनके तीन भाई बीगो, मान और कालू गाँव में रहते थे और घर का काम देखते थे। अपने भाइयों एवं गाँव के लोगों से इनका अच्छा प्रेम था। वे लोग इनको सलाह देते रहते थे तथा इनकी योजनाओं को गुप्त रखते थे। जब इनको भूख लगती तो किसी गरीब के घर में घुसते और छाछ राबड़ी ठण्डी, बासी जैसी मिलती खा लेते थे।

गरीब लोग भी इनको खिलाकर खुश होते थे तथा इनका आना जाना गुप्त रखते थे पुलिस की कार्यवाही संबंधि समस्त सूचना इनको पहुँचा दिया करते थे। अपने गांव के अतिरिक्त आस-पास के गाँवों के लोगों से भी इनके मधुर सम्बंध थे एवं अपनत्व रखते थे। कभी-कभी गाँव में आते तो उनसे मिलते उनके दुख-सुख की सुनते। अपनी क्षामतानुसार उनका सहयोग करते। इनका कोई खर्चीला शोक नहीं था। सादगी पूर्वक रहते थे। कपड़े भी साधारण किसान जैसे ही पहनते थे। किसी पराई स्त्री की ओर आँख उठाकर नहीं देखते थे। जिस घर में जाते बाई या मां के सम्बोधन ही करते थे। जिस घर में डाका मारते वहाँ कभी महिलाओं को परेशान नहीं किया। इसके अतिरिक्त चोरी करने का मानस कभी नहीं रहा जो काम करते सामने होकर करते थे। किसी के घर में सेंध नहीं लगाई सोते हुए लोगों के घर में घुसकर कभी चोरी नहीं करते थे। गोलियां हवा में चलाकर घर में सोए लोगों को जगाकर ही लूटते थे। सेठ लोग डरके मारे कांपने लगते और सब कुछ निकालकर दे देते थे। इन गुणों के कारण ही वे गरीब वर्ग में लोकप्रिय हुए। दोनों भाई वीर होने के साथ-साथ साहसी थे। वे भली भाँति जानते थे कि इतने बड़े तूफान (अंग्रेज सरकार) के सामने वे नहीं टिक सकेगें लेकिन फिर भी

साहस बनाए रखा। अंग्रेज सरकार ने उनको पकड़ने के लिए जासूस छोड़ रखे थे लेकिन उन्होंने कभी, परवाह नहीं की। स्वतंत्रता के इतिहास में मीणों के बलिदान का सही मूल्यांकन नहीं हुआ, जो होना चाहिए था। सांवत्या व करणिया मीणा शेखावाटी के दो बड़े क्रान्तिकारी वीर हुए जिन्होंने अंग्रेजों के खजानों एवं छावनियों को लूटा और धन गरीबों में बाँटा। उन्होंने अंग्रेजों को कभी चैन से नहीं बैठने दिया। अंग्रेजों के विरूद्ध लोगों के हौसले बुलन्द रखने में मदद की। उचित समय पर करणिया (करणाराम) की शादी हुई जिसकी वंशावली चार्ट में दर्शायी गयी है। आज इनके वंशज ग्राम मंगलूणा में अपनी पैतृक सम्पत्ति पर बसे हुए हैं। जो करणा मीणा को बठोठ जागीर से चौकीदारी से प्राप्त हुई थी।

12-:सांवताराम मीणा का जीवन परिचय:-

सांवताराम का जन्म बठोठ ग्राम में लगभग सन् 1795 के आसपास हुआ था। इनका बचपन का नाम सैलो था। इनके पिता का नाम नाथूराम और माता का नाम श्रीमती हाला था। बाल्यकाल से सांवताराम एकान्तप्रिय, क्रोद्धी स्वभाव और चिन्तनशील प्रकृति के थे। इनकी जीवन शैली इस प्रकार थी:-

शारीरिक गठन

इनका शारीरिक गठन बहुत चित्ताकर्षक था। उनकी आकृति बड़ी सुन्दर थी। उसके अंग प्रत्यंग से बहादुरी, वीरता, टपकती थी। उनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली था और उसको देखते ही हर कोई उनको महान् योद्धा समझ लेता था। उनका सौन्दर्य उनकी दाढ़ी मूछें के साथ-साथ उनके शारीरिक गठन में था। उनका शारीरिक गठन बड़ा ही सुदृढ़ था। उनकी आकृति में सांसारिक बातें कम तथा राष्ट्र भक्ति की आभा अधिक थी। चेहरे और शारीरिक गठन से वह राजकीय गौरव के ही योग्य था। हँसते समय आकृति विकृत हो जाती थी, किन्तु गम्भीर मुद्रा में उसमें सुन्दर स्वभाव तथा बड़प्पन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था। क्रोध की मुद्रा में उनकी आकृति अनुपम रूप धारण करती थी। सांवताराम का ललाट ऊँचा उसकी भुजाए लम्बी उसका कद साढे छः फीट तथा नेत्र दीप्ति मान थे। उनका रंग गेहूँआ था। उनकी भौंहे काली थी। दाढी मुँछे काली थी। सीना चौड़ा, नाक सीधी व नथूने फैले हुए थे। वह न बहुत मोटा न बहुत पतला था। उसकी टांगे एक दम सीधी थी और लम्बी थी जिससे उसको ऊँट की सवारी में बड़ी सहायता मिलती थी। उसका हाथ तथा उसकी भुजाएँ लम्बी थी। उसकी आवाज बुलन्द व प्रभावशाली थी।

शारीरिक शक्ति

सांवता राम शक्तिशाली तथा बलिष्ठ था। वह बिना विश्राम किये घण्टों परिश्रम कर सकता था। वह अपने कार्य क्षेत्र. में थकावट महसूस नहीं करता था, लोठू जाट के साथ एक बार एक दिन में बठोठ से नसीराबाद अपने ऊँट पर आया। यह दूरी yxHkx 200 किमी. थी। वह अपनी शारीरिक शक्ति के बल पर मस्त ऊँटों तथा घोड़ों को वशीभूत कर लेता था। उसका शरीर नीरोग एवं स्वस्थ था।

वेश भूषा

सांवताराम को वेश भूषा से ज्यादा लगाव नही था। वे शरीर पर केवल कमर तक धोती पहनते थे, शेष शरीर नग्न रखते थे व सिर पर भारी पगड़ी बाँधते जो इतनी भारी होती थी कि दुश्मन यदि वार कर भी दे तो सिर को कोई नुकसान नही होता था और सिर व शरीर सुरक्षित बच जाते थे। वह सदा अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रहता था उसके कंधों पर सदा धनुष लटका रहता था तथा हाथ में फर्शा लिए रहता था।

भाषा

सांवतिया मीणा कई भाषाओं का जानकार था जिनमें मुख्य अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, राजस्थानी, मेवाती, ब्रज, शेखावाटी आदि जो इनको दुश्मनों की पहचान करने में काम देती थी। इन भाषाओं पर इनकी अच्छी पकड़ थी।

स्वभाव

सांवताराम का स्वभाव बहुत अच्छा था अपने सभी भाईयों में सबसे बड़ा होने की वजह से सबके प्रति शालीनता रखता था। अपने मधुर सम्बधों से जवाहर जी के दिल को छू लिया था जिससे जवाहर जी इनको हमेशा अपने साथ ही रखते थे। वह हास्य विनोद प्रेमी था और उसमें दिल खोलकर भाग लेता था। साधारण जनता के प्रति उसके विचार सराहनीय थे। उसमें अहंकार तथा दम्भ का नाम भी नहीं था। वह बड़ा दयालु और कोमल स्वभाव का था। जब गरीब जनता की आँखो में भूख देखता था, तो उसको क्रोध उत्पन्न होता था, तब वह कठिन से कठिन परिस्थियों का सामना कर उनकी भूख मिटाता था। उससे कभी नहीं हिचकिचाता था। परन्तु उसका क्रोध भी शीघ्र शांत हो जाता था। वह अपने सम्बन्धियों तथा शुभ चिन्तकों से प्रेम करता था और उसकी गलतियों को क्षमा कर देता था।

दिनचर्या

सांवतराम का जीवन बड़ा नियमित तथा संयमी था। वह व्यर्थ में अपना समय नहीं गंवाता था। वह अपना अधिकांश समय गरीब, असहाय जनता की देखभाल में व्यतीत करता था और जो समय शेष रहता था उस

समय वह भाषा ज्ञान, लोककला, नाटककला, नटकला, विचित्रवेश भूषा कला आदि में लगाता था। भोजन के संबंध में जब कार्य से अवकाश प्राप्त होता था उसी समय व भोजन कर लेता था।

अभिरूचि

सांवताराम को आखेट का बड़ा शोक था। वह जंगली तथा भंयकर पशुओं के शिकार खेलता था। उसमें उसको बड़ा आनन्द आता था। वह हिसंक पशुओं से तनिक भी भयभीत नहीं होता था। उसको मस्त ऊँटों के संग रहने व उनके साथ कला बाजी करने का बड़ा चाव था। सांवताराम एक उच्च कोटि का ऊँटसवार था तथा धनुषबाण से निशाना साधने वाला था। ऐसा बताया जाता है कि उसके निशाने से दुश्मन बच नहीं पाता था यानिकि अचूक था।

मानसिक शक्ति

सांवताराम में मानसिक शक्ति उच्च कोटि की थी जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कई भाषाओं का जानकार, कला, संस्कृति में निपुण वैसे विशेष शिक्षित नहीं था, किन्तु उसका मानसिक विकास पर्याप्त था। जिसके आधार पर वह यह सब कर लेता था। उसको इतिहास, सामाजिक न्याय, दर्शन शास्त्र आदि के सुनने तथा उन पर वाद-विवाद करने व उत्तम निर्णय करने का बड़ा शोक था। सांवताराम की स्मरण शक्ति बड़ी तीव्र थी। वह सुनकर ही इतना ज्ञान प्राप्त कर लेता था जितना अन्य व्यक्ति पढ़कर भी ज्ञान प्राप्त करने में अपने आपको असमर्थ पाते थे। कुछ लोगों की यह धारणा थी कि उसकी स्मरण शक्ति माँ जीण भवानी का आशीर्वाद था। वह अनजान इलाके में जाकर भी उनकी भाषा में ढल जाता था और उनके सवाल जवाब आसानी से समझ लेता था। उसके सुझाव उच्च कोटि के होते थे जिनसे डूंगजी, जवाहरजी भी अचम्भे में पड़ जाते थे। इस शक्ति के आधार पर वह महान वीर सेना नायक व सफल धनुर्धर बना।

धार्मिक उदारता

सांवताराम की सबसे उच्च विशेषता यह थी कि उसमें मां जीण भवानी के प्रति अटूट आस्था थी। वह उनका अनुयायी था। किन्तु वह सब

धर्मों व जातियों के लोगों के साथ रहता था व उनका आदर करता था तथा श्रद्धा की दृष्टि से देखता था। इस प्रकार उसका बड़ा व्यापक दृष्टिकोण था। वह नियमित रूप से मां जीण भवानी को ध्यान में रखता था और अपने जीवन काल में कभी-भी मन्दिर, ब्राह्मण, स्त्री और गरीब आदि को परेशान करना, लूटना किसी भी प्रकार से प्रताड़ित नहीं करता था। इन सभी का सम्मान करता था ब्राह्मण व मन्दिर की पूजा करता था व दान दक्षिणा स्वरूप भेंट देता था इस प्रकार वह भूखे गरीब का साथी था।

महान सेना नायक

सांवताराम उच्च कोटि का सेनानायक था वह युद्ध, लड़ाई, डाका, धाड़ा आदि की भीषणता, भयंकरता तथा रक्तपात से तनिक भी विचलित नहीं होता था। वास्तव में उसको सघंर्ष से प्रेम था। सांवताराम को सेन्य संगठन तथा उसके संचालन का पूर्ण ज्ञान था।

न्याय प्रिय

सांवताराम एक उच्च कोटि का न्याय प्रिय नेता था। उसकी न्याय निपुणता तथा नीतिमता अद्वितीय थी। उसने अपने सरदार जवाहर सिंह के साथ रहकर गरीब जनता का बहुत सहयोग किया जिसको आज भी भोपा भाट गाते-बजाते है। उसने अपने घर को त्याग कर गरीब जनता व देश के प्रति अपना पूरा जीवन ही लगा दिया। इस प्रकार सांवता राम समस्त गुणों के होते हुए भी अपना जीवन विलासिता से दूर रखा। देश हित व गरीब जनता का भला चाहने वाला सांवता राम जीवन भर अविवाहित रहा और पुर्ण रूप से ब्रह्मचार्य जीवन का पालन किया। कभी भी अपने ऊपर दाग लगाने का मौका नहीं दिया स्पष्ट छवि, स्पष्ट आचरण, शुद्ध आचार-विचार से परिपूर्ण सांवता राम सर्वप्रिय था। सांवताराम को न केवल शेखावाटी क्षेत्र में ही उच्च स्थान प्राप्त था वरन् राजस्थान के इतिहास में भी उसका स्थान उच्च है। उसकी गणना उसके गुणों तथा कार्यों के कारण राजस्थान के प्रमुख सैनिकों एवं स्वतंत्रता सेनानी के रूप में की जाती है। सांवताराम में वे समस्त गुण विद्यमान थे जो उसकी गणना भारत के बहादुर सेनानियों में एवं स्वतंत्रता सेनानी में की जाती है। इनको काफी नामों से सम्बोधन किया जाता था जैसे सावत्यां, सैलो,

सांवत, सांवताराम, सावत्यो, सांवतिया, सांवतड़ो आदि। सांवताराम सर्वगुण सम्पन्न था उसकी जानकारी हेतु उनसे संबंधित कुछ घटनाओं का वर्णन इस प्रकार है। सांवताराम मीणा कई भाषाओं का जानकार होने से उनको माल की रैकी करने में कोई परेशानी नही रहती थी वह आस-पास की भाषाओं में ही बात करता था जिससे वहाँ के रहने वाले उस पर शक की दृष्टि से देख नहीं पाते थे और वहाँ की पूरी जाँच कर आता था। लगभग नौ भाषाओं का जानकार था जिनमे अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, गुजराती, मेवाती, ढूंढाड़ी, राजस्थानी, ब्रज, और शेखावाटी आदि बोलियां अच्छी धारा प्रवाह से बोल लेता था। जासूसी के लिए भोपाओं द्वारा गाए गए गीत के अनुसार:-

I-सांवताराम व लोठू ने आगरा में अंग्रेज अफसर को लूटा

लोटयो जाट सांवतो मीणों अकल बड़ो उस्ताद जी।
लांबा-लाबां लिया बांसड़ा करे नटा रा भेंस जी।
ओछी-ओछी पैर धोतड़ी, कीया नटा रां भेश जी।
डावी बगल में झेल ढोलकी माल हेरवाई जाय जी।
आडो-आडो फिरै मेण को सिरै बजारां जाट जी।
हाटा बैठा दीठा बाणियां वे जल भरती पणिहार जी।
साहिब रै बंगले के आगै बांस दिया रोपाय जी।
नवलख झीझां बाज रया स खूब मांडियो ख्याल जी।
साहिब ने तो राजी करने बड़िया बंगला मांय जी।
देखै पूरबिया बंगला के मांहिलो माल जी।
माल दरब तो खूब देखयो अंग्रेज रै पास जी।
सोने री पूतलियां देखी हीरा तणौ बोपार जी।
चवदै तो चपरासी देख्या पंदरा चौकीदार जी।
नंगी तरवारां पौहरो लागै हवा बाग रै पास जी।
सांझ पड़ै दिन आथमेस लौटयो डेरा के मांय जी।
बड़कै बोलै डूग सींघजी कहवौ चौधरी बात जी।
तम तो गया था किले आगरै कहवो माल री बात जी।।

अर्थात्:- लोटया जाट व सांवतराम मीणा बुद्धि में बहुत ही होशियार थे। इन्होंने लम्बे-लम्बे बांस लेकर नटों का भेष बनाकर छोटी धोती पहनकर घुटनों से ऊपर तक पहनकर नटों का भेस बनाया। अपनी बगल में ढोलकी दबाकर माल यानिकि धन ढूंढ़ने के लिए चल दिए और खेल तमाशा बाजारों में करते-करते खोज खबर ले रहे थे। हाट बाजार में बणिये अपनी दुकान पर बैठे हैं। औरतें पानी भर रही हैं और उसी दौरान सांवत मीणा व लोठू जाट ने अपने खेल के सामान जिसमे बांस आदि से अंग्रेज अफसर के बंगले के सामने अपना खेल जमा दिया। नौ तरह की झांझ बजाने लगे और खेल को बहुत ही बढ़िया करने की योजना बनाई। अंग्रेज अफसर को राजी करने के लिए बंगला में प्रवेश कर गए। बंगले के पूर्व में बने हुए मकान में माल देख अंग्रेज के पास बहुत अचम्भा किया जिसमें सोने की प्रतिमाएं, हीरा-जवाहरात का व्यापार जिस पर चौदह तो चपरासी व पन्द्रह चौकीदार काम कर रहे थे जो नगी तलवारों से पहरा लगा रहे थे। हवाबाग के पास में यह सब देखकर वे वापस अपने यथा स्थान पर आ जाते हैं जिस पर उनका सरदार डूंगसिह जी कहता है बताओ जाट मीणा भाईयो आप क्या देखकर आये हो। आगरे के अंग्रेज अफसर का महल कैसा था उसमें क्या था।

क्या कहू मेरे रावजी स न कहयो न म्हासूं जाय जी।
माल द्रव तो खूब देख यो अंग्रेज रे पास जी।
सोने री पूतलियां देखी हीरां तणौ व्योपार जी।
चवदै तो चपरासी देख्या पदंरा चौकीदार जी।
आधी रैण पौर क तड़कै दियो पागड़ै पांवजी।
पोल भांग दरवाजा भाग्या-भाग्या लाल किवाड़ जी।
चौवदा तो चपरासी काटयां पन्द्रह चौकीदार जी।
राढ़ा रीढ़ो असौ मांडियौ सैर छावणी मांय जी।
मानवीयां की मूंड़ी टूटी बहै रगतां रा खाल जी।
धरती माता असी बणी न जाणै खंडी गुलाल जी।
बड़ी छावणी लूट लई, आधी ने दीवी जलाय जी।
नव गोरा नाक काटियां बंगला दीन्हा ई बाल जी।

साठ ऊँट मायां सूं भरियां कपड़ा भरी करतार जी।
बाल कतारा नीसरास बे पोखरजी न्हाबा जाय जी।
रात दिन रा करया मामला ग्या पोखरजी घाट जी।
पोखरजी रै गऊ घाट पर गहरा किया सिनांन जी।
पोखर जी लाल पैड़िया बैठा जाजम ढाल जी।

अर्थात्:- मीणा जाट दोनों एक साथ बोले सरदार आप से क्या कहें वहाँ के माल का वर्णन करना हमारे वश की बात नहीं है। वहाँ माल बहुत ज्यादा है जो हम देखकर चकित हो गए कि अंग्रेज के पास इतना माल है कि वहां सोने से बनी हुई मूर्तियां हीरा-पन्ना का व्यापार और उन पर चौदह कामदार काम कर रहे थे तथा पन्द्रह चौकीदारों का पहरा था इसलिए हमने जो देखा वह यह था कि वहाँ माल लूटना बहुत ही कठिन था। यदि हम वहां से माल लूटते हैं तो अंग्रेज अफसर हमारे पीछे पड़ जायेंगे। इसलिए हमें यहाँ से वापस अजमेर चलना चाहिए। तब सरदार डूंगसिंह ने कहा नहीं लौटया वापस नहीं चलेगें कितनी मेहनत से तो यहाँ आये है। खाली हाथ चलना शोभा नही देता है। अब तो बड़े साहब का बंगला हमें लूटना है वो समय निश्चित करो। इस तरह आधी रात बीतने के उपरान्त पो फटने से पहले खजाना लूटना है। योजना बनाकर वहाँ खजाना लूटा जिसमें सभी पहरेदारों व चौकीदारों को मौत के घाट उतार दिया और वहाँ काम कर रहे व्यक्तियों की गर्दन काट काटकर डाल दी ऐसी मार धाड़ मचाई उस छावनी में जिस तरह शेर अपने शिकार पर लपकता है। जिससे धरती माता खून से इस तरह लथपत हो गई जैसे वहाँ गुलाल बिखेर दिया गया हो। वहाँ सब कुछ लूट लिया और शेष रही छावनी को जला दिया गया। वहाँ के अंग्रेजों के नाक काट लिए गये और उनके बंगलो को जला दिया गया। वहाँ से साठ ऊँटो पर धन के बोरे भर लिए और ऊँटों की कतार को पुष्कर जी की तरफ रवाना कर दिया गया। रात दिन चलकर पुष्कर जी के गऊघाट पर पहुँचे और वहाँ स्नान-ध्यान किया तथा पुष्कर जी की लाल पेड़ियों पर जाजम लगाकर बैठ गए।

II–सांवताराम के द्वारा सेठों को झड़वासे के रास्ते में लूटना

घोड़ा नाखो घासिया र ऊँटां पर करो पिलाण जी।
अगड़ बंवक्या घुरया नगारां पड़ी नौबता ठोरजी।
घोड़ा नै दपटाय धाड़वी ग्या झड़वासै गांव जी।
अर घाटे ढळता ढुंडै धाड़वी मुंगा भरी कतार जी।
अर सीकर लूट फतैहपुर लूटी मारी राम गढ फेट जी।
घाटे ढलात लूट धावड़ी मूगां भरी कतार जी।
घाळ कतारां नीसरेस बो गयो मंडावे सहर जी।
मंडावे में मूंगा करिया अेक 'र' सेर दोपहर जी।

अर्थात् :- डूंगरसिंह व जवाहरसिंह सरदार अपने सेना नायक सांवतराम मीणा से बोले कि सांवताराम घोड़ों को तो घास डाल दो और सभी ऊँटो पर आसन लगा दो और सभी सैनिकों को कह दो तैयार हो जावें और अपने-अपने हथियार सम्भाल ले। इस प्रकार घोड़ों व ऊँटो को तैयार करके धाड़ा मारने के लिए झड़वासे गांव के पास चले गए। घाटा के पास में सेठों के साधनों में मूंगो से भरी बोरियां कतारबद्ध ऊँटो पर ले जायी जा रही थी जो रामगढ, फतेहपुर, सीकर होती हुई अजमेर पहुँचनी थी। उन्होंने इसको बीच रास्ते में लूट लिया सभी बोरियों को तलवारों से काट दिया मूंगो को बिखेर दिया जिससे वहां आस-पास के किसान चुग-बिन कर ले गये। उसके बाद में वो मण्डावा शहर की तरफ चल दिए।

III–सांवताराम के द्वारा रामगढ़ मै रैकी

सांवताराम और लोठू जाट ने भेष बदला। जाट ने बाँस लिया व सांवताराम मीणा ने ढोलक ली तथा वे सीधे रामगढ शहर पहुँच गए। शहर की सुन्दरता देख सांवताराम लोठू की आँखे बड़ी-बड़ी हवेलियों पर टिक गई। वाह। क्या! चित्रकला एवं कितनी सुन्दर वास्तुकला है। सेठों का माल ऊँटों व घोड़ों पर बाहर से आता तो कई सेठों का माल बाहर जाता। दोनों खेल तमाशा करते-करते एक बड़े सेठ की हवेली के सामने जा पहुँचे। सेठ के महल में सोने से बनी पणिहारी व एक रानी की मूर्ति दिखाई दी। पैसे मांगने के बहाने लोठू जाट मुनीम जी के पास गया, सेठ व मुनीम के मध्य बातचीत अन्न व धन अंग्रेज सरकार को अजमेर भेजे जाने को लेकर हो रही थी। रात को

जाट व मीणा ने रामगढ़ में ही विश्राम किया माल अजमेर भेजने की तारीख व रास्ते की सम्पूर्ण जानकारी लेकर वापस गन्तव्य स्थान पर पहुँच गए। रामगढ के सेठों का भेद लेकर सांवता व लोठू अपने साथी डूगसिंह के पास पहुँचे एवं सरदार को सारी बात बताई गई। सभी विद्रोही सरदारों की गुप्त मिटिंग बुलाई गई।

IV–सांवताराम के दल ने नसीराबाद छावनी में लूट की

मण्डावा में धाड़ा मारकर वे अंग्रेजों की छावनी संभवत नसीराबाद को लूटने का इरादा किया और सांवता मीणा व लोठू जाट को छावनी की खोज खबर लाने के लिए भेजा। दोनों व्यक्ति गुजराती नटों का भेष धारण करके छावनी में लगाई हुई सुरक्षा व माल-पात की खोज खबर ली और वापस आकर डूंगजी को बताया कि छावनी को लूटना मौत को बुलावा देना है। पर जिद्दी डूंगजी नहीं माने और भरी दोपहर में छावनी पर धावा बोल दिया। मौके पर खड़े रक्षा सिपाहियों व अंग्रेज अफसरों को मार कर बहुत सा धन माल लूट लिया। वहाँ से (बारोठिया) माल सामान लेकर पुष्कर जी के घाट पर आ गये। वहाँ गरीब ब्राह्मण चारण भाट और भोपों आदि को खुल्ले हाथों धन लुटा दिया। एक दिन सांवता राम ने डूंगजी को उनके जासूस के रूप में आकर सूचना दी कि नसीराबाद छावनी में बड़े ही टके पैसें है उसे लूटना चाहे तो शीघ्रता करें। बस डूंगजी अपने दल के साथ चल पड़े उन्होंने नसीराबाद छावनी पर आक्रमण बोल दिया। अंग्रेजों के सैनिक उन मतवालों का सामना नहीं कर सके। 14 पराजित हो गये डूंगजी ने सत्ताईस हजार रूपये लूटे और छावनी को तहस नहस कर दिया। कई लोग सांवतराम के तीर बाणों व लोठू की बन्दूक के शिकार हो गए और जिनमें कई घायल हो गए। इस घटना के बाद अंग्रेजों की शक्ति का मजाक उड़ाया जाने लगा तथा उनकी इज्जत पर कलंक सा लग गया।

V–सांवताराम ने जवाहरजी व डूंगजी को जोश दिलाया

एक दिन सावंताराम ने क्रोध में आकर कहा कि जवाहर सिंह डूंगसिंह जी विदेशी लूट-लूट कर देश का सारा धन माल बाहर ले जा रहे हैं और कोई प्रतिरोध नहीं। तलवार को हाथ में रख कर इसे क्यों लजा रहे हो। फेंक दो इसे अपने नाजुक हाथों में चुड़ला धारण कर लो, इस सुकोमल देह को जनाने कपड़ों से सजा लो। फिरंगियों का अन्याय दिन ब दिन बढ़ रहा है न इनके

अत्याचारों की कोई सीमा है और न हमारी सहन शक्ति का कोई अन्त। पुसत्वहीन होकर हम सब चुपचाप सहते चले जा रहे है। कुछ भी शर्म हो तो जहर खाकर मर जाओ! तालाब में डूब मरो! या गले में घाघरा डाल कर पुरूष कहलाने का अधिकार त्याग दो। कहाँ गई वह तुम्हारी वीरता? कहाँ लुप्त हो गई तुम्हारी रजपूती शान ? आत्म सम्मान को भुला कर केवल टुकड़ों के मोहताज हो तुम! किसी भी बहाने जीना चाहते हो। धिक्कार है तुम्हे। सरदारों! रजपूती शान को सर्वथा खो दिया है तुमने। सच्चाई के मार्ग से भ्रष्ट हो गए हो। प्रतिष्ठा तुम्हारी मिट्टी में मिल गई। नष्ट हो गई है तुम्हारी बुद्धि! इन विदेशियों को देश धरती से बाहर खदेड़ने के लिए केवल युद्ध ही एकमात्र समाधान है केसरिया बाना पहनो। कमर पर तलवार कस लो। हाथों में बरछी और कटार थाम लो। विदेशियों को बाहर खदेड़ने के लिए युद्ध होगा। चंचल ऊँटों व घोड़ों पर सवार हो जाओ। घोड़ों और ऊँटों पर सवार होकर तुम्हें केवल अपने लक्ष्य को ही सामने देखना है। सामने विदेशी हैं। सामने युद्ध हैं, पीछे घर की ओर न झाँकना! और न पीछे की ओर एक कदम ही हटाना। भले ही कट कट कर रेत में मिल जाना! पर हार कर लौटने की दुर्भावना को कभी भी अपने मन में प्रश्रय न देना।

VI-सांवताराम की जवाहरजी से बातचीत

सांवता राम जवाहरजी से कहता है कि ये विदेशी हमें क्या गुलाम बनाकर रखेंगें मै आपको बताऊँ यदि ये राजा महाराजा अपने साथ मिल जावें तो अच्छा होता। परन्तु इन्होंने तो औरतों के वेश धारण कर रखे है और सभी एक तरह के ही हो गए हैं। क्या सभी ने भांग पी ली। इन विदेशियों को बाहर निकालने के लिए पूरी ताकत लगानी पड़ेगी। यदि हिन्दू मुसलमान एक हो जावें तो ये अंग्रेंज यहाँ एक दिन भी नहीं रूक पाएंगे। देश की छत्तीस कोम को समझाना पड़ेगा कि ये फिरंगी आप सभी के दुश्मन है। ये आपका माल लूट-लूट कर सात समुद्र पार अपने देश को ले जा रहे हैं। आपको जो भी सामान चाहिएगा वो वहीं से खरीदना पड़ेगा। आप सभी देश के जवानों को एक झण्डे के नीचे इकट्ठा करो। उसके बाद में जैसे ये समुद्र पार से यहां आये थे उसी तरह वापस पहुँचा देंगे। इसलिए हमें विदेशियों की बड़ी-बड़ी छावनियों पर धावा बोल कर उनको लूटना चाहिए।

VII-सांवताराम पर विशेष

सांवताराम ने जवाहर जी के साथ बीकानेर राज्य के अन्तर्गत जून सन् 1847 को घड़सीसर गांव के पास बीकानेर की सेना से हुए युद्ध में भाग लिया। स्वतंत्रता सेनानियों का मनोबल और साहस ही था कि मुट्ठीभर संख्याबल के बावजूद प्रारम्भ में बीकानेर की सेना के दांत खट्टे कर दिए। परन्तु अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित, प्रशिक्षित व अधिक संख्याबल वाली सेना का वे अधिक समय तक मुकाबला नहीं कर सके। जवाहर जी व सांवताराम युद्ध करते-करते साथियों सहित चारों तरफ से घिर गए। सभी ने अदम्य साहस दिखाते हुए विपक्षी सेना के जवानों की लाशे बिछा दी। लेकिन अन्त में जवाहरजी ने बीकानेर राजा रतनसिंह के सामने आत्मसमर्पण कर दिया लेकिन सांवताराम युद्ध करते रहे और घेरा तोड़कर भाग निकले। इस युद्ध के पश्चात सांवता मीणा का क्या हुआ? कहां रहे, कहां गए इसका कहीं भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। अब तक प्रकाशित पुस्तकों में घड़सीसर युद्ध के पश्चात सांवताराम का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

लेखक ने स्वयं इनकी वंशावली के अनुसार जानकारी पाने हेतु हरिद्वार जाकर गंगागुरू पं. गौरव सिद्धार्थ पोखरिया से मिलकर इस सन्दर्भ में जानकारी ली तो पता चला कि वंश परम्परा के अनुसार इनकी अस्थियों का विसर्जन भी हरिद्वार में नहीं किया गया। इनके त्याग और बलिदान को इतिहास में उचित स्थान नहीं मिल पाया। सांवताराम मीणा जीवन पर्यन्त देश की आजादी के लिए संघर्षत रहे।

ये स्वतंत्रता संग्राम के सिपाही थे।
अंग्रेजों के दिल दहलाने वाले,क्रांतिकारी वीर महान त्यागी थे।
लुटेरे और डाकू नहीं, स्वतंत्रता के सेनानी थे।

13-करणाराम मीणा का जीवन परिचय

करणा राम के पिता का नाम नाथूराम जी कांगस था। इनका जन्म लगभग सन् 1800 ई. के आस -पास मंगलूणा ग्राम में हुआ था। इनकी माताजी का नाम हाला था तथा विवाह रूपा के साथ संपन्न हुआ था तथा इनसे पुत्र. रत्न के रूप में धौकल और गाड़ो नामक पुत्र हुए जो वंशावली चार्ट में दर्शाए गए है। करणा राम को कई नामों से जाना जाता था जिनमें निम्न इस प्रकार है करणो, करण, करणियो, करणया, करणावत और करणाराम आदि नामों से जाना जाता था। जन्म से बालक करण होनहार था जिसने आगे चलकर राष्ट्रहित में इन्होंने अपने प्राण भी गंवाए ये इन विशेषताओं के साथ प्रखर योद्धा थे।

शारीरिक गठन

उच्च चरित्रवान होने के कारण करणा राम में शारीरिक बल अपार था, शरीर से मजबूत कद काठी का जवान था, गर्दन लम्बी थी, हाथों की लम्बाई घुटनों तक आती थी, चेहरा चौड़ा था। आँखों की रोशनी तेज थी, नाक मोटी सुन्दर थी, बड़ी-बड़ी दाढ़ी मुँछे रखते थे। शरीर इतना मजबूत था जब चलते थे तो धरती सी हिलती दिखाई देती थी।

वीर सैनिक तथा उच्च कोटि का सेनापति

करणा राम अपने समय का एक वीर सैनिक तथा उच्च कौटि का योद्धा था। उसमें सैनिक प्रतिभा कूट-कूट कर भरी हुई थी। अपने पिता के सानिध्य में ही उन्होंने युद्ध कुशलता पूर्ण रूप से ग्रहण कर ली थी।

आदर्शवादी व्यक्ति

वह एक आदर्शवादी योद्धा था, उसका जनता से सद्व्यवहार था। उसके सिद्धान्त बड़े उच्च थे। वह अपने आदर्शों की प्राप्ति के लिए सब कुछ करने के लिए उद्यत हो जाता था। वह गरीबों का मसीहा था, गरीब व्यक्ति के लिए हमेशा सेवा के लिए तैयार रहता था।

कर्मठ तथा कर्तव्य निष्ठ व्यक्ति

वह बड़ा कर्मठ तथा कर्तव्यनिष्ठ योद्धा था। वह अपना कार्य बड़ी लगन से करता था। अपने काम में हमेशा व्यस्त रहता था, वह अपने

कर्तव्य को भली भांति समझता था और उसको बड़ी वफादारी के साथ करता था। देश हित के कार्यों में बड़ी दिलचस्पी लेता था।

कूटनीति का ज्ञान

करणा राम कूटनीति का विद्वान था। वह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समस्त प्रकार की कूटनीति का प्रयोग कर सकता था। शत्रुओं को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लेता था। शत्रुओं के साथ ऐसा व्यवहार करता था कि वो इसके कायल हो जाते थे। वह अपने सरदार व जागीर के प्रति इतना वफादार था कि जागीर की रक्षा व उसकी शक्ति को बढ़ाने में कोई कमी नहीं छोड़ता था।

व्यवहार कुशल

करणाराम बड़ा व्यवहार कुशल योद्धा था, इसी गुण के कारण गरीबों का दल उसका सदा समर्थन करता था और उसकी हर संभव रूप से सहायता करते थे।

दृढ प्रतिज्ञा

करणाराम मीणा दृढ़ प्रतिज्ञा का धनी था और अपनी प्रतिज्ञा को वह सदैव पूर्ण करने का प्रयत्न करता था। वह हर सम्भव उपाय की शरण उसकी पूर्ति के लिए ले सकता था।

परिश्रमशील

करणा राम मीणा बड़ा परिश्रमशील था, उसमें अदम्य, उत्साह तथा साहस था और घोर आपत्तियों से तनिक भी विचलित नहीं होता था।

महत्वाकांक्षी

करणाराम मीणा बड़ा महत्वाकांक्षी सैनिक था, शुरूआत से उसकी आँखे अमीरों का धन लूट कर गरीबों को बांटने पर थी व अंग्रेजों के सख्त खिलाफ था। उनको देश से उखाड़ फेंकने के लिए रहता था। जिसके लिए उन्होंने अपने नेता डूंगरसिंह के साथ मिलकर अनेक बार अंग्रेजों के ठिकानों पर धावा बोला और उनको सबक सिखाया।

परिवार प्रेमी

करणाराम को अपने परिवार से विशेष प्रेम था, जब वह कई

दिनों तक बाहर रहता था तो अपनी पत्नी रूपा को पूरी जिम्मेदारी के साथ घर सम्भालने के लिए कहता था। वह अपनी पत्नी रूपा से अगाध प्रेम करता था वह अपने दोनों पुत्रों से अगाध प्यार करता था।

पुलिस व गुप्त विभाग

करणाराम मीणा पर डूंगसिंह को इतना विश्वास था कि उनको पुलिस से किस तरह बचना है, पुलिस उनका पीछा कहाँ-कहाँ कर रही है, किस जगह डाका डालना है, सभी गुप्तचर सूचना कहाँ से प्राप्त करनी है, कहाँ सूचना भेजनी है आदि सभी कार्य इन्हीं को संभलाए जाते थे। इनको खुफिया जानकारी की जिम्मेदारी सौंपकर डूंगजी निश्चित हो जाते थे।

उच्च आदर्श

करणा राम का व्यक्तिगत चरित्र बहुत उच्च था। वे आज्ञाकारी पुत्र, दयालु पिता, तथा उत्तरदायी पति थे। उनका अपनी माता पिता के प्रति अगाध प्रेम था और वे माता को देवी के समान मानते थे। उनमें उसकी आज्ञाओं का विरोध करने की शक्ति नहीं थी। वह हमेशा करणा को गरीबों की सेवा करने के लिए ही कहती रहती थी। वे अपने पुत्रों को तथा अन्य सम्बन्धियों से बड़ा प्रेम करते थे।

धार्मिक सहिष्णुता

करणा राम धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे। बाल्यकाल से ही उनको इस प्रकार की शिक्षा दी गई थी। वे माता जीण भवानी के परम भक्त थे। उनको साधु तथा महात्माओं से अगाध प्रेम था। वे उनको आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। धार्मिक प्रवृति ने किसी भी समय उनके मस्तिष्क को कलुषित नहीं होने दिया तथा यही धर्म परायणता उनको आगरे के किले की जासूसी के समय काम आई जहाँ पर उन्होंने साधु का वेश धारण करके आगरा के किले की जासूसी की तथा डूंगजी को वहाँ की कैद से छुड़ाया। उनमें ऐसी प्रवृति थी कि वे मुसलमान साधु सन्तों तथा कुरान का भी बड़ा आदर करते थे उनकी दृष्टि में हिन्दू - मुसलमान समान थे धर्म के नाम पर उन्होंने कभी कोई अत्याचार तथा रक्त-पात नहीं किया।

उच्च कोटि का पारखी

करणाराम मीणा मनुष्यों की परख करने की अद्वितीय शक्ति रखता था जब भी वह माल की खोज खबर के लिए जाता था तो वहाँ के लोगों को वहाँ की जगह को देखकर पता लगा लेता था कि यहाँ मुझे क्या करना है। अपने दल में जब ही किसी व्यक्ति को शामिल करता था जब उसको पूर्ण विश्वास हो जाता था। कि यह धोखे बाज व्यक्ति नहीं है, यह जिम्मेदारी भी डूंगरसिंह जी ने उसको ही दे रखी थी, जो विश्वास वाला पद था पारखी के अन्दर वो घोड़ों ऊँटों की भी बहुत बारीकी से परख करते थे। उस पशु को अपने दल हेतु तभी चयन करते थे, जब वह प्रत्येक जगह उनका साथ दे। उनके दल में इस तरह के ऊँट थे जो एक दिन-रात में 400 किमी तक का सफर तय कर लेते थे और अपने पास उत्तम किस्म का ऊँट रखते थे जो हवा से बातें करता हुआ दौड़ता था। इसलिए परख में लाजवाब थे।

वेश भूषा

करणा राम मीणा का पहनावा बड़ा ही सादा था वे पैरों से कमर तक ओछी ओछी धोती पहनते थे शरीर पर अंगरखी (कमीज) पहनते थे। एक हाथ में तलवार, कन्धें पे बन्दूक, कमर पर गिलोल, मजबूत बांस की लाठी तथा एक हाथ मे ढाल रखते थे। सिर पर इतनी भारी पगड़ी बांधते थे कि यदि दुश्मन का वार सिर पर भी हो जाए तो सुरक्षित बच निकलते थे। मूछें पर इतना जोश क्रोध रहता था कि दुश्मन सामने नहीं टिक पाता था।

I-करणाराम के द्वारा आडावल की घाटी में लूट

करणीया मीणा और लोठू जाट अपने सरदार डूंगसिंह के आदेशानुसार रामगढ़ शेखावाटी के सेठों के यहां जासूसी के लिए जाते हैं। रामगढ़ में नट का भेष बनाकर देखते हैं कि किस सेठ के पास कितना माल है और किसका माल कहाँ जा रहा है। जासूसी के दौरान पता चला कि सेठ घुरसामलजी व अनन्तमलजी का माल कतारां में लाद कर अजमेर भेजा जा रहा है। सूचना के मुताबिक डूंगजी अपने साथियों को लेकर आडावल घाटी में पहूँच जाते हैं और कतारों से पूरा माल लूट लेते है। उसको गरीबों मे बाँट देते है जब

सेठों को माल लूटने की खबर मिलती है तो वे अंग्रेज सरकार से डूंगजी व उसके साथी धाड़ातियों को पकड़ने का अनुरोध करते हैं। जिसको भोपों ने इस प्रकार गाया है।

घोड़ा नै दपटाय धावड़ी ग्या झड़वासै गांवजी।
अर घाटे ढलता दुड़ै धावड़ी मूंगा भरी कतारजी।।

II-करणाराम का फिरंगीयों के प्रति गुस्सा

करणराम मीणा अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोलता है कि राजाओं ने तो अपने शरीर पर औरतों के वेश धारण कर लिए हैं। सांची बात तो यह है कि राजाओं को तो राज से मोह है और राजसी ठाठ-बाट चाहिए उनको फिरंगियों से क्या मतलब वो तो उनकी छाती पर चढ़ते आ रहे है और तो और उनके सामने पलक-पांवड़े बिछा रहे है। बड़े शर्म की बात है। इतना सुनते ही डूंगजी गुस्से से लाल पीला होकर बोले वे राजा हैं और हम तलवार बन्द सैनिक हैं। हम क्या कर सकते हैं। इतना सुनते ही करणिया मीणा ने जमीं पर थाप मारी और गुस्से में हुआ और कहा उठावो तलवार कमर कसलो व दल बनालो तथा अंग्रेजों को लूट खसोट लो मार काट कर देश के बाहर कर दो। क्या देखते हो अंग्रेजो की फौज गाँव के बाहर आ गई है अपने गढ़ को चारों तरफ से घेर लिया है। यदि हम उनके सामने लड़ाई लड़ेंगे तो रूक नहीं पायेंगे क्योंकि उनकी तुलना में अपने पास सैनिक कम हैं। अपने तो एक काम करो गढ को छोड़ दो और बाहर चलो हम उनकी छावनियों को लूटेगें उनका खजाना लूटेगें। रात दिन जहाँ पर भी मौका मिलेगा वहीं उनको तंग करेंगे। इनको देश से निकलने पर मजबूर कर देंगे। सभी साथियों ने करणा मीणा की बात मान ली और अंग्रेजों को देश से निकालने की योजना बनाने लगे। उसी वक्त करणा राम कहता है कि मुझे सूचना मिली है कि शेखावाटी के कांकड़ पर अंग्रेजों की फौज पड़ी हैं उनके घोड़े हथियार माल सभी लूट लेते है चलो रात होते ही पूरे दल के साथ अचानक अंग्रेजों की छावनी पर टूट पड़े और घोड़े माल सभी लूट लाए और अपनी पार्टी को बाँट दिया।

III-करणाराम के द्वारा रामगढ़ में अनाज की जासूसी करना

करणाराम कहता है कि सेठों के पास अनाज के भण्डार भरे पड़े है। गरीब लोगों की कोई खैर नही ? राजपूताना में कई जगह अकाल पड़ा है। लोग भूखे प्यासे मर रहे हैं और ये अंग्रेज जमाखोरों एवं अनाज को दबाने वालों को कुछ नहीं कह रहे हैं। डूंगजी का चेहरा और अधिक उदास हो गया। बुझे स्वर में बोले यह गवर्नमिंट बड़ी ही निर्दयी है। आदमी के पास से बाजरी भाग गयी है और जानवरों के पास से घास-चारा के लिए चारों और त्राहि-त्राहि मची हुई है। करणाराम व लोठू जाट भेष बदल कर चल पड़े और रामगढ सेठान पहुँच गये सन् 1837 के आस-पास की बात है दोनों साथियों ने ख्याल तमाशा करने वाले नट का भेष बनाया बिलकुल मदारी की तरह वे घर-घर, गली-गली, चौराहा-चौराहा घूम-घूम कर खेल दिखा रहे थे। इसी बहाने इस बात का पता लगा रहे थे कि किसके पास कितना अनाज है। इस जाँच पड़ताल में उन्हें यह भी पता चल गया कि ये जमाखोर गरीबों को अनाज नहीं देगें वे सारा का सारा अनाज अजमेर भेजेंगे। वहां यह अनाज उन गौरों व उनकी सेना के काम आयेगा सारी जासूसी करके करणाराम व लोठू जाट बठोठ आए और अपने सरदार डूंगजी को पूरी खबर बताई।

रामगढ के सेठों के अनाज के बोरे रवाना होने वाले हैं। ऊँटो की बहुत कतार होगी अजमेर की सीमा में घुसने से पहले ही इन्हें हम लूट सकते हैं। इसके बाद लूटना कठिन है सीमा के अन्दर अंग्रेजों की बड़ी सेना मौजूद है। डूंगजी को करणा राम की बात सही लगी। वह पोशाक पहनकर तैयार हुआ बन्दूकें संभाली गई फिर सारे साथियों को इक्कठा किया गया। डूंगजी के साथी भाड़े के टट्टू नहीं थे। देश की स्वतंत्रता के पहले सिपाही थे सभी हथियारों से सुसज्जित हो गये। ऊँटो पर सवार वे लोग रवाना हो गये ठीक समय पर ऊँट सवार लोटिया जाट, करणिया, डूंगजी और अन्य साथी अनाज ले जाने वाली ऊँटो की कतार के पास पहुँच गए, उन्होंने उस कतार को घेर लिया। पहरेदार ने डाँटकर पूछा " आप कौन है " जानते नहीं ये कम्पनी सरकार बहादुर का माल है" करणाराम, डूंगजी ने उस पहरेदार को घृणा भरी नजर से देखा। फिर कड़क कर कहा " ओ गोरों के कुत्ते! हमने इस

कतार को क्यों घेरा है। इसका पता अभी लग जायेगा। कुछ ही पलों में इस अनाज के बारे मे चारों ओर खबर फैल गयी। आस -पास के गाँवों के भूखे लोग वहां जमा हो गए। वे डूंगजी व करणा मीणा की जै जै कार करने लगे। करणा ने इशारा किया। इशारा पाते ही सारे बोरों को तलवारों से फाड़ दिया गया। भूखी जनता अनाज पर बाज की तरह झपट पड़ी। डूंगजी के सैनिकों एवं पहरेदारों के आपस में युद्ध होता है। सभी एक दूसरे पर वार करते हैं। इध र भूखी जनता ने अनाज लूट लिया। बेशुमार अनाज था जिससे सभी लोगों की इच्छा पूरी हो गयी, लोगों ने डूंगजी करणिया मीणा व लोटिया जाट की जै -जै कार बोली। इस तरह करणाराम ने जमाखोरों और अंग्रेजों की मिली भगत को मिटा दिया और गरीब जनता को अनाज दिला दिया।

IV-करणाराम अपने दल का वफादार साथी

सिवऊ देवी सारदा कोई तनै भवानी ! ध्याऊ!
जा मरदा री छावली मै च्यारू कूंट में गाऊँ।

अर्थात्:- भोपाओं द्वारा गाये गये गाने के माध्यम से बताया गया है कि देवी सरस्वती को स्मरण करता हूँ। हे भवानी! तुम्हारा ध्यान करता हूँ। जिससे वीरों की कीर्ति को मै चारों दिशाओं में गा सकूं।

डूंग न्हार री कोटड़ाया जुड़ी कचेड़ी आय।
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही खूब पड़ै रजवाड़।
लोटयो जाट, करणीयो मीणो, डूंगसिंह सरदार।
तीनों मिल भेळा हुवै तो करे तीसरी बात।
बोल्यों डाकू डूंगंसिंह तू सुण रे लोटया जाट।
मिनखा निठगी मोठ बाजरी, घोड़ा निढग्यो घास।
मरंदा में तू मरद, आगलो हेरयांरो तू लाट।
रामगढ की हेर लगा दे, जद जाणू तोय जाट।
लोटयो जाट करणियो मीणो ज्यां रो व्हालो मेल।
डूंग न्हार री भरी कचेड़या लीनी बात सकेळ।
लोटयां जाट करणियो मीणा जयां रो व्हालो मेल।
लोठू जाट करणियो मीणो अकलां मायं उजीर।

भेख पलट बै चल्या रामगढ जाणू छूट्या तीर।
लोटयो लीनी ढोलकी कोई करणयो लीन्यो बांस।
घर-घर घाले ख्याल तमासा घर-घर भालै माल।

अर्थात्:- सिंह के समान डूंगसिंह की कोटड़ी में कचहरी आकर जुड़ी जाजिम पर जाजिम बिछ रही थी। खूब..... ठाठ बाठ था जाट लोटियो मीणा करणियो और सरदार डूगसिंह थे तीनों मिलकर इक्कठे होते हैं। तो तीसरी नई बात करते हैं। डाकू डूंगसिंह बोला अरे लोटिया जाट। तू सुन आदमियों के लिए मोठ बाजरी बाकी नहीं रही, घोड़ों के लिए घास नहीं रही, तू मर्दो में श्रेष्ठ मर्द है। जासूस का जासूस तू लाट है। तू रामगढ की जासूसी कर जाट। तब मै तुझे समझूंगा। जाट लोटिया और मीणो करणियों में जिनका प्यारा मेल था। डूंगसिंह की भरी कचहरी में इस बात को संभाल लिया। जाट लोटिया और मीणा करणिया बुद्धि में वजीर थे। वे वेश बदलकर रामगढ़ को चले मानो तीर छूटे हों। लोटिया ने ढोलक ली और करणिया ने बांस लिया। घर-घर में खेल तमाशा करने लगे और घर-घर में माल देखने लगे।

v-करणाराम डूंगजी के प्रति चिन्तित

बठोठ की बारादरी में जवाहर सिंह ने होली का त्योहार मनाने की ठानी उसने सभी लोगों को इक्कठा किया, देखते -देखते उसके डेरे में कई चापलूस एवं खाने पीने वाले टुकड़ खोर आ गए। जवाहर सिंह ने करणिया मीणा और लोटियां जाट को बुलाया, वे भी आए। सारे सरदारों को दारू पीते हुए देखकर करणिया मीणा बहुत ही उदास हो गया। उन्हें अपने मित्र डूंगजी की याद आ गई। इतना देखते ही लोठू जाट धीरे से बोला कहो करणिया! हम यहाँ त्योहार मना रहे हैं और हमारा सरदार हथकड़ियों में तड़प रहा है। यह बात जवाहरजी को सोचनी चाहिए थी कि यह घड़ी त्योहार मनाने की नहीं हैं। तब लोटिया जाट ने जवाहर जी को समझाया यह समय ऐसो-आराम का नहीं है। यह समय सरदार डूंगजी को छूड़ाने का है। जवाहरजी जवान था उसके खून में गर्मी थी जोश ज्यादा था पर ज्ञान की कमी थी। वह झट से बोला " जो जीवित है, उनके जतन' करने ही पड़ेगें। त्योहार सुखा नहीं जाना चाहिए। करणिया मीणा ने कहा " मगर सरदार के बिना हमें यह

त्योहार मनाना अच्छा नहीं लगता। लोग हमें स्वार्थी कहेंगे। तभी दूसरे सरदार बोल पड़े'' अरे इन मीणा जाट को त्योहार का महत्व का पता नहीं है। राजपूत कैद में भी गौरव पाता है। मर कर भी अमर कहलाता है। राजपूत असली राजपूत तब कहलाता है जब वह अपनों को सुखी करता है तुम्हारा भाई कैद में यातना भोग रहा है और तुम आनन्द मना रहे हो।

VI- करणाराम के द्वारा पान का बीड़ा उठाना

कचहरी में जब करणा मीणा लोठू जाट के आपस में चर्चा हो रही थी उसी वक्त डूंगजी की राणी गुस्से में आग बबूला हुई कचहरी में आ धमकी और सभी को ताना मारते हुए बोली कि तुम्हें शर्म आनी चाहिए तुम यहाँ मौज आनन्द मना रहे हो और आपका सरदार जेल की सलाखों में पड़ा सड़ रहा है। इतना सुनते ही करणा मीणा व लोठू जाट एक साथ बोले राणीसा हम भी यही कह रहे हैं परन्तु हमारी बात तो यहाँ कोई सुनने वाला नहीं है। परन्तु महारानी जी हम लाएंगे ठाकुर डूंगजी को, एक साथ लोठू जाट व करणा मीणा बोले। ठकुरानी ने उसी समय एक लड़की को पान लगाकर लाने के लिए कहा। थोड़ी देर में पान का थाल आ गया। ठकुरानी ने सब सरदारों की ओर देखकर कहा यह पान का बीड़ा वही उठाएगा जो डूंगजी को छुड़ाकर लाएगा। कोई माई का लाल इस बीड़े को खाने वाला है कि नहीं। यह सुनते ही सब तरफ सन्नाटा फैल गया। ऐसा लगा कि मानो सभी को साँप सूंघ गया है। ठकुरानी ने फिर देखा। डूंगजी के भाई, भतीजे उमराव और सगे सम्बन्धी सब बीमार लगने लगे उन्हें बुखार चढ़ आया। धिक्कार हैं आपसे .....ठकुरानी बोली! पीछे से दो जवानो की आवाज एक साथ 'आई रूकिए ठकुरानी जी!' करणिया मीणा व लोटिया जाट शेर की तरह दहाड़ते हुए बोले, आप सबको धिक्कार मत दीजिए। यह पान का बीड़ा हम खाते हैं। हम प्रतिज्ञा करते है कि हम अपने सरदार को छुड़ाकर लाएगें या मर जाएगें '' धन्य मीणा जाट जी'' ठकुरानी ने दोनों का आभार प्रकट किया, और कहा आप ही उनके सच्चे दोस्त, भाई और अपने हैं। दोनों वीर ठकुरानी की शुभ कामना से आगरा की ओर प्रस्थान करते हैं।

VII-करणाराम का आगरा के लिए प्रस्थान

आगरै ने चल्यौ करणियो ज्यूं लकां हणमान।
के ल्यावेलो खबर डूंगकी, के त्यागे लो प्राण।।

करणाराम व लोठू जाट अपने-अपने ऊँट से आगरा पहुँच गए और वहाँ बाजार में पहुँचने के बाद विचार-विमर्श करने लगे कि हम किस तरह किले तक पहुँच सकते है, क्या उपाय करें इस तरह काफी देर तक विचार-विमर्श करने के उपरान्त करणा मीणा के दिमाग में अचानक विचार आया कि लोठू एक काम करते है, हम अपने ऊँटो को तो बेच देते है और बाजार से भगवा वस्त्र लेकर आते है तथा साधु का भेष धारण करते हैं। अपना धुणां किले के गेट के पास लगाते है। जिससे कोई जानकारी मिल सके। इसलिए लोठू आप तो बाबा जी का भेष धारण करो मैं आप का चेला बन जाता हूँ। जिससे मैं मेरी विद्या से किले की जासूसी करता रहूँगा और अपना गुजारा भी चलाता रहूँगा। लोठू ने कहा करणा आप अक्ल में बहुत होशियार हो जैसा आप कहते है वैसे ही करेंगे। इस तरह दोनों आपस में बातचीत करके भगवा भेष लाकर आगरे के किले के दरवाजे के पास धूणां लगा लिया और लोठू जाट बाबा और करणा मीणा चेला बन गया।

किले के पास एक अंग्रेज सिपाही कुछ सिपाहियों को जाकर कहता है। आज किले के पास दो साधु आए हुए है। उन्होंने किले के सामने ही धूनी जगादी है। बाबा के रूप में लोठू जाट ने अपने चारों और आग जला ली। आग के बीच वह हठयोगी की तरह बैठ गया। करणिया मीणा चमत्कारी बाबा का चेला बनकर उसका प्रचार करने लगा। वहाँ लोग आने-जाने लगे। चंद ही दिनों में बाबा के चमत्कारों का प्रचार-प्रसार होने लगा। किले के आस-पास यह चर्चा फेल गयी कि बाबा मरे हुए को जिन्दा कर सकता है। वह चुटकी बजाते ही रोग दूर कर देता है। एक दिन एक अंग्रेज अफसर आया उसके साथ अंग्रेज और हिन्दुस्तानी सिपाही थे। अंग्रेज अफसर ने बाबा को देखा तो बोला बाबा यहाँ से चले जाओ। यहाँ हमारा किला है उसमें चोर-डाकू बन्दी है।

लोटिया जाट हँसा और बोला, कौन-चोर है और कौन डाकू यह तो ईश्वर ही जाने। पर तुम कल तक जरूर कोई चमत्कार देखोगे। हम चमत्कार देखेगा तो तुमको नमस्कार करेगा। अंग्रेज अफसर चिल्लाया! तो बाबा लोटिया ने करणिया मीणा की ओर देखा। करणिया मीणा ने अपने दिमाग से होशियारी से काम लेते हुए वहाँ खड़े एक सिपाही की ओर देखकर कहा, क्यों भाई अनवर क्या तेरी बीवी को बाबा ने चुटकी बजाकर ठीक नहीं किया। इस तरह करणा बाबाजी की सेवा भी करता व आने-जाने वाले अंग्रेज अफसर, सैनिक व अन्य लोगों पर अपनी नजर रखता था, साथ ही भिक्षा के नाम पर किले के आस-पास भिक्षा मांग कर लाता था। जिससे किले की जासूसी कर सके, किले की जासूसी करने की जिम्मेदारी उसने स्वंय ने ली थी जिससे वह पूरी खोज खबर कर ले कि यदि युद्ध करके भागना पड़े सीधा रास्ता कौनसा रहेगा आदि तरह के रास्ते वह रोज नजर से निकालने लगा उसका रोज का काम भिक्षा लाना व किले की जासूसी करना और सारी खबर रात को बाबा को बताना। जिस पर दोनों रात को चिन्तन मनन करते थे। इसके साथ बाबाजी की महिमा का वर्णन लोगों तक पहुँचाता था। जिससे लोगों को व पुलिस को शक नहीं हो कि यह कोई जासूस है, गली-गली घूमता और बाबा के चमत्कारों का वर्णन करता यही कार्य वह रोज करने लगा जब उनको महसूस हो गया कि अब अपने को महल में प्रवेश करना चाहिए। अपनी विद्या से महल में प्रवेश करते हैं।

VIII- करणाराम के द्वारा किले का अन्दर से अवलोकन

करणिया मीणा और लोटिया जाट दोनों किले में प्रवेश करते हैं। अंग्रेज अधिकारी ब्लूकिंग ने बड़ी श्रद्धा से किले को अच्छी तरह दिखाया। करणिया मीणा किले के रास्तों का बड़ी बारीकी से अध्ययन करने लगा। बाबा लोठिया ने अंग्रेज अफसर को अपनी बातों में उलझाऐ रखा। इधर करणिया किले की सम्पूर्ण चाहर दीवारी, झरोखे, सीढियाँ और बाहर निकलने के गुप्त रास्ते आदि का अवलोकन कर रहा था। किले के अन्दर कितने पहरेदार सादा वर्दी में हैं कितने बन्दूक धारी हैं और कौन-कौनसी जगह खड़े होते हैं? उनकी

क्या-क्या ड्यूटी लगी हुई हैं। जब गैरवा वस्त्र पहने हुए बाबा जी के भेष में पीले वस्त्र पहन रखे थे शरीर बलिष्ठ था चेहरे पर चमक थी जिससे उनका चेहरा सूर्य की भाँति चमक रहा था। जिससे सभी चौकीदार रास्ते में मिलने वाले उनको दुआ सलाम ही कर रहे थे और गुरू चेला को आगे-से आगे रास्ता दिखा रहे थे, कोई भी उनको टोका टिप्पणी नही कर रहा था।

IX-करणाराम डूंगजी को ढूँढकर आगरा से वापस प्रस्थान

जिस तरह हनुमानजी माता सीता को लंका से तलाश कर लंका की गहन जानकारी लाकर अपने नेता सुग्रीव व अपने भगवान श्री राम को दी थी। अपनी जान पर खेलकर उसी तरह करणिया मीणा भी अपने साथी डूंगजी की तलाश आगरा के किले की जेल में करके वापस प्रस्थान के लिए तैयार हुए। अपने पीताम्बर पीले वस्त्र साधु वेश मां यमुना के जल में बहाकर, मां से आगामी योजना में सफलता का आशीर्वाद लेकर वहाँ से प्रस्थान किया और सीधे आगरे के पशु मेले में आए, जहाँ रोज पशुओं की बिक्री होती थी। वहाँ अपनी मन पसन्द की एक-एक ऊँटनी खरीदी जो दौड़ती थी तब हवा से बात करती थी। क्योंकि पैसे की उनके पास कोई कमी नही थी, इसलिए अपनी पारखी से बढ़िया किश्म की ऊँटनी ढूँढकर खरीद कर बठोठ के लिए प्रस्थान किया। लगभग 250 किमी. का रास्ता उन्होंने रात भर में तय कर लिया और सीधे ही जहाँ डूंगजी अपना विश्राम करता था वहाँ पहुँचे।

X-करणाराम का बठोठ में डूंगजी के परिवार से मिलन

करणाराम मीणा व लोठू जाट बठोठ पहुँचे, डूंगजी के विश्राम गृह में रूके। उनके आने की खबर सुनते ही डूंगजी की राणी, डूंगजी का बेटा और जवाहरजी आ पहुँचे। ठकुरानी ने बड़ी बेचैनी से पूछा "वे कैसे है" आप दोनों उनसे मिले थे क्या? डूंगजी का नन्हा बेटा कंवर लोठिया की धोती पकड़कर बोला चाचा-चाचा मेरे कंवरसा कहाँ हैं! बताओ आपने उन्हें कहीं देखा क्या? उधर जवाहर जी करणिया से डूंगजी के विषय में पूछते हैं, तीनों बड़ी बेचैनी व उत्सुकता से पूछ रहे है। तब करणा व लोटिया जाट आपस में लम्बी सांस ली, उनकी आंखे गीली हो गयी वे दुख भरे स्वर में बोले ठकुरानीजी! डूंगजी राजी खुशी हैं, पर इस जीवन से तो मौत भली, उनका

शरीर हथकड़ी, बेड़ियों और तोख-जंजीर, काठ कोरड़ा में जकड़ा है वह सिंह! बड़े दुख की बात तो यह है कि उन्हें कुछ दिनों के बाद "काला पानी" भेज दिया जाएगा। वहां से वे क्या, उनकी मिट्टी भी कभी नहीं आएगी। ठकुरानी यह सुनते ही सुबक-सुबक कर रोने लगी। उसके साथ डूंगजी का फूल सा बच्चा भी रोने लग गया। करणिया मीणा व लोटिया जाट की आँखे भर आई। बड़ी देर के बाद राणी बोली अब क्या होगा? करणिया मीणा लोठू जाट दोनों एक साथ बोले राणी सा हम अपनी जान पर खेल जाएंगे, परन्तु हमारे सरदार को छुड़ाने की हमने प्रतिज्ञा ले ली है। तब जवाहरजी व राणी ने कहा मगर कैसे, अब अवसर आया है कि हम अपने साथियों सम्बन्धियों सैनिकों एवं अपने दल के सभी सदस्यों की परीक्षा लें, करणिया मीणा ने कहा। इतने में बालक कुवंर करणाराम से पुछता है चाचा-चाचा यह काठ कोरड़ा क्या होता है। मैंने हथकड़ी, बेड़ियाँ आदि से सजा देने का नाम तो सुना है परन्तु काठकोरड़ा क्या होता है यह कैसा होता है। इसके विषय में जरा मुझे समझाएं। मेरे बापू को ऐसी कौनसी सजा दे रखी है

XI-करणाराम के द्वारा काठ कोरड़ा की जानकारी देना

मारवाड़ी में कोरड़ा कोड़े को कहते है। काठ कोरड़ा काठ का तो होता था लेकिन कोड़ा या कोरड़ा नहीं होता था। राजाओं या पुलिस द्वारा अपराधियों को काठ कोरड़े में डालकर अपराधी से अपराध कबूल कराया जाताथा। काठ कोरड़ा काठ के दो टुकड़ों से बनता था। दोनों टुकडें एक दूसरे पर रखे रहते है और एक तरफ कब्जों से जुड़े रहते है। दूसरी तरफ उन में से निचले हिस्से में कुन्डा और ऊपरी हिस्से में कूंटिया लगा रहता है। इस भाग में ताला लगा दिया जाता है। काठ के दोनों टुकड़ों में तीन चार जगह अर्ध चन्द्राकार दो-दो कटाव होते थे। निचले काठ में अपराधी के पाँव की पिन्डली का निचला हिस्सा रखकर काठ का दूसरा हिस्सा ऊपर रख दिया जाता है। एडी से लेकर पैर की उंगली तक का पूरा भाग काठ के बाहर रहता है। अपराधी हजार कोशिश करके भी उस छोटे से छेद से अपनी एडी बाहर नहीं कर पाता है। अपराधी के दोनों पाँव फंसे रहते और वह कोरड़े के बाहर पीठ के बल लेटा दिया जाता है। उसे भोजन, पानी भी नहीं दिया जाता है। केवल

न के बराबर भोजन दिया जाता है जिससे वह जिन्दा रह सके। उसे मौसम के अनुसार सर्दी, गर्मी, वर्षा आदि भी सहन करनी पड़ती है। इस भंयकर यंत्रणा से पीड़ित होकर अपराधी अपना अपराध स्वीकार कर लेता है। जब काठकोरड़ा के विषय में बालक को बताया तो बालक कुँवर बहुत अचम्भित हुआ और बोला मेरे बाबोसा को तो अंग्रेज अधिकारी बहुत परेशान करते होंगे न.....ठकुरानी सारी बातें सुन रही थी और बीच में बात काटते हुए बोली करणियाजी ये काला पानी क्या होता है यह कौनसी सजा होती है यह कोई कठिन सजा है क्या? तब करणिया बताता है महाराणी जी यह सजा एक ऐसी सजा है। जिसके लिए कैदी को एक दुर्गम स्थान पर पहुँचा दिया जाता है। बताया जाता है कि वहाँ गया हुआ कैदी वापस घर वालों से कभी नहीं मिल सकता है। जैसा मैंने सुन रखा है काला पानी क्या है?

XII-करणाराम के द्वारा सेल्यूलर जेल (काला पानी) की जानकारी

यह जेल अंडमान निकोबार द्वीप में स्थित पोर्ट ब्लेयर में बनी हुई है। यह अंग्रेजों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को कैद रखने के लिए बनाई गई थी। जो कि मुख्य भारत भूमि से हजारों किलोमीटर दूर स्थित है। व सागर से हजार किलोमीटर दुर्गम मार्ग पड़ता है। यह काला पानी के नाम से कुख्यात है। अंग्रेजी सरकार द्वारा भारत के स्वतंत्रता सेनानियों पर किए गए अत्याचारों के साथ ही उनको इस जेल में रखा जाता है। यहाँ जेल के अन्दर 694 कोठरियाँ हैं। इन कोठरियों को बनाने का उद्देश्य बंदियो के आपसी मेल जोल को रोकना है। भारत की आजादी के लिए लड़ी गई पहली जंग में विभिन्न प्रकार के राजनैतिक विद्रोहियों के साथ-साथ खतरनाक किस्म के अपराधियों को भी निर्वासित कर दिया गया। अंडमान द्वीप की इसी दंडी बस्ती को काला पानी तथा निर्वासित कैदियों को दामिली का नाम प्राप्त हुआ। भारतीय बंदियो के लिए प्रथम दंडी बस्ती या पीनल सेटलमेंट अंग्रेजों ने सागर पार सुमात्रा के बेंकोलीन नामक स्थान पर बनाई थी। अंग्रेजों ने इस पर 1685 में अधिकार किया था। सबसे पहले 1787 में भारतीय बंदियों को यहाँ मार्लबासे के दुर्ग में निर्वासित किया गया था। यहां भेजे जाने वाले अधिकांश बंदी हत्या, लूट, डकैती, ठगी और धोखा धड़ी के अपराधों के लिए दंडित किए

गए थे। 1823 में जब बेंकोलीन पर डचों का अधिकार हो गया तब इन बंदियों को मलाया के पेनांग नामक स्थान पर बने एक अन्य दंडी बस्ती में स्थानांतरण कर दिया गया। इस स्थानांतरण के समय बेंकोलीन में बंगाल व मद्रास प्रेसीडेंसी से आए कुल लगभग 800&900 भारतीय बंदी थे। बेकोलीन से पेनांग के अतिरिक्त सिंगापुर तथा मलक्का में दंडी-बस्तियां बनायी गयी थी। 1832 में इन सबको सिंगापुर भेज दिया गया। इनके अतिरिक्त अंग्रेजों ने 1826 के बाद म्यांमार में अराकान व तेनासरीम में तथा मॉरीशस में भी दंडी बस्तियों का निर्माण किया था। कालापानी कारावास के जन्म दाता मैकाले द्वारा एक ऐसी दंड तकनीक को विकसित करना था जो अराजकता के स्थान पर व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त कर सके। 1835 में ही उसने एक समिति का गठन कर कारावास के नियमों को विकसित करने का कार्य किया। इस समिति ने एक ऐसी कारावास व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया, जिसमें प्रत्येक कारावास का एक अधीक्षक हो, प्रत्येक बंदी के सोने के लिए एक अलग स्थान हो, एकांत काल कोठरी की व्यवस्था हो, तथा भौतिक सुख अनुपस्थित हो। अंडमान के दंडी बस्ती में निर्वासित बंदियों को दंड व अनुशासन के जिन नियमों के अंतर्गत रहना पड़ता था उनका मूल स्रोत उक्त मैकाले समिति द्वारा विकसित वही कारावास व्यवस्था थी जो 1830 में बनायी गयी। इतना सुनतेही राणी को चक्कर आने लगे और वह बोली करणियाजी, लोठूजी, जवाहरजी आप यथा शीघ्र अपने सरदार को छुड़ावें अन्यथा अनर्थ हो जायेगा। मैं अनाथ हो जाऊँगी मेरे बच्चे अनाथ हो जायेगे। इस तरह विलाप करती हुई तीनों से निवेदन करती है और जल्दी से जल्दी छुड़ाने के लिए कहती है।

XIII-करणाराम के द्वारा सेना संगठित करना

डूंगजी को छुडाने की योजनाऐं बनायी जा रही है वहाँ लोटियां जाट कहता है।

बड़कै बोलै जाट लोटियो सुण शेखावत बातजी।
जोर जरब रौ काम नी, उठै है अंग्रेरेजी राज जी।।

जवाहर ने कहा- मै अभी सवारों को सगे सम्बन्धियों के यहां भेजता हूँ। उन्हें सही स्थिति से परिचित कराता हूँ। चारों ओर बाल्या नाई उनके गुप्तचर का

काम करता था। उसके द्वारा चारों ओर के योद्धाओं को समाचार दिया गया। देखते ही देखते बठोठ में बड़े ही गुप्त ढंग से शेखावत, बीदावत, तंवर, पंवार, मेड़तिया, नरूका, चौहान, मीणा, बलाई, नाई, लुहार, सुनार, चंद गुंसाई, साधुसंत और दादू पंथी संत सब जमा हो गए। उन दिनों में साधु भी फिरंगियों के विरूद्ध एक आन्दोलन चला रहे थे। रात के समय एक बैठक हुई। बैठक एक तहखाने में हुई और बड़ी ही गुप्त ढ़ंग से हुई। इस बात का ध्यान रखा गया कि किसी को कानों कान खबर न हो। गुप्त बैठक में काफी कसमकस करने के उपरान्त एक निर्णय करणिया मीणा के द्वारा सुनाया गया कि अपने को आगरा चलने के लिए एक बारात बनानी है और उसमें एक दूल्हा बनाना है। जिसको दोहे के द्वारा भोपों ने इस प्रकार गाया है।

XIV-करणाराम के द्वारा बारात की योजना बनाना

झूठी मूठी जान बणा लो, झूठो जान रो बीन।
चुग-चुग करलां कूंची मांडो, चुग-चुग घड़लां जीण।
झूठा बांधो कांकड़ डोरड़ा, सिर सोने रो मौड़ जी।
आपां तो जानेती वणल्यां, बीन बणै भोपाल जी।
जोधपुर री जान सिर बिणायौ, रूवां परणी जाण जाय जी।
दोय जणा जांगड़िया बणकै, सिंधु द्यौ अरसाळ जी।
हाथा पगां कै बांधो डोरडा, सिर सोना को मोड़जी।
काना घाळां मामा मुरकी, गळ में घाळो गोय जी।
लाल चौभाणै मामा मोचा, लाल कनारी जोड़ो जी।
लाल पाघड़ी रातो वागो, रातै महिपै चोड़ो जी।
हाथां का हथियार ले लिया, खाबा को सामान जी।
जान बणाय र चल्या आगरै, हर राखैळो मान जी।
रात-रात बै चलै जनैती, दिन ऊग्यां ठम जायजी।
आगरे रै तीन कोस पर डेरा दिया लगाय जी।
आगरे रे तीन कोस पर रेवड़ चरतो जायजी।

अर्थात्:- झूठ-मूठ की बारात बना लो झूठा बारात का दूल्हा बना लो, चुन-चुन कर ऊँटो पर जीन कसो, अच्छे-अच्छे चुन-चुन कर घोड़ों पर जीन रखो, झूठे बांध लो कांकड़ डोरड़े और सिर पर सोने का मोड़ रख लो, हम सभी लोग बराती बनेंगे, भोपालसिंह को दूल्हा बना दो, राजस्थानी जोधपुरी बारात बनाकर बीन अपनी दुल्हन को ब्याने (शादी) करने के लिए जाए, दो आदमी ढोली बनकर सिंधु राग आरम्भ कर दो, दुल्हे के हाथों पैरो में कांकन डोरड़े बांधो और सेवरा सिर पर सोने का मुकुट लगा लो। कानों में मामा मुरकियां पहनाओ, गले में गोप डाल दो, लाल चौभाणे की मामा-जूतियाँ पहना दो अर मामाओं की ओर से लाल किनारी की धोती पहना दो, लाल जामा और लाल पगड़ी पहनाकर मस्त ऊँट पर बीन्द को सवार कर दो। सभी बराती अपने-अपने हाथो में हथियार ले लो, साथ में खाने का सामान बांध लो और बरात को आगरे कि ओर प्रस्थान कर दो, और भगवान का नाम लेकर मां जीण की प्रतिष्ठा करके उसको सुमरण करलो और बरात को रात-रात में चलाओ और दिन निकलते ही रूक जाओ आराम कर लो यानिकि ठहर जाओ।

इस तरह करणीया मीणा व लोटिया जाट ने डूंगजी को आगरे की जेल से छुड़ाने (निकालने) के लिए मजबूत छेनी-हथोड़िया भी ले ली उसने सबको बता दिया कि आगरे की जेल के सरिया लोहे के बहुत मजबूत हैं। उनको तोड़ने के सख्त औजारों की जरूरत होगी, इसके लिए दो होशियार लोहार भी लिये गये जिसमें सांखू लुहार मुख्य था। आखिर में सारे सामान का बन्दोबस्त करके बरात बठोठ से रवाना हुई। जैसे कि दोहे में बताया गया है कि बरात रात में चलनी है और जहाँ सूर्य भगवान उदय हो जाते हैं, वही अपना डेरा जमा लेना है, इस तरह चलते-चलते वे आगरा के नजदीक पहुँच गए। आगरा से तीन कोस पर अपना डेरा लगाया और सभी बाराती अपना-अपना सामान निकाल कर आराम करने लगे। अब करणिया के दिमाग में एक बात उपजी कि मैं एक काम करता हूँ जो यमुना के किनारे भेड़ों का रेवड़ चर रहा है उसमें से एक मींडा खरीद कर लाता हूँ। जवाहर जी बोलता है करणिया, मींडा का क्या करोगे तेरी आदतचोरी जैसी ही रही क्या तुम उसे खाओगे, हमें समझ नही आ रहा तेरी क्या योजना हैं हमें तो बताओं ?करणाराम बोला

जवाहरजी मींडा का मींडासिंह बनाना है इसको मारकर मुर्दा बनाना है और मुर्दा बनाकर कम्पनी बाग में इसको जलाएंगे। उसकी धुआँ चारों तरफ फैल जायेगी फिर वहीं उसका क्रिया कर्म करेंगे इस दरमियान अपनी योजना किले में प्रवेश की बना लेगे। जब जवाहरसिंह व साथियों ने कहा अरे वाह! करणिया तेरे दिमाग को सलाम करते हैं तुम तो बहुत होंशियार हो वाकई में आपको तो वीर हनुमान की पदवी देनी चाहिए। जो तुम इस कार्य को बुद्धि से कर रहे हो। अब आगे की योजना के बारे में क्या कहते हो तब लोटिया जाट व करणिया मीणा और अन्य लोग अब आगे की कार्यवाही पर विचार करने लगे। उन्होंने सोचा कि अब हमें सही अवसर मिलना चाहिए उसके लिए बारात का रूकना जरूरी है मगर बिना ठोस कारण के बारात ठहर नहीं सकती। दुश्मनों को संदेह होगा इसलिए मैंने यह योजना बनाई है।

xv-करणाराम के द्वारा मींढा खरीदना

करणाराम की नजर रेवड़ पर पड़ चुकी थी और योजना के अनुसार एक मींडा लाना था। उसके लिए वह रेवड़ में मींडा लेने के लिए यमुना के किनारे चल दिया और ग्वाले के पास जाकर राम-राम की, रेवड़ चराने वाला गुर्जर था, करणिया मीणा को देखकर उसने राजस्थानी समझकर रामा श्यामा की तथा अपने पास आने का कारण पूछा।जब करणिया बोला भाई पहले आपका नाम तो बताओ, तब गुर्जर के लड़के ने कहा मेरा नाम श्यामसिंहगुर्जर है। आप तो मेरे योग्य सेवा बताओ तो करणिया बोला भाई हमें एक मींडा चाहिए। गुर्जर के लड़के ने कहा एक नहीं दो लीजिए। नहीं भाई एक ही चाहिए आप तो उसकी कीमत बताओ क्या लोगे। बताया जाता है उस समय भारत वर्ष में अतिथियों की सेवा करना हिन्दू मुसलमान अपना नैतिक धर्म समझते थे। इसलिए श्याम सिंह गुर्जर ने कहा "आप बड़े सरदार लगते हैं मैं आप से पैसे लेकर कहाँ रखूगां आदि बातें गूर्जर ने विनम्रता से की और कहा इन भेड़ों की क्या कीमत है? यह तो आपके मान के सामने कुछ नहीं आप परदेशी हैं यह तो मेरा भाग्य कितना अच्छा है कि मुझे आपकी सेवा करने का मौका मिला है।आप मुझसे एक मींडा मांग रहे हैं मैं आपकी सेवा में पाँच मींडे भी समर्पित कर दूं तो भी कम है। करणिया गुर्जर की वफादारी व मेजमानी से बहुत खुश

हुआ और सोचा व उस गुर्जर को देखा एकदम फटेहाल और गरीब, फटी हुई जुतियाँ करणिया ने सोचा कि इससे मुफ्त में मींडा लेना ठीक नहीं रहेगा। इस गरीब के साथ अन्याय होगा। यह सोच कर करणिया बोला देख भाई हम बाराती है इसलिए मुफ्त का मींडा नहीं ले सकते यदि तुम पैसे नहीं लोगे तो हम ऐसे ही चले जाएँगे। उस गुर्जर ने हिचकते हुए कहा यह बात तो ठीक तो नहीं है पर आपको ऐसे भी मैं नही जाने दूँगा। आप मुझे पाँच रूपये दे दीजिए। पाँच रूपये की जगह करणिया मीणा ने उसे सात रूपये अपने जेब से निकालकर दे दिए और उससे एक मींडा लेकर डेरा में आ गया। भोपों के द्वारा गाया गया गीत है

गुर्जर ने तो राजी करने मींढो ल्यावौ मोल जी।
गुजरां रा तू डाबड़ा स तू कह मीठे रौ मोल जी।
क्या मींढे रा माजनास बो खड़ दोखे मर जाय जी।
क्या मींढे रा माजनास कोई न्हार चोर ले जाय जी।
थे परदेशी आदमी स थे गुलागात ले जाय जी।
गुर्जर ने तो राजी करले मींढो ल्याया मोल जी।
झूरे बटका किया स मीढै ने दीन्हौ मार जी।
खाल बाल तो बार उड़ादी मुड़दा लिया बणाय जी।

अर्थात् :- गूर्जर को खुश करके मींढा मोल लाया। गुर्जर के लड़के आप मींढा का मूल्य बताओ। लड़के ने कहा आपके सामने मींढा क्या लगे वह पेट दुख मर जावे, मींढा का क्या मोल उसको चोर डाकू ले जाये। आप परदेशी आदमी है यदि आप को मींढा ऐसे ही देता हूँ तो मेरा अतिथि सत्कार पूर्ण होता है। गूर्जर के लडके को राजी करके मींढा को मोल ले आया। करणाराम ने एक ही झटके में मींढे को मार दिया और उसकी खाल बाल सभी उखाड दिये और उसको मुरदा बना दिया।

XVI-करणाराम के द्वारा किले में प्रवेश की योजना बनाना

करणा राम ने लोठू से कहा लोटिया आप तो किले में प्रवेश हेतु अपने सैनिकों में से ताकतवरों को चुनो जो अपने साथ जैल तोडने में अग्रणी रहे और बहादुर, साहसी, हिम्मत वाले हों उनको अपनी योजना के अनुसार तैयार करो और मैं किले में प्रवेश करने हेतु एक 80 फुट लम्बी सीढी तैयार करता हूँ क्योकि आज शहर में मुहर्रम का त्यौहार है ताजिया निकलने वाले हैं ताजियों की व्यवस्था करने के लिए किले में से बहुत सारे सिपाही मुहर्रम व्यवस्था हेतु चले गये हैं और अब हमे उनके पीछे से जेल पर हमला बोल देना चाहिए यदि इस बार दाव हार गए तो फिर हम नहीं जीत सकते। लोटिया ने कहा चार नसेनियां लगाई जाए मेरे साथ सांखू लूहार करणिया मीणा और जोर जी पहले जाएंगे। इसके बाद आप सब लोग जैस-जैसे मौका मिले उस हिसाब से किले में प्रवेश करो। तब तक हम चारदीवारी की पट्टी पर खड़े रहेंगे। आक्रमण बहुत तेजी से होना चाहिए सारे दल के लोगों ने सीना ठोक कर कहा कि वे शत्रु को साँस भी नहीं लेने देंगें। जब वे चारों किले के बुर्ज पर पहुँच गए तो छोटे-छोटे दलों में बँट गए। एक दल किले के पहरेदारों की ओर गया और करणिया मीणा और लोटिया जाट ने माँ जीण भवानी का ध्यान किया और डूंगजी वाली बुर्ज से अन्दर कूदते हुए डूंगजी की तरफ चल दिये इनके साथ सांखू लौहार, जोरजी आदि थे जो डूंगजी के पास पहुँचे। लोटिया ने जयकार की, करणा ने जय की और सांखू से कहा हथकड़ी और बेड़ी काटो। दोहे के माध्यम से बताया है :-

लोटयो जाट करणियो मीणो माताजी नै ध्यायी।
दोय घड़ी कै मांयने बा नीसरणी रै लगायी।
छटवा छटवा कुद पड़या बै लाल किलै के मांय।
लेरा-लेरा बगै करणियो, आगे-आगे लोटयो जाट।
बोले छै तो बोल डूंगजी देवा बेडी काट।

अर्थात् :- लोठूजी जाट व करणा मीणा ने माताजी का ध्यान किया और दो घड़ी के भीतर चार दीवारी पर सीढी लगा दी फिर चुने-चुने वीर किले में कूद पड़े, पीछे पीछे करणिया मीणा लोठू की सुरक्षा देखते हुए चल रहा था और आगे आगे लोठू जाट। इस प्रकार वे डूंगजी वाले बुर्ज के पास पहुँच गए और आवाज दी हे डूंगजी बोलता है तो बोल बेड़ी काट दै।

बंधवे आगे बंधवो चाल्या सगला सागै उढ।
चोवीस बंधवा साथै उळटया, नीसरणी गयी टूट।
नीसरणी तो दगो दियो, अब दरवाजो ने चालो।
भली करी रै बंधवा। थे काम कर दियो कालो।
कोई ले लो छूरी कटारी, कोई बरछी भालो।
अैक सागै पड़ो उळटकै, खंवौ खंवूं सूं जोड़ो।
रामा दळ ज्यू लंका, यू दरवाजो तोड़ो।

अर्थात् :- करणाराम के द्वारा बनाई हुई सीढी जिसको पाँच छः आदमियों को एक साथ किले से बाहर निकालने के लिए बनाई थी उसके ऊपर कैदी जेल से छूटते ही एक के बाद एक कैदी भाग छूटे और सब एक साथ उस पर चढ़ गए जिससे सीढ़ी टूट गई। तब बोले सीढी ने तो धोखा दिया, अब दरवाजे की ओर चलो, कैदियों तुमने खूब किया, काम बिगाड़ दिया, अब कोई छूरी, कटार और कोई बरछी भाला ले लो एक साथ टूटो, कंधे से कंधा भिड़ा दो। राम की सेना ने जिस प्रकार लंका को तोड़ा था उसी प्रकार दरवाजा तोड़ो।

XVII-करणाराम के आगरा किले में प्रवेश करने पर संसार में नाम

आगरे के किले की इस जीत से करणिया मीणा और लोठू जाट का पूरे देश में नाम हो गया। चारों और प्रसिद्धी फैल गई। उनके नाम गीतों की कड़ियों में गाए जाने लगे। बहुत से लोक काव्य घटनाएँ इनसे प्रभावित होकर लिखी गई। यह घटना लोगों की प्रेरणा स्रोत बनी और इसकी परिस्थितियाँ नाटक के रूप में लोगों के मानस पटल पर छा गयी। करणाराम को जनता का समर्थन प्राप्त है। लोग उन्हें स्वंतत्रता सेनानी कहते हैं। वे शेरों की तरह रहते है कोई गीदड़ नहीं है जो उसे पकड़ ले। सदर लैण्ड के बुलाव पर मेजर फॉरेस्टर जो शेखावाटी बिग्रेड के प्रमुख सभी अफसर करणाराम को

पकड़ने के लिए कमर कस ली। छावणी-छावणी, थाना-थाना में उनके फोटाचस्पा कर दिए। जोधपुर का एजेन्ट मेशन साहब ने अपनी फौज करणा के पीछे कर दी। कप्तान हाई क्लास अपनी फौज लेकर करणा राम के पीछे दौड़ा। यह अपनी सेना लेकर उसके पीछे बीकानेर के सीमाडा तक दौड़ा। सभी सेठ साहूकार के नाम लम्बे चौड़े डाट-फटकार के पत्र लिखे। राजा महाराजा को भी पत्र भेजा।

अंग्रेज अफसर ऐजी.जी द्वारा खत लिखने से बीकानेर के राजा ने ऊपर वाले मन से अपनी फौज को करणा के पीछे लगाया। जोधुपर का तख्त सिंह भी अपनी फौज में होशियार-होशियार जवान अंग्रेजों की सहायतार्थ करणा राम को पकड़ने के लिए लगवाए। बताया जाता है कि डूंगजी के पीछे तीन ओर से फौज थी। बीकानेर के घड़सीसर गांव के पास ये स्वतंत्रता सेनानी घिर गए। करणा राम अपने साथी डूंगजी के साथ दुश्मनों से आमने-सामने काफी देर तक मुठभेड़ लेते रहे। उसके बाद डूंगजी ने अपने साथियों से कहा तुम यहाँ से भाग जाओ हम फिर मौका देखकर इन फिरंगियों से बदला लेगें यदि करणाराम हम आज मारे जायेंगे तो इन फिरंगियों के होसले बढ़ जाएगे। इसलिए देश को बचाना है तो आज यहाँ से निकल भागो यह कहकर डूंगजी जवहार जी अपने आप को अलग-अलग राजाओं को आत्म समर्पण कर दिया और करणाराम व उनके साथी वहाँ से भाग खडे हुए।

XVIII-करणाराम मीणा पर विशेष

करणा राम ने डूंगजी जी के साथ जोधपुर राज्य के अन्तर्गत जून सन् 1847 को जैसलमेर के गिरादड़ा गांव के पास जोधपुर की सेना से हुए युद्ध में भाग लिया। स्वतंत्रता सेनानियों का मनोबल और साहस ही था कि मुट्ठीभर संख्याबल के बावजूद प्रारम्भ में जोधपुर की सेना के दांत खट्टे कर दिए। परन्तु अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित, प्रशिक्षित व अधिक संख्याबल वाली सेना का वे अधिक समय तक मुकाबला नहीं कर सके। डूंगजी व करणा राम युद्ध करते-करते साथियों सहित चारों तरफ से घिर गए। सभी ने अदम्य साहस दिखाते हुए विपक्षी सेना के जवानों की लाशे बिछा दी। लेकिन अन्त में डूंगजी ने जोधपुर राजा तख्तसिंह के सामने आत्मसमर्पण कर दिया लेकिन करणाराम युद्ध करते रहे और घेरा तोड़कर भाग निकले। इस युद्ध के पश्चात करणाराम

मीणा का क्या हुआ? कहां रहे, कहां गए इसका कहीं भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। अब तक प्रकाशित पुस्तकों में गिरादड़ा युद्ध के पश्चात करणा राम का कोई उल्लेख नहीं मिलता। लेखक नें स्वयं इनकी वंशावली के अनुसार जानकारी पाने हेतु हरिद्वार जाकर गंगागुरू पं. गौरव सिद्धार्थ पोखरिया से मिलकर इस सन्दर्भ में जानकारी ली तो पता चला कि वंश परम्परा के अनुसार इनकी अस्थियों का विसर्जन भी हरिद्वार में नहीं किया गया। इनके त्याग और बलिदान को इतिहास में उचित स्थान नहीं मिल पाया। करणा राम मीणा जीवन पर्यन्त देश की आजादी के लिए संघर्षत रहे।

ये स्वतंत्रता संग्राम के सिपाही थे।
अंग्रेजों के दिल दहलाने वाले,
क्रांतिकारी वीर महान त्यागी थे।
लुटेरे और डाकू नहीं, स्वतंत्रता के सेनानी थे।

14-आगरा के किला का इतिहास

आगरा का किला देश के उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा शहर में स्थित है। इसे लाल किला भी कहा जाता है। इस किले को चार दीवारी से घिरी प्रासाद (महल) नगरी कहना बेहतर होगा। यह किला भारत का सबसे महत्वपूर्ण किला है, भारत के मुगल सम्राट बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां व औरंगजेब यहाँ रहा करते थे व यही से पूरे भारत पर शासन किया करते थे। यहाँ राज्य का सर्वाधिक खजाना, सम्पति व टकसाल थी। यह मूलतः एक ईटों का किला था जो चौहान वंश के राजपूतों के पास था। इसका प्रथम विवरण 1080 ई. में आता है। जब महमूद गजनवी की सेना ने इस पर कब्जा किया था। सिकन्दर लोदी (1487&1517) दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था, जिसने आगरा की यात्रा की व इस किले में रहा था। उसने देश पर यहाँ से शासन किया व आगरा को देश की द्वितीय राजधानी बनाया तथा उसकी मृत्यु भी इसी किले में 1517 ई. में हुई थी, जिसके बाद उसके पुत्र इब्राहिम लोदी ने गद्दी नौ वर्षों तक संभाली तब तक जब वो पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) में काम नहीं आ गया। उसने अपने काल में, यहां कई स्थान, मस्जिदें व कुँए बनवाए।

पानीपत के बाद, मुगलों ने इस किले पर भी कब्जा कर लिया, साथ ही इसकी अगाध सम्पत्ति पर भी। इस सम्पत्ति में ही एक हीरा भी था जो कि बाद में कोहिनूर हीरा के नाम से प्रसिद्ध हुआ, तब इस किले में इब्राहिम के स्थान पर बाबर आया। उसने यहाँ एक बावड़ी बनवाई। 1530 में यहीं हुमायूं का राजतिलक भी हुआ। हुमायूँ इसी वर्ष बिलग्राम में शेरशाह सूरी से हार गया व किले पर उसका कब्जा हो गया। इस किले पर अफगानों का कब्जा पाँच वर्षों तक रहा, जिन्हें अन्ततः मुगलों ने 1556 में पानीपत के द्वितीय युद्ध में हरा दिया। इसकी केन्द्रीय स्थिति को देखते हुए अकबर ने इसे अपनी राजधानी बनाना निश्चित किया व सन् 1558 में यहाँ आया। उसके इतिहासकार अबुल फजल ने लिखा है कि यह किला एक ईंटों का किला था। जिसका नाम बादलगढ़ था। यह तब खस्ता हालत में था, व अकबर को इसे दुबारा बनवाना पड़ा, जो कि उसने लाल बलुआ पत्थर

से निर्माण करवाया। इसकी नींव बड़े वास्तुकारों ने रखी। इसे अन्दर से ईंटों से बनवाया गया, व बाहरी आवरण हेतु लाल बलुआ पत्थर लगवाया गया। इसके निर्माण में 1]444]000 कारीगर व मजदूरों ने 08 वर्षों तक मेहनत की, तब सन् 1573 में यह बनकर तैयार हुआ। यह किला 1857 के प्रथम भारतीय स्वंतत्रता के समय युद्ध स्थली भी बना। जिसके बाद भारत से ब्रिटिश ईस्ट-इंडिया कम्पनी का राज्य समाप्त हुआ, व लगभग एक शताब्दी तक ब्रिटेन का सीधा शासन चला। जिसके बाद सीधी स्वंतत्रता मिली। इस किले का एक अर्ध वृताकार नक्शा है। इसकी चहार दीवारी 70 फीट ऊँची है। इसमें दोहरे परकोटे हैं, जिनके बीच-बीच में भारी बुर्ज बराबर अंतराल पर हैं। जिनके साथ -साथ ही तोपों के झरोखे व रक्षा चौकियाँ भी बनी हैं। किले के चार कोनों पर 04 द्वार है जिनमें से एक खिड़की द्वार नदी की ओर खुलता है। इसके दो द्वारों को दिल्ली गेट एवं लाहौर गेट कहते है (लाहोर गेट को अमर सिंह द्वार भी कहा जाता है) शहर की ओर का दिल्ली द्वार चारों में से भव्यतम है। इसके अन्दर एक और द्वार है जिसे हाथी पोल कहते हैं, जिसके दोनों ओर दो वास्तवाकार पाषाण हाथी की मूर्तियाँ है, जिनके सवार रक्षक भी खड़े हैं। एक द्वार से खुलने वाला पुर जो खाई पर बना है व एक चोर दरवाजा, इसे अजेय बनाते हैं। स्मारक स्वरूप दिल्ली गेट, सम्राट का औपचारिक द्वार था, जिसे भारतीय सेना द्वारा (पैराशूट ब्रिगेड) हेतु किले के उत्तरी भाग के लिए छावनी रूप में प्रयोग किया जा रहा है। अतः दिल्ली द्वार जन साधारण हेतु खुला नहीं है। पर्यटक लाहौर द्वार से प्रवेश ले सकते हैं। जिसे कि लाहौर की ओर मुख होने के कारण ऐसा नाम दिया गया है। अकबर गेट अकबर दरवाजा को जहांगीर ने नाम बदल कर अमरसिंह द्वार कर दिया था, यह द्वार दिल्ली द्वार से मेल खाता हुआ है। दोनों ही लाल बलुआ पत्थर के बने हैं।

15-आगरा के किले का भीतरी विन्यास और स्थल

I- **अंगूरी बाग**:-85 वर्ग मीटर, ज्यामितीय प्रबंधित उद्यान।

II- **दीवान -ए-आम:-** में मयूर सिंहासन या तख्ते ताज स्थापित था इसका प्रयोग आम जनता से बात करने और उनकी फरियाद सुनने के लिए होता था।

III- **दीवान-ए-खास** :- का प्रयोग उसके उच्च पदाधिकारियों की गोष्ठी और मंत्रणा के लिए किया जाता था, जहाँगीर का काला सिंहासन इसकी विशेषता थी।

IV- **स्वर्ण मंडप** :- बंगाली झोपड़ी के आकार की छतों वाले सुन्दर मंडप।

V - **जहांगीरी महल** :- अकबर द्वारा अपने पुत्र जहांगीर के लिए निर्मित।

VI- **खास महल** :- श्वेत संगमरमर निर्मित यह महल संगमरमर रंगसाजी का उत्कृष्ट उदाहरण है।

VII- **मछली भवन** :- तालाबों और फव्वारों से सुसज्जित अन्त:पुर जनानखाने के उत्सवों के लिए बड़ा घेरा।

VIII- **मीना मस्जिद** :- एक छोटी मस्जिद।

IX- **मोती मस्जिद** :- शाहजहाँ की निजी मस्जिद।

X - **मुसम्मन बुर्ज** :- ताजमहल की तरफ उन्मुख आलिन्द छज्जे वाला एक बड़ा अष्टभुजाकार बुर्ज।

XI- **नगीन मस्जिद** :- आलिन्द बराबर में ही दरबार की महिलाओं के लिए निर्मित मस्जिद जिसके भीतर जनाना मीना बाजार था। जिसमें केवल महिलाएँ ही सामान बेचा करती थी।

XII- **नौबत खाना** :- जहाँ राजा के संगीतज्ञ वाद्ययंत्र बजाते थे।

XIII- **रंगमहल** :-जहाँ राजा की रानी और उप पत्नी रहती थी।

XIV- **शाहजहाँ महल** :- शाहजहाँ द्वारा लाल बलुआ पत्थर के रूपान्तरण का प्रथम प्रयास।

XV - **शीशमहल** :- शाही छोटे जड़ाऊ दर्पणों से सुसज्जित राजसी वस्त्र बदलने का कमरा।

XVI- **शाही बुर्ज :-** शाहजहाँ का निजी कार्यक्षेत्र।

16-शेखावाटी के स्वतंत्रता सेनानियों के समय का सीकर का इतिहास

राव राजा समर्थसिंह की मृत्यु पर सीकर का राजा लक्ष्मणसिंह बना। जब लक्ष्मण सिंह युवावस्था की चरम सीमा के 16 वर्ष पार कर चुका था नौजवान था, गठीला बदन, सुदृढ़ शरीर प्रखर बुद्धिमान होते हुए लक्ष्मण सिंह ने राजगद्दी संभाली। उस समय अंग्रेजों का राज था। लक्ष्मणसिंह अपनी राजनीतिक स्थिति को अच्छी नहीं देखकर अपने चहेते रामचंद्र को अंग्रेज बहादुर से बात करने के लिए दिल्ली भेजा। शेखावाटी क्षेत्र के राजाओं में सबसे पहले सीकर के शासक ने अंग्रेजों से दोस्ती का हाथ बढ़ाया। रामचंद्र और अंग्रेज अफसर लार्ड लैक के बीच वार्तालाप से लक्ष्मण सिंह 19 फरवरी 1804 को एक सरकारी आदेश जारी किया गया। जिसमें सीकर शासक के अधिकारों, दायित्व, अस्तित्व, नियम, कानून कायदों को स्वीकृति प्रदान की गई। तथा इसी के साथ अंग्रेज सरकार के अधिकारियों ने सीकर राज्य के अधीन आने वाली जनता की सुरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के प्रति अपनी चेष्टा जाहिर करते हुए एक आदेश पर अपने हस्ताक्षर कर सुरक्षा कवच बनने का वचन दिया। इससे साफ जाहिर होता है कि सीकर शासक ने स्वयं आगे बढ़कर अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली थी।

जब राव राजा लक्ष्मणसिंह विवाह योग्य हुए तो उनका विवाह बीकानेर के राजा जयसिंह की पुत्री के साथ सम्पन्न हुआ। यह रानी राठौड़ के नाम से प्रसिद्ध रही, राठौड़ रानी से कुंवर प्रतापसिंह का जन्म हुआ। एक समय राजा लक्ष्मणसिंह आखेट के लिए जंगल गया था। वहाँ वापस आते समय राजा की नजर एक लड़की पर पड़ी। लड़की अपने खेत पर कृषि कार्य कर रही थी। राजा लड़की पर मोहित हो गया और उसे उसके घर वालों को अपने मन की बात बताई। लड़की के परिवारजन समय की नजाकत को समझते हुए अपनी वीरा नाम की पुत्री का राजा से गन्धर्व विवाह करके उसके साथ विदा किया। राजा लक्ष्मण सिंह के वीरा की कोख से मुकुन्दा, चिमन एवं हुक्मा और पुत्री उदय कंवर पैदा हुई। तथा इतिहास के अनुसार तीसरी रानी अन्यतमा के गर्भ से सन् 1804 (वि.सं. 1861) में भैरूसिंह का जन्म हुआ। बताया गया है कि

अन्यतमा अपने पीहर धाजेराव में गई हुई थी। वहीं पर इनका जन्म हुआ। इतिहास के अनुसार राठौड़ जी रानी व अन्यतमा के आपस में मेल-जोल नहीं था। दोनों के मनमुटाव होने से ही राजा वीरा को ब्याह कर लाया था। इस प्रकार राव राजा लक्ष्मणसिंह के भैरूसिंह, प्रतापसिंह, मुकुन्दासिंह, चिमनसिंह, हुक्मासिंह एवं पुत्री उदय कंवर पैदा हुए। बताया गया है कि रानी वीरा से उत्पन्न पुत्रों ने आगे चलकर अंग्रेजों व राजपूत राजाओं की नींद हराम कर दी। सीकर राज्य की सीमा का विस्तार लंबा चौड़ा था। लक्ष्मणगढ़ शहर बसाने में पासवानी रानी का हाथ था। राजा लक्ष्मणसिंह ने प्रेम विवाह के माध्यम यानी कि अपने जाल में फांस कर पासवानी लड़की से शादी कर ली। मुख्य रानी इस विवाह से नाराज थी। मुख्य पटरानी राठौड़ जी व वीरा के बीच में हमेशा मनमुटाव चलता रहता था। इस बात का जब राजा लक्ष्मणसिंह को पता चला कि रानियां आपस में द्वैष भावना रखने लग गई हैं।

इसलिए रानियों की द्वैष भावना को मिटाने के लिए सीकर में प्रकोस उत्तर दिशा में बीहड़ जंगल में बेड़गाव की पहाड़ी पर सन् 1805 में एक किला बनवाया और उस दुर्ग के पूर्व दिशा में एक नगर बनावाया। दुर्ग पर राजा ने लाखों रूपये खर्च किये और अपनी प्रियतमा रानी वीरा को इसी महल में रहने के लिए उसको सौगात में प्रदान किया। यह नगर लक्ष्मणगढ़ नाम से जाना गया। यह एक बड़ा व्यापार का केंद्र बन गया। दूर-दूर तक के व्यापारी यहाँ माल का आदान-प्रदान करने लगे। इसलिए यहाँ के व्यापारियों के सम्पर्क दूर तक हो गए। यहाँ के व्यापारियों को लौटाकर के लिए बीदावता शेखावत अपनी धोंस देकर तंग करने लगे। और जोर-जबरदस्ती से इन व्यापारियों से धन ऐंठने लगे। इसलिए राजा लक्ष्मणसिंह अपने व्यापारियों को बचाने के लिए बीदावतों से संघर्ष करना पड़ा। राव राजा लक्ष्मणसिंह ने अपनी रानी वीरा से उत्पन्न पुत्रों को राजा ने अपनी रियासत में से लगभग 60 हजार रूपये की विरासत दे रखी थी। जिससे वो अपना स्वयं खर्चा चला सकें। जबकि राज्य के नियम के मुताबिक उस समय की प्रचलित प्रथा अनुसार 45000 रूपये से अधिक की जागीर दे नहीं सकते थे। परंतु राजा को वीरा की पुत्री से अधिक लगाव होने के कारण ऐसा किया जो नियम के विरूद्ध था। इसी दरमियान

जयपुर के पॉलिटिकल एजेन्ट मेजर थर्सटीने को सीकर राज में भीतरी झगड़े देखकर रानीजी राठौड़ की प्रार्थना पर पुरोहित रामनाथ जी को कामदार बनाकर भेजा था। क्योंकि रामनाथ जी को राजनैतिक अनुभव था वे इससे पहले खेतड़ी राजा के यहाँ रह चुके थे। जब वे राठौड़ जी के निमंत्रण पर सीकर आएं और अपनी नियन्त्रण नीति अपनाने लगे तो राठौड़ जी रानी का पुत्र कुंवर प्रताप सिंह संतुष्ट नहीं था और वह नाराज होकर सीकर छोड़कर चला गया। वह शाहपुरा (मेवाड़) के राजाधिराज के यहाँ पहुँचा। अपना परिचय बताया। जिससे राजा ने इनको अपने राजकार्य में हाथ बँटाने पर वहीं रख लिया तथा अपनी पुत्री से इनका विवाह कर दिया। विवाह का पता जब रानी को चला तो सीकर से बड़े धूम-धाम से बारात बनाकर काफी जनेती(बारात) यहाँ से भेजे। (पौश शुक्ला 14 सं. 1890) सन् 1833 राव राजा लक्ष्मणसिंह का स्वर्गवास हुआ। लक्ष्मणसिंह अपने समय का कुशल प्रशासक नीति निर्धारक, वीर, बहादुर, कर्तव्यपरायण थे। बताया गया है कि उसकी वीरा, पासवानी पत्नी उनकी अर्थी के साथ ही सती हो गई। राव राजा लक्ष्मणसिंह की मृत्यु के उपरांत सन् 1833 में कुंवर प्रतापसिंह को राजगद्दी पर बैठाया गया व राजा नियुक्त किया गया। प्रतापसिंह पूर्ण परिपक्व नहीं हुए थे।

राव राजा का ताज कांटों का ताज था। क्षेत्रीय शासक राजा के विरोधी थे। सभी सामन्तों ने राजा के खिलाफ विद्रोह कर दिया और सीकर के अधीन 555 गाँवों का राज टुकड़ों में बंट गया। सन् 1941 में रावराजा प्रतापसिंह जी ने अपने राज्य का दौरा किया जिससे प्रजा के सुख-दुख का अनुभव प्राप्त किया जा सके। राज्य भ्रमण पर राजा ने पाया कि कुछ स्वार्थी लोग अपना दमन चक्र चलाने से बाज नहीं आ रहे हैं। यहां तक कि राजा प्रतापसिंह की माता राठौड़ जी और धर्म पत्नी श्रीमती रानावत जी के हृदय में भी उनकी ओर से ग्लानि उत्पन्न कर दी एवं राव राजा जी के कृपा पात्र सेवकों को भी कैद करा दिया। तथा उनके साथ अन्याय किया जाने लगा। जब प्रातापसिंह को ऐसी परिस्थिति का पता चला तो अपनी शासन व्यवस्था पर बड़ा पश्चाताप हुआ। किंतु फिर भी उन्होंने अपनी स्वाभाविक धीरता को स्थिर

रखा। ऐसी घटनाएँ देखकर प्रतापसिंह के मन को काफी ग्लानि हुई और राज्य को खंडित देखते हुए व दुष्टों की क्रूरता को देखते हुए उन्होंने हताश होकर कर्नल सदर लैंड ब्रिटिश सरकार को संधि हेतु एक पत्र लिखा। ब्रिटिश सरकार को इस सुनहरे मौके की ही तलाश थी। तुरंत संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किए। राव राजा, प्रतापसिंह ने अपने मौसेरे भाई कि यानिकी दासी पुत्रों की शिकायत करते हुए लिखा कि दासीपुत्र तथा रामबक्स गत 14 वर्ष से 80 हजार रूपये वार्षिक आमदनी की सम्पत्ति का उपयोग कर रहे थे। किसी ने उसमें कोई बाध ा न दी थी। इस ओर देखकर राव राजा रामप्रताप सिंह जी कर्नल सदरलैंड का ध्यान इस ओर आकर्षित किया और उसको भड़काते हुए लिखा कि इतनी अधिक सम्पत्ति से हम वंचित क्यों रहें। ब्रिटिश सरकार से हमें सहायता मिलनी चाहिए, कर्नल सदरलैंड ने रावराजा रामप्रतापसिंह का अनुरोध स्वीकार किया और कर्नल की सलाह से जयपुर रिजेंसी ने रावराजा जी के खवासाल बंधुओं की सम्पति अलग करने का निश्चय कर लिया। अंग्रेजी कम्पनी बहादुर राव राजा प्रतापसिंह जी की शिकायत पर लेफ्टिनेंट कर्नल लाकेट की कमान में एक फौज सीकर भेज दी। फौज के साथ नसीराबाद का तोपखाना भी भेजा गया।

फौज ने यहाँ आकर कई गढ़ दुर्गों में तोड़-फोड़ की तथा उनके साथ लड़ाई की। अचानक आक्रमण से जनता में रोष पैदा हो गया और राजा के प्रति नफरत हो गई क्योंकि राजा उनकी सुरक्षा नहीं कर सका। अंग्रेज फौज ने देवगढ़ व रघुनाथ गढ़ खाली करवा लिए व अपने कब्जे में ले लिए। उस समय विजयसिंह लाड़खानी अंग्रेजों का विश्वासपात्र सेवक था। उसके आग्रह पर प्रताप सिंह को दोनों गढ़ वापस सौंप दिए गए। इन दिनों धाड़े (डाका) देने के नाम से बठोठ ठिकाना प्रसिद्ध था। राजा लक्ष्मणसिंह की प्रियतमा रानी वीरा के पुत्र हुक्मसिंह ने फतेहपुर परगना, मुकन्दसिंह ने लक्ष्मणगढ़ व राम बक्स ने रामगढ़ पर अपना आधिपत्य जमा लिया। राव राजा प्रतापसिंह के सामने अपने पासवानियां भाईयों ने इस प्रकार कब्जा करके उसके सामने दिक्कतें उत्पन्न कर दी । इन सगे भाईयों से युद्ध करना बड़ा मुश्किल हो गया था। प्रशासन चलाना तो दूर की बात हो गई।क्योंकि इनका

सहयोग वीर डूंगजी, जवाहरजी, सांवताराम मीणा, करणाराम मीणा, लोठूराम जाट और अन्य काफी सरदार कर रहे थे। इस पर भाजी राठौड़ जी की सहमति में बड़ी कठिनता से सिंघरावट व नेछ्वा के परगने पचास गांवों सहित देकर उनसे फतेहपुर, लक्ष्मणगढ़ व रामगढ़ को मुक्त करवाया। मुकुन्दसिंह को, सिंगरावट, हुक्मसिंह को सिहोट व रामबक्स को नेछ्वा दिया गया। राजा जनता से अपनी मनमर्जी का नजराना (कर) वसूल करने लगे जिससे जनता में आक्रोश फैल गया। जनता बुरी तरह परेशान हो गई। डूंगजी, जवाहरजी, सांवतराम मीणा, करणाराम मीणा, लोठू जाट अपने बाहुबल से सीकर, चुरू, नागौर, बीकानेर और जोधपुर के शहरों में धाड़ा (डाका) देकर धन लूटने लग गए। धाड़े में प्राप्त माल गरीबों, ब्राह्मणों असहाय, पीड़ितों को दान में बांट देते थे। इन बहादुरों के प्रति जनता की सहानुभूति बहुत ज्यादा थी परंतु राजा से डरना पड़ता था। अंग्रेज सरकार के अत्याचार जनता के प्रति अधिक बढ़ रहे थे। अंग्रेज कंपनी द्वारा बठोठ को भी लूट लिया गया। जिससे वहाँ विद्रोह की आग फैल गई। शेखावाटी क्षेत्र में अंग्रेजों के विरूद्ध जबरदस्त विद्रोह हो गया। अंग्रेज सरकार तथा यहाँ के सामन्त अंग्रेजों के साथ थे। वो इनको तिरछी नजर से देखने लगे।

17- डूंगजी व जवाहरजी बटोठ पाटोदा की सक्षिप्त वंशावली

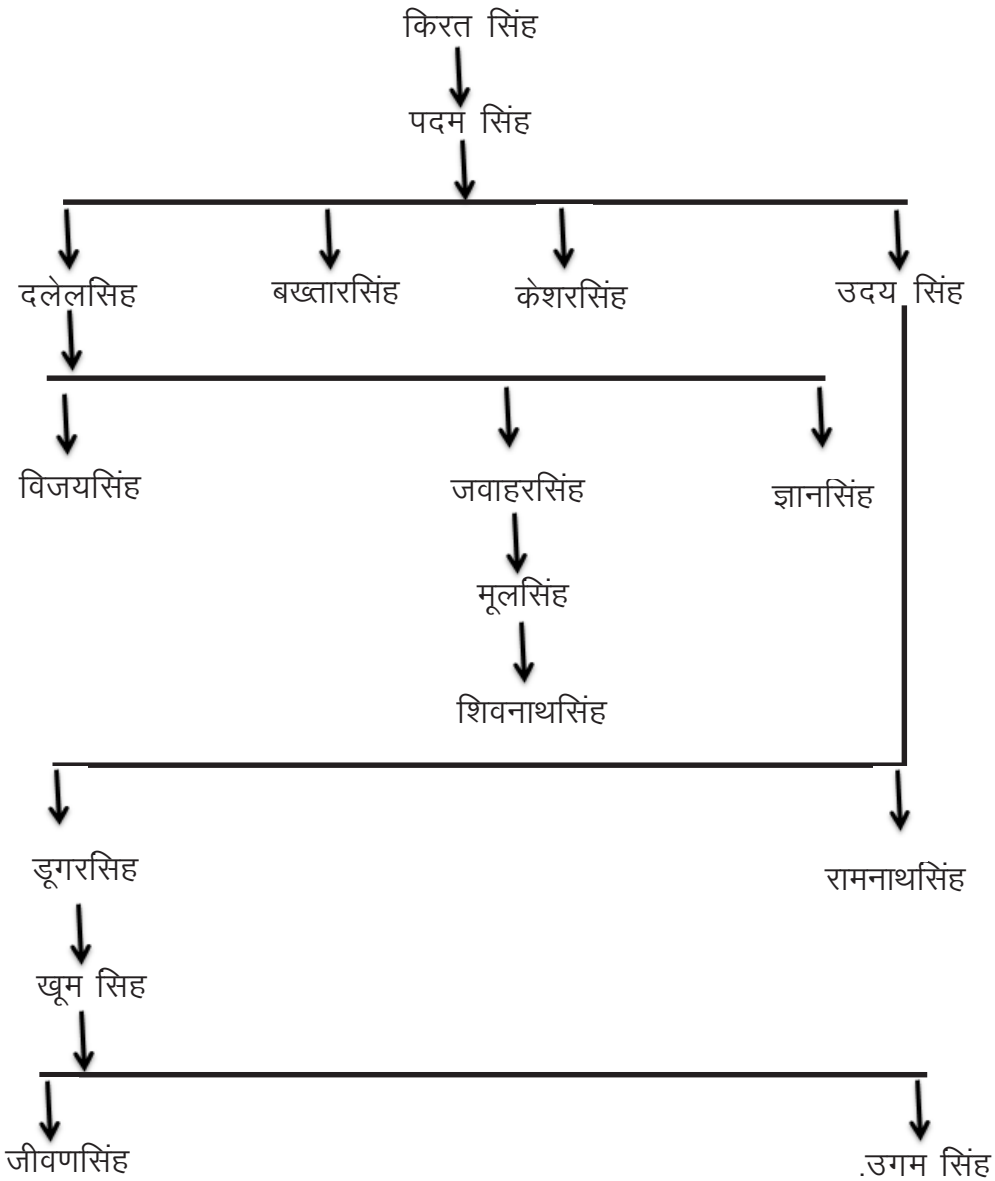

वंशावली के अनुसार डूंगजी व जवाहरजी आपस में भाई लगते थे जबकि कई जगह इनको कवियों ने काका भतीजा बताया है।

18-डूंगजी व जवाहरजी का संक्षिप्त जीवन परिचय

डूंगजी-जवाहार जी कछवाह वंश के शेखावत राजपूत थे। ये सीकर के शासक शिवसिंह के द्वितीय पुत्र कीर्तिसिंह के वंशज थे। शिवसिंह की चांपावत राणी से कीर्ति सिंह व उम्मेद सिंह का जन्म हुआ था। शिवसिंह के जीवनकाल में उनके बड़े पुत्र समर्थ सिंह युवराज थे। युवराज की इन दोनों भाइयों से पटती नही थी। युवराज ने इन दोनों को स्वयं जान से मार डाला। मृत्यु के समय दोनों भाइयों की पत्नियाँ गर्भवती थी। इन दोनों के एक-एक पुत्र उत्पन्न हुआ। कीर्तिसिंह के पुत्र का नाम पदमसिंह और उम्मेदसिंह के पुत्र का नाम भावसिंह था। इन्हें बठोठ पटोदा और सरवड़ी गांव अपने हिस्से में प्राप्त हुए। पदम सिंह के बड़े पुत्र दलेलसिंह को बठोठ और छोटे भाइयों को पाटोदा की भूमि पर अधिकार मिला। जुहारजी या जवाहरसिंह दलेल सिंह के मझले बेटे थे। पदम सिंह के चौथे पुत्र उदयसिंह के बेटे डूंगजी याने डूंगरसिंह थे। बठोठ पाटोदा के डूंगरसिंह जवाहरसिंह का विद्रोहात्मक संघर्ष बड़ा संगठित सरावत और अंग्रेज सत्ता को आतंकित कर देने वाला था। ठाकुर जवाहरसिंह और ठाकुर डूंगरसिंह के साथ शेखावाटी के खिरोड़, मोहनवाड़ी, मझाऊ, खड़ब तथा देवता ग्रामों के सलहदी सिहोत ठाकुर सम्पतसिंह के नेतृत्व में आ मिले थे।

यह अंग्रेज विरोधी संघर्ष केवल ठाकुर जागीरदारों तक ही सीमित नही था। अपितु जाट, मीणे, गुजर, लुहार, नाई आदि जातियों के जाग्रत लोगों के सक्रिय सहयोग से आरंभ हुआ था। सांवता मीणा, लोटिया जाट, बालिया नाई, करणिया मीणा आदि के उल्लेख से तथ्य स्पष्ट ही सत्य प्रकट होता है। इस संगठित अभियान को संचालित करने में ठाकुर डूंगरसिंह, जवाहरसिंह प्रमुख थे। ठाकुर जवाहरसिंह और डूंगरसिंह चचेरे भ्राता थे। सीकर के अधिपति राव शिवसिंह शेखावत सन् 1778&1805 के कनिष्ठपुत्र ठाकुर कीर्तिसिंह के पुत्र ठाकुर पदमसिंह को बठोठ पाटोदा की जागीर मिली थी। ठाकुर पदमसिंह ने सीकर के पक्ष में सन् 1837 में खाटू के प्रसिद्ध युद्ध में भाग लिया था तदनन्तर वे सन् 1844 में कासली के युद्ध में काम आए। ठाकुर पदमसिंह के दलेलसिंह, बख्तसिंह, केशरीसिंह और उदयसिंह चार पुत्र थे। पदमसिंह के वीरगति प्राप्त करने के बाद दलेलसिंह बठोठ

का स्वामी बना और उपर्युक्त नाम निर्देशित तीनों भ्राताओं को पाटोदा दिया गया। ठाकुर दलेलसिंह बठोठ के पुत्र विजयसिंह और जवाहर सिंह तथा उदयसिंह के डूंगरसिंह और रामनाथसिंह थे। इस प्रकार जवाहरसिंह तथा डूंगरसिंह चचेरे भ्राता थे। डूगजी, जुहारजी धाड़ेती (डाकू) थे। ये धाड़ा मारते थे यानी डकैती करते थे। ये ब्राह्मणों और स्त्रियों को नही लूटते थे। इन दोनों ने अंग्रेजी राज का विरोध किया था। सशस्त्र क्रांति द्वारा अंग्रेजों को भारत से भगाने की चेष्टा की थी। तत्कालीन शासकों में अधिकतर अंग्रेजों की चापलूस, चाटुकार, पिट्टू और जी-हुजरिये थे। यहीं स्थिति अधिकतर सेठों की थी क्योंकि उन का अंग्रेजों से व्यापारिक स्वार्थ था। उस समय तक भारत पर इंग्लैंड का शासन आरंभ नहीं हुआ था। इंग्लैंड की व्यापारिक फर्म ईस्ट इंडिया कंपनी राज करती थी। अंग्रेजों ने इन दोनों को अपराधी और शत्रु घोषित किया तो क्षेत्रीय शासक और सेठ इन की सहायता करने से डरने लगे। अंग्रेजों, शासकों और सेठों ने अपने निजी स्वार्थ के लिए उन स्वतंत्रता सेनानियों की छवि बिगाड़कर जन-साधारण के मस्तिष्क में डाकुओं की छवि स्थापित कर दी। ये दोनों जीवन भर देशद्रोहियों कायरों और स्वार्थियों से घिरे रहे। ये वीरता में सराहनीय थे, साहस में प्रशंसनीय थे और चरित्र में आदर्श पुरूष थे। स्वतंत्रता प्रेमी गिने चुने व्यक्तियों ने इसका साथ दिया था। जन साधारण के हृदय में ये आदर्श वीर पुरूषों के रूप में प्रतिष्ठित रहे। शेखावाटी क्षेत्र में यह दोहा बहुत प्रचलित हैं -

जे कोई जणती राणियां डूंगजी जिसा जवान।
तो ई भारत देश में क्यूं टिकता खिसतान।।

अर्थात्:- अगर माताएँ डूंगरसिंह जैसे वीर पुत्र पैदा करती तो इस भारत देश में अंग्रेज नहीं टिकते। अंग्रेजों के कुप्रचार और तत्कालीन शासकों तथा धनिकों के द्वारा अंग्रेजों को दिये गये अंध-समर्थन के कारण ये दोनों डाकू के रूप में कुख्यात हो गए। इन्होंने डाके डाले थे। लेकिन अंग्रेजों के खजानों का धन लूटा था। लेकिन अंग्रेजों के पिट्ठू सेठों से इन्होंने लूटे हुए धन को कभी अपने भोग विलास में नहीं लगाया, हमेशा गरीबों में बाँटते रहे। इन्होंने हथियार उठाये लेकिन अत्याचार करने के लिए नही बल्कि अत्याचारियों का दमन करने के लिए।

19-ठाकुर डूंगरसिंहजी का संक्षिप्त जीवन परिचय

सीकर जिले की लक्ष्मणगढ़ तहसील के एक छोटे से ग्राम बठौठ पाटोदा जो सीकर से 27 किमी . सीकर-सालासर सड़क मार्ग से फागलवा से 12 किमी दूर उत्तर की तरफ बसे हुए हैं। सीकर के रावराजा शिवसिंह जी ने कीर्तिसिंह के बठोठ-पाटोदा जागीरी के रूप में दिया था। जागीरदार कीर्ति सिंह के चार पुत्र हुए जो नाम दलेलसिंह, बख्तार सिंह, उदय सिंह एवं केशरसिंह हुए। सन् 1800 के आसपास उदयसिंह जी के डूंगरसिंह पैदा हुए। बालक डूंगर जन्म से होनहार नजर आ रहा था। बाल्यावस्था में ही राजकार्य में हाथ बटाना, घुड़सवारी करना, आखेट पर जाना, सैनिकों के साथ रहना, युद्ध जैसी बातें करना इस तरह यौवनावस्था आते-आते बालक डूंगर अंग्रेजों के द्वारा बनाई गई फौज शेखावाटी ब्रिगेड में भर्ती हो गया। इस फौज में बहादुरी के कार्य करने पर डूंगरसिंह जी को अंग्रेजों ने रिसालदार की पदोन्नति दे दी। परंतु डूंगरसिंह अंग्रेजों की कूटनीति धीरि-धीरि देख रहा था। अंग्रेज भारत देश को खोखला कर रहे थे। यहां का माल लूट-लूट लंदन भेज रहे थे। यहाँ की जनता का शोषण कर रहे थे। यह सब डूंगर सिंह से देखा नहीं गया।

डूंगरसिंह ने अंग्रेजों की सेना के अश्वारोही सेना के रिसालदार पद से सन् 1834 में शेखावाटी ब्रिगेड से त्यागपत्र देकर अंग्रेजों की नीतियों के खिलाफ विद्रोह छेड़ दिया और अपने गांव के आस-पास के लोगों को संगठित करके एक दल का गठन किया जिसका मुख्य लक्ष्य अंग्रेजों को देश से बाहर खदेड़ना था। अपनी टीम में इनके चचेरे भ्राता जवाहरसिंह, लोठू जाट, करणा मीणा, सांवता मीणा, बाल्या नाई, सुरजा बलाई, सांखू लुहार, सोबन्या सुनार और ज्याना दारोगा आदि अन्य सरदार थे। इन सरदारों में से डूंगजी अपने साथ अधिकतर करणिया मीणा और लोठू जाट को साथ रखता था। इनको अपनी दांयी-बांयी भुजा समझता था। क्योंकि दोनों वीर बहादुर थे, डूंगजी का साथ जी जान लगाकर देते थे, उसके दिल को छू गए थे। इसलिए डूंगजी अपने दल में इनको सरदार बनाकर रखता था।इनका कहना भी मानता था। क्योंकि इनके मन में भी देश के प्रति अंग्रेजों के खिलाफ कूट-कूट कर भावना भरी हुई थी।

राजस्थानी कहावत से :-

डूंग न्हार री कोटड़्यां जुड़ी कचेड़ी आय।
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही खूब पड़ै रजवाड़।
लोट्या जाट, करणियों मीणों, डूंगसिंह सरदार।
तीनू मिल भेळा हुवै, तो करै तीसरी बात।

अर्थात् :- सिंह के समान डूंगरसिंह की कोटड़ी में कचहरी आकर जुड़ी जाजिम पर जाजिम बिछ रही थी। कई ठिकानेदार आ रहे थे। जाट लोटिया, मीणा करणिया और सरदार डूंगसिंह ये तीनों जब मिलकर इकट्ठे होते हैं तो तीसरी (नई) बात करते है। डूंगसिंह बोला - अरे लोठू जाट ! तू सुन आदमियों के लिए मोठ बाजरी बाकी नही रही घोड़ों के लिए घास बाकी नहीं रही तू मर्दो में श्रेष्ठ मर्द है, जासूसों का तु लाट (राजा) है और महान बुद्धिमान श्रेष्ठ मीणा करणिया साथ है तुम रामगढ़ की जासूसी कर दो तब मैं आपको समझूंगा। डूंगजी का साथ दिया शेखावाटी के शूरवीर नौजवानों ने। देखते-देखते उनका एक बड़ा दल बन गया और वे जहाँ-तहाँ अंग्रेजों के खजाने लूटने लगे। उनकी छावनियों पर आक्रमण करने लगे। कंपनी परेशान हो गई। उस दल को तोड़ने का एक उपाय सोचा उसने तुरंत - शेखावाटी के लिए वीर बांकुरों की भर्ती करके उनकी एक अलग पलटन बना डाली। इस तरह कंपनी सरकार अलग-अलग जातियों व प्रदेश निवासियों की सेनाएँ बनाकर विद्रोह को कमजोर करती रही। देश के लोगों में फूट डालती रही।

I-डूंगजी की दांयी-बांयी भुजा लोटिया जाट व करणाराम

डूंगजी को अभी भी याद आ रहा था कि उसके उत्साही व देश प्रेमी साथियों ने कई बार अंग्रेजी सेना के दाँत खट्टे किए। चारों और उनकी वाह-वाह होने लगी थी। हर मुठभेड़ में उसके साथी करणिया मीणा और लोटिया जाट का बहुत ही अच्छा साथ रहता था। ये दोनों डूगजी के दाएं-बाएं हाथ थे। जान हथेली पर लिए रहते थे। ये सभी किसी सूद खोर को लूटकर आ रहे थे। मेजर फॉरेस्टर को इसका पता चल गया। वह भी अपनी सेना लेकर तुरंत उस ओर लपका। उधर डूंगजी को भी पता चल गया कि शत्रु उनकी और तेजी से बढ़

रहा हैं। उसने तुरंत ही अपने दल को सावधान किया। तय हुआ कि लोटिया जाट और करणिया मीणा को दो तरफ से बाग डोर संभालनी है और एक ओर से स्वयं डूगजी संभालेंगे। लोटिया जाट व करणिया मीणा ने एक आवाज में कहा हमारी ओर से सरदार को बेफिक्र रहना चाहिए। इस मुठभेड़ में उन स्वतंत्रता प्रेमियों ने फारेस्टर के दांत खट्टे कर दिए। फिर तो अंग्रेजों ने उन्हें खत्म करने के लिए कमर कस ली। वे इन वीरों को पकड़ने में एकदम असफल रहे। अपनी असफलता से खीजकर अंग्रेजों ने अपनी वही पुरानी नीति अपनाई। घर का भेदी लंका ढ़ाए। उसके लिए उन्होंने गद्दारों के सामने रूपयों की थैलियां खोली सो खोली साथ ही उन्होंने अपनी शक्ति का अनुचित दबाव भी डाला। इस पर भी स्वतंत्रता के मतवाले डूंगजी, लोटिया जाट, करणिया मीणा तथा जुवाहरजी को मारवाड़, बीकानेर व मेवाड़ के राजा गुप्तरूप से सहायता करते रहे वे उन्हें बचाते रहे। डूंगजी ने शरीर के लिए कहा है :-

डूंगजी जवारजी आपस में बतला रहे हैं।
कुण तो आपणैं खेत खंडेला कुण भरेलो डांगजी।
कोठी लूटा अंगरेजा री वो मुल्क में ई नांव जी।

अर्थात् :- कौन अपने तो खेतों खलियानों में काम करेगा कौन इनकी चाकरी करेगा। अपने तो अंग्रेजों के बंगले लूटकर अपने देश में नाम करना है। यह मनुष्य शरीर किस काम का है।

II-डूंगजी की करणिया से बातचीत

बठोठ के छोटे से दुर्ग में डूंगजी अपनी म्यान की डोर खोलकर एक जगह बैठा था और अपने साथियों से कह रहा है कि ये फिरंगी अपने घर में घुसकर अपने ऊपर ही जोर चला रहे है। इन्होंने अपने को ही दखल दी हैं। फौज चढ़ाकर आ गये। कल अपने घर में दखलंदाजी करने की कोशिश करेंगे और उसके बाद में अपने मालिक बनने की कोशिश करेंगे। फिर अपने मालिक बन जाएंगे। फिर अपने से नौकरी के रूप में काम लेवेंगे। अपन इनका कहना क्यों करें। अपना राज है अपन मिल बैठकर इसका फैसला करेंगे या बंटवारा करेंगे। यदि फौज चढ़ाकर लावे और मालिक बनने की कोशिश करें तो

सीकर राजा व जयपुर राजा करें। जब करणिया मीणा कहता है सरदार आप बात तो अच्छी कर लेते हैं। पर क्या कर लोगे अपने पास क्या ताकत है। जयपुर-जोधपुर के राजाओं ने अंग्रजों से संधि कर ली है। आपको पता है या नही है।

III–डूंगजी के दल द्वारा अंग्रेजों के घोड़ें लूटना

शेखावाटी के कांकड़ पर अंग्रेजों की छावनी (फौज) रूकी हुई थी। डूंगजी को पता चला कि अंग्रेज अपने इलाके में आए हुए हैं कोई न कोई नई चाल हो सकती हैं। ये अंग्रेज लोग अपने देश के जवानों को इकट्ठा करते है और उन्ही से हमारे साथ युद्ध कराते हैं। हमारे लोग कितने भोले हैं कि हमारा ही सिर और हमारी ही जूती। ये अंग्रेज अपने देश के लोगों को ही एकत्रित करके हमारी आजादी छीनना चाहते हैं। मेरे साथियों रात होने दो हम सब एक साथ इनकी पलटन पर हमला बोलेंगे और इनका सब कुछ लूट लावेंगे। डूंगजी अपने दल के साथ अंग्रेज फौज पर रात के समय एक साथ अचानक हमला किया और अंग्रेजों के घोड़े धन माल सब लूट लिए, और घोड़े अपने साथियों में बांट दिए तथा माल गरीबों को बांट दिया। इस तरह शेखावाटी की इस राजनैतिक परिस्थितियों की अनुभूति कर ठाकुर डूंगरसिंह सन् 1834 में अपने कुछ साथियों को लेकर शेखावाटी ब्रिगेड से विद्रोह कर बैठा और वहां से शस्त्र, घोड़े और ऊँट छीनकर विद्रोही बन गया। वह अंग्रेज शासित गांवों में लूट मार करने लगा।

IV–डूंगरसिंह का राजा बलवंतसिंह से संबंध

ठाकुर डूंगरसिंह और जवाहरसिंह का अजमेर और मेरवाड़ा के प्रमुख भूपति राजा बलवंतसिंह भिनाय तथा राव देवीसिंह खर्वा तथा झड़वासा के गौड़ भैरवसिंह से निकट का संबंध था। राजा बलवंत सिंह के उत्तराधिकारी राजा मंगलसिंह का पाणिग्रहण भोपालसिंह बठोठ की पुत्री तथा राव देवीसिंह खर्वा के पुत्र कुँवर विजयसिंह करणेस का विवाह डूंगरसिंह की सहोदरा के साथ हुआ था।

V –डूंगजी के द्वारा रामगढ की जासूसी कराना

सिवरू देवी सारदा स कांई तनै भवानी ध्यावूं।
ज्या मरदा री छावली म्है चार कूंट में गावूं।
डू न्हार री कोटड़्या जूड़ी कचैड़ी आय।
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही खूब पड़ै रजवाय।
लौट्यो जाट करणियो मीणो डूगसिंह सिरदार।
तीनू मिल भेला हुवै तो करे तीसरी बात।
बोल्यो डाकू डूंगसिंह तू सुण रै लौट्या जाट।
मिनख्वा निठग्गी बाजरी घोड़ा निठग्यौ घास।
मरदा में यू मरद आगलौ हैरयां रौ यू लाट।
रामगढ की हेर लगादे जद जाण तोय जाट।

अर्थात् :- मां शारदा को स्मरण करता हूँ और मां भवानी का ध्यान करता हूँ। जिन वीरों की महिमा, पराक्रम वीरता को मैं चारों दिशाओं में गा सकूँ अर्थात सुना सकूँ डूंगसिंह के दरबार में जब कचहरी जुड़ती है तब जाजम (फर्श) पर जाजम लग जाती है तथा बहुत से राजा शासक, वीर आ के इक्कट्ठे होते है। लोट्यो जाट करणियो मीणा और डूंगसिंह सरदार जब तीनों मिलकर एकत्रित होते हैं जब कोई अन्य योजना ही बनाते है। आज सरदार डूगसिंह लोट्यो जाट व करणिया मीणा से कह रहा है कि लोठू करणा मनुष्यों के लिए मोठ बाजरी समाप्त हो गई और पशुओं के लिए चारा खत्म हो गया। तुम दोनों वीर, बहादुर हो। इन दोनों (पशु मनुष्य) के लिए व्यवस्था करो। इसलिए रामगढ में जासूसी करके आओ। वहाँ से अनाज व चारा की व्यवस्था करेगें। डूंगजी का नाम शेखावाटी वालों के लिए नवीन नही है। उनकी धाक से उस समय लोग थर्राते थे। नाम डाकू होने पर भी कभी उन्होंने दीन-हीन निस्सहाय को नही सताया। ब्राह्मण और स्त्री को लूटने की कभी कोशिश नही की और डूंगरसिंह का झड़वासा के गौड़ों के यहाँ ससुराल था। डूंगरसिंह का इसलिए भी अजमेर मेरवाड़ा में आवागमन बना रहता था।

VI–डूंगरसिंह द्वारा कई ठिकानों पर आक्रमण

डूंगरसिंह ने सन् 1836 चैत्र मास में सीकर राज्य के कतिपय गाँवों पर धावे मारकर ठाकुर जवाहरसिंह के ससुराल लोठसर, ठाकुर खुमानसिंह के पास चला गया। बीकानेर राज्य की सेना ने ठाकुर हरनाथसिंह मधरासर और माणिक्यचंद सुराना के नेतृत्त्व में लोठसर दुर्ग पर आक्रणम किया। तब ठाकुर जवाहरसिंह, भीमसिंह और ठाकुर खुमानसिंह, बीदावत लोठसर से निकल कर जोधपुर की ओर चले गये।

VII–डूंगजी दुश्मन पर आक्रमण गरूड़ जी की तरह करते थे

कवि गिरवरदान ने डूंगजी को अंग्रेजी के सामने गरूड़ बताया है और अंग्रेजों को साँप बताया है। अंग्रेज विषधर नाग भारत देस को डसने (खाने) की कोशिश करते हैं, तो गरूड़ उसको मारने पर उतारू हो जाते हैं। डूंगजी वो ही है जिसके नाम से आगरा के अफसर खड़े ही धूजते हैं। जिस तरह आकाश से तारे टूटते हैं उसी तरह डूंगजी दुश्मनों पर टूट कर पड़ता है और उनको नष्ट कर देता है। डूंगजी के डर से फिरंगियों के प्राण ही निकल जाते हैं। अंग्रेजों का प्रभाव पूरे संसार में हो सकता है। पर डूंगजी के सिर पर तिल भर भी असर नहीं पड़ता है। डूंगजी दुश्मनों के लिए सूर्य की गर्मी की तरह है जिस प्रकार सूर्य उदय होता है तब चारों तरफ उजियारा हो जाता है और अंधकार साफ हो जाता है। उसी तरह इसका सामना होने पर अंग्रेज सेना में खलबली मच जाती है।सूर्य के उदय होने से सारी पृथ्वी पर सर्वत्र कोलाहल मच जाता है। शेखावत डूगजी जवाहरजी का प्रभाव भी अंग्रेजों की सेना के लिए ठीक सूर्य के समान ही है, जिसके प्रकाश से सारे सिपाहियों में खलबली मच जाती है। यह वहीं डूगसिंह है, जिसके भय से आगरा थर्राता है, और तलवार जिसकी कभी म्यान में रहना चाहती ही नहीं। दुष्टों का दमन करना ही उसकी तलवार का प्रमुख गुण है। वह अचानक दुश्मन पर धावा बोलता है, निर्भय होकर चौड़े-धाड़े उन्हें लूटता हैं। उसके आक्रमण में गरूड़ का सा वेग हैं, सूर्य के उगते ही जिस प्रकार पक्षिराज प्रबल वेग और तेज गति से साँपों को निर्वंश करने के लिए उनके समूह पर टूटता हैं। ठीक वैसा ही धावा होता हैं। डूंगजी का अंग्रेजों के - अंग्रेजी राज्य पर। हिन्दुस्तान के इन जहरीले सर्पो को, दाव

आते ही वह झकझोर डालता हैं। अपनी तलवार से उसने कंपनी को मार पछाड़ दिया है। अत्यधिक फुर्ती के साथ उसने इन भूरे रंग वाले फिरंगियों को मार-मार कर बदरंग कर दिया है। और अपने बाहुबल से उसने अंग्रेजों की कई छावनियां जलाकर नष्ट कर दी। खगराज गरूड़ की तरह इन जहरीले साँपों की फौज को वह विध्वंस कर रहा हैं। उनके आतंककारी राज्य का सफाया कर रहा हैं।

VIII–डूंगजी का पता लगाने पर ईनाम

डूंगसिंह अपने साथी करणाराम, सांवतराम, लोठूराम जाट की मदद से सरहद पर आई हुई अंग्रेजी सेना में से ऊँट घोड़े तथा धन माल लूट ले गया। कर्नल एल्विस के ताकीद करने पर महाराजा ने एक गाँव पुरस्कार में देने का वचन देकर लोठसर के ठाकुर को उसका पता लगाने के लिए भेजा। बड़े प्रयत्न के पश्चात् उसने किशनगढ़ राज्य के गांव ढसूका में उसका पता लगाकर इसकी सूचना अंग्रेज अफसर को दे दी। इस कार्रवाई के लिए अंग्रेज सरकार की तरफ से 27 मार्च 1835 (चैत्र वदि 13 वि.स. 1861) का धन्यवाद का खरीता महाराजा के पास पहुँचा।

IX–डूंगजी के दल में कई योद्धा शामिल

डूंगजी अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों से वाकिफ हो रहा था कि लोग किस तरह भारतवासियों के साथ अन्याय करते हैं। इसे वह खूब जानता था। इसलिए उसने अपने संगठन का विस्तार किया। इससे धीरे-धीरे डूंगजी के डाकू होने की बात बिल्कुल झूठी साबित हो गई और राजपुताना के बड़े-बड़े योद्धा उसके दल में आकर मिलने लगे। वैसे तो इनके दल में मुख्य करणिया मीणा, लोठू जाट, जोरावरजी, सांवताराम मीणा आदि थे ही परंतु इस नये दल में कई घुड़सवार, एक सौ ऊँट और कई पैदल थे।

X–डूंगजी के दल द्वारा नसीराबाद छावनी लूटना

डूंगजी को उसके जासूस करणाराम मीणा व लोठूजाट ने आकर कहा (सूचना दी) कि नसीराबाद में बड़े ही टके पैसे हैं! इसे लूटना चाहें तो शीघ्रता करे। बस डूंगजी अपने दल के साथियों के साथ चल पड़े। उन्होंने

नसीराबाद छावनी पर भयानक, आक्रमण बोल दिया। अंग्रेजों के सैनिक उन मतवालों का सामना नहीं कर सके। पराजित हो गए। डूंगजी ने सताईस हजार नगद लूटे और छावनी को तहस-नहस कर दिया। कई लोग मारे गए और कई घायल हुए। इस घटना के बाद अंग्रेजों की शक्ति का मजाक उड़ाया जाने लगा। उनकी इज्जत पर कलंक-सा लग गया। एक जगह भोपाओं द्वारा गाया गया :-

आधी रैण पौर के तड़कै दियौ पागड़े पावजी।
पौन भांग दरवाजा भांग्या-भांग्या लाल किंवाड़ जी।
चौवदा तो चपरासी काट्या, पंद्रह चौकीदार जी।
राठा रीठौ असौ मांडियों सेर छावणी मांय जी।
मानवीयां की मूंडी टूटी बहै रगतां रा खाल जी।
धरती माता असी बजी न जाणै खड़ी गुलाल जी।
बड़ी छावणी लूट लई आधी दे दीवी जलाय जी।
नव गोरां नाक काटिया बंगला दीन्हा ई बाल जी।
साठ ऊँट माया सूं भूरिया कपड़ा भरी करतारजी ।
घाळ कतारां नीसरास वे पोखर जी न्हाबा जाय जी।
रात दिन रा करया मामला ग्या पोखरजी धार जी।
पोखर जी रै गऊघाट पर गहरा किया सिनांन जी।
पोखरजी की लाल पैड़िया बैठा जाजम ढाल जी।

अर्थात्:- आधी रात के समय भौर के तड़के सुबह जल्दी छावनी में डाका डाला, प्रहर के समय दरवाजे पोल किवाड़ सभी को तोड़ दिया। चौदहा तो चपरासी और पंद्रह पहरेदारों को मार गिराया, ऐसी मारधाड़ मचाई छावनी शहर में कि मानो सिर मुण्ड काट-काट के खून की नदियाँ बहा दी। पृथ्वी ऐसी हो गई कि उस पर गुलाल बिखेर दिया हो। बड़ी छावनी को लूट लिया और आधी को जला दिया। नो अंग्रेजों के नाक काट दिए और उनके बंगलों को जला दिया और वहाँ से माया (धन) का साठ ऊँटों पर बोरा भर लिया और ऊँटों की कतार पर कपड़े भर दिये और सभी ऊँटों की कतार पर लादकर पुष्करजी के स्नान हेतु चल दिए। रात दिन को एक करके दिन-रात चल पुष्कर जी के घाट पर पहुँचे, पुष्कर जी के गऊघाट पर स्नान किया और किए हुए पाप को धोया। पुष्कर की लाल सीढ़ियों पर बैठकर जाजम लगाकर महफिल लगाई।

XI- डूंगजी की क्षेत्रीय सामंतों के प्रति ललकार

डूंगजी ने सामन्तों से कहा:- रे ओ देश के सरदारो! अब तुम सिंह न कहलाओ। यह अधिकार अब तुम्हें नही रहा। तुम तो विदेशियों की दया पर अपने दिन तोड़ रहे हो। सिंह तो वह है जो अपनी हथल से हाथी तक को ढहा दे। सिंह नाम तो उसका है जो दूसरों की दया का मोहताज न हो। तुमने तो विदेशियों की हुक्म अदूली ही को अपना श्रेय मान लिया है। उनके ही मार्ग को अपना मार्ग समझकर अपनी परम्परागत राह को सर्वथा बिसार दिया है। शूरवीर कहलाने वालो। तुमने तो आलस्य और ऐश्वर्य की खातिर व्यर्थ ही अपनी उम्र गवाँ दी। क्या तुम्हें इतनी छोटी-सी बात भी मालूम नही कि विदेशियों को किला सौंप कर बाहर निकलना और शरीर से जीव का बाहर निकलना दोनों एक ही बात है। तुम मर तो उसी वक्त गये, जब तुमने देश की चिंता भुला कर अपने प्राण बचाने की चिंता की। तब यही बेहतर था कि मर कर ही किले से बाहर निकलते। देश बच जाता और तुम्हारा नाम अमर हो जाता।

XII-डूंगजी की बहादुरी की कवियों द्वारा प्रशंसा

हे डूंगजी वीर, तुझे धन्य है! फौलादी दीवालों तक को तूने धान के दानों की तरह बिखेर दिया। फिरंगी छावनियों में भी श्रेष्ठ और शक्तिशाली छावनी ही को तूने धूल में मिलाया। अकेला हुआ तो क्या । गरूड़ भी तो काले साँपों के बीच अकेला विचरण करता है। उसी प्रकार तू भी भूरे रंग वाले फिरंगियां की सेना में निशंक होकर घूमता है। गरूड़ को यदि साँपों के बीच भय लगे तो तुझे भी अंग्रेजों की बीच भय लगे। शेखावत वीर तू धन्य है। और धन्य हे तेरी तलवार, जिससे हजारों दुश्मनों का रक्त नालों के रूप बहने लगता है। तेरी वीरता को निहारने के लिए आकाश में अगणित अप्सराएँ उल्लसित होकर खड़ी रह जाती हैं। तेरी तलवारों के प्रहार तो काल ही के अगणित वार हैं। और ऐसा अचूक है तेरा हाथ कि जिससे हजारों जंगी लाठ टुकड़े-टुकड़े होकर जमीन पर छितरा जाते हैं। अंग्रेजों का न्याय और दंड विधान सारी पृथ्वी पर चलता है पर तुझे दण्डित करने का सामर्थ्य तो उनमें भी नही है। न्याय उनका, तेरी दृष्टि में सर्वदा अमान्य रहा। वीर बगड़ावतो के गीतों को तूने फिर से वायुमण्डल में

मुखरित किया। तूने अपनी तलवार के जोर से भूरे फिरंगियो जैसे भंयकर शत्रुओं का सामना किया। अमल के झाग से छके हुए वीर तेरे शौर्य की धाक सभी दिशाओं में प्रतिध्वनित हो रही है। दिशांएं गा-गाकर इसी बात का प्रचार कर रही है कि तूने आगरे के यूनियन जेक की प्रतिष्ठा और उसके आतंक पर अपनी तलवार का वार किया। तू धन्य है और धन्य है तेरी वह फौलादी तलवार।

XIII–**डूंगजी का दल पुष्करजी के घाट पर**

पुष्कर तीर्थ राज राजस्थान राज्य के हृदय (मध्य) में अजमेर से 13 किमी. दूरी पर स्थित है। अजमेर से पुष्कर रास्ते में नाग पर्वतीय सुरम्य घाटी पड़ती हैं। जो सुन्दर फूलों एवं छायादार वृक्षों से आच्छादित हैं। पुष्कर तीर्थ चारों ओर से अरावली श्रृंखला की प्राचीन पहाड़ियों से घिरा है पुष्कर सरोवर में यात्रियों के सम्मानार्थ 52 घाट बने हुए हैं। जिनका निर्माण विभिन्न रियासतों के राजा-महाराजाओं ने करवाया हैं। इनमें प्रमुख गऊ घाट, ब्रह्मा घाट एवं वराह घाट हैं। नए संवत्सर के दिन गऊ घाट में पुष्कर राज का श्रृंगार सजावट एवं श्रद्धालुओं द्वारा दूध का अभिषेक किया जाता हैं। इसी घाट पर सिखों के गुरू गोविन्द सिंह जी संवत् 1762 ई. गुरू ग्रंथ साहब का पाठ किया। जार्ज पंचम की पत्नी क्वीन मेरी ने भी यहाँ जनाना घाट बनवाया। ब्रह्म घाट ब्रह्मा जी का मुख्य घाट हैं। पुष्कर जी में लगभग 500 मंदिर है जिनमें से मुख्य हैं 1. ब्रह्मा मंदिर 2. विष्णु वराह भगवान मंदिर 3. अध्यरेश्वर महोदव 4. पुरानारंगनाथ मंदिर 5. नया रंगजी मंदिर। इसी जगह पुष्कर में गऊ घाट पर डूंगजी सरदार ने अपने साथियों सहित ब्राह्मणों गरीबों को बहुत दान किया था।

पोखर जी सू कूच बोलियो डेरा गीजगढ़ गांव जी।
गीजगढ़ सूं कूच बोलियो डेरा भरतपुर सहर जी।
भरतपुर सूं कूच बोलियो ढल झड़वासे गांव जी।
झड़वासे का भैरूसिंह आडा फिरिया आणजी।
म्है तो थारे सग्गा साला गोठ जीम घर जाण जी।
मानी धारी गोठ गूघरी सिर पर ये मनवार जी।

अम तो गयाछा किले आगरे घणौ कमाचो काम जी।
कोठी लूटी अंग्रेज री हिम्मत व्है तो ढ़ाब जी।
भल कर धाया डूंगसिंह जी थे भलो कमायो काम जी।
राम धरम ने पीठ दिया नै बीच कनेया लाल जी।
स्त्री जमना गंगा सांमल खाधा रीझ गया सिरदार जी।

अर्थात् :- डूंगजी अपने साथियों के साथ पुष्कर से प्रस्थान करके गीजगढ़ गाँव पहुँचे। गीजगढ़ से प्रस्थान किया शहर भरतपुर पहुँचे। भरतपुर से प्रस्थान किया गाँव झडवासे पहुँचे। झडवासे का भैरूसिंह जी सामने आकर रास्ता रोक लिया और बोला कि मैं तो आपका सगा साला लगता हूँ। गोठ घूघरी जीम कर जाना जी। डूंगजी ने कहा कि तेरी गोठ घूघरी जीमी हुई मान ली हैं और मनवार भी मान ली हैं। मैं तो आगरे का किला फतेह करके देश में नाम बहुत कमा लिया है। हमने अंग्रेज का बंगला लूट लिया हैं यदि अब तुम हमें रोक सकता है या विश्राम दे सकता हैं तो ही रोकना अन्यथा जाने दे। डूंगजी आपने बहुत बड़ा नाम कमाया हैं। राम धर्म से आपने बहुत अच्छा कार्य किया हैं। कृष्ण कन्हैया अपनी नैया पार करे। जमना, गंगा सभी नदियों का आपने स्नान किया सभी आप पर प्रसन्न है। पुष्कर घाट पर दान दक्षिणा वितरण करने पर भोपाओं द्वारा डूंगजी,करणा,मीणा सांवता मीणा लोठू जाट आदि साथियों के लिए गीत द्वारा गाया गया है।

डूंगजी ढाबी ने बोल्या सुण ले लोटिया जाट
गरीब गुरब ने हेलो पाड ले पुष्कर जी का घाट जी।
मीणा की नोबत बजवादे, जवारसिंह का ठाट जी।
चांदी की बेडी बंधवा दे, पक्को कर देओ घाट जी।
पक्की कर देओ घाट, धरम की लाबी कर ले ओ वाट जी।
सेर सेर का लाडू बांधो, जीमण कर देओ ग्राम जी।
आपा लूटो किलो छावनी, जमी पे करयो नाम जी।
पुष्कर जी का मान पान में कमी नी रेण पाय जी।
पण्डाजी ती अरजकरी, जो पेल्यां नवत लगाय जी।
लोट्या को खाण्डो पुजवायो, राख्यो पुरो मान जी।

खोल खजानो बैठग्याजी कंचन देरया दान जी।
रीप्यो-रीप्यो दियो बामण मोहर चारणा भाट जी।
दो नाई हाथां दान करया पोखरजी का घा ट जी।
अस्सी मोर भोपा ने दी दी, वटे जुडायो गीत जी।
वेती री है वेती रेगा, डूंगसिंग की जीत जी।
सूरां आगे गावजे भोपा, सूरा लीयो नाम जी।
सूरा की तो पत राखेगा सांवरयो घनश्याम जी।
कायर आगे मती गावजे हेटां कर ले नाड जी।
सूरां आगे गावजे सूरा दे सरपाव जी।
सूरां दे सरपाव कवौ जी सूरा घणो समाव जी।
माया आया वांट पुग्या जद खाली वै ग्या हात जी।

अर्थात्:- डूंगजी सरदार ने कहा सुन ले लोटू जाट गरीब व ब्राह्मणो को बुला लो पुष्करजी में घाट पर और करणिया मीणा व सांवताराम की जय बुला दो, पुष्कर जवाहरसिंह की वाह वाही लुटा दो। पुष्कर जी के घाट पर चांदी की सीढिया लगा दो, और घाटों को पक्का करा दो, घाटों को पक्का करने से धर्म की जड़ सदा ही हरी रहेगी। किलो-किलो के लड्डू बन्धवा दो और गाँवो में न्यूतार करा दो, हमने छावनी किला को लूटा है जिससे संसार में अपना नाम हुआ। पुष्कर जी के घाट पर किसी भी चीज की कमी नहीं रहनी चाहिए। पण्डित से अरदास है वो सबसे पहले पंगत लगावे। लोटया जाट की तो तलवार पुरे जग में पूजी गई है जिसने संसार भर में हमारा मान रखा। डूंगजी अपना खजाना खोलकर बैठ गया और सोना दान में बाँट रहा है। एक-एक रूपया ब्राह्मणों को दिया व चारण भाटों को सोने की मुहर दी। दोनों हाथों से पोखर के घाट पर दान दक्षिणा बाँट रहा है। अस्सी मोहर भोपाओं को बाँट दी और अपना व अपने साथियों का नाम गीतों में जुड़ा लिया। दुश्मन देखते ही रह गए और डूंगसिंह की जीत हो गई। बहादुरों के आगे भोपा गा रहे, और शूरवीरों का नाम ले रहे, भोपा गा रहे हैं कि बहादुर की पतवार रखना सांवरिया सेठजी भोपाओं ने गाया है कि इन शूरवीरों की गाथाओं को कायरों के सामने कोई नहीं गावे। मना कर देना जी, शूरवीर के सामने ही गाना है और शूरवीरों के

ही नामों की ही प्रंशसा करनी है। कायरों के सामने इसको नहीं गाना है जिसका व्यवहार औरतों जैसा हो। इसकी बीरदावली शूरवीरों के सामने गानी हैं। जिससे शूरवीरों का मान बढ़े और उनकी गाथा सुनकर शूरवीर आगे बढे। माया को बाँट कर जब आए तब हाथ व घाट सभी खाली हो गए।

XIV–डूंगजी को झड़वासे जाने से मना किया करणिया मीणा ने

पुष्कर से आते समय अपने साथी करणिया मीणा, लोठू जाट से बातें करते डूंगजी रास्ते-रास्ते चल रहा था। इतनी देर में करणिया बोला सरदार हम कहाँ चल रहे हैं। डूंगजी ने कहा अभी तो रास्ता लंबा हैं। सोच रहा हूँ रास्ते में गाँव झड़वासा आएगा। वहाँ मेरी ससुराल है। दो चार दिन ससुराल में आराम कर लूँ उसके बाद में आगे का रास्ता तय करूँगा। इसलिए मैं ससुराल हो आऊँ। मेरा साला कई बार कह चूका कि जीजा जी आप कभी आते ही नहीं हो। कभी तो आया करो आदि तरह के उलाहना देता रहता हैं। कहीं साला नाराज नहीं हो जाए। इतना सुनते ही करणिया मीणा ने कहा सरदार फिर हम तो झड़वासा नहीं चलेंगे, और आपको भी यही सलाह दे रहे है कि आप भी झड़वासा मत जाओ। झड़वासे का भैरूसिंह आपका साला नीति से बहुत ही खराब है वह आपके साथ धोखा कर सकता हैं। इसलिए हम तो झड़वासे जाएंगे नहीं औरआपको भी यही सलाह दे रहे हैं आप झड़वासे मत जाओ। आपके साथ ध ोखा हो सकता हैं। करणिया ने मना किया और कहा परंतु डूंगजी ने कहना नहीं माना। रास्ते चलते-चलते इतनी देर में बड़े रास्ते से दो पगडंडिया फटती थी। एक ओर सरदार डूंगजी मुड़ गए और दूसरी ओर उसके साथी करणिया मीणा लोठू जाट बाकी साथी..... इस तरह वह अंग्रेजों के प्रति सोचता-२ अपने ससुराल झड़वासे पहुँच गया।

XV– डूंगजी ससुराल झडवासा में

ठाकुर डूंगरसिंह अपने ससुराल झड़वासा (अजमेर से दक्षिण में १० किमी. दूर) स्थान पर विश्रांति के लिए जा ठहरा। अंग्रेज सत्ता और भी आतंकित होकर उत्तेजित हो गई और इन स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय योद्धाओं को पकड़ने मारने और विश्रृंखलित करने के लिए सभी उपाय करने लगी। हे

फिरंगियो ! तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारी जन्म देने वाली माता को धिक्कार ! तुम्हारे पिता को धिक्कार ! तुम आठ गीदड़ इकट्ठे होकर आए और सिंह से विश्वास घात किया। तुमने सोए हुए सिंह को धोखे से पकड़ा तुम्हारी जाति को धिक्कार! मेरा अकेला जीव है और तुम्हारे साथ फौज है पर एक बार ढीला छोड़ दो (बंधन खोल दो) तो फिर तुम्हें हाथ दिखाऊँ। भैरूसिंह ने खूब सोचा। मित्रता खूब निभायी। मेरा अच्छा सत्कार किया। खूब नारियल दिया। (जवांई को ससुराल में जुहारी पर नारियल दिए जाते हैं।) संसार भर में नाम निकाल लिया। खूब मुँह काला किया। बहन बहनोई तेरे क्या लगे ? तू दगाबाजी का साला है। अंग्रेजों ने इनके विरूद्ध अभियान छेड़ दिया। एक देश द्रोही ने अंग्रेजों को खुश करने के लालच में उन्हे सूचना दी कि डूंगजी इस समय अपनी ससुराल झड़वासा में गुप्त रूप से रह रहा है।

भोपाओं ने गाया है :-

चार सीपला आगै वै गया, चार वैग्या लारजी।
बीच घिराणों ठाकर चाल्यो, भेर सींघ सरदार जी,
आळे-दौळे चली पलटण, भर बंदूका न्हार जी।
एक जीव के कारणे, फौजा चढ़ी हजार जी।
धन्य जामण मेड़ त्यागी जी, धन्य शेखा सरदार जी।
धन्य वा धरती जी पर ऊग्यो बड़ो ठिकाणेदार जी।
धुक-धुक करता जीव लाट का, थर-थर धूजे, पांव जी।
कांकड़ वाल्यो न्हार जाग गयो, ना लागण दे डाब जी।
डरता कांपता जाई पूग्या, रंगमेड़ी का पास जी।
पेला ऊपर कुण चड़ेगा, कण में अतरो सास जी।
न्हार सूत्यो पीजरे कुण जगावा जाय जी।
तीस सर की साकल नाखी डावा पग का मांय जी।
दगाबाज तो राम भूलग्या, करी ने मान्यो घात जी।
ले बंदूका चढ़या सीपला, न्हार लिया निकाल जी।
छाती आगे सेलड़ो माथा आगे भाल जी।
हाथा में हथकड़ी नाखी बेड़ी घाली पांव जी।
कड़ा तो करल्या जापदा, नी छूटण को डाव जी।
नीं छूटण को दांव डूंग का नस-नस बांध्यो डील जी।
गाबड़ नाखी सांकलां ने धरती ठोक्या खील जी।
मीणा का तो बलदा पकड़या, धरी जाट की गाड़ी जी।
आधी फौजा आगे जुड़गी, आधी जुड़ी पिछाड़ी जी।
भैरूसिंह ने अंग्रेजा को, आयो घणो गुमाण जी।
मेल पींजरो गाड़ी ऊपरे, फौरन करयो चलाण जी।
नव जागां ती बांध्यो न्हार ने धरयो पींजरा बीच जी।
धरयो पींजरा बीच, न्हार की मुस्का बांधी भीच जी।
आगरा की पक्की किल्लों क्यों फिरंगी लाट जी।
डूंगा ने फौरन लै चालो, झटपट लागो वाट जी।

आगरा की सड़क चालतां तीन दना के मांय जी।
उड़गी वेरण नींद दीखगी झुरमट-झुरमट झांय जी।
खौल पलक ने देखतां नेणा आग्यो नीर जी।
जाग्यो न्हार तड़ाका लेवे, गरज्यो डूंगो वीर जी।
छाने चुपके कांई पकड़ायों दारू जेर पिलाय जी।
भैरूसिंह हपाणों दे ओ म्हने बतलाय जी,
हामे आई ने मने पकड़तो, दो बतलातो हात जी।
धिक रे राण्ड्या मत गण जाया, छानै की दी घात जी।
धिक रे थारे बाप दोगलो, धिक रे थारी माता जी,
सूता न्हार पर कीदी साळा, थन्ने कायर घात जी।
नेकज ढीलो छोड़ फिरंगी, फेर वताडूं हाथ जी।
म्हें तो हूं राजपूत एकलो थारे पलटण साथ जी।
आछी करी जुवांरी साळा, भलो दियो नारेल जी।
भलो निभायो राम धर्म न, भलो बणायो खेल जी।
छाने दग्गे कई पकड़ायो करी राण्ड्या घात जी।
डांवा हात की खोल हथकड़ी देख मरद का हात जी,
थारी तो है लाख पलटण, म्हारी एकली जान जी।
डूंगसिंह का हात देख ले, जाणे मती गुमान जी।
आछे जाणू थने फिरंगी जाण्या थारा रूआब जी।
चौड़े धाड़े लूटी छावणी, जाई नसीराबाद जी।
बख्शी खानों लूट लूट्यों भरो खजानो छूट जी।
खड़ी पलटण हेल काट दी गाजर मूली खूट जी।
शाहपुरा को मन्दर बांध्यो जगदम्बा महाराणी जी।
गरीब गुरब ने बांट खजानों पाछी करी चलाणी जी।
क्या थी थारी खड़ी पलटण, क्या था थारा राज जी।
दग्गा ती बंधड़ायो माने भेरू दग्गबाज जी।
एक दाण का छोड़ फिरंगी, सामें कर दे गौड़ जी।
आगे कर दे गौड़, नीच का, बटका करूं करोड़ जी।

गण-गण मारू पूरब्या ने गोरा मारूं धार जी।
झाड़ झाड़ में सूथण कर दूं टोप्यां अंत न पार जी।
बड़ो-लाट गुर्राई ने बोल्यो, सुण रे डूंगा बात जी।
राजी-राजी चाल्यो चालो, नीतर पड़सी लात जी।
जोरी-जबरी करी जरा तो माथो नाखां काट जी।
अंग-अंग का बटका कर दां, देयां जीम में डाट जी।
माथा को तो नाम ले अता पड़ी कालजे लाय जी।
एडी में ती जेर ऊपज्यो, चोटी ऊपर जाय जी।
थारी बारी ऊभी छावणी, माथा कट्या हजार जी।
वणी वगत बी घणों कराज्यो, निकरयो कोइनी बार जी।
म्हारों माथों काटता, घणी लगेगा वार जी।
हाथ फेर मूंछ वट घाल्या जाणे घुड़क्यो नार जी।
बांध मरायो बोकरो, रे छूट लड़े सरदार जी।
छूटे लड़े सरदार खड़ग की करे घणी मनुआर जी।
आमा सामां डील मरोड़्यो, सांकल तोड़ी न्हार जी।
बेड़ी सुदा मारी थाप की, लियो पूरब्यो मार जी।
एक पूरब्यो मारतां, पलटण भागी जाय जी।
तीन फिरंगी आया वार में, पड़ा आड्या खाय जी।
पड़-पड़ भाग्या किलादार, धड़-धड़ थाणादार जी।
धुक-धुक करती छात्यां जो, घुड़क्यो डूंगो नार जी।
सस्तर तो हाते नी आयो, गाड़ी खूंटलो हात जी।
गाड़ी खूटला तीअज न्हार ने, कर्‌या दो दो हात जी।
जेर पियोड़ा थक्या मनख ने आवे वेरण नींद जी।
मौत नी जाणे, घात नी जाणे सुध - बुध खोवे नींद जी।
डूगसिंघ ने धतूरा की, आवा लागी गेर जी।
ऊभी वाट रकड़की ग्या रघड़ पलटण चारूमेर जी।
लोहा को तो बण्यो पिंजरो लोहा का बण्या कमाड़जी।
डूंगसिंघ ने मूंद्‌यो पाछे दियो पींजरे वाड़जी।

रात दना को कर्‌यो मामलो ले ग्या आगरे ठेठ जी।
डूंग नार ने गंध्यो देख खास्यो मोटो सेठ जी।
दांत काढ यो केवा लागो,शेखावत राव जी।
सीकर से राणी मंगवा देयु, मन में वे जो चाव जी।
डूंगसिह जी आंख तेरी घुड़क्यो पींजरा बीच।
तोड़ पींजरो बाहर आईने थने देखसा नीच।।

अर्थात् :- चार सिपाही आगे हो गए चार सिपाही पीछे हो गए बीच-बीच में ठाकुर भैरू सिंह सरदार। आजु-बाजु में फौज चल रही थी बन्दूकों में कारतूस भर कर। एक जीव के लिए हजार फौजी चढ़कर आ गए। धन्यवाद उसको जन्म देनेवाली को धन्यवाद शेखा सरदार, और धन्य वो धरती माता जिस पर ऐसे वीर पैदा हुए है व धन्य हैं वो राजा जो ऐसे ठिकाणे के है। भैरू सिंह व फौजियो के कालजे (जीव) काँप रहे थे पैर धूज रहे थे क्योंकि यदि न्हार डूगसिंह जी जग गया यानि कि उठ गया तो अपने दाव नहीं लगने देगा। डरते हुए कांपते हुए रंगमहल के पास जा पहुँचे और कहने लगे पहले कौन ऊपर चढ़े। महल पर किसी में भी साहस नहीं हो रहा था। जिस तरह शेर सो रहा हो उसको जगाने की हिम्मत कौन कर सकता है परन्तु धोखे से तीस किलो की साँकल उसके दायाँ पैर में डाल दी और बांध दिया। दगाबाज दगा करने वाले राम को भी भूल गए और घात लगाकर शेर को पकड़ लिया। अंग्रेज पुलिस वाले बन्दूक लेकर चढाई कर दी व सिंह को रंगमेड़ी में से निकाल लाए। छाती के सामने सिरिया लगा दिए व सिर पर भाले लगा दिए। हाथों में हथकड़िया डाल दी पैरों में बेड़ी लगा दी। सख्त पहरे लगा दिए अच्छा प्रबन्ध कर दिया, कि कही छूट नहीं जाए। छूटने के कहीं पर भी दाव लग रह थे उसके शरीर को जगह-जगह से बांध दिया गया था। साँकलो से सख्त बांध दिया धरती में किलों के द्वारा बाँध दिया गया। मीणों के बैल मंगवा लिए गये जाटों की गाड़ी मंगवा ली गई। वहाँ खड़े फौजियों में से आधे आगे हो लिए आधे पीछे हो लिए। भैरूसिंह को अंग्रेजों का गर्व छा गया छाती चौड़ी फुलाव लिया ऊँची-ऊँची डींग मारने लगा अर अपने जीजा को गाड़ी में बैठा के पींजरे में कैद करके उसको अंग्रेजों क साथ विदा किया। डूंगसिंह शेर को नौ जगह से बाँध दिया और पींजरा में कैदे

कर दिया। पींजरे के बीच में बैठाकर शेर की मुट्ठियों, नसों को जगह-जगह से बाँध दियां आगरा के किला का पक्का इरादा करके फिरंगी वहाँ से रवानगी लेते है। डूंगसिंह को यहाँ से तुरन्त ले चलो। कहीं देरी न हो जाए। आगरा की सड़क पर तीन दिन में सफर तय करना है। डूंगसिह की नींद उड़ गई आँखों में पानी आ गया। पलकों को बार बार खोलता रहा और सोचता रहा शेर जग गया डूँगसिंह शेर की तरह गर्जना करने लगा और कहने लगा आपने मुझे चोरी-छिपे पकड़ा वो भी दारू जहर पिलाकर। भैरूसिंह कहाँ पर है मुझे एक बार उसको दिखला दो, यदि मेरे सामने आकर पकड़ते तो मैं बताता और दो दो हाथ करके बताता। धिक्कार है तुम्हारी जन्म देने वाली को जिसने तुम्हे जन्म दिया। तुमने मुझे छुपके से पकड़ा है। धिक्कार है तुम्हे तुम्हारा बाप दोगला है। धिक्कार है तेरी माता का जिसने ऐसे पुत्र को जन्म दिया।

भैरूसिंह साले तूने सोए हुए शेर पर वार किया है तुमने कायरता दिखाई है घात लगाया है। एक बार मुझे छोड़ दो उसके बाद में, हे फिंरगियो फिर आपको बताता हूँ। मैं तो राजपूत अकेला हूँ आपके साथ तो पूरी फौज है। अरे भैरूसिंह साला तूने जीजा की जुहारी बहुत बढिया की है और साथ में नारियल भी बढिया दिया है। आपने अपना धरम अच्छा निभाया है अच्छ खेल खेला है धन्य है तुझे, तुमने मेरे साथ दगा किया है और घात लगाकर पकड़वाया है। मेरे दांये हाथ की हथकड़ी खोल दे फिर इस शेर मर्द का हाथ देख आपको क्या दिखाऊँ हे फिंरगी तेरी तो लाख फौज है मेरी तो अकेली जान है। तू डूंगसिंह का हाथ देख ले इस पर मैं कोई गर्व नहीं कर रहा हूँ। हे फिंरगी जब आपको समझूगाँ और जब आपका रोब अन्दाज समझूगां। खुले में नसीराबाद छावनी मैंने लूटी है। जो खजाना भरा हुआ था उसको लूटा था किसी को भी नहीं छोड़ा था। वहां खड़ी हुई फौज को गाजर मूली की तरह काट दिया था। शाहपुरा में जगदम्बा माता का मन्दिर बनाया था। गरीब व बाह्मणों को खजाना लुटाया था। पूरे धनमाल को मंदिर पर वार कर वहाँ से रवानगी ली। वहाँ आपकी फौज का राज हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सका। हे फिंरगियो भैरूसिंह ने मुझे धोखे से पकड़वाया है। एक बार छोड़ करहे फिंरगी! मेरे सामने इस धोखे बाज भैरूसिंह को खड़ा कर दे तो मैं इस

नीच को करोड़ों जगहों से खा जाऊँ। एक-एक अंग्रेज को गिण -गिण मारूँ और एक भी अंग्रेज को नहीं छोड़ूँ। झाड़ी-झाड़ी में इनकी पतलून टांग टूँगा और टोपियों का अन्तरपार ही नहीं रहने टूँगा। बड़ा अफसर गुस्से में होकर बोला, डूंगसिंह मेरी बात सुनो राजी खुशी चले चलो वरना आपकी पिटाई करनी पड़ेगी। यदि जोर जबरदस्ती आपने की तो आपका सिर कलम कर दिया जाएगा। शरीर के प्रत्येक अंग के टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएगे और जमीन में गाड़ दिया जाएगा। सिर का नाम लेते ही डूंगजी के कालजे में चोट सी लगी और एडी में जहर पैदा होकर चोटी तक गुस्से से लाल पीला हो गया। अरे अंग्रेज तू छावनी में भी खड़ा था तब तेरे सामने हजारों सिर काट दिए गए थे। उस वक्त आपने बहुत गर्जना की थी परन्तु कोई जोर नहीं चला। मेरा सिर काटने में समय लगेगा। डूंगसिह अपनी मूछें पर हाथ फेर शेर की तरह धहाड़ा और कहा कि नीच तुमने मुझे बाँध कर मराया है।

मुझे छोड़ कर देख सरदार की तरह लड़ूं। सरदार की तरह लडूंगा और तलवार की घणी मनुवार करूँगा। एक बार छोड़कर तो देखो और अपने शरीर को उल्टा सीधा किया डील (शरीर) का मरोड़ा किया। जिससे उस शेर ने सांकल को ही तोड़ दी। हाथों में बेड़ी लगी थी बेड़ी सहित ही एक थप्पड़ का वार किया जिससे एक अंग्रेज सिपाही मर गया। एक अंग्रेज सिपाही के मरते ही फौज भागने लगी। तीन फिरंगी उसके वार के नीचे आ गये और ठोकर खाकर गिर पड़े और उठ-उठ कर भागने लगे, थानेदार धड़-धड़ पड़ने लगे। जब शेर डूंगसिंह ने दहाड़ मारी तो सब की छातिया धड़क-धड़क करने लग गई। हथियार तो डूंगजी के हाथ नहीं लगा परन्तु गाड़ी का एक खूँटा उखाड़ लिया और उसका वार करने लगा और अपनी ताकत दिखाई, इसके उपरान्त डूंगसिंह के जहर की दारू का नशा चढ गया और नशे के कारण नींद आने लगी। नींद मौत घात दगा कुछ भी नहीं जानती और सारी सुध-बुध खो बैठे। डूगसिंह को धतुरा की शराब का नशा छा गया। कुछ राजपूत और फौज उसके चारों तरफ हो गए। डूँगसिंह को जिस पींजरे में रखा गया था वह भी लोहे का था। उसके किवाड़ भी लोहे के थे। डूंगसिंह ने अपना मुँह पूछा उसको पिंजरे में बैठा दिया। रात दिन एक करके उसको आगरा ले गए।

डूंगसिंह को पिंजरे में बैठा (कैद) देखकर वहाँ खड़े सेठ ने उसकी मजाक उड़ाई और हंसता हुआ दाँत निकालकर कहने लगा राव शेखावत सीकर से रानी मंगाव दूँ क्या ? आपके मन में रानी की याद आ रही होगी, डूंगसिंह की आँखों में गुस्सा भर आया आँखे लाल पीली हो गयी और पींजरे के अन्दर से गुर्राया और कहा अरे सेठ नीच मुझे पीजरे के बाहर आने दे फिर देखूगाँ तुझे।

XVI- डूंगजी को पिंजरे में देख, औरते बातें करती है

कम्पनी के अफसर ने सोचा कि डूंगजी को यदि किसी शासक के यहाँ रखा गया तो जनता हंगामा करेगी। इसको काफी दूर आगरे के किले में बन्द करना चाहिए। इसलिए उसको पिंजरे में डाल आगरे ले जाया गया। काठ लोहे के पींजरो में जकड़ा डूंगजी को सिंह की तरह ले जाया जा रहा था। उसका ललाट प्रातः के सूर्य की भांति चमक रहा था। नेत्र ऐसे लग रहे थे, जैसे कोई दिया या बल्ब जल रहा हो। रास्ते में लोग लुगाई उसको बन्द पिंजरे में देखकर आपस में बातें कर रहे थे। उसको देखकर पीछे पड़ रहे थे। औरतें एक दूसरी के हाथ का टल्ला (धक्का) देकर कहती "देख रे सखी इस शेर की आँखे ऐसी लग रही है जैसे कोई मशाल जल रही हो और इसकी गर्दन तो सवा हाथ जितनी लम्बी है।" दूसरी सखी कह रही है यह तो बड़ा बलिष्ठ है बलवान शूरवीर है इसके नाम से तो इस कम्पनी का अफसर भाग छूटेगा, यदि इस जैसे दो-चार सूरवीर और हों तो फिरंगी इस देश से भाग छूटेगें।इस तरह अंग्रेजों ने धावा बोल दिया और धोखे से 24 फरवरी 1846 को उन्हें गिरफ्तारी कर लिया तथा 04 मार्च को डूंगजी को आगरे के किले मे कैद कर दिया गया। डूंगजी को आगरे की जेल में ले जा कर बन्द कर दिया और पहरा बैठा दिया।

XVII-डूंगजी की अंग्रेज अफसर द्वारा प्रशंसा

कम्पनी सा निरखण नै आयो, रांघड़ वड़ो हुंस्यार।
भलभल तो माथो करै, नेणा जलै मुसाळ।
इसड़ो राघड़ अेक है रे। जे होवे दो च्यार।
मार-मार फिरंग्या नै कर दै कळकतै कै पार।
दो बोतल दारू की पीवै, पका पेटिया च्यार।

भल-भल यो जायो ठकराणी न्हारा हंदो न्हार
लाल किलै कैं मांयने डूग न्हार रख लेणा।
हुक्म नहीं छै काले पाणी नजर कैद कर देणा।

अर्थात् :- कम्पनी का बड़ा साहब देखने आया। बोला रांघड़ बड़ा होश्यार है ललाट जगमग कर रहा है। नेत्रों में मशालें जल रही है, ऐसा राजपूत यह एक ही है, यदि दो-चार हों तो अंग्रेजों को मार-मारकर कलकत्ते के पार कर दे। यह शराब की दो बोतलें पीता है, पक्के चार पेटिये (चार आदमियों का भोजन) खाता है। ठकुरानी ने इसे खूब जन्म दिया। यह सिंहो का सिंह है, इस डूंगसिंह को लाल किले में रख लेना, कालेपानी का हुक्म नहीं है नजर कैद कर देना।

XVIII–डूंगजी को अंग्रेज अफसर द्वारा सुपरमैन बताना

डूंगजी को देखने के लिए बड़े-बड़े अंग्रेज अफसर किले में आने लगे। उसकी महाकाया को देख कर वे चौंक पड़ते थे। डूंगजी महाबली भीमकाय, लग रहा था। इतना तगड़ा आदमी उनकी नजर से अभी तक नहीं गुजरा था। एक अंग्रेज अफसर ने आश्चर्य से कहा ऐसे महाबली लोग दस बीस और हो जाए तो हम को सात समन्दर यानिकी अपने देश पहुँचा कर ही दम लें। एक अंग्रेज अफसर अचानक आता है ज्यों ही वह पिंजरे के नजदीक-पहुँचता है एक दम से डूंगजी को देखता है तो उसकी आवाज ही बन्द हो जाती है और आवाज निकलती तो कहता है "दिस इज नो मैन इट इज सुपरमैन" की उपाधि देता है और कहता है कि इस पर कड़ा पहरा कर दिया जाए। डूंगजी की खुराक से भी अंग्रेज हैरान थे, डूंगजी दो बोतल दारू की पीता था। चार पेटिया खाना खाता था। घड़ा, आधा घड़ा पानी पी जाता था।

XIX– डूंगजी को देश की चिंता

डूंगजी को अपनी गिरफ्तारी की कोई चिंता नहीं थी। उसे चिन्ता स्वाधीनता संग्राम के रूक जाने की थी। वह सोचता रहता था कि उसका अधूरा काम अवश्य पूरा होना चाहिए। यही वह जेल में सोचता रहता था कि मेरे पीछे से इन फिरंगियो को भगाने की योजना कौन बना रहा होगा? आदि बातें सोचते-सोचते उसकी जेल कटने लगी। जेल मे आने वाले प्रत्येक अंग्रेज

अफसर से कहता मैं तुम सबको देश से निकालकर ही दम लूगा। वहाँ बन्धे हुए डूंगजी से भी अंग्रेज डरते थे।

ऊँडा-ऊँडा मेल्या पीजरा, किला जेल का मांय जी।
आवण जावण बन्द कराई दी, बेड़ी खोली नांय जी।
बड़ी लाट घुड़की ने बोल्यो, सुणो सिपाही बात जी।
अण का साथी आइनी पावे, करनी पावे घात जी।
मारण कूटण तो मत करजो, जनम केद कर देणा जी।
बेड़ी हथकड़ी मती खोलजो, जनम का गेणा जी।
पक्का देणा पेट्या दोनो इ वेरा धाप जी।
दोनों वेरा धाप चौकसी रखजो रे चुप चाप जी।
आगरे का जेली खाने, न्हार लियो बैठाण जी।
जेली खाने बीच डूंग ने, काडी घणी पिछाण जी।
नागपुर को नागो सामी अकलाणे को सेठ जी।
पीसागन को रूघनी ठाकुर, डिग्गी को बारेठ जी।
बारोट्या तो घणा बाधल्या, हिन्दू मुश्लमान जी।
जाट, खवासा, मीणा गूर्जर दुजो का दीवान जी।
बड़ा बड़ा तो सेठ बांध्या बड़ा बड़ा उमराव जी।
बावन बधवा पड़या कैद में डीलाँ पड़या घाव जी।

अर्थात् :- डूंगजी के पींजरे को किले की जेल में गहराई पर रखा गया। उधर से आने जाने वालों का रास्ता बन्द करा दिया और बेड़ी को खोला नहीं गया। बड़ा अंग्रेज अफसर गुस्से में बोला सिपाही मेरी बात ध्यान लगाकर सुनो। इस डूंगजी का कोई भी साथी यहाँ इनके पास न आ सके और किसी भी प्रकार का दगा नहीं कर सके। मारना पीटना कूटना नहीं है बल्कि उम्र कैद की सजा दे देना। इसकी हथकड़ी बेड़ी को खोलना नहीं है। यह तो इसके जन्म भर तक का गहना रहेगा। इसको खाणा-पीणा दोनों समय पूरा देना, दोनों समय इसकी चौकीदारी पूरी करनी है, और इसको चुप चाप रखना इस प्रकार आगरे के जेलखाना में शेर को बैठाय लिया कैद खाने में डूंगजी ने जान पहचान निकाल ली, नागपुर का नागा स्वामी,अकलाण का

सेठ, पीसांगन को रूघजी ठाकुर डिग्गी को बारेठजी, देश के आजाद सिपाही यानिकी स्वतंत्रता सेनानी बहुत अधिक इकट्ठे कर रखे थे जिसमें हिन्दु मुसलमान सभी थे। जाट, खवासा, मीणा, गूर्जर और कई दीवान थे बड़े-बडे सेठ भी बंधे पड़े थे और बड़े बड़े ठाकुर इस तरह बावन कैदी जेल में कैद थे उनको देखकर थोड़ा सन्तोष लिया।

XX– डूंगजी को कैद में होली की याद आना

डूंगजी अपने दिन आगरा के किले की कैद में काट रहा था। दिन गुजरते जा रहे थे। होली का त्योहार आ गया। डूंगजी सदा होली का त्योहार धूम-धाम से मनाता था। गरीबों को मिठाई बाँटता था। रंग गुलाल उड़ाता था। आज वह हथकड़ी और बेड़ी में जकड़ा कसमसा रहा था। आगरा के किले में रहते-रहते उसे किले के बारे में सब कुछ मालूम हो गया था। उसको जानकर दुख हुआ कि अधिकांश कैदी बागी हैं। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाई थी। उनके अन्याय के विरूद्ध बगावत की थी पर सभी को उन्होंने चोर और डाकू कहकर कैद में डाल रखा है। इतने में एक पहरेदार टहलता हुआ डूंगजी की तरफ आ रहा था डूंगजी ने उससे पूछ लिया भाई! तुम तो हिन्दू हो होली का त्योहार हम कब मनायेगे ? पहरेदार ने झट से कहा "हम नहीं तुम कहो। यहाँ त्योहार तो केवल हम मनाएंगे .....कैदी नहीं।

XXI–डूंगजी से लोठू की वार्तालाप

अंग्रेज अफसर आपस में सलाह मशविरा कर रहे हैं। छह महीने से यह साधु यहां जमा पड़ा है उसे देखने सुनने के लिए भारी भीड़ जुटती है। यह भीड़ हमारे लिए कभी खतरा पैदा कर सकती है। इस साधु को यहाँ से हटाना होगा। एक अंग्रेज अफसर साधु के पास खड़ा है, महाराज आप यहाँ से कहीं और चले जाइए हम आपको मुँह मांगा धन देगें। हम साधु संन्यासियों को धन से क्या लाभ ? धन का लोभ तो गृहस्थजन को रहता है फिर आप क्या चाहते है। हम डूँगसिंह की एक झलक। फिर हम गंगा स्नान करने चला जाऊगाँ ठीक है मेरे साथ चलो। किले के दरवाजे के पास दो पहरेदार खड़े दिखाई दे रहे हैं। अंग्रेज अफसर के साथ साधु का वेश बदले हुए करणिया भी किले के दरवाजे के बाहर खड़ा दिखाई दे रहा है। अफसर पहरेदार को

आदेश दे रहा है। इन्हें पक्के पहरे में डूंगसिंह से मिलाने का इंतजाम करो, किले का भीतरी भाग कुछ प्रहरी आगे व कुछ पीछे बीच में लोट्या चले जा रह हैं। करणिया भी राजकर्मचारी के साथ साधु भेष में उनके पीछे पीछे है। तहखाने की सीढीयों से पहरेदार लोटया आदि नीचे उतर रहे है। तहखाने का अंदरूनी भाग डूंगजी और लोटया आमने सामने दोनों की आँखो में आँसू छलक आते है इस प्रकार वे डूंगसिंह वाले बुर्ज के पास पहुँच गए और आवाज दी-हे डूंगजी बोलता है तो बोल बेड़ी काट दे और लोठू बाबा उससे वार्ता करके वापस बठोठ आ जाते है।

XXII-डूंगजी की कैदीयों के साथ उदारता

तब बायीं बुर्ज मे से डूंगजी बोला मानो सिंह दहाड़ा अरे लोटिया मेरी बेड़ी काटने से नाम नहीं रखा जाएगा। मेरे साथ कैद में सत्तर कैदी हैं, उनकी बेड़ी पहले काट किसी की बहन भानजी रो रही है किसी की माँ रो रही हे किसी के छोटे बच्चे रो रहे है किसी की स्त्री रो रही है कैद में बैठा डूंगजी कहता है। अरे लोटिया जाट सुन पहले तो इन कैदियों की बेड़ियां काट, पीछे मेरी काटना, नहीं तो सत्तर कैदी क्या जानेंगे? कहेंगे सिंह जैसा डूंगजी ऐसे निकल भागा जैसे चोर निकल भागता हो, बुर्ज को तोड़कर सब कैदियो को एक साथ बाहर निकाल दे लोटिया । हम तो दो दिन मे मर जाएंगे पर दुनिया बात करेगी। लोटिया ने उत्तर दिया यदि फिंरगी को पता लग गया तो वह वापस लौट आयेगा। हमें तोप के मुंह पर चढा देगा और तुम कैद के कैद में रहोगे। इतनी बात सुनते ही डूंगजी बड़ी कड़वी बात बोल उठा अरे लोटिया। इस मुंह का धनी होकर (यह मुंह लेकर) तू मुझे छूड़ाने आया है। लोटिया यदि तू मरने से डरता है तोपों का भय खाता है तो तेरी तलवार म्यान में कर ले और उलटा घर को चला जा। जब लोटिया व करणिया मीणा ने यह बात सुनी तो उसके तन में और मन में आग सी लग गयी। वह छिन्नी और हथौड़ा लेकर कड़कड़ी खाकर पड़ा (दांत कट कटाकर बेड़ी काटने के काम में लग गया) छिन्नियां छिन्न-छिन्न, मिन-मिन शब्द करती चलने लगी, साथ में हथौड़े सकासक चलने लगे। एक घड़ी में लोटिया और करणिया मीणा ने पूरे सत्तर कैदियों को निकाल बाहर किया जब सत्तर कैदियों को बाहर

निकाल चुके तो डूंगजी के पास गये और बोले हे रावजी। अब क्या कहते हो? तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई या नहीं? फिर लोटिया ने पिंजरा तोड़ा और करणिया ने बेड़ी काटी और कैदियो के उस मित्र को हाथ पकड़कर बुर्ज के बाहर कर दिया। डूंगजी जिस उदारता के साथ आपने अलावा अन्य कैदियो के लिए भी छुड़ाने के लिए कहता है। उसमें उसका बड़प्पन, वीरता, उदारता का परिचय दिखाई देता है जो एक बेमिसाल है। डूंगजी अपने साथ कैद में बन्दी बने सत्तर बन्दियों की बेड़ियाँ काटने की शर्त अपने साथियो के सामने रखी। उसके साथियों ने तो एक बार तो मना कर दिया परन्तु डूंगसिह की जिद के आगे सभी झुक गये और अपनी जान को जोखिम में डालकर सभी बन्दियों को मुक्त कराया और सभी को अपने नेतृत्व में आगरा की सीमा से बाहर बहुत दूर ले जाकर उनको अपने-अपने घर के लिए विदा किया। इस तरह डूंगजी एक जनवरी 1847 को आगरा की कैद से मुक्त हुए। डूंगजी ने मुक्त होते ही लोटिया जाट व करणिया मीणा को गले लगा लिया और कहा मित्र हो तो ऐसे। भाई हो तो ऐसे तुम और तुम्हारी माताएँ धन्य है और कहा अब इन फिंरगियो से गिन गिन कर बदला लूँगा। इन्हें सात समन्दर पार भेजूगाँ। इस लड़ाई में उनके कई साथी वीर गति पा गए। फिंरगियो के 128 सैनिक हताहत हुए। डूंगजी और उनके साथी भरतपुर के राजाओं के साथ बठोठ की ओर रवाना हो गए।

XXIII–डूंगजी द्वारा युद्ध में कौशल दिखाना

सम्वत 1903 (सन् 1846) के मार्गशीर्ष (मंगसिर) के महीने में के पर्व ताजिया के समय आगरे में जेल पर धावा बोला जाता है। उस भीड़ में लगभग 400 जवान थे। जो डूंगजी को छुड़ाने गए थे। डूंगजी के लिए आगरा के किले का वर्णन भोपों द्वारा गाया गया।

बेड़ी कटता डील मरोड़्यो, दूड़क्यो जाणे न्हार जी।
हाथ पकड़ न बार निकारया, बोल्या जै जै कार जी।
खारी वाली मेड़ पाणी भलो डूंग नर जायो जी।
पक्के किल्ले आगळ भांगी, निकर जीवतो आयो जी।
पेला में मी पड़्या कैद में नी चाल्यो थो नाम जी।
अभे तो म्हांकी बेड़ी कटगी करा मदद को काम जी।
करा हींद तिवार फिरंगी राण्ड्या ठाकर मार जी।
राण्डया ठाकर को कांई जीणो,धरती ऊपर भार जी।
राजपूतण को दूध लजावे, कामण चुडलो लाजे जी।
छत्री जाणा वणी मरद ने, रण में गाजे वाजे जी।
घोडी दे दे भीड़ भतीजा, हाता दे दे तेग जी।
गण गण मांरू थड़ा पूरण्या पलटण काटू बेग जी।
कैदी बंधवा देखता जी कोई, नैण आ ग्यो नीर जी।
भली करी जुवारसिंह थे अण की काटी भीर जी।
अणा सबा का पांव सूज ग्या, हाल्यो चले नी जाय जी।
बड़ा लाट का घोड़ा खोल सुगरा ने दिवो बैठाय जी।
जूनी पाळ का घोड़ा डकाया दियो बंधवा ने चाढ जी।
जेली खाना का फाटक ने नाख्यो देखता पाड़जी।
एक एक तो घोड़ो सोटयो एक एक बन्दूक जी।
बाकी घोड़ा की गरदन का कर द्या दोदो टूक जी
ढेर ढेर बंदूका हगरी दी जमना में डार जी
घुड़ले बैठ रांघड़ो धडक्यो जाणे ढूक्यो न्हार जी
तोय दगी बारा बजी आया खरा दपेर जी

तोय तड़ाके पड़या रांघड़ा गढ आगरे शेर जी।
ताजा निकर्‌या ताल में मरदा लागा पर ढाव जी।
पेल तड़ाके करियो रागड़े कलाली पर दाव जी।
आमी सामी मली पलटणा झटका की मनुहार जी।
बन्दूका चाले लोटणी जी कोई गोलियां गावे गार जी।
अंग उड़े माथा पड़े, वे लोह्‌या का खार जी।
छीदा छीदा बरछी चाले हंकरा मे तरवार जी।
खांडो चाले बीजली जी कोई मन में गाढो गाड़ जी।
लाम्बो लाम्बो जुवारसिंह जीकी डोढ वेत की नाडजी।
डोढ हाथ की नाड मरद की, गोड़े ढरकता हात जी।
पान से तो बीलाती मार्‌या, लोट्‌यो, करणियो मीणा हात जी।
आठ संतरी काट द्‌या, पन्द्रा थाणादार जी।
हज्जारां गोरा ढरकाया, डूंगसिंह, सरदार जी।
लोढ्‌यो झटका करे जीमणो, करणियो मीणो डावे हाथ जी।
जुवाहर सिह जी झुठा-छटा, तलवारां री घात जी।
नेजे नेजे पाणी भरतां चलम घणी चतराई जी।
डूंगसिंह की डाबी भुजा लड़े बाल्यो नाई जी।
एक पछाड़ी ग्यारा कटग्या, रंग रे बाल्या नाई जी।
अणगण्या पूरबल्या काट्‌या, मोत्ये डांग बलाई जी।
शेखावत बीदावत जूझे लड़े तवंर पंवार जी।
अड़ेत्या मेड़त्या जूझे कूपावत सरदार जी।
लड़े गुसाई दादूपंथी जांकी तेज कटार जी।
घुम्मा मारे उचक-उचक नै सौबन्यो सुनार जी।
आधो आगरो लूट ल्यो आधा माई मेली आग जी।
लाडू पेड़ा नगर जलेबी, ठोकर उड़े गरा द जी।
मेला बैठी अंग्रेजां की मेमा करे कूल्लार्ट जी।
घणी कलपती आड़्यां खाती खावे घणा उल्लाट जी।
लागी ला तो आलो हूको कई बी नी पीछाणे जी।

मेला मांय ने फंसी मैमटिया घरां बसीका ताणै जी।
डंग नार की लीली घोड़ी चढया संग्गता हरछी जी।
लीली घोड़ी डट्या रांघड़ा कांधे धर ली बरछी जी।
लागर्‌या छत्री का टल्ला, धूजण लागी धरती जी।
सवा पेर तो सूरज कंप्यो थर-थर धूजी धरती जी।
बड़ा लाट को पत्तो कोइनी, जणे डूबक्यो हियांर जी।
रगतां की तो कीच मची गी, लोथां पीर हजार जी।
जनरल अनरल घणां करांजे जा नी पावे बार जी।
डूगंसीघं हुंकारा लेवे आओ फिरगी बार जी
यो तो डूगो एक जाथ्यो असा जो वे दी चार जी।
मार-मार ने धुप्पल कर दे, कर दे लंदन पार जी।

अर्थात्:- डूंगसिह जी की हाथों की बेड़ियाँ काटते ही उसने अपने डील शरीर को मरोड़ा और शेर की तरह दहाड़ मारी उसका हाथ पकड़ कर बाहर निकाला और निकालते ही जयकारा किया। मेड़त्याणी रानी इस तरह के नाहर को जन्म दिया। मजबूत पक्का किला की आगल तोड़ कर जीवता बाहर आ गया। पहले तो खुद जेल में पड़ा था जिसमें जोर नहीं चल रहा था। अब मेरी बेड़ी (हथकड़ी) कटगी है अब मैं मर्द का कार्य करूँगा, फिरंगियों को मार काट कर हिन्दुस्तान से बाहर करेंगे। ठाकरों द्वारा मारे जाएगे इस तरह की ठकुराई से क्या जीना धरती पर भार बनकर इससे तो मरना अच्छा है। राजपुताणी के दुध को लजाणा अच्छा नहीं, इससे अच्छा तो चूड़ियों को उतार फैंकना अच्छा हैं। वो स्त्री बिना सुहाग के ही रह सकती है। क्षत्रिय उसी मर्द की पहचान ही या वही मर्द है वीर बहादुर है जो युद्ध में अपना कौशल दिखावे। डूंगजी कहता है मुझे मेरी घोड़ी दे दो भतीजा और हाथों में तलवार दे दो, एक-एक फिरंगी को गिन गिन मारूँगा और पूरी फौज को काट दूँगा। जेल में बन्धे कैदी देखकर आँखो में पानी आ गया। अरे जवाहर सिंह आपने अच्छा किया जो आपने इनकी हथकड़ी काटी है। इन सब के पैर सूज गए इन से चला हिला नहीं जा रहा है। अब बड़े अफसर के घोड़े खोल लो और सभी कैदियों को उन पर बैठा दो। पुराने घोड़े खोले और उन पर बन्दियों को चढ़ा दिया।

कैद खाना के फाटक को खोल दो यदि खुलता नही है तो तोड़ दो। सभी को एक-एक घोड़ा सुपुर्द कर दो व सभी के हाथों में बन्दूके दे दो। शेष घोड़ें रह जाते है उनकी गर्दन काट दो और सभी के दो-दो टुकड़े कर दो काफी बन्दूकें शेष रह गई है उनको जमना नदी में डाल दो, घोड़े पर बैठकर ठाकुर इस तरह दहाड़ा जैसे सिंह दहाड़ रहा हो, दोपहर के बारह बजे तोप को दाग दी गई। उससे गर्मी चढ़ गई आवाज चारों तरफ फैलने लगी। ठाकुर तोप की आवाज करके गढ में शेर की तरह दहाड़ कर टूट पड़ा क्योंकि वह जैल से ताजा निकला था। मर्द के दाव तो अब लगे हैं। सबसे पहले ठाकुर ने वहां कल्लाल पर आक्रमण किया। फौज आमने सामने भिड़ गई और आपस में काटने लगे धड़ा-धड़ बन्दूकें चल रही थी। जिनसे गोलियाँ छूट रही थी जो गीत गाने की सी आवाज आ रही थी। शरीर के टुकड़े कट रहे थे सिर कट रहे थे खून की नदियाँ बह रही थी। खुले में फर्सा, बरछी चल रहे थे और जोश में तलवारें चल रही थी फर्शा इस तरह चल रहा था जैसे बिजली चमक रही हो। मन को ठोस कर के लड़ रहे थे।

लम्बा-लम्बा जुवाहर सिंह जिसकी ढेड फीट की गर्दन थी। ढेड हाथ गर्दन मर्द की और घुटनों तक हाथ आ रहे थे। पाँच सौ तो अंग्रेज मार दिए गए। लोटया जाट व करणिया द्वारा, आठ संतरी खड़े-खडे काट दिए उसके साथ ही पन्द्रह थानेदारो को मार दिया। सैंकड़ो गोरें को डूंगसिंह सरदार द्वारा मार दिया गया। लोटियो जाट करणियो मीणा द्वारा बाँए-दाँए हाथों से मार काट की जा रही थी। जवाहरसिंह जी खुल्ले आम अपनी तलवार से घात लगाकर वार कर रहे थे। यह कार्य बड़ी ही सफाई से कर रहे थे। डूंगसिंह की दाँयी भुजा के रूप में बाल्या नाई भी लड़ रहा था। इसी के साथ मोत्ये डांग बलाई ने अनगिनत फिंरगी काट दिए। शेखावत बीदावत तंवर पंवार सभी सरदार वीरता से लड़ रहे थे, अड़ेत्या मेडत्या और कूपावत सभी लड़ रहे थे दादूपंथी साधु, गुसाई, सभी अपनी-अपनी तेज धार कटार से लड रहे थे। घूम-घूम कर उछल-उछल कूद कूद कर सौबन्या सुनार भी वार कर रहा था। सभी ने मिलकर आधा आगरा लूट लिया तथा आधे आगरे में आग लगा दी। आगरा की दुकानों में लाडू पेड़ा नगद रूपये जलेबी बाजार में मिट्टी की गर्द

में उड़ रहे थे। अंग्रेजों की औरतें अपने-अपने घरों में बैठी रो रही थी। कुल्हा रही थी इस तरह की मार काट मचा दी किसी की पहचान नहीं हो रही थी। मेमसाहब (अंगेजों की रानियां) अपने अपने बंगलो में फंसी हुई थी। सभी के बहुत पसीने आ रहे थे। ठाकुर डूगसिंह लीली घोड़ी पर बैठ गया उसके सामने जाकर डट गया और अपने कंधो पर बरछी रख ली। वीरों के आपस में टल्ले लग रहे थे धरती धूज रही थी। सूर्य भी इनकी मार काट देख कर सवा पहर धूज उठा और धरती कांप उठी, अंग्रेजों का बड़ा अफसर कहाँ छुप गया उसका पता नहीं लग रहा था जैसे सियार बनकर कहाँ छुप गया है। खून की नदी बह रही थी। हजारों लाशों के टूकड़ों के ढेर लग गए थे। जनरल अनरल अफसर कितने ही थे उनका भी पार नही पा रहा था कि कहाँ गए। डूंगसिंह दहाड़ कर कह रहा है अरे गिदड़ो सियारो अपने महलों के बाहर निकल कर आओ। बार-बार चेतावनी दे रहा है महल के अन्दर सूने ही अंग्रेज अफसर कह रहे है यह डूंगसिंह अकेला ही है यदि इस तरह के दो चार और हो तो अपने को हिन्दुस्तान से बहार फेक के लन्दन पहुँचा दें।

XXIV–डूंगजी व उसके दल का आगरे से प्रस्तान

आगरै नै पूढ देय बै चाल्या रातू रात।
बंधवा का तो पांव सूजग्रू चाल्यो कोनी जाय।
आगरे के लाल किले मे बात करी बां मोटी।
असी कोस के चढये डूंगजी करी भुवाणे रोटी।
फौजा तो बाटी करी स घोड़ा नरै दीनी दाल।
झासा पड़िया पांतिया स कोई लग्या खुशी का थाल।
लोट्यो जाट करणियो मीणो बंधवा नै समझाय।
म्हारे फिरंगी लारै करसी आप आपने जाय।

अर्थात् :- आगरे की ओर पीठ करके वे रातों-रात चल दिये उनके पैर सूज गये। चला नहीं जाता था। आगरे के लाल किले में उन्होंने बड़ी बात की। अस्सी कोस चलकर डूंगजी के दल ने भुवाणे गांव में पहुँच कर रोटी की। फौज के लोगों ने बाटी बणायी घोड़ों को दाल दी। गहरी पाते पड़ी खुशी के थाल लगे फिर लोटिया जाट करणिये मीणे ने कैदियो को समझाया फिरंगी हमारा पीछा करेगे। इसलिए अब अपना अपना मार्ग देखो।

XXV–डूंगजी ने बीजवाड़ के जंगल से कैदियो को विदा किया

लूट आगरो आठ खच्चरा भरया धन कलदार जी।
राठोड़ा को वंश हठीलो ऊँटो का असवार जी।
बीजवाड़ का बीड़ में, कैदियो ने दे रया सीक जी।
खोल खजानों बांट दियो करी न मन माई बीक जी।
जाओ भाइला अंरा घरा ने रीजो थे हुसिहार जी।
बगत पड़े तो हाजर वेगा थांगो खिदमतगार जी।
साची धाड़वी डूंगसिंह बढ छतरी दातार जी।
गुरीब गुरव के कारणे आयो ले जग अवतार जी।

अर्थात् :- आगरा का किला लूट आठ खच्चरों में भरकर चाँदी के कलदार रूपये लेकर आये, ठाकुरों का वंश बड़ा गर्बीला है जो ऊँटो पर असवार होकर जा रहे है। आगरे से आये हुये कैदियों को बीजवाड़ के जंगल में शिक्षा देकर विदा किया कि आप अपने अपने रास्ते जाओ क्योंकि फिंरगी अपने पीछे लगे हुए है। लाये हुए माल (खाजने) को सभी में बांट दिया जिस तरह उनके मन मे आई उसी तरह किया और कहा जाओ दोस्तो अपने-अपने रास्ते में होशियार रहना यदि आपस में जरूरत हो तो जरूर मिलेंगें आपके दोस्त आपके लिए हाजिर होगें। डूंगसिंह सच्चा धाड़ेती जो दातारी में एक नम्बर है गरीब व बाह्मणों को दान करने वाले डूंगसिंह ने इस संसार में अवतार लिया है।

XXVI–डूंगजी का दल भुवाणां में

ठाकुर डूगसिंह, जवाहर सिंह लोठू सिंह, करणा राम मीणा, सांवतराम मीणा उन्मुक्त भारतीय आजादी के दीवाने वगैरह ने आगरा से प्रस्थान कर भरतपुर तथा अलवर राज्य के गिरी भागों को त्वरिता से पार करते हुए भिवानी के समीपस्थ बड़बड़ भुवाणा ग्राम के निकट अरण्य में विश्राम लिया।

XXVII– डूंगजी के साथ बठोठ में जाट व मीणा का स्वागत

बठोठ में उनका शानदार स्वागत हुआ डूंगजी अमर रहे। फिरंगियो का सत्यानाश हो..... आदि गगन भेदी नारे लगे। जब वे सब गढ़ की पोल के आगे पहुँचे तब ठकुरानी जी सैंकड़ों स्त्रियों के साथ डूंगजी की

आरती उतारने आई। तब डूगंजी ने ठकुरानी को गर्व से कहा ठकुरानी जी आप मेरी आरती मत उतारिए आप मेरा आव आदर मत कीजिए।

म्हानै मत बधावो राणी बधावो लोटियो जाट करणिया मीणा नै।
म्हें आपै नहीं आया, म्हानै लायो लोटिया जाट करणिया मीणा नै।

यह सच ही था कि डूगंजी की परतंत्रता की बेड़ियों से काटने वाला लोटिया जाट करणिया मीणा ही थे। वे दोनों ही सम्मान के असली अधिकारी थे। ठकुरानी ने भरे-भरे नयनों से लोटिया करणिया की आरती उतारी डूंगजी नै हाथ ऊँचा करके जोर से कहा वीर साथी लोटिया करणिया मीणा की जय-जय ..... उसकी जय-जयकार में सबने अपनी जय-जयकार मिलाई डूगंजी फिर-फिरगियों से लड़ने की तैयारी करने लगे। अंग्रेज दूनी शक्ति से डूंगजी को खोजने लगे।

XXVIII–डूंगजी द्वारा भैरूसिंह को मारना

कै झड़वासा का भैरूसिंह जीवौ कतरी रात जी।
पकड़ायो थे डूगंसिह ने जीवो कतरी रात जी।
घोड़ा ने दबढाय धाड़वी ग्या झड़वासे सहर जी।
झड़वासे के ओळी-दोळी घेरो दीन्हो घाल जी।
भरी सभा में भैरूसिंहा रौ माथो लीन्हो बाढ़ जी।

अर्थात्:- डूंगजी जेल से छूटने के उपरान्त अपने साले भैरू सिंह की खेर-खबर लेने चल दिया और उसके साथी भी उसके साथ हो लिए उसके लिए भोपाओं ने गाया है कि हे भैरू सिंह झड़वासा का तुम कितनी रात जी सकते हो। आपने डूंगजी को पकड़वा कर गलत कार्य किया था। अब डूंगजी जेल से छूट कर आते ही तेरी खबर लेगा। डूंगजी अपने घोड़े से धाड़वीयों के साथ झडवासे शहर पहुँच गया तथा झडवासे के चारों तरफ घेरा दे दिया तथा भरी सभा में अपने साले भैरूसिह का सिर काट लिया और उसको झाड़ियो में फूँक दिया।

XXIX–डूंगजी के दल को पकड़ने के लिए अंग्रेज राज का A.G.G को पत्र

अंग्रेजी शासन मुगल शासकों से चतुर था। राजा महाराजा भ्रमण व मौज मस्ती में समय व्यतीत करते थे। अंग्रेज राज का A.G.G माऊन्ट आबू में रहता था जो राजा महाराजाओं के हालचाल की जानकारी रखता व जानकारी दिल्ली पहुँचाता था। इस समय जागीरदार भी राज चिन्हों पर चलते

थे। त्यौहारों व शादियों में ठाकुर को नजराना देना पड़ता था। लगान वसूली से किसान वर्ग पीड़ित था। इधर अंग्रेजी शासन के राजद्रोही और स्वतन्त्रता सेनानियों में नये खून का संचार हुआ। आगरा का किला एवं नसीराबाद की छावनी लूटने के बाद विद्रोहियों का अगला निशाना अजमेर का खजाना लूटना था। इस योजना की खबर अंग्रेज अफसरों को कानो कान लग गई। छावनी लूट की खबर मिलने पर A.G.G सदर लेण्ड ने आबू से अजमेर के एजेन्ट डिक्शन को पत्र लिखकर फटकार लगाई कि छावनी लूटकर विद्रोहियों ने कम्पनी की इज्जत मिट्टी में मिला दी। गनीमत समझो कि अजमेर का खजाना नहीं लूटा अन्यथा गर्वनर जनरल को मुँह कैसे दिखाते? उन्होंने अजमेर खजाने की सुरक्षा व्यवस्था मजूबत करने व लोठू जाट, सांवत मीणा, करणा मीणा, डूगसिंह, जवाहरसिंह को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के आदेश दिए। राजस्थान क्षेत्र के सभी हिस्सो में सेना तैनात कर दी गई। उधर जोधपुर राज्य का अंग्रेज एजेन्ट मैशन अपनी फौज लेकर सदर लेण्ड के पास पहुँच गया। कैप्टेन हाइन्लास भी फौज लेकर आबू पहुँच गया।

सांवता राम मीणा, करणा मीणा, लोठू जाट, डूगसिंह, जवाहरसिंह को पकड़ने की योजना अंग्रेजों ने अवश्य ही बना ली थी लेकिन घर का भेदी लंका को ढहाने मे मदद कर सकता था। राजपूत राजाओं ने अपने घर को पराये हाथों में सौंपा। भारतीय सैनिकों को देश भक्ति के नाम पर अपने स्वार्थो के लिए मरवा देते थे। इतिहास का एक बुद्धिमान विधार्थी जब अलाऊद्दीन खिलजी के चितौड़गढ पर आक्रमण का इतिहास पढता है तो आश्चर्य होता है कि राजपूत व मुगल शासकों ने अपने निजि स्वार्थो के लिए लाखों लोगों की जाने सस्ते भेंट चढ़ा सदर लेण्ड साहब के आदेश पर नीमच छवनी से सेना बुलाई अजमेर खजाने की सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई। इसी तर्ज पर आबू के A.G.G सदर लेण्ड ने बीकानेर जोधपुर जयपुर के महाराजाओं के नाम दोस्ती के पत्र लिखे व राजद्रोहियों के विरूद्ध सैनिक सहायता मांगी। जयपुर बीकानेर के महाराजाओं ने सदरलैण्ड के दोस्ती पत्र को अनदेखा कर दिया, जोधपुर महाराजा तख्तसिंह ने अंग्रेजों के प्रति वफादारी दिखाते हुए अपनी फौज के साथ मेहता विजय सिंह प्रधान कुशलराज सिंघवी व किलेदार अनाड़सिंह को भेजा।

XXX–डूंगजी के दल ने मेजर फोरेस्टर को तंग किया

डूंगजी अपने साथियो सहित रात होने के उपरान्त अचानक अंग्रेजो की फौज पर धावा बोलता था। एक जगह घोड़ा, ऊँट और धन लूटा और अपनी फौज में बाँट दिया। अपनी फौज के घोड़े ऊँट और धन लूटने का समाचार सुनकर मेजर फोरेस्टर इनके पीछे लग गया। रोज लड़ाई में आमना-सामना होता और रोज मौका देखकर अंग्रेजी फौज पर फिर धावा बोल देता था जब फोरेस्टर वहां से चलता तब तक दूसरी जगह धावा बोल देता था। इस प्रकार मेजर फोरेस्टर को तंग कर दिया और अंग्रेज अफसर के मन में इनके प्रति शंका हो गयी ओर उसने जगह-जगह सुरक्षा इन्तजाम पुख्ता किया। इधर जब डिक्सन साहब को पता चला तो उन्होंने यह समाचार सदर लैण्ड के पास भेजा। सदर लैण्ड फिर दुबारा आदेश निकाल दिया और फोरेस्टर को आदेश दिया कि यथा शीघ्र डूंगसिंह व उनके साथियों को पकड़ो। इधर अंग्रेज सरकार पकड़ने का आदेश निकाले उधर डूंगसिंह अपने साथियों सहित उनके थानों में इस तरह हमला करे जिस तरह भेड़ बकरियों के रेवड़ में न्हार (सिंह) धावा बोले। दिन होते-होते अफसरों के पास फिर खबर पहुँच जाती की डूंगसिंह ने उस जगह धावा बोल दिया और फिर डूंगसिंह अपने साथियों सहित जंगल में भाग जावे।

XXXI–डूंगजी के दल द्वारा अजमेर का खजाना लूटना

18 जून 1847 को डूंगजी अपने साथी लोठू, करणा मीणा, सांवता मीणा, जवाहर सिंह आदि सहित अजमेर छावनी पर धावा बोल दिया। यहां से अस्त शस्त्र ऊँट-घोड़े और खजाना लूट लिया। लूट का धन लेकर आते समय वे पूरे रास्ते गरीबों को बांटते आते थे। डूंगजी व उनके साथियो का आतंक बहुत जबरदस्त छा गया था। इनकी सेना बहुत छोटी थी परन्तु इनका नाम सुनकर अजमेर की विशाल छावनी की अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित अंग्रेजी सेना संख्याबल में बड़ी होने के बावजूद आक्रमण होने पर हक्की-बक्की रह गयी।

XXXII–डूंगजी के नाम कैप्टन हाड़ केसल का सन्देश

डूंगजी जैसलमेर की तरफ चल पड़े। उनके पीछे-पीछे फिरंगी फौज की एक टुकड़ी भी चल पड़ी। डूंगजी के साथी बोले सरदार हम जैसलमेर

के गिरदड़ा गाँव तक आ पहुँचे है। फिंरगी फौज काफी पीछे चल रही है। अपने घोड़े भी काफी थक गए। इन रेत के धोरों में ये और ज्यादा नहीं चल सकते। हमें थोड़ी देर सामने वाली मेड़ी में ही ठहरना होगा। फिंरगी फौज ने डूंगजी के दल को गिरादड़े में आ घेरा। कैप्टन हाड़ केसल ने मुसाहिब विजयसिंह महत्ता को डूंगजी के पास भेजा और कहा कि आज डूंगजी के पास जाकर उसे सरेण्डर करने के लिए राजी करो। महत्ता जी डूंगजी के पास जाता है और डूंगजी को कहता है। तब डूंगजी उसको जवाब देता है कि जान हथेली पर लेकर निकला हूँ मर जाऊँगा पर फिरंगियों के हाथ नहीं आऊँगा। महत्ता जी समझाते हैं कि क्यों जानबूझकर आत्म घात करने पर उतारू हो रहे हो। यह कहाँ की समझदारी है। डूंगजी आप आत्मसमर्पण कर दें। आगे हम सम्भाल लेगें। डूंगजी तुरन्त जवाब देते हुए कहते हैं महत्ता जी मतलब साफ है कि कायरों की तरह फिंरगियों के सामने हथियार डाल दूं और सारी उम्र बेड़ियाँ पहने काला-पानी की सजा भूगतूँ ? यह कौन कहता है कि कम्पनी सरकार के सामने हथियार डालो जिस तरह आपका भाई जवाहर जी बीकानेर महाराज की शरण में है। वैसे ही आप मरूधराधीश की शरण में पहुँच जाइए। डूंगजी महत्ता जी की बातों में आकर जोधपुर की तरफ चल पड़े।

XXXIII- डूंगजी के विरूद्ध पकड़ने का अभियान

डूंगजी के विरूद्ध एक जोरदार अभियान छेड़ा। सारे राजपूताना में अंगेजों की कई सेनाएँ थी। राजा महाराजा उनके पिछलग्गू हो गए थे। अंग्रेजों के हुक्म पर वे भी अपनी सेनाएँ लेकर डूंगजी को पकड़ने को तैयार हो गए। मोर्चा इस तरह लगाया गया। एक और जोधपुर के महाराज तख्त सिंह की सेना थी। उसमें मेहता विजय सिंह कुशलराज सिंधवी और किलेदार अनाड़सिंह था। जोधपुर का पॉलिटिकल एजेंट कैप्टन मैशन और कैप्टन हाइन्लास भी आ पहुँचे थे। मेजर फारेस्टर और कैप्टन शाक की सेनाएँ भी दूसरी ओर से पहुँची। डूंगजी जवाहरजी लोटिया जाट सांवता राम करणिया मीणा और अन्य साथी जरा भी नहीं घबराए। वे स्वतंत्रता की बलिवेदी पर बलिदान होने के लिए तैयार हो गये। बीकानेर के पास घड़सीसर गाँव था। उसके पास

अंग्रेजी सेना ने इन्हें घेर लिया। बड़ी घमासान लड़ाई हुई। ये सारे लोग अंग्रेजी सेना का घेरा तोड़ कर भाग निकले और जैसलमेर की तरफ निकल गये।

XXXIV–डूंगजी द्वारा आत्मसमर्पण

डूंगजी जैसलमेर की तरफ भागे तो अंग्रेज सेना बहुत ज्यादा गुस्से में हो गई। सेना ने सामूहिक रूप से डूंगजी का पीछा किया। जैसलमेर के पास गिरदड़ा गाँव के पास इनको घेर लिया। उस समय डूंगजी के साथ मेड़ी निवासी मुकन सिंह, हुक्म सिंह, करणाराम लोठू जाट आदि साथी थे। कुछ सैनिक इस युद्ध में वीर गति को प्राप्त हो गये तथा कुछ पीछे छूट गये। सामूहिक सेना के सामने डूंगजी की सेना मामूली होते हुए भी स्वतंत्रता सेनानियों ने फिरंगियो की सेना का मुकाबला बहुत देर तक किया। वहाँ छेवट ने जवारजी की तहर डूंगजी को समझाया और पक्का भरोसा दिलाया कि आपको बाइज्जत (आबरू) के साथ जोधपुर राजा तख्त सिंह के यहाँ रखा जायेगा। अंग्रेजों को नहीं सौंपा जायेगा। इसलिए इस युद्ध में प्राण न देकर आत्मसमर्पण करना उचित समझा।

अंग्रेजी में भी लिखा है डूंगजी का आत्मसमर्पण इस प्रकार है :-

Who Handed Dungji Over to the british shows that and- british sentiment in Rajsthan was it its highest pitch at that time so bitter was the popular criticism - against the pro-british logalty of the jodhpur darbar that he had to take bake dungji from the british and keep him in his personal custoday.

Not :- *The role of Rajsthan in the struggle of 1857 by N.R. KHADGAWAT PAGE No. 103*

लाट साहब के हुकम से जोधपुर महाराज ने तो डूंगजी को फिरंगियो के हवाले कर दिया। राजपूताने की सारी रियासतों के वकील आबू में सदर लैण्ड के पास पहुँच गये। डूंगसिंह पर मुकदमा चलाने से प्रजा में भारी रोष हो गया तथा जोधपुर नरेश की भी भारी बदनामी हो रही थी। इससे नरेश काफी दुखी हो गए और उन्होंने अंग्रेज अफसर से कहा, रियाया में गदर हो उससे पहले ही डूंगजी को वापस आप मुझे सौंप दो, फिरंगियों की नाक में दम कर देने वाले आजादी के दीवाने डूंगसिंह ने अपनी जिन्दगी के आखिरी दिन जोधपुर के जंगी किले में ही गुजार दिए। महाराज तख्त सिंह की बात रखने के लिए उन्होंने ता उम्र धीरज धारे रखा।

एक लोकगाथा में गाया है:-

डूंगसिंघ ने लोग जोधपुर जवार बीकानेर जी।
दोनो के मन में रहगी लूटण री अजमेर जी।
झड़गा तो फूलड़ला अमर बांरी बासनाई जी।

अर्थात् :- डूंगसिंह को जोधपुर ले गए जवाहर सिंह को बीकानेर। दोनों भाईयों के मन की मन में ही रह गयी अजमेर के खजाने को लूटने की, उनकी उम्र का अन्तिम पड़ाव आ गया था, उन्होंने अपना नाम अमर कर दिया था।

नोट :-सभी लेखको ने इन वीर स्वतंत्रता सेनानियो की उम्र का पड़ाव अलग अलग बताया इनकी वीरगति अलग अलग बताई है।

(1)

पाटोदा में डूंगजी आ जाते है, इनके गढ को चारों तरफ से घेर लिया जाता है। डूंगजी अंग्रेजों के साथ लडते लडते वीर गति को प्राप्त होकर स्वर्ग सिंधार गये, तथा राणी उसकी चिता पर जौहर करके सती हो गई।

(2)

एक जगह डूंगजी ने कहा है कि फिरंगियों को दौड़ा-दौड़ा कर मारना है और इनको ठोक पीटकर देश के बाहर निकालना है जिससे अपना देश अपने पैरों के नीचे रह सके। इन अंग्रेजों ने बहुत ही कठोर बीज बोए हैं। इन्होंने अपनी अंगुली पकड़ी फिर पुछा ही पकड़ लिया और इस तरह अपने हाथ से सब कुछ छीन लेगे और ये अपने को गुलाम बनाकर रखेंगे। मैं आज मरते मरते कह के जा रहा हूँ। मेरी बात आप याद रखना। एक घटना के अनुसार जोधपुर महाराज ने वचन दिया कि जैसा थाल राजा का आयेगा वैसा ही डूंगसिंह का आएगा। जोधपुर महाराज का साला वहीं दरबार में रहता था। डूंगसिह हमेशा अमल खाकर खंखारा करता था। महाराजा का साला भी डूंगसिंह को देखकर खंखारा करता था। डूंगसिंह को गुस्सा आ गया और साले को मार दिया। जोधपुर महाराजा की पत्नी को गहरा सदमा पहुँचा। उसने नौकरों से कहकर डूंगसिह के भोजन में जहर मिलवा दिया। डूंगसिह को शंका हुई तो उसने रोटी का एक टुकड़ा बिल्ली को डाल दिया। बिल्ली तत्काल मर गई। डूंगसिंह ने थाल वापस भिजवा दिया।

उन्होंने सेवक के हाथ बाजार से सांख्या (विष) मंगवाकर खा लिया तथा डूंगसिंह की 1853 ई. में मृत्यु हो गई।

डूंगसिंह जी ने कहा है:-

मनु कहे जहां इज्जत नही वहाँ जीना है बेकार।
जहर खाकर बोले डूंगसिंह सम्भालो मुझे करतार।

ठाकुर डूंगसिह घड़सीसर के सैनिक घेरे से निकलकर जैसलमेर राज्य की ओर चला। जैसलमेर के गिरदड़े ग्राम के पास मेड़ी में हुकमसिंह और मुकन्दसिंह भी उससे जा मिले। राजकीय सेना ने फिर उन्हें जा घेरा। दिन भर की लड़ाई के बाद ठाकुर प्रेमसिंह लेड़ी तथा नीबी के ठाकुर आदि के प्रयत्न से मरण का संकल्प त्याग कर आत्म समर्पण कर दिया। हुक्म सिंह और चिमन सिंह को जैसलमेर के भज्जु स्थान पर शस्त्र त्यागने के लिए सहमत किया गया। इस प्रकार राजस्थान में भारतीय स्वतंत्रता के सघंबद्ध सशस्त्र प्रयत्न का प्रथम दौर संवत 1904 वि. (सन् 1847) में समाप्त हो गया। ठाकुर डूंगरसिह को जोधपुर के दुर्गम में ताजीमी सरदारों की भांति नजर कैद की सजा मिली और उसी अवस्था में उनका देहावसान हुआ।

20–जवाहरजी का संक्षिप्त जीवन परिचय

सीकर जिले की लक्ष्मणगढ़ तहसील के बठोठ ग्राम जो सीकर से 27 किमी सालासर सड़क मार्ग से फागलवा से 12 किमी. उत्तर दिशा पर बसा हुआ है। सीकर के रावराज शिवसिंह जी ने कीरत सिंह को बठोठ पाटोदा जागीर के रूप में दिया था। जागीरदार कीर्ति सिंह के चार पुत्र हुए जिनके नाम दलेलसिंह, बख्तावरसिंह,उदयसिंह, और केशरसिंह हुए। दलेलसिंह जब बठोठ में रह रहे थे तब प्रथम सन्तान के रूप में बालक विजय का जन्म हुआ। तदुपरान्त द्वितीय सन्तान के रूपमें सन् 1802 के आस - पास बालक जवाहर का जन्म हुआ उसके उपरान्त तीसरी सन्तान के रूप मे बालक ज्ञानसिंह का जन्म हुआ। तीनों भाईयों में से बालक जवाहर का लालन-पालन बड़े लाड-कोढ़ से हुआ क्योंकि मंझला होने के कारण सभी का चहेता था। बालक जवाहर के जन्म पर उसके पिता दलेलसिंह ने ज्योतिषियों से बालक के जन्म का फल पूछा, तब ज्योतिषियों ने बताया कि जवाहर नाम वाला बालक बड़े-बड़े शासकों का बलपूर्वक छत्र हरण करेगा, राज की शोभा बढाएगा। कलियुग में पृथ्वी पर यह सूर्य की भांति तपेगा।

बालक जवाहर के कंठ में मणियों का कठला जिसमें बाघ नख लगा हुआ था, वह शोभायमान हो रहा था घुंघराले बाल व रूचिर वाणी मन को मोहित कर रही थी। सुन्दर ललाट पर केसर का तिलक छवि बढा रहा था। उज्ज्वल दाँत हीरे जैसी आभा दे रहे थे। जवाहर सिंह तब करीब तीन चार वर्ष का होने पर पिता ने योग्य गुरूओं द्वारा उसकी सभी प्रकार की शिक्षाएँ सैनिक शिक्षा, शस्त्रविद्या, व्यायाम,घुड़सवारी, आखेट धनुर्विद्या आदि प्रारम्भ करवाई। बालक जवाहर ने थोड़े ही दिनों में लिखना पढना भली भांति सीख लिया। धीरे-धीरे सभी कलाओं का ज्ञान अर्जित किया और विविध भाषाओं का ज्ञान ग्रहण किया। प्रतिभा के धनी जवाहर सिंह ने बहुत ही कम समय में अपना अध्यापन कार्य पूरा किया। इन्होंने अंग्रेजी राजस्थानी, ढूँढाड़ी, गुजराती, मेवाती, ब्रज, हरियाणवी आदि भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया।जवाहर सिंह युद्ध विद्या, घुड़सवारी तथा शस्त्र विद्या में निपुण हो गया था। शस्त्रों में धनुष विद्याका तथा ढाल से बचाव करने में वह सिद्धहस्त हो गया था। धनुष विद्या

व तलवार चलाने में तो वह अद्वितीय था। सुबह पहले नियमित घोड़ों की सवारी करना फिर व्यायामशाला में जाकर मुदगर दंड बैठक मोगरी व कुश्ती करता था रोज ही आखेट को जाता था। जहाँ शेर और बघेरे को धनुष से मारना बघेरे सुअरों को घोड़े दौड़ाकर भाले से या कटार से मारना तथा हिरणों को घोड़े दौड़ाकर धनुष से मारना रोज की दिनचर्या थी। इससे व्यायाम होता था। घोड़े की सवारी का अभ्यास होता था। शस्त्र चलाने में अभ्यस्त होते थे तथा भंयकर जन्तुओं को मारने से वीरता आती थी। उस समय में शेखावाटी में इतने घने जंगल थे, कि उनमें बबरी शेर गेंडा आदि मिलते थे। जवाहर जी के शीश पर पगड़ी ऐसी शोभित थी मानो हिमालय शिखर पर अधिपति आकर रहे हों। कानों में मोती ऐसे भले लगते थे कि कहते नहीं बनता। ऐसा जान पड़ता है कि कमल की पंखुड़ी पर मानो ओस कण पड़े हुऐ हो। हाथों में तलवार भाला उसके शरीर की शोभा बढा रहे थे।

भारत पर अंग्रेजों का आधिपत्य स्थापित होने के पश्चात क्षत्रिय जाति के गौरव मय इतिहास को विकृत और गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया। यह मानव प्रकृति और सत्ता का स्वभाव रहा है कि विजित की यश गाथा और स्मृति चिन्हों को समाप्त कर उनका चरित्र हनन किया जाए। यह स्वभाव और प्रक्रिया न्यूनाधिक रूप में हर युग में प्रचलित रही है। जवाहर सिंह कोई एक व्यक्ति, एक योद्धा और एक शासक ही नहीं था अपितु वह अपने युग के एक सर्वांगपूर्ण शेखावाटी का चित्र था। जवाहर सिंह दीर्घकालीन भारतीय समाज का एक दर्पण था। इसी समय जवाहर सिंह के हृदय में देश भक्ति के भाव उठने लगे आपने बड़े उत्साह के क्रांतिकारी दल गठन करने शुरू किए उसमें शेखावाटी ब्रिगेड के खिलाफ दल तैयार किया। इस दल में आप सरदार के रूप में नेतृत्व करते थे। इस दल के लोग देश की स्वाधीनता के लिए हिसांत्मक उपायों का प्रचार करते थे। आप हमेशा अपने साथ सांवता राम मीणा को अपनी भुजा मानकर चलते थे।

I–जवाहरजी द्वारा डूंगजी को झड़वासे जाने से मना करना

छावनी लूटने के बाद जवाहर सिंह तो मालवा लूटने का विचार कर अपने साथी सांवता मीणा को साथ लिया व आगे प्रस्थान करने की तैयारीकी और अपने भाई डूंगसिंह को सावधान किया कि डूंगसिंह आप

झड़वासे की तरफ मत जाना ऐसा कहकर जवाहर सिंह अपनी टीम के साथ आगे निकल गया।

I–जवाहरसिंह का मालवा लूटने जाना

जुवाहरसिंह यूं केवा लागा, सूण लो काका वात जी।
थे तो जावो पाछे घरां ने रीजो घणा चगौर जी।
म्हें तो जावा घाट मालवें लूटागां मंदसोर जी।
अंग्रेजा की छ्वी छावणी नीमच जण को सेर जी।
राड़ करो तो पूरी करणी पूरो करणो वैर जी।
नीमच लूट भिलाड़ो लूटां, लूटागां मेवाड़जी।
मेवाड़ां में अंग्रेजां की हेटी करदा नाड जी।
जीदो राख मात भवानी, मेलां जाजम पड़सी जी।
पाटोदा का गढ में आई, भतीजो मुजरो करसी जी।
गेला मांय थाको सासरो, चून गांठ को खाजो जी।
भरोसो थे मत करजो कण को, सीधा घर न जाजो जी।
जवाहरसिंह जी चढ्या मालवा फौजा लैग्या लार जी।
छत्री बेटा मारवाड़ का ऊँटा का असवार जी।

अर्थात् :- जवाहरसिंह ऐसे कहने लगा, सुन लो काका डूंगसिह जी आप वापिस घर जाओ और घर पर सचेत रहना, मै मालवा घाट की ओर जा रहा हूँ, वहां मन्दसौर को लूटूंगा। अंग्रेजों की फौज चारो तरफ छा रही है। नीमच जैसा शहर पूरा पलटन से सजा हुआ है। यदि लड़ाई छेड़ ही दी तो इसको पूरी ही करनी है। दुश्मन का मुकाबला डटकर करना हैं। नीमच लूट भीलवाड़ा लूटूंगा, उसके बाद में मेवाड़ लूटूंगा। मेवाड़ में अंग्रेजों को ढूंढ़ ढूंढ़कर मार देंगे अर्थात इनकी गर्दन उतार देगें। हे माता भवानी हमें जिन्दा रखना यही आप से अरदास है। उसके बाद में महलों में जाजम लगा देंगे तथा पाटोदा के गढ़ में आकर भतीजा मुजरा करेगा। हे काका डूंगसिह जी रास्ते में आपका ससुराल पड़ता है आप वहां मत रूकना। यदि रूक भी जाओ तो खाना घर का ही खाना जी। आप किसी का भरोसा मत करना, सीधे घर को चले जाना जी। इतना कहकर जवाहरसिंह अपने साथी सांवतराम मीणा व अन्य दल के सदस्यों के साथ मालवा की तरफ चल दिया तथा फौज को साथ ले गया।

III–जवाहरसिंह व होली का त्योहार

बठोठ की बारादरी में जवाहर सिंह ने होली का त्योहार मनाने की ठानी। उसने सभी लोगों को इकट्ठा किया। देखते-देखते उसके डेरे में कई चापलूस एवं खाने-पीने वाले टुकड़खोर आ गए। जवाहर सिह ने लोटिया जाट और करणिया मीणा को भी बुलाया, वे भी आए और सारे सरदारों को दारू पीते देखकर वे दोनों बहुत ही उदास हो गये। उन्हें अपना मित्र डूंगजी याद आ गया। लोटिया जाट ने जवाहरजी को समझाया। यह समय ऐशो-आराम का नहीं है, यह समय सरदार को छूड़ाने का है। जवाहरजी जवान था, उसके खून में गर्मी थीं जोश ज्यादा था। वह झट से बोला जो जीवित है उनके जतन करने ही पड़ेगे त्योहार सूखा नहीं जाना चाहिए, होली का दिन है चारों तरफ चंग व ढफ बज रहे है। फाल्गुन खेलने का दिन है, रंग गुलाल उड़ाने का दिन है, गीदड़ मांडने का दिन है। एक तरफ एक पुरूष औरत के कपड़े पहन कर नाच रहा है। सरदार की तरफ से दारू की बोतल खोली जा रही है। आपस में मनवार कर रहे हैं दारू पी रहे हैं।

सीकर हुतो चढयो जवाहरसिंह गढ बठोठ में आयो।
लोटयो जाट करणियो मीणो दोनू सागै लायो।
सै होली नै ढली जाजम होय रही मतवाल।
बोतल तो जगमग करै, कोई प्याला करै पुकार।
तू पी तू पी हो रही कोई करै घणी मनवार।

अर्थात् :- जवाहरसिंह सीकर से चढ़ा और बठोठ के किले में आया। जाट लोटिया और मीणा करणिया दोनों को अपने साथ लाया। ठीक होली के दिन जाजिमें बिछी और मदिरा पान होने लगा। बोतलें जगमगा रही थी। प्याले सजीव होकर पुकारते थे। तू पी, तू पी..... इस प्रकार कहकर खूब मनुहारें कर रहे थे।

डूंगजी की रानी:- डूंगजी की रानी ठकुराणी महल में उदास बैठी थी कपड़े गन्दे मैले पहन रखे थे जबकि बाहर महल के चौगान में अन्य लोग राजसी ठाठ से होली का त्योहार नाच गान करके मना रहे थे पुरूष लोग शराब कीमदहोसी में मशगूल हो रहे थे एक पुरूष को महिला कपड़े पहनाकर नचा

रहे थे। सभी होली का आनन्द उठा रहे थे। परन्तु डूंगजी की रानी ने न तो आँखो में काजल डाल रखी थी न ही ललाट पर बिन्दिया व गुलाल लगा रखी थी, केवल हाथों में सुहाग मेहन्दी लगा रखी थी। होली के त्योहार पर ठकुरानी का मन नहीं लग रहा था। जीव उसका मचल रहा था। उसके हृदय में आग सुलग रही थी क्योंकि उसका पति डूंगसिंह आगरे के किले की जेल में कैद था। इसलिए रानी साहिबा सिणगार किस पर करे। उसके तो शरीर के कपड़े भी दुश्मन की तरह लग रहे थे। जब उसके मन में डूंगजी की याद आ जाती है कि उसके हाथ पैरो में हथकड़ियां लगी हुई है।

इतना याद करते ही ठकुरानी के शरीर का खून जल जाता है। उसकी हिरनी जैसी आंखो में पानी भर आता है और महल के झरोखे में से नीचे झांक कर देखने लगी। महल के चौगान में गींदड़ खेल चल रहा था। शराब की बोतलें चारों तरफ फिर रही थी। वहां सरदार हंस हंस कर ख्याल कर रहे थे। वहीं उनमे से एक आदमी औरतों के कपड़े पहन कर कमर मटकाय मटकाय नाच रहा था, लम्बा लम्बा घूंघट निकाल रखा था रानी यह सब देख कर सोचने लगी कि यह सरदार है? जो डूंगजी को अंग्रेज पकड़ कर आगरे के किले में बन्द कर रखा है और ये यहां मतवाले बने हुए है। ठकुरानी गुस्से में लाल-पीली हो गयी तथा ठकुरानी शर्म भूल कर ये नहीं सोचा की मै ससुराल में हूँ। उसका पूरा पुरूष परिवार वहां बैठा था फिर भी रानी बोली और शेरनी की तरह गरजी, कि आपकी इस पार्टी में धूल है धिक्कार है आपके मिनख पणे में, आपके सरदार डूगसिंह जी को अंग्रेज कैद कर आगरे के किले में डाल रखा है। आप यहां शराब के नशे में मदहोश हो रहे हों, आप के थोड़ी बहुत भी इज्जत है या नहीं आपकी नाक तो अंग्रेजों ने काटकर अपनी जेब में डाल रखी है, और आप राजपूत कहलावे? तथा जिन्दा फिर रहे हो आपको यहा घूमते फिरते मुँह दिखाते लाज, शर्म नहीं आती है? व इसी महल में बैठकर आप शराब पी रहे हो। इतना सुनते ही सभी पुरूषों के हाथों में शराब के प्याले थे ऐसे के ऐसे हाथों में रह गये नाचने वाले पुरूष के पैर थम गये घुंघरू बन्द हो गये चंग पर जो थाप लग रही थी वह थम गयी। जवाहरजी ने अपना सिर नीचा झुका लिया। रंग में भंग पड़ते देख किसी को

गुस्सा आया तो किसी के कालजे में पत्थर की सी चोट लगी कि रानी साहिबा सत्य बात कर रही है। इतनी बात सुनते ही करणा राम मीणा जीभ भीचते हुए बोला :- ठकुरानी जी क्यों आप कोजा बोल मार रही हो, आप जो शब्द बोल रही है उनसे हमारे दिल में घाव हो रहे है हम जानते है कि हमारी नाक कट गई परन्तु क्या जोर करें जयपुर राज्य, जोधपुर राज्य, बीकानेर राज्य ये सभी अंग्रेजों से मिल लिए तथा भाई बन्धु सभी पीछे खिसक लिए। अब तो ठकुरानी सा हमें ही पगड़ी बांधनी पड़ेगी आप ने जो कहा मेरे सिर माथे है अब आप महल में वापस जाओ इतना कहते ही ठकुरानी आग बबूला हो गयी दाहड़ कर बोली सिर पर पगड़ी बाँधो थे? यदि आप पगड़ी बांधते तो डूंगसिंहजी को छुड़ा लाते। औरत रूप में दुर्गा के रूप में होकर ठकुरानी कहती है यह पगड़ी मुझे दे दो और मेरा घाघरा आप पहन लो। तथा अपने हाथ की चूड़ियां उतार कर वहाँ बैठे सरादारों के हाथों में दे आई और कहाँ यदि तुम मरने से डरते हो तो यूं चूड़िया पहनलो तथा पर्दे में जाकर बैठ जाओ और आपके हाथ की तलवार मुझे दे दो क्योंकि ठकुरानी तो दुर्गा का रूप लेकर खड़ी थी और आंखो से जहर निकल रहा था। ठकुरानी के बोल मर्दो के कलेजा में इस तरह लगे जिस तरह लोह के भाले चुभ रहे हो।

राणी बायर नीसरी जद कान पड़ी भणकार।
ऊभी मसलो मारियो थारी दारू नै धिरकार।
क्यानै बाँधो सीस पाघड़ी क्यानै बांधो सूत।
सागी काको पड़्यो कैद में क्यों वाजो रजपूत।
मत ना थे राणी मसलो मारो मत ना काठो सेल।
जैपुर मिली जोधपुर मिलगी, मिलगी बीकानेर।
दोय पगा नै जागा कोनी, भाई होग्या लैर।
हाथा का हथियार सूप दो चूड़ी लाख की पैरो।
धोती जोड़ा उरा सूंप दो पगा घाघरी पैरो।
पड़दै भीतर लुक्कर बैठो नेण कजलो घाल।
मेरे कथ की बेड़ी काटू में तिरिया की जात।

अर्थात्:- जब ठकुरानी के कानो में डूंगजी की कैद की भनकार पड़ी तो रानी

महल से बाहर निकली। उसने खड़े ही खड़े ताना दिया तुम्हारे शराब पीने को धिक्कार है। किस लिए सिर पर पगड़ी बांधते हो? किस लिए सूत बांधते हो? सगा काका कैद में पड़ा है राजपूत क्यों कहलाते हो? जवाहर सिंह ने कहा रानी ? ताना मत मारो, भाले जैसे चुभते बोल मत निकालो हमारे विरूद्ध जयपुर मिल गया जोधपुर मिल गया और मिल गया बीकानेर। आज दो पैर रखने को हमें स्थान नहीं मिलता। भाई ही पीछे पड़े है। रानी ने कहा हाथों के हथियार मुझे सौंप दो, तुम चूड़ियां पहन लो ये धोती जोड़े इधर दे दो, पैरों में लहन्गा डाल लो, परदे में छिप कर बैठ जाओ, आँखों में काजल डाल लो स्त्री की जात होकर भी मै अपने पति की बेड़ी काटूंगी। विदेशी लूट-लूट कर देश का सारा धन माल बाहर ले जा रहे और कोई प्रतिरोध नहीं तलवार को हाथ में रख कर इसे क्यों लजा रहे हो? फेंक दो इसे अपने नाजुक हाथों में चुड़ला धारण कर लो। इस सुकोमल देह को जनाने कपड़ो से सजा लो। फिरंगियों का अन्याय दिन ब दिन बढ रहा है न इनके अत्याचारों की कोई सीमा है और न हमारी सहन शक्ति ही का कोई अन्त। पुंसत्वहीन होकर हम सब चुपचाप सहते चले जा रहे है। कुछ भी शर्म हो तो जहर खाकर मर जाओ तालाब में डूब मरो। पैरों में घाघरा डाल कर पुरूष कहलाने का अधिकार त्याग दो। कहाँ गई वह तुम्हारी वीरता? कहां लुप्त हो गई तुम्हारी रजपूती शान? आत्म सम्मान को भुला कर केवल टुकड़ो के मोहताज हो तुम किसी भी बहाने जीना चाहते हो! धिक्कार है तुम्हें। सरदारों! रजपूती शान को सर्वथा खो दिया है तुमने। सच्चाई के मार्ग से भ्रष्ट हो गये हो, प्रतिष्ठा तुम्हारी मिट्टी में मिल गई। नष्ट हो गई है तुम्हारी बुद्धि।

IV– जवाहर सिंह ठकुरानी की बात पर जोश में आ गया

ठकुरानी जी की व्यंग वाणी से जवाहरसिंह जोश में आया और एक दम से तैश में आकर खड़ा हो गया। वहां बैठे मर्दो के बाल खड़े (रूंगटा-रूंगटा) हो गये। राजपूतों को बात चुभ गई, आपस में बतलाने लगे और कहने लगे कि डूंगजी को छुड़ा पर वहां के पहरेदार, रास्ते, दरवाजों की खबर पहले लानी होगी और वो खबर लेने कौन जावे, पांच पान का बीड़ा फेरा और कहा कि डूंगजी की खबर लावै वो इस बीड़े को उठावे। किसी को

बुखार चढ गया किसी को चक्कर आने लग गये। वहां बैठे बहुत से लोग थे जिनमें से चुपचाप खिसकने लग गये। सरदार उमराव बोले कहां आगरा कहां हम और वहां भी सात सात खाइयों के परकोटे व उन पर भी बहुत पहरे बैठा रखे हैं। किस को तो वहां तक पहुँचने दे और यह खबर कौन लावे।

दारूड़ी छलकी प्याला में चंगा में चोट पड़ण लागी।
दिल खोल धमाला गाईजै, हुड़दंग भरी होली आगी।
तलवार धार में उतरणिया, उतरै हा बोतल री धारा।
वे गढ बठोठ में बैढ्या हा, मोटयार करै हा मनवारा।
आसो दुबोरो दांखा रो, बोतल वालौ खारौ पाणी।
पी मिनख हुवै हा मतवाला जद डोढया आयी ठुकराणी।
देख्यो जेठूतो जवाहरसिंह बढ़-बढ़ मनवारा पावै हा।
काकी रै हिवड़ै में होळी, नैणा में आंसू आवै हा।
बोली गढ धणी गोरियां रा बंदी बाणयोड़ा दुख पावै।
थांरो मन मनवारा लाग्यो, आ दारूड़ी कुंकर भावै।
ओ बिना धणी गढ गिरणावे सूंरां बिन सूनौ लागै है।
अै बिछी जाजमां देख आज मनड़ै में दोख जागे है।
काको तो किलै आगरै में कैदी है बाटां जोवै है।
थे लाल नांखदी लाज इसी मतवाल मेहफिलां होवै है।
बोल्यो ज्वारौ ठुकराणी नै काकीसा कुमख्या मत मारो।
आखो हिद्वाणो झुकग्यौ है म्हाने तानो मत मारौ।

अर्थात् :- दारू के प्याले देने लेगे, चंगो पर चोट पड़ने लगी दिल खोलकर धमाल गा रहे थे, खेलने के लिए होली का त्यौहार आ गया। तलवार की धार पर काम करने वाले दारू की बोतलो पर उत्तर आये जब डूंगरसिंहजी बठोठ में थे तब मर्द मनवारा करते थे। जो मनुवार इस बोतल वाले खारे पाणी से की जा रही है। ऐसा समय दुबारा नहीं आयेगा। जब मर्द दारू पीकर मतवाले हो रहे है और राणी जनानी ड्योढी पर आ गई। जवाहर सिंह जेठूता बढ चढ कर मनवार कर रहा है। काकी के हृदय (दिल) में होली का त्योहार पर आँखो में आँसू आ रहे थे। ठकुराणी कह रही है कि बंदी जेल में दुखी हो रहा है। और

आप लोग अपनी मान-मनुहार करने में लगे हुए हो और आपको शराब किस तरह मन को भा रही है यह गढ बगैर मालिक का गढ़ लग रहा है यह शूर वीरों बिना सूना लग रहा है। गढ़ में जाजम लगी हुई है इनको देखकर आज मन बहुत दु:खी हो उठा है, काका तो आगरे के किले में कैद है और इन्तजार कर रहा है। आप इस महफील में जमे पड़े है लज्जा नहीं आती मतवाली महफील कर रहे हो। जवाहरसिंह को बहुत रोष आया और कहा की ठकुरानी जी अब इतना बोल मत मारो और कहा पूरा हिन्दुस्तान झुक गया फिरंगियों के सामने अब आप हम पर व्यंग्य मत करो।

V–जवाहरसिंह की प्रतिज्ञा

काकी मौसो बोलियो स वा ऊठी तन में झाल जी।
अैडी की भळ ऊपड़ स लग चोटी ने जाय जी।
पाछ दुसाला मेलियास अंगोछां लीन्हा बांध जी।
काकेजी री बेड़ी काट ने जद बांधू सिर पाघजी।
गांव-गांव परवाणां भेजिया भाई बंध लिया बुलाय जी।

अर्थात्:- काकीजी आप मुझे ऐसे बोल मत मारो मेरे तन बदन में आग लग रही है। मेरे तन बदन में एडी से चोटी तक आग लग रही है। मैं आज यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि सिर पर पगड़ी तब तक नहीं बांधूगा जब तक डूंगसिंहजी को कैद से छुड़ा नहीं लाता इसलिए आज से पगड़ी की जगह मैं ये अंगोछा ही पहनूंगा, ओढूगां तथा काकोसा की बेड़ी काट कर ही पगड़ी बांधूगा। गांव-गांव में डूंगजी को कैद से आजाद कराने के लिए समाचार भेजकर अपने भाई बन्धुओं को इकट्ठा किया।

VI–जवाहर जी द्वारा पान का बीड़ा फेरना

आगरे रा नांव लेवता घणा ने चढिया ताव जी।
घणां री छूटी नौकरी स वे भागा घरां न जा जी।

अर्थात् :- उपर्युक्त छावली में साफ बताया है कि जवाहरजी सिह द्वारा आगरा का नाम लेते ही सभी को पसीना आ गया। क्योंकि अंग्रेज सम्मत शासन के प्रति लोगों की भावनाओं में डर बैठा हुआ था। जिससे सामान्य लोग अंग्रेज शासन से घबराने लग गये थे और उनके आतंक से लोग कंपकंपा रहे थे। जब

आगरे के किले में डूंगजी को जेल में बन्द कर रखा था उसकी जानकारी हेतु बठोठ की कचहरी में जवाहरसिंह ने पान का बीड़ा सभा में फेरा तो किसी भी वीर जवान की हिम्मत नहीं उस बीड़ा को उठा ले। वहां इकट्ठे सभी लोगों की गर्दन शर्म से झुक गई थी। पांच पान का बीड़ा किसी ने नहीं उठाया, तो वहीं खड़े लोठू जाट व करणिया मीणा ने आकर पाँच पान का बीड़ा उठाया और जवाहर जी को सलाम किया जवाहरसिंह ने दोनों को सीने से लगा लिया इसके उपरान्त दोनों खबर लेने आगरा चले गये। वहां से वापस आकर समाचार बताते है, कि डूंगजी को काले-पानी की सजा का आदेश हुआ है यदि आपको डूंगजी से मिलना और छुड़ाना हो तो यथा शीघ्र छुड़ाने का प्रयास करें यदि आपने देरी की तो उनसे मिलना मुश्किल है। करणिया ने कहा देर करने की बात नहीं है यथा शीघ्र चलने की तैयारी करो कमर कस लो! डूंगजी के हाथ में हथकड़ियां पैरो में बेड़ियां गर्दन में तोख पड़ी है। उनका इस जीने से मरना ही अच्छा है। भोपाओं ने गाया है:-

लोटियो तो मुजरा करया स बै करणियो मीणा राज जुहार।
सामै उठकर मुजरो झेल्यो ज्वारसिंघ सिरदार।
तू गयो लोटया आगरे स कोई कहो सहर की बात।
के कहू म्हारा रावजी, कोई म्हासू कहो न जाय।
डूग न्हार नै देख 'र' आया लाल किले के मांय।
ई जीणै सूं मरणो चोखो, बुरो कैद को काम।
हाथा में तो पड़ी हथकड़ी बेड़ी पांवा मांय।
गळ मे तोख जंजीर पड़ी है बन्द पीजरे मांय।
सात दिना की बोली लिख दी कालै पाणी ले जाय।
मिलणो है तो मिलो रावजी फेर मिलण का नांय।
इतणी वाता उड़ी कचेड़या, गयी रावला मांय।
राणी रोवण लागी स बा रंग महल कै मांय।
कंवर रोवण लाग्या स बै भरी कचेड़ी मांय।
मत रोवा, मत रूदन करो, कोई मत ना हुवो उदास।
रात-रात परवाना भेजा भाई भतीजा पास।

अर्थात् :- लोटिया जाट ने मुजरा किया और करणिया मीणा ने राजसी जुहार। सरदार जवाहरसिंह ने उठकर और सामने आकर मुजरे को स्वीकार किया और कहा लोटिया, तू आगरे गया था आ शहर की बात कह- लोटिया ने ऊत्तर दिया हे मेरे रावजी क्या हूँ? मुझसे कहा नही जाता हम डूंगसिंह को लाल किले में देख कर आये है कैद का काम बड़ा बुरा है। इस जीने से मरना अच्छा, हाथों में हथकड़ियां पड़ी है, पैरों में बेड़ी पड़ी हैं, गर्दन में तौख और जंजीर पड़ी है, स्वयं पिंजरे में बन्द है। सात दिनो में कालापानी ले जाने का हुक्म सुना दिया है हे रावजी मिलना हो तो मिल लो, फिर मिलने के नहीं, इतनी बाते कचहरी में हुई। वे उड़कर रनिवास में पहुँची, रंगमहल मे रानी रोने लगी राजकुमार भी भरी कचहरी मे रोने लगा, उनको समझाया रोवो मत, रूदन मत करो, उदास मत होवो, रात ही रात में सब भाई भतीजों (कुटुम्बियों) के पास परवाने लिखकर भेजते हैं और डूंगजी को छुड़ाने के लिए तैयारी करते हैं।

VII–जवाहरसिंह का साथियों सहित आगरे आक्रमण के लिए प्रस्थान

ठाकुर जवाहर सिंह ने आगरा दुर्ग पर आक्रमण कर डूंगसिह और उन्ही की तरह पकड़े गए अन्य कतिपय ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी स्वतंत्रता सेनानियों को उन्मुक्त करने की योजना बनाई। इस योजना की सफलता के लिए अपने ग्राम बठोठ में लोटिया जाट, सांवता मीणा, करणा मीणा और अन्य योद्धाओं को लेकर विक्रमी सम्वत 1903 सन् 1846 में ठा. भोपालसिंह, ठा. बख्तावरसिंह, श्यामसिंह श्यामगढ़ शेखावाटी, ठा. खुमानसिंह, बीदावत, लोढ़सर, मलसीसर, कानसिंह, उजीणसिंह मीगणा, जोरसिंह खारिया, बैरी शालसिंह, हरिसिंह प्रभुति, बिदावत योद्धा तथा हरीसिंह कांधलोत, मानसिंह लाडखानी, सिंहरावट के हुक्म सिंह, चिमनसिंह, बालू नाई और बखड़ा के लाडखानी शेखावतों आदि कोई 400–500 वीरों ने बरात का बहाना बनाकर आगरा की ओर प्रस्थान किया और उपर्युक्त अवसर की टोह में दूल्हा के मामा के निधन का कारण बनाकर और पन्द्रह दिन तक आगरा में रूके रहे।

VIII–जवाहरसिंह द्वारा अंग्रेजों को बणिया बताना

जवाहरसिंह जी खंखारा करते हुए डूंगसिंहजी से बोले सुनते हो आप, ये अंग्रेज लोग यहां बनिया बनकर आये है। धीरे-धीरे राजा बनते जा

रहे है। यदि ऐसा ही रहा तो यहाँ राज इन्ही का हो जायेगा। तलवार से राज यानि कि युद्ध करके राज छीन ले, वो तो ठीक है। वरन् ये तो तराजू से राज करने के लिए आये हैं ये फिरंगी अपना जीते-जी ही खून पी जायेंगे। डूंगजी ने कहा जवाहरसिंह जी आपने लाख रूपये की बात कही ये फिरंगी अपने को अपने घर में ही एक कोने में बैठा देंगे आप देख लेना, इसलिए कह रहा हूँ ठाकरो तलवार उठा लो समय आ गया है। अपने यहां का ददरेवा ठाकुर फिरंगियों को देखते ही हिसार तक दौड़ा आता है। फिरंगियो को किसी भी गांव मे देख लेता उसको छोड़ता नहीं। शाबाशी है राजा सूरजमल को जिसने एक बार फिरंगियों को यहां से खदेड़ भगाया था। जवहार सिंह ने कहा कि यह छोटे-मोटे धहाड़े तो मारते ही रहते है पर अब एक धहाड़ा ऐसा मारे जो अंग्रेजों की छाती में त्रिशूल की भाँति लगे वो याद रखें। उस धहाड़े की बात आखी दुनियाँ में चले।

IX–जवाहरसिंह की वीरता में कवि द्वारा गाये गये गीत

बाजे झबीर बाजे सुणुझाऊ सूरवीरन।
पारथ अनाजे कैक समर करे सही।
आगरै अवासन झपेटी चन्द्रहासन तै।
भारी भीर फौजन की नाहक भरी रही।
तेरी तंग ताप के प्रताप ते जवाहर वीर।
साहस कपाटन तै हाटन जरी रही।
भगि अति आतुर है बीबी अंग्रेज की।
सेज पगृथन पै सूथन धरी रही।
शेखावीर प्रबल नरेद्र शिवसाह वंश।
जैतवार जगन के फिरगन तै जटयो करै।
लालन प्रवाल माल लज्जन के गज्जन लो।
लाखन कै बीच लाख छावनी लुट्यो करै।
तेरी धाक मानि कै जवाहर अजानवाह।
गोरे जीव जीवन की आस तै छूट्यो करे।
चौकी उठत रैन, चैन, नैन नींद नाहि।
कम्पनी करेजे मांझ कम्पनी उट्यो करै।

X–जवाहरसिंह को तीन सेनाओं ने पकड़ा

अंग्रेज सत्ता का यहां जीना दुर्बर हो गया तो कर्नल सदरलैड, ने बीकानेर नरेश रतनसिंह और जोधपुर नरेश तख्तसिंह को सख्त आदेश दिया कि जवाहर जी को पकड़ो या इसको मारो नहीं तो हमारी फजीहत है (बदनामी) होगी। इसी तरह कैप्टन डिक्सन मेजर फास्टर और कप्तान शा को भी आदेश दिया कि कम्पनी सरकार की बहुत अधिक बदनामी हो चुकी है। इनको पकड़ो इज्जत मिट्टी में मिल गई है, इनको कैसे भी खत्म करो अन्यथा राजस्थान से अंग्रेजी राज खत्म हो जायेगा। सदर लैण्ड ने एक कागज अजमेर सुपरिटेंडेन्ट डिक्सन को भी 24 जून 1847 को लिखा। सदर लेण्ड के इस प्रयास से काफी असर पड़ा, जवारजी के खिलाफ एक अभियान चलाया जिसमे जोधपुर, बीकानेर नरेश ने सामूहिक रूप से अपनी-अपनी सेना को इस अभियान से जोड़ा। बीकानेर नरेश ने अपने प्रमुख सेनापति ठा. हरनाथसिंह को एक सैनिक टुकड़ी के साथ भेजा। इस अभियान में ठाकुर इंद्रभाणसिंह, जोधा भाद्राजुण, ठाकुर केशरीसिंह, मेड़तिया, जावला, ठा. बादरसिह लाडनू, ठा. विजयसिह लूणवा, ठा. शादुल सिंह पीपलोद आदि इस अभियान में शामिल हुए। मुकाबला बीकानेर राज्य के घड़सीसर गांव के पास हुआ। बहुत जोर की लड़ाई हुई। पर स्वतंत्रता सेनानी संख्या बल में कम थे तथा सामने का संख्या बल अधिक था, जवाहर जी अपने साथियों सहित घिर गया। उन्होंने जबरदस्त वीरता दिखाई। संख्या में कम होते हुए भी मुकाबला किया। थोडे होते हुए भीअंग्रेजों के कई सैनिक काट दिए। जवाहरजी व उनके साथी शुत्रओं पर भूखे शेर की तरह टूट पड़े। बीकानेर का सेनानायक हरनाथसिंह और अंग्रेज कप्तान शा ने जवाहरजी को समझाया कि आपको अंग्रेजों को न सुपुर्द कर बीकानेर राजा के पास इज्जत आबरू से रखा जायेगा। इस बात को मान कर जवाहरजी ने आत्मसमर्पण कर दिया।

XI– जवाहरसिंह का आत्मसमर्पण

बीकानेर जिले के एक गांव घड़सीसर के पास स्वतन्त्रता सेनानियों को अंग्रेजी सेना ने जून 1847 को घेर लिया। दोनों तरफ से घमासान लड़ाई हुई। अंग्रेजी सेना मजबूत थी जबकि स्वतन्त्रता सेनानियों के

पास पर्याप्त हथियार व सैनिक नहीं थे। दुश्मन के आक्रामक हमले को देखकर जवाहर सिह बीकानेर की तरफ भाग निकला। जवाहरसिंह ने बीकानेर के महाराजा रतनसिंह के दरबार में जाकर शरण ली। अंग्रेजी शासन ने क्रांतिकारी भारतीयों के साथ दोगला व्यवहार किया जवाहरसिंह की गिरफ्तारी के बाद अंग्रेजों ने उनको अपने कब्जे में लेना चाहा। बीकानेर के महाराजा ने जवाहरसिंह को बीकानेर में शरण दे रखी थी। अंग्रेज सरकार ने बीकानेर के महाराजा रतनसिंह को पत्र लिखा कि जवाहरसिंह फिर विद्रोही बनकर नुकसान पहुँचा सकता था। ठा. रतनसिंह का विवाह सीकर राज डूंडलोद के ठा. रणजीतसिंह की पुत्री के साथ हुआ था रतनसिंह के समय बीदावत जागीरदारों, शेखावाटी व डीडवाना क्षेत्र के विद्रोहियों लोठू जाट, डूंगसिंह, करणा मीणा, जवाहरसिंह, सांवताराम मीणा बख्तावरसिंह इत्यादि की अंग्रेजी विरोधी हलचलें होती रही व लूट-पाट का प्राबल्य रहा। महाराजा रतनसिंह के सामने संकट पैदा हो गया। जवाहरसिंह को अंग्रेजों के अधीन करने पर राजपूत जाति व विद्रोहियों का सामना करना पड़ता व मना करने पर अंग्रेजों से दुश्मनी। बीकानेर के महाराजा ने कहा- जवाहर सिह हमारा मेहमान है वह कभी विद्रोह की बात भी नहीं करेगा। यदि अंग्रेज सरकार को विश्वास नहीं होता तो मैं अपने कुंवर को जमानत के बतौर अंग्रेजों की जेल में छोड़ सकता हूँ। लेकिन जवाहरसिंह को नहीं छोडूंगा। अंग्रेजों को केवल इतनी ही जरूरत थी।

XII-जवाहर सिंह का देहान्त

ठा. जवाहरसिंह बीकानेर नरेश के पास रहे। राव राजा भैरूसिंह सीकर राज सिंहासन पर बैठने पर वि.सं. 1907 (सन् 1850) के पश्चात ठा. जवाहरसिंह को बीकानेर नरेश रतनसिंह तथा ब्रिटिश सरकार से आग्रह कर नजरबंदी से छुड़ाकर सीकर ले आये। तदन्तर सीकर के राजकीय सेवाकाल में अपने ठिकाने बठोठ में उनका देहान्त हुआ। लेकिन मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए संकट झेलने वाले कभी मरते नहीं हैं उनकी कीर्ति सदैव संसार में अमर रहती है।

मरै नही भड़ मारका, धरती बेड़ी धार।
गायीजै जस गीतड़ा, जग में डूंग जवार।।

अर्थात:- ऐसे लोग मरते नही हैं भारत माता का नाम उजागर करने वाले इन जैसो के तो वीरता के गीत गाने चाहिए इस संसार में डूंगजी व जवाहरसिंह के जैसे वीर लोग हुए हैं।

कवि उदैराज उज्ज्वल ने गाया है:-

उज्ज्वल कवि महोदय ने इन स्वतंत्रता सेनानियों की पुण्य स्मृति में गाया है।

रीझा देवण जुध करण, मेम सुणै जग मांय।
ज्वार डूंग दोनू जिसा, नर जनमै फिर नाय।
काका में पण नह कमी, निडर भतीजौ न्हार।
अे कूरम रहसी अखी जग में डूंग जवार।
ज्वार डूंग दीधौ जरू, रिपुवां इण विध रेस।
रेणव ओ इचरज रहयौ, सुण जुध बात महेस।

21– वीर लोठू जाट का संक्षिप्त जीवन परिचय

गांव निठारा तहसील विराटनगर जिला जयपुर राजस्थान इस गांव के लोग निठारवाल के नाम से जाने गये। निठारवाल मुख्य रूप से कुशवाह वंश के थे। लोठू जाट का जन्म रींगस कस्बे के निठारवाल गोत्र के जाटों में सन् 1804 ई. के आस पास हुआ था। यह कस्बा सीकर जिले की तहसील श्रीमाधोपुर में आता है। निठारा गांव से प्रस्थान कर उनके पूर्वज तहसील श्रीमाधोपुर के ग्राम हांसपुर में आकर बसे तत्पश्चात यहां से कुछ पूर्वज प्रस्थान करके भारणी, सीतारामपुरा,रींगस इन जगह अपने गोत्र निठारवाल के नाम से गांव बसाये। बालक लोठू का जन्म एक स्वाभिमानी परिवार में हुआ था उनके एक बहिन व एक भाई था, माता पिता बहुत ही सरल शांत स्वभाव के थे। जब बालक लोठू का जन्म हुआ तब उसका भारी शरीर और सिर मोटा बड़ा देखकर उसकी दादी ने प्रचलित कथा के अनुसार कहा:-

सिर बड़ा सपूत का, पैर बड़ा कपूत का।

जब बालक को पालने में झूलाते थे तो उसकी विशेषता अलग ही थी। पालने में ही कई प्रकार से क्रीडा करते थे जिस पर परिवार के सदस्य कहते थे कि यह बड़ा होकर साहसी कार्य करेगा, वीरता दिखायेगा इसकी महिमा अपरम्पार होगी जिसके लिए कहा गया हे :-

पूत का पग पालना मांय।
बहू का पग पैसारा मांय।।

अर्थात्:- पुत्र जब जन्मता है उसकी विशेषता व क्रिया कलाप से पता चल जाता है कि यह बड़ा होकर क्या करेगा, और बहु जब दुल्हन बनकर घर आती है जब पैसारे वाले दिन ही पता चल जाता है कि बहू सेवा करेगी या नहीं परिवार के साथ सुख-दुख में भागीदार बनेगी या नहीं।

लोठू की बाल्यावस्था व खेल

बालक लोठू बाल्यावस्था से ही अपने साथियों के साथ विभिन्न खेलों में रूचि रखता था। जिसमें कबड़ी, मारदड़ी, गिल्ली-डंडा, झुरी-डंडा, लहुक-मीचणी, दही-कोल्डा, लूण-क्यार, डाकन-डब्बल, नीर-तीर, हुडदड़ो, चर-भर, पट्ती-चग्गा, चील-झपट्टो, भीका की घोड़ी, तीन टांग की लड्ढी-फड्ढी,

हरा समन्दर गोपी चन्दर अटकण-बटकण दही चिटोकण, चांद-मारी, सतमताली, सत्तोलिया, सांकल-तोड़ आदि शेखावाटी में प्रचलित सभी खेलो में भाग लेता था। सभी खेलों में रूचि देख कर आस-पास के लड़के इसके पास खेलना भी चाहते थे व कतराते भी थे कि कही लोटू की लात घूसा लग गया तो चित आयेंगे। अच्छे साथी मिलने से योवनावस्था तक सभी खेलों में पारंगत हो गया।

लोटू की शिक्षा

बालक लोटू उस जमाने में पढ़ना भी सीख गया था जबकि शिक्षा उच्च वर्ग को दी जाती थी परन्तु जो साथी इनके साथ खेलते थे, उन्ही के पास बैठकर लोटू अक्षर ज्ञान लेने लगा धीरे-धीरे इनके ज्ञान में वृद्धि होती गई। अन्य बालक भी लोटू को अक्षर ज्ञान कराने में अहम भूमिका निभाते थे क्योंकि लोटू उनको तरह तरह के खेल खिलाता था तो वे उनको शिक्षा का अच्छा ज्ञान कराते थे। लोटू धीरे-धीरे शिक्षा की ओर अग्रसर हो रहा था लोटू काव्यात्मक भाषा का बखूबी प्रयोग करते थे। अंग्रेजी, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती भाषा के अच्छे जानकार थे। लोटू भाषा के इतने जानकार हो गये थे कि जिस इलाके में धाड़ा (डाका) डालते थे वहां पहले जासूसी करते थे तो वहां के लोगों की भाषा से रूबरू होते थे उस भाषा को जल्दी ही पकड़ लेते थे तो लोग ये समझते कि ये यहीं के लोग है। इस प्रकार पांच छ भाषाओं के अच्छे जानकार हो गये थे। शिक्षा में लोटू दूरदर्शी एवं कूटनीतिज्ञ हो गया था।

लोटू की घुड़सावारी व ऊँट सवारी

लोटू बड़ा ही मेहनती, निडर व साहसी था लोटू के पिताजी घुड़सवारी ऊँट सवारी के शौकीन थे। बालक लोटू जब अपने पिता को देखता था तब उसका मन भी ऐसा करने को कहता था वह पिताजी के साथ साथ स्वंय भी घुड़सवारी व ऊँट सवारी सीखने की रूचि रखने लगा और धीरे धीरे घुड़सवारी व ऊँट सवारी करने लगा इस तरह से इनकी दौड़ में लोटू अपने साथियों में बाजी मारने लगा। जब कही मेलों आदि पर घुड़ दौड़ ऊँट दौड़ का आयोजन होता था तो लोटू की इनाम पक्की थी। वह ईनाम लेकर ही घर आता था। उसके पास नवलखा नाम का घोड़ा था, जो दौड़ता था जब हवा से बातें करता था, लोटू उसको अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करता था। इनके घोड़े के पागड़े

इतने चौड़े थे कि एक सामन्य व्यक्ति आसानी से इनके अन्दर से निकल जाता था।

लोठू का स्वांग रचना

लोठू बाल्यावस्था से खेल तमाशा जिसमें चंग गीदड़ होली के ख्याल स्वांग रचना शुरू से ही रूचि रखता था, ज्यों-ज्यों बड़ा हुआ नाटक करना नट का भेष करना, भिखारी का भेष करना, फौजी का भेष करना इस तरह के स्वांग रचने में उस्ताद हो गया था। लोठू जाट बहुरूपिये वेश में स्वांग रचकर जासूसी करते एवं इसके बाद योजनाओं को अन्तिम रूप देते है।

लोठू की शारीरिक बनावट ताकत

लोठू शारीरिक बनावट में काफी ताकतवार था उसकी कद काठी मजबूत थी, उसकी लम्बाई लगभग सात फीट, गर्दन लगभग एक फीट, वजन लगभग एक सौ साठ किलो, ताकत का कोई अन्दाजा नहीं था। पैदल दौड़ने की क्षमता आज के किसी भी धावक से अधिक थी। उस जमाने में कुँए से पानी चड़स द्वारा निकाला जाता था, तो भरा चड़स लोठू कुए से अकेला ही खींच लेता था जिसमें किसी दूसरे व्यक्ति की मदद नहीं लेता था। लोठू कई बार मजाक में ही घोड़ो के रथ अथवा बग्घी को हाथों से पकड़कर खेजड़ी पर टांग दिया करते थे। जिनकी चर्चाएं सुनकर लोग दाँतों तले अंगुली दबा लेते थे।

लोठू की वेश भूषा

लोठू जाट की वेश भूषा में उसका रूमाल सूती धागे की रैजी से बना होता था इस रूमाल की लम्बाई 24 हाथ व दो हाथ पैना या चौड़ाई अर्थात लगभग 47 फुट लम्बा व साढ़े तीन फुट चौड़ाई होती थी, सिर की सुरक्षा में रूमाल हेलमेट का काम करता था यदि सामने या पीठ पीछे से दुश्मन ने सिर प वार कर भी दिया तो तलवार का वार रूमाल ही सहन कर लेता था। लोठू पगड़ी को शान स्वाभिमान एवं मर्दानगी की प्रतीक मानकर हमेशा धारण करते थे।

लोठू के हथियार

लोठू जाट पांच छः हथियार हमेशा अपने साथ रखता था जिनमें

ढाल, तलवार, बन्दूक, भाला, बरछी और दारू शीशा थे। उनकी बन्दूक लगभग 30 किलो वजन सात फीट लम्बी थी, वे अचूक निशाने बाज थे, बन्दूक को सीधी कर निशाना लगाना आम सैनिक के लिए असम्भव था इसमें पांच सौ ग्राम बारूद डालने पर बहुत जोर की आवाज आती थी इस बन्दूक को लोठू बिना किसी तकलीफ व परेशानी से बड़ी शान से चलाता था।

लोठू के विभिन्न नाम

वीर लोठू जाट क्षेत्र व प्रदेश में विभिन्न नामों से जाने जाते थे, जिनमें लोठू, लोठन, लोठसिह, लोटिया, लोट, लोटसिह, लोठूराम, लोहट, लोहसिह, लोटियासिह और लोठजी के नाम से पुकारे जाते थे लोठू का नाम विभिन्न समुदायों के सभी लोगों की जुबान पर आज भी कायम है।

लोठू की देश भक्ति

वीर स्वतंत्रता सेनानी लोठू जाट एक देश भक्त ही नहीं थे, वे एक सच्चे मित्र भी थे, और हमेशा सच्ची दोस्ती के पक्ष में रहते थे। जिनमें उनकी दोस्ती राजतंत्र राजनीति व प्रजातंत्र से सम्बन्धित थी, उनके दोस्तों में से मुख्य डूंगरसिह, जवाहरसिंह, साँवताराम मीणा, करणा राम मीणा, बालू नाई, सांखू लुहार, सौजी गुर्जर, सौबन्यौ सुनार जैसे सैकड़ों मित्र अपने साथी लोठू की कद्र करते व उनके द्वारा कही हुई बातों को अमल में लाते थे।

लोठू की धार्मिक प्रवृति

वीर लोठू धर्मपरायण थे उनको माता से मिली शिक्षा में धर्म के प्रति कूट-कूट कर भावना भरी हुई थी। वे बड़ों का आदर करते थे भूखे व ब्राम्हण की सेवा करते थे। उनका ईष्ट देव बजरंग बली था जिनमें उनकी अटूट आस्था एवं विश्वास था, तथा दान पुण्य में गहरा विश्वास था जब भी कहीं धाड़ा डालते थे उससे प्राप्त धन राशि को गरीबों, दीन दुखियों में वितरण करते थे। कभी ब्राम्हण को गरीब को इन्होंने नही सताया इनकी मददही करते थे। स्त्री का विशेष सम्मान करते थे। इनके साथियों ने कभी किसी स्त्री को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। इन्होंने जाति, धर्म, क्षेत्र को कभी महत्व नहीं दिया, एवं देशहित ही उनके लिए सर्वोपरि रहा। इनकी धर्मात्माशैली का आज भी भोपा-भोपी गुणगान करते है।

I- लोठू की सांड से कुश्ती

बठोठ में एक ताकतवर सांड था उसकी नस्ल से वहां बछड़े व गायों की उत्तम नस्ल थी। एक बार गाव के सार्वजनिक कुँए से नहाकर लोठू जा रहा था। सामने से सांड टांडता हुआ आ रहा था। वहां खड़े एक व्यक्ति ने मजाक रूप में कह दिया कि लोठू जी यह सांड आप को दंगल के लिए बुला रहा है कि मेरे साथ कुश्ती लड़ो और चेतावनी दे रहा है वहां बैठे और लोगों ने भी मजाक कर दिया। लोठू ने आव देखा न ताव अपनी गीली धोती व कमीज तो कुए की पाल पर रख दिया और हो गया सांड से कुश्ती करने को तैयार, सांड के सामने जा डटा और उसके सींग पकड़ लिए सांड़ ने लोठू को भेठी मारनी चाही पर लोठू ने सांड के सींग छोड़े नहीं और उसकी गर्दन को अपनी कांख में दबा लिया। सांड ने व्यथित हो पोठा कर दिया व अरड़ाने लगा। लोठूजी ने सांड को छोड़ दिया उस दिन के बाद सांड़ ने लोठूजी के सामने आकर टांडना बन्द कर दिया। सांड को 20 आदमी भी काबू नहीं कर सकते इस बात से हम लोठू की ताकत का अन्दाजा लगा सकते है।

II-लोठू स्पष्ट वक्ता व व्यवहार कुशल

लोठू उच्च चरित्रवान व्यक्ति के साथ-साथ गुणवान भी था इसका चरित्र पूरे घटनाक्रम में साफ छविवाला है। साथ ही निठारवाला गोत्र का यह जाट हिम्मत वाला व पराक्रमी योद्धा भी था। यह एक आदर्श मित्र निस्पृही, उदार और निर्लोभी (बिना लोभ लालच के) और जो भी कहता था व स्पष्ट कहता था। उन्होंने कहा है:-

नी छावे म्हारे गाम जगीरो, नी छावे म्हारे पाटजी।
नी छावे म्हारे अम्मर पट्टो, नी छावे म्हारे नाम जी।

अर्थात:- एक जगह लोठू कहता है कि मुझे किसी गांव की जागीर नहीं चाहिए तथा न ही मुझे किसी गाँव की अध्यक्षाता चाहिए मुझे किसी भी वस्तु का अमर पट्टा (जीवन भर का अधिकार) नहीं चाहिए।

III-लोठू ने नट का भेष करके रामगढ़ में जासूसी की

जाट लोटिया ओर मीणा करणिया का प्यारा मेल था डूगरसिंह की भरी कचहरी में इस बात को संभाल लिया। जाट लोटिया ओर मीणा करणिया

बुद्धि में वजीर थे। वे वेश बदल कर रामगढ़ को चले मानो तीर छूटे हो। लोटिया ने ढोलक ली और करणिया ने बांस लिया घर घर खेल तमाशा करने लगे और घर-घर में माल देखने लगे (धन का सुराग लेने लगे)।

IV–लोठू द्वारा चारा व अनाज के लिए विचार विमर्श

डूंगजी लोटिया जाट से कह रहे है कि लोटिया रामगढ के सेठों ने तो अपनी वाली कर दी, अपनी प्रजा के पास मोठ बाजरी खत्म हो गयी, घोड़ों के लिए घास खत्म हो गया, दाना-पानी नही है, अब क्या उपाय करें। लोटिया ने कहा सरदार सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता है, हमें कुछ करना ही पड़ेगा तब ठाकुर कहता है हाँ हमें कुछ करना ही पडेगा, थोड़ा धैर्य रखो, जब लोटिया ने कहा मैं जावूं और आवूं तब तक काम चलावो जो कुछ आपके पास है उसको खाकर आराम करो, मैं रामगढ़ की जासूसी करके आता हूँ कि अपने को अनाज कहां प्राप्त होगा।

V–लोठू द्वारा अंग्रेज अफसर को ठोकर मारना

डूंगजी ने इशारा किया इशारा पाते ही सारे बोरों को तलवारों से फाड़ दिया। भूखी जनता अनाज पर झपट पड़ी। पहरेदार ने बन्दूक चलानी चाही कि लोटिया जाट ने लपकर उसकी गर्दन पर बन्दूक रख दी, लोटिया जाट की बन्दूक की नली अधिक लंबी थी। "तेरा भेजा उड़ा दूगां" वह गरजा।अंग्रेज तुम्हारी बोटी-बोटी काट डालेगें। अभी तुम लोगों ने कम्पनी बहादुर का गुस्सा नही देखा है। तोपों से उड़ा देंगे। तुम डाकू लोग अंग्रेजों का सामना करोगे? " हमें डाकू कहने वालो की हम जबान खींच लेते है तथा पहरेदार को एक ठोकर मारी उसकी बन्दूक उछलकर दूर जा गिरी। पहरेदार धूल चाटने लगा। उसकी जबान काट डाली गयी। इधर भूखी जनता ने अनाज लूट लिया। बेशुमार अनाज था अतः सभी लोगों की इच्छा पूरी हो गयी। इस तरह लोटिया जाट डूंगजी और करणिया मीणा की जै जै कार बोली जा रही थी।

VI–लोठू द्वारा पांच पान का बीड़ा उठाना

पांच पान को बीड़ो फेरयो जवार सिंह सरदार।
सारा नटग्या भाई भतीजा सब नटग्या उमराव।।
बावड़ता वीड़ा नै झेल्यो लोटियो जाट।

पकी सेर बै गेरू गाली करियो भगवो भेस।
कर मुजरो बो चल्यो आगरे राम राखसी टेक।
आगरै ने चल्यो लोटियो ज्यूं लंका हड़मान।
कै ल्या वैलो खबर डूगजी, कै त्यागे लो प्राण।।

अर्थात्:- डूंगजी की खबर लाने हेतु सरदार जवाहरसिंह ने पांच पान का एक बीड़ा भरी सभा में कचहरी में फिराया परन्तु वहां बैठे भाई - भतीजा रिश्तेदार सम्बन्धी सभी ने उसको उठाने से मना कर दिया सभी को बुखार आ गया। जब बीड़ा को जवाहर जी वापस ले जा रहा था, तब लोटिया जाट ने उस बीड़ा को उठाया और आगरे जाने हेतु एक किलो पकी गेरू मंगवायी और कपड़ो को रंगवा के साधु का भेष बना लिया और जवाहर जी को मुजरा (सलाम) करके वह चला यह सोचकर कि अब तो राम ही मेरी बात रखेगा। आगरे की तरफ इस प्रकार चला जैसे लंका को हनुमान गया था जिस तरह हनुमान जी सीता माता का पता करके आया था उसी तरह मैं डूंगजी की खबर लेकर आऊँगा या प्राण ही त्याग दूंगा। इस प्रकार मन में दृढ निश्चिय करके चला। इस तरह लोठू जाट व करणिया मीणा आगरा के लिए प्रस्थान कर गये।

VII–लोठू जाट व ठकुरानी के बीच वार्तालाप

लोटिया जाट ने ठकुरानी को हाथ जोड़ा उसने नम्रता से कहा मैंने जवाहरजी से यही कहा था पर जवाहरजी अभी नादान है। यह नादानी अच्छी नहीं होती ठकुरानी तड़पी। हम सरदार को छुड़ाकर लायेंगे सब एक साथ बोले। ठकुरानी ने उसी समय एक लडकी को पान लगाकर लाने के लिए कहा। थोड़ी देर में पान का थाल आ गया। ठकुरानी ने सब सरदारों की और देखकर कहा यह पान का बीड़ा वही उठायेगा जो डूंगसिंह को छुड़ा कर लायेगा। है कोई माई का लाल इस बीड़े को खाने वाला। सब तरफ सन्नाटा फैल गया। ऐसा लगा कि मानो सभी को सांप सूघं गया है। ठकुरानी ने फिर देखा डूंगजी के भाई भतीजे, उमराव और सगे सम्बन्धी सब बीमार लगने लगे। उन्हें बुखार चढ़ आया। " धिक्कार है आप सबसे .....। ठकुरानी बोली। रूकिए ठकुरानी जी" लोटिया जाट शेर की तरह दहाड़ा " आप सब को धिक्कार मत दीजिए। यह पान का बीड़ा मै खाता हूँ। मै प्रतिज्ञा करता हूँ कि

अपने सरदार को छुड़ाकर लाऊँगा या स्वयं मर जाऊँगा। " धन्य है लोटियाजी " ठकुरानी ने आभार प्रकट किया आप ही उनके सच्चे दोस्त भाई और अपने है। ठकुरानी जी मै आगरा जा रहा हूँ। सबसे पहले मुझे सरदार की स्थिति का पता लगना है। भगवान आपको सफल करें " ठकुरानी ने आशीष दी।

VIII– लोठू का आगरा में पहुँचना व साधु के भेष में तपस्या करना

लोठू जाट व करणिया मीणा आगरा पहुँच कर आगरा के किला के सामने दरवाजा पर थोड़ी दिशा देखकर एक कोने पर अपनी धूणी लगा ली, और धूणी तपने लग गया। लोटिया साधु के भेष में तपस्वी साधु की तरह लग रहा था। जाने ऐसा लग रहा था जैसे कोई बड़ा साधु हो सात-सात धूणियो की बीच में ऊँधे मुख लटक कर तपस्या करने लगा। आंख मूँद कर ध्यान लगाता दो-दो तीन-तीन दिन तक आंख नही खोलता इस तरह कई मुद्राओं में तपस्या करने लगा। किले के आस-पास वाले लोग व आने-जाने वाले सिपाही बाबाजी को देखकर अचम्भित होकर कहते साधु तो बड़ा करामाती लगता है और पहरा देने वाले सिपाही व आने जाने वाले लोग बाबाजी को धोक प्रणाम करने लग गये औरतें धोक प्रणाम के लिए आने लग गयी। बाबा लोठू किसी की तरफ भी नजर उठाके नहीं देखता। उसकी आंखो की मीट मिली हुई रहती तथा ध्यान मस्त ही रहता। चेला बण्योड़ा करणा राम मीणा पूरी बात को सम्भाल रहा था आने जाने वालों पर नजर रख रहा था बाबाजी की विशेषता बताता रहता था और धूने में लकड़ी खिसकाता रहता था। जिस तरह का साधु हो वैसा ही उसका चेला था, लोठू बाबा ने छः महीने की समाधि लगा लीनी, अन्न पानी सब त्याग दिया केवल हवा के सहारे ही रहने लगा, वहां दर्शन करने वाले भक्तों की भीड़ लगने लग गई। भेंट पूजा सामग्री लेकर भक्त लोग आने लग गये परन्तु चेला एक दाना भी किसी से नहीं ले रहा था। कोई कुछ भी लावे व चेला सभी को मना कर देता और कह देता माया से हमारा क्या काम, चेला करणिया मीणा आने वाले भक्तों को कहता चुपचाप धोक देकर चलते बनो।

IX–लोठू बाबाजी की पुलिस वालों में चर्चा

धूणे के आस-पास वाले सिपाही व थानेदार आदि साधु महाराजकी प्रशंसा करते नही थक रहे थे। ऐसा तपस्वी बिना लोभ लालच के ऐसा साधु कहीं नहीं देखा, सच्चा साधु है। अपने भाग अच्छे है जो ऐसे साधु के दर्शन हुए। अंग्रेंज अफसर ने किला के बाहर साधु को धूणी तपता देख कर वहाँ तैनात सूबेदार को आदेश दिया कि साधु बाबा से कह दो दरवाजा से दूर चला जाये। सूबेदार ने निवेदन किया कि बाबा समाधि में है। समाधि टूटते ही उनको यहां से हटा देंगे। छः महीना की समाधि टूटी। सूबेदार को डर लग रहा था कि बाबाजी को कैसे कह दें कि आप यहाँ से हट जाओ, परन्तु आदेश की पालना करनी पड़ी। सूबेदार ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और कहा बाबाजी हमारे भाग धन्य हैं कि आप जैसे साधू सन्त यहां तपस्या कर रहे है। परन्तु बड़े साहब का आदेश है कि आप यहां से दूसरी जगह चले जाओ, पांच-पच्चीस की भेंट पूजा ले लो और मेरे से जो बनेगा सो और दे दूंगा परन्तु आप यहां से चले जाओ।

X–लोठू बाबा की अंग्रेज अफसर से वार्ता

लोठू ने कहा बच्चा रूपया का हम क्या करगें साधू तो भावनाओं के भूखे होते है। धन से क्या काम हम आबू पर्वत से उतर कर आये है। अब गंगा स्नान को जायेंगे यदि बच्चा आप से साधू के प्रति भाव है तो हमारा एक काम कर दो सूबेदार ने कहा महाराज आदेश करो। मेरे करने योग्य होगा तो मै कर दूंगा। बालक इस किले में हमारा एक भक्त कैद है। उससे एक बार मिला दो। डूंगजी हमारा कंठी बन्ध चेला है। हम जा रहे हैं केवल एक बार हमारे भक्त से मिला दो। सूबेदार ने पहरेदार से विचार विमर्श किया कि डूंगजी इन का भक्त है मिलाने में क्या दिक्कत है। कोई नुकसान वाली बात नहीं है। यह साधू कपटी तो लगता नहीं है। चार सिपाही पीछे कर देगे चार सिपाही आगे कर देंगे व बीच में इसको ले जाय कर मिला लायेंगे। ये जोर जबरदस्ती क्या करेगा यदि जोर जबरदस्ती करेगा तो मोड को पकड़ कर बांध लेंगे। साधू है अपना कहना मान धूणी उठाय दूसरी जगह जा रहा है तो इसकी एक इच्छ तो अपन भी पूरी कर दें।

XI–लोठूबाबा व चेला करणिया मीणा की डूंगजी से जेल में वार्ता

सूबेदार ने आगे पीछे पहरा वाले कर दिये बीच में बाबाजी व उनका चेला करणिया मीणा को कर किया, गुरू व चेला ने किले में प्रवेश किया दोनों गुरू चेला किले के अन्दर बांया-दांया दोनों तरफ देखते जा रहे थे, फाटक, दरवाजा, परकोटा, खाईयां, रास्ता, घुमाव सभी को अपनी नजर में निकाल लिया, कहां सीढी लगानी कहाँ कूदने का रास्ता मिलेगा, देखते-देखत किले की बुर्ज में पहुँच गये, कैदियों के बीच में डूंगजी हथकड़ियों व बेड़ियो में झकड़ा हुआ बैठा था, लोटिया डूंगजी को देखते ही बोला बच्चा सुखी रहो! ऐसे कहते ही डूंगजी लोठू की आवाज पहचान गया और लोटिया करणिया मीणा की सूरत उसकी आँखो में आ गई। डूंगजी की आंखो में पानी आ गया हृदय भर आया और मन में कहने लगा धन्य है लोटिया तुझे जन्म देने वाली जाटनी को जो तेरे जैसे वीर को जन्म दिया। लोटिया बोला-बच्चा हम यहां से चले जायेंगे तेरे को देखने की इच्छा थी वो पूरी हो गयी। डूंगजी ने कहा - महाराज आपने मुझे दर्शन दिए मेरे धन्य भाग हैं जो आप आये, मुझे तो काला-पानी भेजने के आदेश आ गये है। आज से पन्द्रह दिन बाद काला-पानी भेज दिया जायेगा। लोटिया बोला-बच्चा सब अच्छा होगा, चिन्ता क्यों करता है। भगवान भला करेगा, ऐसे कह बाबाजी व उनका शिष्य लौट आए। पीछे आते समय करणिया मीणा रास्ता देखता हुआ चल रहा था और लोटिया मोर्चे की जगह देख रहा था।

XII–लोठू की जेल में डूंगजी से वार्तालाप व विदाई

लोटिया करणिया मीणा घर जावौ सिधाय जी।
कंवरां माये हाथ फैर म्हारी माता दे सीलाम जी।
कवंरा रा तो नांव लेवता नेणा ढलकियो नीर जी।
बड़के बोले जाट लोटियो सुण सेखावत बात जी।
कायर दौड़ा डूगसिह जी थे मती कायरी आज जी।
कितो थारी बेड़ी काट द्यू क्यूं रहजाऊँ थारै साथ जी।
ईगनबोट में बैठो धाडवी चल्यो आगरे जाय जी।
रात दिन रा किया मामला गया आगरे सहर जी।

आगरे के जेल खाने ने न्हार लियौ बैठाण जी।
नागपर रौ नागौ सांमी अकलाणै को सेठ जी।
सूरत बबइया कंवर पड़िया पग सोने री मेख जी।
बड़ा-बड़ा तो सेठ पकडया नै बडा - बडा अमराव जी।
बावन बंधवा पडयो कैद मे सेर पींजरे इ मांय जी।

अर्थात:- डूंगजी लोटिया व करणिया मीणा से कहता है कि तुम घर पधारो, जब कंवर (राजकुमार) से मेरी तरफ से सिर पर हाथ फेरना, ओर माताजी को धोक प्रणाम कहना। राजकुमार का नाम लेते ही डूंगजी की आंखो में आँसू झलक आये लोटिया जाट कहता है सुन शेखावत मेरी बात आप कायर थोडा हो जो इस तरह आँखो में आंसू ला रहे हो, इतनी करूणता मत लाओ या तो आपकी बेड़ी काट दूँ या आपके साथ यहां जेल में रह जाऊँ रात दिन एक करके आगरा शहर में आ गया आगरा किला की जेल खाने में सिंह को बैठा लिया इसके साथ ही नागपुर का नागा स्वामी, अकलाणै का सेठजी सूरत बम्बई के कई लोग वहां सोने की सांकलो से बंधे पड़े थे और बड़े-बड़े सेठ पकड़ रखे है और बड़े-बड़े ठाकुर बंधे पड़े है। साथ में ही बावन बंदी कैद मे पड़ें है उसी के साथ शेर डूंगसिंह पिंजरे में कैद पड़ा है।

XIII–लोठू का साधुवेश से लेकर जेल की रैकी को भोपाओ ने गाया

आगरै के बधवा आगे धूणी घाली सात।
अेवड़ छेवड़ बले बलीतो बीच लोटियो जाट।
मार पलाखी मीट लगावै, करै गजब का फैल।
लोग दिखाऊ अन-जल त्याग्यो अेक भखे वस पून।
आये गये से मुख ना बोले अैसी धारी मून।
छ्व महीना की लायी समाधी खूब तप्यो दिन रात।
छ्ठ महीना लागतां अंग्रेजा बुझी बात।
कुण देसां सूं आया बाबाजी कुण देसां नै जाव।
पांच पच्चीसा थे लेल्यो बाबा। धूणी परै हटाव।
हुक्म नही छै वडे साहब को डबल कूच कर जाव।
पांच पचीस बे लेसी बच्चा! ज्यारे है घर बार।

साधू भूखा भाव का, म्हारे ना माया सूं काम।
मांग्या खावां टुकड़ा म्हे रटां राम को नाम।
आबूजी सूं आया उत्तर म्हे, गंगा न्हावण जावां।
थारे किले मै न्हार डूंगजी बैरा दरसण पावां।
खाय कायरी फिरंगी बोल्यो सुणो संतरया बात।
अै मोडा तो कपटी कोनी, नाय कपट की घात।
आ साधा को जिवड़ो भटकै मेळो द्यो करवाय।
डूंगसिंह कंठी बंध चेलो, आने देवो दिखाय।
च्यार सिपाही आगै होवो, च्यार सिपाही गैल।
जोरी जपती करै मौड़ तो धरो कैद के मांय।
च्यार सिपाही आगे होग्या, च्यार सिपाही गैल।
लोटयो जाट करणियो मीणो करे किले की सैल।
फिर घिर देखी चार दिवारी नाय लगायी देर।
फाटक मोरी निजरां काढया लियो किले को भेद।
जद बदवां की गयो बुरज में मन मे भयो खुस्याल।
अेवर छेवड़ सित्तर बंधवा, बीच डूंग सिरदार।
सुरत पिछाणी जाट की जद नैणा खलक्यो नीर।
छाती भरी हीवड़ो उलझयो छूट्यो डूंग को धीर।
रंग रे थारी जात लोटिया भलो जाटणी जायो।
आ मरबा की घड़ी बाजगी, भलो भेख सू आये।
कवरां माथै हाथ फेरजयो राणी ने हिवलास।
भाई भतीजा नै मुजरा कहज्यो माजी नै घणा सिलाम।
जुवाहर सिंह नै यू समझायो घर की करै संभाल।
जीवांगा तो फेर मिलांगा ना दरगा के माय।
जुवाहर सिंह नै छाने सी थे, दीज्यो खबर सुणाय।
सात दिना की बोली दीनी काले पाणी लै जाए।
कायर छाती का डूंगजी तू कायरता मत ल्याव।
सात दिनां के भीतर थाने घर ले जाऊ छूड़ाय।

बंध कारण को कर्‌या लोटिया डूंग न्हार हूँ ठीक।
धीर धोबना बंधा डूंग नै ली आवण की सीख।
लाल किले हूँ नीसरता बा.....
लौटयो भाले मोरचा कोई करण्यो तकै सफील।
आधी रात पहर को तड़को जोग्या धूणी ठायी।
भगवा ले जमना मै फैंक्या तूंबा दिया तिरायी।
असी रिप्यां मे लियो टोरडो हाल्या रातू रात।
गढ बठोठ के आया गौरवे ऊगतडै परभात।।

XIV– अंग्रेज अफसर ब्लूकिंग को लोठू बाबा का चमत्कार

एक दिन एक अंग्रेज अफसर आया। उसके साथ अंग्रेज और हिन्दुस्तानी सिपाही थे। उसने बाबा को देखा तो बोला, बाबा यहाँ से चले जाओ यहां हमारा किला है उसमे चोर डाकू बंदी है। लोटिया जाट हँसा बोला, कौन चोर है और कौन डाकू, यह तो ईश्वर ही जाने! पर तुम कल तक जरुर कोई चमत्कार देखोगे "हम चमत्कार देखेगा तो तुमको नमस्कार करेगा" अंग्रेज अफसर चिल्लाया। तभी लोटिया जाट ने करणिया मीणा की ओर देखा। करणिया मीणा ने झट से एक सिपाही की ओर देखकर कहाँ क्यों अनवर क्या तेरी बीबी को बाबा ने चुटकी बजाकर ठीक नहीं किया। किया था साहब! मेरी बीबी के पेट में भयानक दर्द होता था बाबा ने चुटकी भर खाक (राख) से ठीक कर दिया। अंग्रेज अफसर बोला, अरे अनवर हिन्दुस्तान के लोग बड़े अंधविश्वासी है। वे सही दृष्टि रखते ही नहीं। यदि वे वैज्ञानिक दृष्टि रखते और ईश्वर पर अंधविश्वास नहीं करते तो महमूद गजनवी सोमनाथ मंदिर लूटकर नही ले जाता? इन चमत्कारों ने इस देश का विनाश कर दिया है, अरे फिरंगी..... तुमने हमें नहीं जाना है। कल तक तुम देखना हम तुम्हे शाप देते है। अंग्रेज अफसर चला गया धीरे-धीरे ओर भक्तों की भीड़ भी चली गई और सन्नाटा छा गया तब चेला करणिया मीणा ने पूछा, ओ लोटिया यदि अंग्रेज अफसर को कुछ भी नहीं हुआ तों? यह अपने भाग्य की बात है। लोटिया जाट ने आकाश की ओर देख कर कहा "सैंकडों लोग आते है उनमें कुछ तो भगवान भरोसे ठीक हो जाते है" सौ में एक ठीक हो जाता है तो वह हजारों

को अपना भक्त बना देता है। दूसरे दिन वह अंग्रेज अफसर पालकी पर बेठकर आया। उसे देखते ही करणिया मीणा घबराया। बोला गुरु जरुर तेरा शाप सच्चा हो गया है। वह फिरंगी फिर आ रहा है ओर पालकी पर आ रहा है। अरे करणिया..... ऊपर वाला मेहरबान तो गधा भी पहलवान! जब दिन फिरते है तो ऐसे ही चक्कर चलते है। झट से आग को तेज कर दो " करणिया मीणा ने जरा सा घी डाला। आग भक्क से जल गयी। लोटिया जाट मंत्रो का जप करने लगा। पालकी धूनी के पास आकर रुकी। वह अंग्रेज अफसर उतरा। उसका नाम ब्लूकिंग था। उसने हाथ जोड़कर कहा " बाबा! तुम सचमुच बड़ें तपस्वी हो। आपने जो शाप दिया वो सच्चा हो गया है। मुझे कल से दस्त लग रहे है। करणिया मीणा को हंसी आने लगी, पर उसने उसे जबरदस्ती रोका ब्लूकिंग फिर बोला," मुझे माफ कर दीजिए। मैं आपसे माफी मांगता हूँ। " और उसने ढेर सारे चाँदी के सिक्के लोटिया जाट के आगे रख दिये। लोटिया जाट ने सिक्को को उठाकर अपने पिछे फेंका। फिर कहा," मैं लक्ष्मी को नहीं लेता। हमें माया से क्या काम " पर आप अपना शाप वापस ले लीजिए मै हाथ जोड़ता हूँ। "उसने हाथ जोड़ दिये। लोटिया जाट ने करणिया मीणा को बुलाया। उसके कान में कुछ कहा, वह भीतर गया। कटोरी में दवा का चूरा लाया।

लोटिया ने उस दवा को ब्लूकिंग को तीन बार दिया। ब्लूकिंग ने उसे तीन बार पानी के साथ पीया। "जाओ , आराम करो। दोपहर तक तुंम एकदम ठीक हो जाओगे। लोटिया ने अर्शीवाद दिया। "अंग्रेज अफसर लोटू गया। लोटिया जाट ने कहा" करणिया अब लुहार के दिन आ गये है। जब आदमी के अच्छे दिन आते है तो वह मिट्टी को भी छूता है तो सोना हो जाता है। अब सरदार जरुर छूटेंगे। यह अंग्रेज अफसर अपना भक्त जो बन गया। "करणिया मीणा ने उसकी बात को सराहा। कहा "आम की पीशी हुई गुठली से दस्त रुक जाते है। "अरे भाई, उसके साथ अफीम भी तो दिया है। दस्त रुक जायेगे। "और वही हुआ। दूसरे दिन ब्लूकिंग बडा ही खुश नजर आया। उसने लोटिया जाट से कहा "बाबा हमें सेवा का मौका दो। "हमे कुछ नही चाहिए।" "मगर फिर भी कुछ सेवा जरुर करने दीजिए। आप सचमुच चमत्कारी है।" जब उसने ज्यादा ही आग्रह किया तो लोटिया ने आगरा के किले की ओर देखकर

कहा "हम किला देखना चाहते है। सुना है, आपने खूंखार डाकुओ को पकड़ रखा है।" "हाँ, हाँ चलिए बाबा। और फिर लोटिया जाट और करणिया मीणा दोनों आगरा के किले में गये। ब्लूकिंग ने बड़ी श्रद्धा से किले को अच्छी तरह दिखाया। दोनों किले के रास्तों का अच्छी तरह अवलोकन करने लगे। उन्होंने पूरे किले का भेद ले लिया। इस किले में घुसने के लिए क्या-क्या चाहिए..... इसका भी ध्यान रखते रहे। किले में कुल सत्तर कैदी थे, उनमें अधिकांश फिरंगियों के विरोधी थे। उन सबके बीच बडी-बड़ी भारी जंजीरो से डूंगजी बंधा हुआ था। उसकी आकृति मलीन थी। कपड़े पुराने थे। लोटिया जाट की आँखे भर आयी। वह नजदीक गया। अंग्रेज अफसर को देखकर वह झट से बोला, "यही है डूंगजी। " हां-हां बड़ा खूंखार डाकू है। इसने अंग्रेजों के नाक में दम कर रखा है। हमारी छावनियां तक लूट लेता है। इस बीच डूंगजी नें लोटिया जाट व करणिया मीणा को पहचान लिया। वह झट से बोला, " बाबा लोटिया नन्द **"धन्य है प्रभु" "**चिन्ता न कर - सब भाग्य के खेल है। सब कष्ट दूर होंगे।**" "**पर डूंगजी से नहीं रहा गया। वह झट से राजस्थानी में बोल पड़ा -**"** रंग है थारी जाट लोटिया भलो जाटणी जायो, आ मरबा की खडी बाजगी मसो भेख तू आयो।" अंग्रेज राजस्थानी भाषा को नहीं समझ रहा था। डूंगजी ने फिर कहा, अंग्रेज " सात दिना री बोली दिनी, काले पाणी ले जाए।"लोटिया जाट समझ गया की सात दिनो के भीतर डूंगजी को काले पानी ले जाया जायेगा ताकि स्वतंत्रता संग्राम का यह तेजस्वी सेनानी वहां सड़-सड़कर मर जाए। " बच्चा! तू चिंता न कर। सब भाग्य के खेल है, भगवान क्या करने वाला है, इसे कोई नहीं जानता।" और वे बाहर आ गये। ब्लूकिंग ने उसे धूनी तक पहुँचाया। एक पहर रात जाने के बाद में भगवा कपड़े तो यमुना नदी में फेक दिए और तूंबा पानी में फेंक दिया अस्सी रूपये में ऊँट लेकर रातों-रात आगरे से चल दिये और सूरज उगते ही गांव बठोठ में पहुँच गये।

XV–लोठू व करणा मीणा की आगरा से वापसी पर ठकुरानी से वार्तालाप

लोठू जाट व करणा मीणा जब आगरा से वापस बठोठ पहुँचते है तो तब रानी से बातचीत करते है ठकुरानी ने बड़ी बेचैनी से पूछा वे कैसे है? आप उनसे मिले थे क्या? लोटिया जी दुख भरे स्वर में बोला, ठकुरानी

जी। डूंगजी राजी खुशी है पर इस जीवन से तो मौत भली। हथकड़ी, बेड़ियां और तोख जंजीर में जकड़ा है वह सिंह। बड़े दुख की बात तो यह है कि उन्हें सात दिनों बाद काला पानी भेज दिया जायेगा। यह बात सुनकर ठकुरानी की आँखो में आसूं थे लोटिया व करणा मीणा को देखकर ही आसूं टप-टपाकर गिर पड़े। दोनों जवानों ने सीना फुलाकर कहाँ ठकुरानी जी आप आज आसूं बहा रही है। चन्द दिनों बाद आप खुश होवेगी। हम सरदार को छुड़ाकर लायेंगे।

XVI–लोठू द्वारा बठोठ में फौज तैयार करना

अस्सी कोस को गेलो करग्यो, सवा फेर का माय जी।
लोठ्यो आगे बढे वाट में मीणो हवा बणाय जी।
आमां-सामां मल्या जुवार जी मुजरो करयो जाय जी।
धन रे थारी जामण काका, भली जाटणी जायो जी।
करना की पीठ ठोक, दोन्याई ने गले लगायो जी।
जुवारसींघ देखी ने बोला, कीतर जुडी जमात जी।
थे जो गया था किले आगरे कौ काका भी वात जी।
कौ काका की वात केद में कठे फंस्यो है न्हार जी।
धुई म्हारी रजपूती बैढयो, घर माई गोडी ढार जी।
कई कूँ म्हारा वाला राव जी, म्हार से कयो नी जाय जी।
केतां केतां छाती फाटै, आँसूड़ा ढरकाय जी।
आगरा की खास जेल में पड़यो रांघडो हाम जी।
आमां सामा रवीला ठोक्या, दौरो कैद का काम जी।
पाव चणा मल जाय न्हार ने आठ पैर का माय जी।
दूजो वेतो अतरा में तो, सीज सीज मर जाय जी।
छैः महीना की बोली, बोली दन रई गया है सात जी।
दन रई गया छै सात पछै तो वगडी जासी वात जी
हेरो लै ने देखो आयो महादेव की आण जी।
चढणो वे तो चढजाओ, नीतर काले पाणी चलाण जी।
दन सातवें ऊगता जी कोई परदेसां ले जाय जी।

करणी वे जो सेखावत सात दनां का मांय जी।
अतरी वाता सूणता जी कोई, पडी बदन में आग जी।
आख्यां तो अंगारा वई गी, फुपकारे ज्यो नाग जी।
अंग्रेजा ने धुर बणाई दां कर दां पेले पार जी।
अणी घड़ी करल्यो तैयारी, चढणो अतरे तार जी।
बढ़के बोल्यो जाट लोढ्यो, सुण सेखावत वात जी।
जोर जबर ती काम नी चाले अंग्रेजा पर घात जी।
गांव-गांव परवाणो लिख दो, भाई बंद ले ओ बुलाय जी।
हरीक हरीका जुझारा को एकट लै ओ बणाय जी।
लख-लख कागद भाई बंदा ने करयो मलण को चाव जी।
भाई बंद तो आया काईनी, चट आया उमराव जी।
मीणा चढग्या बाबरी, ऊबरती का जाट जी।
गुजर ने रेबारी चढग्या मचगी ठठम ठाठ जी।
मीगंडा का महारावजी कंवर तम्मन सी लाटजी।
गायर चढया मढ़ मेवाती, हरीसिंह सरदार जी।
बीदावत अर लोढसरी का पीसा गन का न्हार जी।
डिग्गी का तो मेघसिंह जी ऊंटा पर असवार जी।
दांता का दातार सिंह जी, मेताब सींघ के लार जी।
भोपसीघं भोपालसीघ उदेसींघ सरदार जी।
भोपा आया भाट चारणा नाई और तमोली जी।
बठोठ में फौजा जुडगी, करती हर हर बोली जी।
बीड़ हजारी ढरी जाजमां जुडं आया सरदारजी।
कोई के सागे भाला-बरछी, कोई के खड़ग कटारजी।
पांच पान को बीडो बणायो मेल सोने पारात जी।
भरी सभा मे बीडो फेरयो किने नी घाल्यो हात जी।
पीरा पीरा पता खुलया अमल बाँटया कारा जी।
मरण करो तो आपू ले लो, नीतर ले लो टारा जी।
आगरा को किलो तोड़कर कांढा डूंग सी न्हार जी।

लूट छावनी फिरंगी की आग वतां दो झार जी।
आगरा को नाम सूणता नरा ने लई ल्या टारा जी
पीला पीला मूंडा वैग्या, दिन ने दिखग्या तारा जी।
बीडों तो नी लियो ठाकरां, लेवे लोटयो जाट जी
नी चावे म्हारे ग्रांम जागीरां नी चावे म्हारे पाट जी।
नी चावे म्हारे अम्मर पट्टो नी चावे म्हारे नाम जी।
पाघ बंधा देओ अपणे हाथा पूरे पटके राम जी।
बीडों ले गोडा पर धरयो मूछां फेरयो हात जी।
आज रात तो गोठ जीम लो, चल्लण को प्रभात जी।

अर्थात्:-अस्सी कोस का रास्ता सवा प्रहर के अन्दर पार कर दिया। लोटिया जाट आगे बढ रहा था करणियों मीणो उसकी बात बना रहा था जवाहरसिंह के आमने सामने दोनों जवान मिले तो दुआ सलाम किनी धन्य है तुझे जन्म देने वाली जाटणी की जो ऐसे काका को जन्म दिया है। करणा की पीठ थप-थपाई और दोनों को गले लगा लिया। जवाहरसिंह देखकर बोला, आपकी बात कैसी बैनी आप तो किला आगरे गये थे, कहो काका के क्या हाल है जी, कहो काका के हाल चाल वो कैद में कैसे है और वह सिंह कहाँ फँसा हुआ है मेरी राजपूती को धिक्कार है जो मैं घर में आराम कर रहा हूँ लोठ कहता है कि मेरे सरदार बात कहाँ से शुरु करुँ मेरे से कही नहीं जा रही है। कहते-कहते मेरी छाती फट रही है और आँसू आ जाते है। आगरा की मुख्य जेल में ठाकुर साहब कैद है। उसके चारों तरफ किला लगा रखा है। कैद का काम बुरा है। सिंह को रोज के पाव चना मिल जाते है आठ प्रहर के अन्दर जी, यदि दूसरा व्यक्ति उनकी जगह होता तो छीज-छीज कर मर जाता छः महीने की बोली बोली है दिन रह गये है केवल सात, सात दिन रह गये है, उसके बाद में तो बात ही खराब हो जायेगी पूरा ढूंढ़ कर आया हूँ महादेव की सौगन्ध खाता हूँ। यदि डूंगसिंह को छुडाना हो तो चढाई कर दो अन्यथा उनको काले पानी की सजा हो चुकी है सात दिन बाद उनको दूसरी जगह ले जाया जायेगा। यदि आपको शेखावत जी जो भी कुछ करना हो वो सात दिन के भीतर ही कर लो। इतनी बात सुनते ही जवाहर सिंह के तन बदन में आग लग गई। आँखों में अंगारे

निकलने लग गये यानिकि जलने लग गई और काले नाग की तरह फुफ्कारने लग गया। अंग्रेजों को दूर पहुँचा देंगे इनको पहले बाहर निकालना पडेगा। सभी प्रकार की तैयारी कर लो व जल्दी तैयार हो जाओ आगरे की चढ़ाई करनी है। लोटिया जाट कहता है शेखावत जी मेरी बात सुनो, वहां जोर जबरदस्ती से काम नहीं चलेगा उनको तो दिमाग से ही घात लगा कर मारना होगा। गांव-गांव पत्र लिख दो , सभी भाई बन्धु रिश्तेदारों को बुला लो। हर तरह के झुझारू वीर सैनिको की एक सेना बना लो। लिख लिख कागज भाई बन्धुओ को मिलने के लिए बुलाया परन्तु भाई बन्धु तो आये नहीं और यार दोस्त आ गये। मीणा चढ़या, बावरी चढ़या, चढया सब जाट जी गूजर रेबारी सब चढ गये चारों तरफ से ठाठ हो गये। मींगणा का महाराव चढग्या राजकुँवर तम्मन भी साथ हो गया। गायकार भी साथ हो लिए और मेवाती हो लिए साथ हरी सिंह सरदार भी साथ था। बीदावत और लोठसर व पींसागन के ठाकुर भी साथ हो गये , डिग्गी का मेघ सिंह ऊँट लेकर साथ हो गया।

दाँता का दातार सिंह और मेताब सिंह , भोप सिंह , भोपाल सिंह ,उदय सिंह , सरदार , भोपा चारन भाट नाई और तमोली सभी साथ हो गये। बठोठ में फौज जुडगी हर हर महादेव का नाम लेती हुई हजारों की भीड़ इक्कठी हो गई जाजम पर पंचायत जुड़ने लग गई। किसी के हाथ में भाला बरछी किसी के हाथ में तलवार व कटार है , पांच पान का बीडा बनाया और सोने की परात में रखा फिर भरी सभा में बीडा को फिराया किसी ने भी उसके हाथ नहीं लगाया पीला-पीला पत्ता खोले गए , जिसमें से निकाल कर काला अमल बांटा गया। यदि जिसको इस बीडा में शामिल होना अमल को उठा ले यदि शामिल नहीं होना है कोई भी बहाना ले लो। आगरा कैद को तोड़कर डूगसिंह को बाहर निकालना है। फिरंगियो की छावनी को लूट लो और शेष को आग के हवाले कर दो। आगरा का नाम सुनते ही कई पीछे खिसक गये कईयों ने नाड़ हिला दी कई बहाने निकालने लग गये। सभी के पीले पीले मुँह हो गये और आगरा का नाम सुनते ही दिन मे तारे दिखने लग गये। बीडा किसी भी राजपूत ने नहीं उठाया तो लोटिया जाट बीडा उठाता है और कहता है कि मुझे किसी गांव की चाहत नहीं,और नहीं किसी जागीर की चाहत है

नहीं किसी राज्य की चाहत है और नहीं चाहिए मुझे अमर पट्टा और मुंझे नाम की प्रशंसा नहीं चाहिए। पघड़ी बांध दो अपने हाथों से भगवान नैया पार लगायेगा। बीडा को लेकर गोड़ा पर रखा और मूछें पर हाथ फेरने लगा, और कहा आज रात तो गोठ घूघरी खा लो पी लो सुबह जल्दी ही चलेंगे।

XVII–लोठू द्वारा मींढासिंह के दाह संस्कार में परिक्रमा

कम्पनी बाग में मीडासिंह की अर्थी का दाह संस्कार किया गया यहां मीडासिंह सरदार को जला दिया दाह क्रिया बिल्कुल विधिवत की गयी। चन्दन नारियल घी आदि से अग्नि दी गयी। लोटिया जाट ने चिता के चक्कर लगाया। फिर जोर से रो कर कहा, हाय मेरा मींडासिंह सरदार --- चिता का धुआं कम्पनी बाग में रहने वाले गोरे साहब के कमरे में घुसा तो , वह हंटर फटकारता हुआ आया उसके साथ एक सुन्दर कुतिया थी। उसने आते ही हवा में हंटर उछाला और कहा यहां किस गधे ने मुर्दा जलाया है। लोटिया जाट आगे बढ़कर बोला इसे आप मुर्दा कहते है यह हम सबका सरदार है इस बार आपने मुर्दा कहा तो हम तलवार निकाल लेगें खून की नदियां बह जायेंगी। भोपाओं ने गया है:-

बडकै बोले जाट लोटिया सुण तुरकडा बात जी।
मुरदो मुरदो मती करी म्हारे स्णला रो सिरदार जी।
मुड़दा मुड़दा कहवतां स मूंढा पट पड़सी हाथ जी।
मुड़दा मुड़दा कहवतां स कोई रघड मरै दो च्यार जी।
सगें बीन्द रा मामा मरग्या मीडसिंह सरदार जी।
तीन दिन रा करां तीसरा दिन बाहरे रो बाटी जी।
दिन तेरवे सूरज पूज घोडा पर करल्यो काठी जी।
चौवदै दिन रो छुटी लीन्ही भली करे भगवान जी।
हींदू धोके होली दीवाली मुसलमान के ईद जी।
हींदू के आखा तीज ने मुसलमान के बकरीद जी।
दिन तो तीजै ऊगते स ने दिन ताबूता बारजी।

अर्थात्:- गर्व से लोटिया जाट कहता है अरे तुर्क मेरी बात सुन मुर्दा मुर्दा मत करो ये हमारा सभी का सरदार था। यदि मुर्दा मुर्दा कहेगा तो मैं तेरे मुँह पर

दो चार थाप मार दूँगा। यदि मुर्दा-मुर्दा कहेगा तो यहां पर दो चार ठाकुर बलिदान हो जायेगें। यह हमारे बींद के मामाजी हैं जो मृत्यु को प्राप्त हो गये। जो मींढ़ासिंह सरदार है। इनका तीन का तीसरा करेंगे और बारह दिन का बारवां करेगें, तेरह दिन पर झाकी तेरवी करके सूर्य पूजा करके हमारे घोडें पर काठी माँडकर चले जोयेगें। चौदवें दिन यहां कोई नहीं रहेगा यानिकी सभी यहां से छुटटी कर लेगें। आगे भली करे भगवान और हम हमारे घर जाकर होली धोकेंगे और मुसलमान ईद की पूजा करेंगे । हिंदू के आखातीज मनायेगे और मुसलमान बकरीद मनायेगे। जिस प्रकार तीसरे दिन ताबूत बाहर आ जाते है।

XVIII–लोठू को धन का लोभ नहीं था

बड़के बोले जाट लोटिया सुण शेखावत वात जी।
म्हा तो वासी मारवाड रा नी माया सूं काम जी।
म्हां तो वासी मारवाड रा खायो मुलक रो माल जी।
धन रा व्हैला कोपलास माया व्हैला धुड जी।
आज माया छाती डूंगजी दो प्रजा मैं ई बांट।
गरीब तो गुरब नै चौधरी हेलो जल्दी पाड जी।
नौ नौ रूपया गरीबा मोहरा चारण भाट जी।
साधां ने तो चादर कपड़ा भाटां ने सिनपांव जी।
गली-गली मे मोहरां करदी धाडे डूंग सरदार जी।
गरीबा रा घर किया लाठां ने दिया रूलाय जी।
सोने पुतली दी सोने री अमर जुडायो नावं जी।
साठ ऊँट रो माल धाडवी पोखर दियो खिडाय जी।

अर्थात्:- पोखर जी के घाट पर जाकर लोटिया जाट डूंगजी से कहता है कि सुण शेखावत मेरी बात हम तो मारवाड के रहने वाले है हमें धन माया से कोई लेना देना नहीं है। हम मारवाड रहने वालों ने यहां का माल खाया है धन का तो कोयला हो जायेगा और माया माटी में मिल जायेगी। आज तो लूट का धन लेकर आये हैं उसको प्रजा में बाँट दो। डूंगजी ने कहा चौधरी गरीब गुरबा को बुला लो उनमें इस धन को बांट देंगे। यथा शीघ्र बुलाओ । गरीब को नौ नौ रूपये दे दो और मोहर चारण भाटों मे बांट दो। साधु सन्यासी को चादर कपडे दे दो तथा भांटा

को सेरपाव चांदी दे दो धाडेती (डाकू) डूंगसिंह ने गली मोहल्ले मे सोने की मोहर बिखरा दी यानिकि बांट दी। उसी के साथ गरीब ब्राह्मणों को सोने की सोलह पुतली बांटकर अपना नाम अमर कर लिया। जो साठ ऊँट माया का धाड़ा मारकर लाये थे वो सारी की सारी पोखर जी के घाट पर बांट दी।

XIX–लोठू व मुहर्रम

तुरक-तुरक सिधायों ताजियां सोही देखबा दाय जी।
बड़कै बोलै जाट लोटियो सुण शेखावत बात जी।
मिलणो व्है तो चढ़ो धाड़वी चढ़वी अब चढ़वा रो डाव जी।
चढ़णो व्है तो चढ़ो धाड़वी अब चढ़वा रो राव जी।
दन तो तीजे अगतांजी कोई ताबूतां का वार जी।
तुर्क-तुर्क तो गया देखणे, सेर का बाजार जी।
आगरा में छायो मेलो ताबूतां को भारी जी।
बंद बैग्या कोट कचेरी, देखण ने असवारी जी।
बाज्या ढ़ोल, तास्या खुड़वया डाट-पटा का दांव जी।
अग जग जुड़या देखवा जी कोई पड़यो ताजयो गांव जी।
बड़ा लाट की फौजां हगरी, गई देखणे मेलो जी।
हूनो पड़यो किलो आगरो, आयो अवसर हेलो जी।

अर्थात्:-सभी मुसलमान ताजिया देखने के लिए चले गये लोटिया जाट शेखावत से कह रहा है कि तुम मेरी बात सुनो यदि गढ़ में प्रवेश करना है तो सभी धड़ेती एक साथ आक्रमण बोल दो। क्योंकि अब आक्रमण करने का समय आ गया है सभी लोग आज के दिन ताबूत को लेकर बाहर गये है। सभी मुसलमान ताजिया देखने शहर में चले गये हैं। आगरा में ताबूतों का मेला लग गया है जो बहुत बड़ा है। कोट कचहरी ऑफिस सभी बन्द हो गये हैं। सभी लोग ताबूत की असवारी देखने चले गये हैं। उधर ताजियो की सवारी निकली। ढ़ोल बजे, तासे खड़के। फिरंगी चढ़कर ताजियों के साथ गया। अब दाव लग सकता है। जगह-जगह ताजिया देखने वालो के झुण्ड लग रहे थे जिसमें ताजियों के गाँव बन गये थे। बड़े अंग्रेज की फौज भी ताजिया देखने के लिए मेला में गये। किला सूना पड़ा है अब अच्छा अवसर आया है किले पर आक्रमण कर लो।

XX- लोटिया जाट व मीणा ने किले को सीढी लगाई

लोटयै जाट करणियै मीणै माताजी नै ध्यायी।
दोय घड़ी कै मायनै बां नीसरणी रै लगायी।
छटवां छटवां कूद पडया बै लाल किले के मांय।
लैरो लैरां बगै करणियो, आगै लोटियो जाट।
बोले छै तो बोल डूंगजी। देवां बेड़ी काट।

अर्थात्:- लोटिया जाट व करणिया मीणा ने देवी माताजी का ध्यान किया और दो घडी के भीतर चार दीवारी पर सीढी लगा दी फिर चुने हुए वीर लाल किले में कूद पड़े, पीछे-पीछे करणिया चल रहा था आगे लोटिया जाट जा रहा था। इस प्रकार वह डूंगजी वाले बुर्ज के पास पहुँच गये और आवाज दी हे डूंगजी बोलता तो बोल तेरी बेंड़ी काट दे।

XXI-जेल में लोटिया व डूंगजी के द्वारा कैदियों को छुडाना

लोटिया जाट व करणिया दोनों डूगसिंह जी की बुर्ज के पास जाकर बोले, बोल डूंगजी तेरी बेडी काट दूँ। डूंगजी सिंह की तरह दहाड़ा ओर बोला अरे लोटिया। मेरी बेडी काटने से नाम नहीं रखा जायेगा मेरे साथ कैद में सत्तर कैदी है उनकी बेडी पहले काट, किसी की बहन भानजी रो रही है किसी की माँ रो रही है किसी के छोटे बच्चे रो रहे हैं, किसी की स्त्री रो रही है। कैद में बैठ डूंगजी कहता है अरे लोटिया जाट। सुण पहले तो इन कैदियो की बेंडी काट, फिर मेरी काटना, नहीं तो सत्तर कैदी क्या जानेगे ? कहेंगे- सिंह जैसा डूंगजी ऐसे निकल भागा ज्यों चोर निकल भागता हो, बुर्ज को तोड़कर कैदियो को एक साथ बाहर निकाल, हे लोटिया! हम तो दो दिन में मर जायेगे पर दुनिया बात करेगी। लोटिया ने उत्तर दिया यदि फिरंगी को पता लग गया वह वापस लौट आयेगा, हमें तोप के मुंह पर चढा देगा और तुम कैद की कैद में रहोगे। इतनी बात सुंनते ही डूंगजी बड़ी कडवी बात बोल उठा - अरे लोटिया! इस मुंह का धनी होकर (यह मुंह लेकर तू मुझे छुड़ाने आया है। लोटिया ! यदि तू मरने से डरता है , तोपों का भय खाता है , तो तेरी तलवार म्यान में कर ले और वापस घर लौट जा। जब लोटिया ने यह बात सुनी तो उसके तन और मन में आग सी लग गयी। वह छैनी और हथौड़ा लेकर

कडकड़ी खाकर पड़ा (दांत कटकटाकर बेड़ी काटने के काम में लग गया) छैनियां छिन-छिन शब्द करती चलने लगी साथ में हथोडें फटाफट चलने लगे। एक घड़ी में लोटिया और करणिया मीणा ने पुरे साठ कैदियों को निकाल बाहर किया। जब सत्तर कैदियों को बहार निकाल चुका तो डूंगजी के पास गया और बोला - हे रावजी ! अब क्या कहते हो ? तुम्हारी इच्छा पूरी हो गयी या नहीं ? फिर लोटिया ने पिंजरा तोड़ा ओर करणिया ने बेडी काटी और कैदियो के उस मित्र को हाथ पकड़कर बुर्ज के बाहर कर दिया।

XXII–लोठू जाट का ठकुरानी द्वारा स्वागत

कई दिनां का बिछड़या म्हे तो जावा बठोठ के मांय।
राणी ऊबी काग उड़ावै परजा जोये बाट।
बठोठ पूंच्या डूंगजी बै दल वा दल ले साथ।
राणी महलां उतरी स बा भर मोत्या को थाल।
आघा पधारो सायबा थाने मोल्या लेवू बधाय।
म्हाने मता बधावो राणी बधावो लोटयो जाट।
म्हे आपै नहि आया म्हानै ल्यायो लोटियो जाट।

अर्थात् :- डूंगजी ने कहा तुम बहुत दिनों के बिछड़े हो। बठोठ के गढ में जाते है, रानी खड़ी कौवे उड़ाती है। और प्रजा बाट जोह रही है मेहमानी खाने को नहीं ठहर सकते डूंगजी दल बल सहित बठोठ पहुँचे रानी बधाने के लिये मोतियो का थाल भरकर गढ से उतरी और बोली हे स्वामी आगे बढो मै मोतियों से बधालू। डूंगजी ने कहा हे रानी हमे मत बधाओ लोटियो जाट को बधावो, हम अपने आप नहीं आये, हमे लोटिया जाट लाया है।

XXIII–लोठू को पकड़ने के लिए टीम गठित करना

लोठू जाट व उसके साथियो को पकडने के लिए टीम गठित करना लोठू जाट व उसके साथियों को जनता का समर्थन प्राप्त था। लोग उन्हैं स्वतंत्रता सेनानी कहने लग गये थे। वे शेरों की तरह मांद में रहते थे। उन्हें पकड़ना बहुत ही कठीन काम है। सदर लैंड के बुलावे पर मेजर फोरेस्टर जो शेखावाटी ब्रिगेड के प्रमुख थे कैप्टन शांक के साथ सेनाएं लेकर आ गये। लोठू जाट ,डूंगसिंह ,जवाहर सिंह , सांवता राम मीणा , करणा राम मीणा और

उनके साथी भी अंग्रजी सेना से लोहा लेने को तैयार थे। राजद्रोही के नाम से पुकारे जाने वाले देशभक्त अपनी सारी शक्ति के साथ लडंने को तैयार हो गये। लोठू जाट व सेनानियों का जनता तहदिल से सहयोग करती थी।

XXIV–लोठू जाट देश के लिए शहीद

लोठू जाट वीर बहादुर पुरुष था। गुलामी का नाम उसकी जुबान को अच्छा नहीं लगता था। अंग्रेजों की कूटनीति वह समझ चुका था फूट डालो राज करो "सांप भी मर जावे और लाठी भी ना टूटे " इस तरह की स्थिति फिरंगियो ने भारत में कर रखी थी जो राजपूताना में पुरी फैल चुकी थी। डूंगरसिंह को जोधपुर जवाहरसिंह को बीकानेर के किले में कैद कर लिया जबकि लोठूसिंह किसी के कब्जे में नहीं आया। अंग्रेजों ने पाटोदा से बठोठ जाते वक्त रास्ते में धोखे से लोठू को बन्दूक से 17 फरवरी 1855 को मार डाला। जहां लोठू की देह पड़ी वहां आज भी उस भौम पर लोग सर नवाते है।

22– बालूराम नाई (बाल्या)

बालू राम नाई राजपूत घराने का मुख्य नाई था। उसका सीधा सम्बध डूंगजी जवाहर जी के परिवार से था वो प्रत्येक कार्य में बालू राम नाई को आगे रखते थे चाहे खुशी हो चाहिए गम हो हर जगह बालू नाई साथ रहता था। बठोठ राजघराने में इसका आना जाना इनके पूर्वजो से जो वंशानुगत चला आ रहा था। जहां कोई भी विशेष काम होता था वहां बालू राम को साथ रखते थे। धीरे धीरे बालू राम धाडा (डाका) डालने में साथ रहने लग गया जिससे उसका दिल खुल गया और वह मरने-मारने से भी नहीं डरने लगा। उसकी आदत साहसी प्रवृति की होने लग गयी। राज कार्य की विशेष मिटिंगो का आयोजन करना, किसी व्यक्ति को बुला कर लाना, निमन्त्रण देना आदि कार्य बालू राम नाई के द्वारा करवाये जाते थे।सीकर जिले के बठोठ गांव जो सीकर से सालासर रोड़ के मुख्य मार्ग से फागल्वा से 15 किमी. उत्तर दिशा मे स्थित है। बालू राम नाई का जन्म नाई परिवार में बड़े बुजुर्गो के अनुसार 1800-1805 के आस पास हुआ बताया जाता है। उनके किस्से लोगों की जुबान से सुनकर मन में एक अजीब सी धड़कन महसूस होती है कि इस तरह का वीर था। तत्कालीन शासक डूंगजी, जवाहर जी ने अपने राजकार्य

के कार्य हेतू राजकीय सेवक रुप में बालू राम नाई को रख रखा था। बालू राम नाई अपने आप को राजकार्य हेतु, नियुक्त पाकर बहुत ही खुश था। उसको जो भी कार्य दिया जाता था उसको वह पूर्ण ईमानदारी के साथ करता था। बालू राम नाई डूंगजी जवाहर जी के अन्तिम दिनों तक साथ रहा और प्रत्येक समय में काम के लिए हाजिर रहता था। जवाहर जी ने बालू राम नाई को सभी सगे संबंधियों व जानकारो के यहां भेजा और सभी के लिए निवेदन किया गया कि डूंगजी को आगरा की जेल से छुड़ाना है यह समाचार चारों ओर के योद्धाओ को पहुँचाया गया देखते-देखते बठोठ में बड़ें ही गुप्त ढंग से शेखावत बीदावत तंवर-पंवार मेड़तिया नरुका चौहान और तो और चंद गुंसांई साधु और दादू पंथी सब जमा हो गये थे। उन दिनों में साधु भी फिरंगियो के विरुद्ध एक आन्दोलन चला रहे थे। रात के समय एक बैठक आयोजित की गई। बैठक एक तहखाने में हुई और बडे ही गुप्त ढ़ंग से हुई इस बात का ध्यान रखा गया की किसी को कानों कान खबर ना हो इस बात का ध्यान रखने के लिए बालू राम नाई को सख्त पाबन्द किया गया था।

गुप्त बैठक में यह तय हुआ कि सारे दल को एक बारात के रुप में जाना चाहिए। उसमें एक वीर दूल्हा बने। तेज भागने वाले ऊँट और घोड़े लिए जाए साथ में लोटिया व करणिया मीणा ने किले में से डूंगजी को निकालने के लिए मजबूत छैनी-हथोड़ियां भी ली। उसने सबको बता दिया की हथकडिया व बेड़िया कितनी मजबूत है। इसके लिए दो होशियार लौहार भी लिए गये। मींढा की अर्थी बनाई गयी। छोटे-मोटे सभी बारातियों का बाल्या नाई द्वारा मुण्डन किया गया। बारात को रोक कर चंद लोग रोने लगे, हाय मीडसिंह सरदार, अर्थी के आगे आग की कुलड़ी लेकर बालू राम नाई चल रहा था व सत्यराम, सत बोल्या गत है का उच्चारण कर रहा था। मृत लाश का दाह संस्कार कम्पनी बाग में किया जाना था। जिसके पूरे क्रिया कर्म बालूराम नाई को कराने थे और इसी के साथ बालू नाई मुर्दा के प्रति (बार घालतो) रोता हुआ भी चल रहा था जिसके लिए भोपाओं ने गाया है।

आगै आगै मुड़दो चालै, लैरा जान बारात।
सबसे आगे बाल्यो नाई बार घालतो जाये।

अर्थात् :- मुर्दे को आगे करके पीछे से बारात बनी हुई थी वह अब दाह संस्कार का भेष धारण करके मुर्दा के पीछे चल रही थी। मुर्दे के आगे बाल्या नाई रोता पीटता चल रहा था।

खाल बाल तो बार उड़ादी मुड़दा लिया बणाय जी।
आडी टेडी लकड़ी धर नै दीवी समेती जोड़ जी।
आबर-बाबर भदर कराय लिया सोग त नांव जी।
च्यार जणां रै कांधे धरिया संख बोलता इ जाए।

अर्थात् :- मुर्दा की खाल व बाल यानिकी चर्म व केश सभी मुण्डन बालू राम ने किया और मुर्दा बना दिया तथा आडी तिरछी चार लकड़ी धर कर अर्थी बना दी सन्आथी बनकर तैयार हो गई, सभी दाह संस्कार में जाने वालों का मुण्डन किया सभी शोकग्रस्त हो गये, व सत्यराम का नाम, नाम लेना शुरु कर दिया तथा चार जनों को कांधिया बनाकर अर्थी को रवाना किया और एक व्यक्ति शंख बजाता हुआ एक व्यक्ति झालर बजाता हुआ चल रहा था। कम्पनी बाग में पहुँचकर उन्होंने अर्थी उतार कर रख दी। फिर चन्दन की चित्ता बनाई और नारियलों के साथ दाह संस्कार कर दिया। लोटिया जाट ने चारों ओर फेरी लगाकर आग लगा दी। बालूराम नाई पहले से अपना सामान पेटी, पाछ्ना कटिंग, दाढ़ी आदि का समान साथ लेकर चला था जो इस योजना के अन्तिम रुप देने में काम आये। जब जेल में लड़ाई की नोबत आई तब बालूराम नाई ने भी अपनी वीरता दिखाई जिसके लिए भोपो ने गाया है।

बाल्यौ नाई भाठा मारै चाकर चरवादार।
भलां भलां का टूक उडावै लडै डूंगजी न्हार।।

अर्थात्:- बालूराम को जहां मौका मिला वहीं से पत्थरों की मार-मार अंग्रेज फौज के छ्क्के छुडा दिये। उधर डूंगजी अच्छे-अच्छे पहरेदारों के टुकडे कर रहा था। अन्त में यह वीर स्वतंत्रता सेनानी बीकानेर के राजा रत्न सिंह के युद्ध के समय वीर गति को प्राप्त हो गये।

23. सुरजा राम बलाई

सीकर जिले के बठोठ गाँव के वीर सपूत के किस्से कहानी बड़े बुजुर्गो के श्री मुख से आज भी सुनने को मिलते है। उनके किस्से सुनकर

मन में अजीब लालसा पैदा होती है और मन ही मन शेखावाटी धरती को नमन करने को जी करता कि इस धरती माता में ऐसे वीर सपूत पैदा हुए। बुजुर्गो के अनुसार सन 1800 से 1804 के मध्य राजस्थान राज्य के सीकर जिले के बठोठ गांव में शुद्रवर्ण की बलाई जाति में एक बालक का जन्म हुआ। जिसको सुरजाराम के नाम से जाना गया। शुद्रवर्ण पर प्राचीन काल से ही अत्याचार होते आए है। बालक सुरजाराम बचपन से ही निडर, साहसी, वाचाल, बहादुर था। वह कमजोर वर्ग पर अत्याचारों के खिलाफ आवाज बुलंद करने लगा। उसकी निडरता एवं साहस को देखकर तत्कालीन शासक डूंगजी, जवाहरजी ने सुरजाराम को राजकार्य हेतु अपनी कार्यकारणी में ले लिया और राजबलाई के नाम से पद सृजित कर लिया। शासक डूंगजी जवाहरजी ने राजबलाई के कार्य निर्धारित किये जैसे फसल का बंटवारा करवाना, लगान वसूल कर राजकोष तक पहुँचाना, मजदूरों से विभिन्न कार्य करवाना तथा उनकी मजदूरी का भुगतान करना आदि। सुरजाराम राजकार्य प्राप्त कर बहुत खुश था।

वह अपने कार्यों को ईमानदारी पूर्वक पूरा करता था। सुरजा राम की कार्य शैली व वाकपटुता में ही सभी कार्यो को स्वतः ही गति मिल जाती थी। सुरजाराम लम्बा और बलिष्ठ, भीमकाय शरीर का था उसकी निडरता अदम्य साहस देखकर डूंगजी उसको धाडा (डाका) डालने में भी आगे साथ रखता था। एक बार उसने डूंगजी को कहा हम कब तक इन फिरंगियों से लुका छिपी करते रहेगें आपके राजपूत राजा इनकी शरण में है इनको पनाह देते व ये गरीब जनता पर जुल्म ढाते है। यहां के राजाओं को केवल अपने राजमहलों की चिन्ता है। धनवानों को अपने धन की चिन्ता है और देश की चिन्ता का भार देश के उन गरीबों पर है जो दरिद्रता के कारण रहने के लिए ठीक सी झोपडी तक नहीं बना पाते। गोबर और मिटी की कच्ची भींत को हाथ के सहारे खड़ी रखने की चेष्टा रखते है। आंधी और मेह में उजडी झोपडियों पर थोडा सा घास डालकर जो देश को बचाने की चिन्ता में संलग्न है उनकी इन टूटी बिखरी झोपडियों पर राजाओं के गढ़, कंगूरे और उनके राजमहल सभी एक साथ न्यौछावर है। इस तरह के तर्कों व अपनी व्यंग्य भरी

वाणी से डूंगजी को उत्साहित करता था। डूंगजी के प्रत्येक काम में साथ रहता था। आगरा जेल से छुडाने में सुरजाराम बलाई ने अपनी अहम भूमिका निभाई थी। अन्त मे गिरदाव्ड़ा गाँव के पास आपसी मुठ भेड में वीर गति को प्राप्त हुए।

24–रावराजा प्रतापसिंह सीकर

जयपुर राज्य की सन 1818 ई. में अंग्रजों के साथ संधि हुई यह संधि शेखावाटी के स्वामियों को पसंद नहीं थी। राव हनुवंत सिंह शाहपुरा, रावराजा लक्ष्मणसिंह सीकर और ठाकुर श्यामसिंह बिसाऊ आदि शेखावत जयपुर अंग्रेज संधि के विरुद थे। फलतः शेखावाटी प्रदेश के रावजी के लाडखानी और सल्हदी सिहोस शेखावतों ने अपनी शक्ति सामर्थ्यानुसार अंग्रेज शासित भूभागो में धाड़े मारकर अराजकता की स्थिति उत्पन्न की संवत 1890 वि. (सन 1833) में रावराजा लक्ष्मणसिंह का देहान्त हो गया और उनके पुत्र रावराजा रामप्रताप सिंह सीकर की गद्दी पर बैठे। राव राजा प्रताप सिंह तत्पर, स्वधर्म और कर्त्यव्यनिष्ठ थे उन्होंने रींगस निवासी पं. श्री रामजी से कौमुदी पढ़कर धर्म शास्त्र का ज्ञान सम्पादन करने के लिए स्मृतियों की कथा श्रवण की थी।

पण्डित का वे गुरुवत्त आदर करते थे। लक्ष्मणगढ़ के सेठ पूरनमल जी, प्रेम सुखदास जी की वैष्णवता की उस समय प्रसिद्धि हो चुकी थी, उक्त सेठों ने श्रीमान राव राजाजी को भी शंख चक्रांकित कर वैष्णव बनाने का प्रयत्न किया। रींगस के पण्डित श्रीरामजी ने इसके विरुद्ध समृति वचनों को बटोरकर रावराजा जी की आस्था को जमने नहीं दिया। रावराजा जी ने सेठों को मीठा उत्तर दे दिया कि सभी धर्म हमारे लिए आदरणीय है। इसके बहुत समय बाद राव राजा जी पुष्कर तीर्थ स्नानार्थ पधारे। लक्ष्मणगढ के उक्त वैष्णव सेठ तथा रींगस के पण्डित श्रीराम जी का भी संयोगवश जाना बन गया। सेठ ने दक्षिणा का प्रलोभन दिया और पण्डित जी ने प्रसन्न होकर वैष्णवावतार की दीक्षा ग्रहण कर ली सीकर नरेश के समीप उपस्थित होने पर पण्डित जी के शंख चक्रांकित बाहु को देखकर उन्होंने नेत्र मूंद लिए और पण्डित जी का प्रवेश निषेध कर दिया। वैष्णवता का निरादार करने के लिये

उन्होंने ऐसा नहीं किया था। किन्तु पण्डित जी की दक्षिणा प्रिय प्रकृति के प्रतिवाद में अपने सिद्धान्त की दृढता दिखाना ही उनका अभिप्राय था। जिन्हें प्रातः स्मरणीय पण्डित मंगलदत्त जी ने शेखावाटी में संस्कारों का प्रचार कर शुद्रत्व को पहुँचे हुए द्विजों को पुनः द्विजधर्म की दीक्षा दी, असंस्कृतों को वेदमाता गायत्री का उपदेश देकर संस्कृत किया उन्हे लक्ष्मणगढ़ निवासी प० रामरतन जी बडी भक्ति के साथ शेखावाटी लाये थे। शेखावाटी के शिरोमणी सेठ गुरु सहाय मलजी पोद्दार ने उनका "घर आये गोविन्द" समझ कर बडा आदर किया। उससे पहले पोद्दार वंश दादू पन्थ पर ही विश्वास रखता था और "दादूराम" ही उसका मूल मन्त्र था। प० मगलदत्त जी ने वेदिक धर्म का मर्म समझाकर उन्हें उनके पूर्वजों के आचार धर्म पर आरुढ किया तदनन्तर देखा देखी सब के घरों में संस्कारों के प्रचार और विद्वानों की पूजा की पद्धति प्रचलित हुई। ऋषिकल्प प० मंगलदत्त जी की महिमा सुनकर रावराजा राम प्रताप सिंह भी दर्शनोत्सक हुए थे। आपके लक्ष्मणगढ पधारने के अवसर पर पण्डित जी भी वही विराजित थे। जिस समय सेठों से घिरे हुए पण्डित जी धर्मशाला में बैठे थे।

उसी समय सीकर नरेश रावराजा रामप्रताप सिंह जी स्वयं उपस्थित हुए उनके लिए आसन बिछा दिया गया। किन्तु अभिमान शून्य रावराजा जी ने अपनी तलवार की नोक से आसन को अलग हटा दिया और सबके साथ समान भाव से प्रणाम कर पण्डित जी के समक्ष विराज गये। रात्रि में बड़ी देर तक शास्त्र चर्चा होती रही। पण्डित जी के मार्मिक उपदेश का रावराजाजी पर पूर्ण प्रभाव पड़ा। पण्डित जी के साथ सैकड़ों अध्ययनशील छात्रों का समुदाय रहता था। वे इस कलिकाल में प्राचीन भारत के कुलपति जीवन की झलक दिखला गये है। रावराजाजी ने उनके स्वरुप को समझा ओर साथ ही अपने कर्तव्य को भी। विद्यादान की श्रेष्ठता को वे ह्रदयंग कर चुके थे। उन्होंने देश काल और पात्र का विचार कर पण्डित मंगलदत्त जी की उस भ्रमणशील पाठशाला की सहायता के लिए दस रुपये दैनिक नियत कर दिये और यह सहायता रावराजा जी के देहावसान के बाद सीकर राज्य से मिलनी बन्द हुई। रावराजा जी ने मद्य और मांस का कभी सेवन नहीं किया और

भोजन में शुद्धि का सदैव विचार रखा। भगवत सेवा से उन्हें विशेष प्रेम था। उनके चरित्र की उत्कृष्टता अभिनन्दनीय है। श्रीयुत रामचन्द्रजी कायस्थ को उन्होंने अपना विश्वस्त मंत्री बनाकर "बैखशी" की उपाधि से विभूषित किया था। अपने मित्र कर्नल सदर लेण्ड से मिलने के लिए सम्वत 1903 (सन्1846) में वे अलवर पधारे थे। अलवर के तत्सामयिक नरेश महाराव राजा विनयसिंह जी बहादुर ने आपका बडा सम्मान किया था। अपने खवा-सवाल भाइयों के परितोष के लिए उन्होंने पांच हजार रुपयें और रामबक्स के लिए साढे बारह सौ रूपये वार्षिक आय की जागीर भी निकाल दी थी। किन्तु वे लोग शान्ति से जीवन व्यतीत करने की प्रकृति नहीं रखते थे। जयपुर के पोलिटिकल एजेन्ट मेजर लडलो ने स्वयं रावराजाजी के साथ सिंहरावट और बठोठ आदि का परिदर्शन किया था। इसके बाद भी खवासवालों का तथा बठोठ के सरदारों का सीकर के विरूद उपद्रव जारी रहा। सवंत 1904 (सन्1847) में रावराजा रामप्रतापसिंह एजेन्ट टू दी गर्वनर जनरल कर्नल सदर लेण्ड के साथ बीकानेर पधारे थे।

I– रावराजा प्रताप सिंह डूंगजी के सच्चे सहयोगी

एक बार डूंगजी ने अपने दल के साथ सेठों का सारा अनाज व धन लूट लिया सेठों ने दुखी होकर तुरन्त ही यह खबर अजमेर भेजी कि डूंगजी व उसके साथियों ने सारा अनाज व धन लूट लिया है। अपनी रसद के लूट लिए जाने को अंग्रेज सरकार ने बडा अपमान समझा। अधिकारी ने तुरन्त ही सेना को एकत्रित किया। अपने सेनापति को हुक्म दिया की वह किसी भी तरह डूंगजी व उसके साथियों को पकड़कर लाये। सेना तूफानी गति से रवाना हुई। वह रातों रात सीकर पहुँची। सीकर पर तब राजा प्रतापसिंह का राज्य था। वह भी एक वीर योद्धा था। डूंगजी के अंग्रेज विरोधी अभियान का वह एक गुप्त समर्थक था। सेना ने सीकर के राजा पर दबाव डाला। सेनापति ने प्रताप सिंह से कहा "आप अंग्रेज सरकार के आदमी है आपको चाहिए कि आप डूंगजी जैसे डाकू-लूटेरों को पकड़वायें ताकि सेठ साहूकारों एवं अंग्रेजों को आराम मिले। आप तो जानते ही हैं कि डाकू लूटेरों को पनाह देना एक जुर्म हैं। प्रताप सिंह ने साफ-साफ कहा मैं डूंगजी को नहीं पकड़ सकता। इससे मेरी सारे

राज्यों व ठिकानों में इज्जत चली जायेगी। लोग मेरे हिन्दू होने पर थूकेंगे। सेनापति जी! आप जिसे डाकू और लूटेरा कहते है, उसे लोग देशप्रेमी और स्वतंत्रता का सेनानी कहते है। क्या खजाना लूटने वाला देशप्रेमी होता है सेनापति ने गंभीर होकर कहा! प्रतापसिंह ने साहस बटोरा और बड़े ही स्नेह से कहा आप इस देश के रहने वाले हैं। आपके शरीर में राजपूताना की मिटटी का कण-कण समाया हुआ है। आप जरा सोचिए..... ठंडे दिमाग से सोचिए कि जो लोग हमारे देश को लूट रहे हैं, क्या वे डाकू नहीं है ? सही बात तो यह है कि हमें इन विद्रोहियों की मदद करनी चाहिए। यही हमारा धर्म है। सेनापति को सच्ची बात का असर हुआ। वह भी उदास हो गया। उसने काफी सोचकर कहा ठाकुर साहब! मैं भी विवश हूँ आपकी बात का मुझ पर असर हुआ है जिससे मैं आप पर दवाब नहीं डालूंगा। हमारी सेना के पागी (पदचिन्हों से पीछा करने वाला) ने बताया है डूंगजी वहाँ झड़वासा की ओर गये है। वहाँ उनकी ससुराल है। हम चेष्टा करेंगे कि उन्हें वहां पर धर दबोच ले। प्रतापसिंह उदासी से मुस्कराया। वह गर्व से बोला, शेर को पकड़ना बडा ही कठिन है। उसकी मांद में घुसना दिलेरों का काम है। अपना-अपना कर्त्तव्य है यह!

II–प्रताप सिंह के पास अंग्रेजी फौज का आगमन

अंग्रेजों नै खबर पड़ी जद चढ़गी फौजा च्यार।
रात रात की करी मजल बै पूंची सीकर मांय।
सीकर रा प्रताप सिंह म्हानै डूंग न्हार पकडाय।
म्हारो लागै भाई भतीजो, पकड़ायो ना जाय।
झडवासै मैं बैठो डूंगजी माल गोठ को खाय।

अर्थात् :- अंग्रेजों को खबर पड़ी जब चार फौजे चढ़कर चली रात-रात चलकर वे सीकर में पहुँची और सीकर के ठाकुर से कहा हे सीकर के प्रतापसिंह! डूंगसिंह को हमें पकडवा दें! ठाकुर ने कहा वह हमारा भाई-भतीजा लगता है, पकड़वाया नहीं जा सकता, वह झड़वासे में बैठा गोठ का माल खा रहा है।

25–भोपाल सिंह (मीडा सिंह)

डूंगजी को आगरे के किले की जेल से छुड़ाने के लिए बठोठ से रवानगी के वक्त भोपालसिंह को दुल्हा बनाया गया। उसे ऐसे सजाया मानो वह सचमुच का दूल्हा हो। हाथ पग में डोरा, सिर पर सोने का मोड़, कानों में सोने की मुरकियां, गले में हार, लाल रंग के कपड़ें। सारे बाराती सज धजकर रवाना हो गये। रवाना होने से पहले माँ चामुण्डा देवी की पूजा की गई। विक्रम सं. 1903 सन् 1846 को ठाकुर जवाहरसिंह, ठा. बख्तावर सिंह, श्यामसिंह होत श्यामगढ़ शेखावाटी, ठाकुर खुमानसिंह, बीदावत लोढसर, मलसीर का कानसिंह, उजीणसिंह मीगणा, जोरसिंह खारिया- बैरी शाल सिंह, हरिसिंह प्रभृति, बिदावत योद्धा तथा लोटिया जाट, साँवता मीणा, करणिया मीणा, बालू नाई, सुरजा बलाई, बरड़वा के लाडखानी शेखावतों आदि कोई पांच सौ वीरों ने बारात का बहाना बना कर आगरा की ओर प्रस्थान किया।

-: **बीन्द के लिए भोपों ने गाया है**:-

एक टका की हल्दी ले लो कण ने बींद बणालो जी।
मीणा ने मेरासी करदो जान बणाकर चालो जी।
झूठा बांधो कांकड़ डोलडा सिर सोना की मोड़ जी
बाकी तो बाराती बण जाओ, बींद करो कन्नोड़ जी।
जोधपुर की जान चढी रूवां परणी जण जाय जी।
जोधपुर की जान चढ़ी जो बूझे केता जाए जी।
झूठी बणावा जान झूठो सब सिणगार जी।
अस्सी मोर की रंडी ल्यावां लेयां जान सी लार ली।
आंग सांग दुल्हा को कीदो, कन्नौडे सरदार जी।
मोड बंधायो मोत्या वाळो तुर्रो कलंगीदार जी।
लाल पगडी रातो बागो, लाल किनारी जोड़ो जी।
हाथ कडूल्या सिरै मरोडी, जच्यो गला को डोरो जी।
हाथ पगां में कांकड़ डोरा, लंगड बेड़ी घाली जी।
पावां में मोचडियाँ पैरी नई चमकण वाली जी।
आँख्या मे तो काजल आंज्यौ भाल कढाई कोर जी।

हाथ पगां माई मेहंदी दीदी होठ करया रंगचोर जी।
झूठ मूट को बींद बणायो , झूठी करली जान जी।
झूठी तो सब सगा सगाई, झूठी ढोलक झांज जी।
शस्तर अस्तर लिया मोकला , पेट्या को सामान जी।
डूंग न्हार ने चल्या छुड़ावा राम राखजे मान जी।
रात रात का चले जनैती दन ऊग्यां थम जाय जी।
खूब उड़ावे गोठ घूघरी ढोल झाम घमकाय जी।
तबला बाजे बांसुरी ने, भगतण नाचे गाय जी।
रात दना को करयो मामलो चल्या आगरे जाय जी।
आगरा तो तीन कोस पर रेवड़ चरतो जाय जी।
आगरा का खर्रा दर्रा में सब नै लियो ढ़बाय जी।
बढके बोल्यो जाट लोठयो, सुण शेखावत बात जी।
खेल मस्करी बात कोइनी अंग्रेजा पर घात जी।
गुजर ने तो राजी कर ला मींडो लेलां मोल जी।
आगे की तो फेर बताडां पेला कर लो कोल जी।
जुवार सिंह सोची ने बोल्या सुण लो लोठया जाट जी।
एक की तो कांई बात भायला बीस मींडा लो काट जी।
जोरी जबरी करनी कोडनी, सुण लो म्हारो कोल जी।
श्योजी राम गुजर को बेटो, मींडो लाजो मोल जी।
वो जो मांगे पांच रिप्या थे दे दीजो बीस जी।
पांच रीप्या मोल भाव का पंद्रा की बख्सीस जी।
हरीराम गूजर युं बोल्यो, को बारात्यां बात जी।
कसा गाम की जान आपकी कसा दूध की जात जी।
जोधपुर की जान गूजरां रूवां परणी जण जाय जी।
हरीराम गूजर ने करणियो मीणो खरी खरी समझाय जी।
झूठी दीखे जान बींद जी, झूठा दीखे खास जी।
झूठी तो चढणी बतलाई, झूठ बताओ वास जी।
थाने जाणो मीणा करणिया डूंगसिंह का लार जी।

डूंगसिंह के कारणे लस्कर करयो त्यार जी।
मींडा को कांई माजनो जी कोई पेट दुख मर जावे जी।
भला लोग को मीलणो जी कोई भला भाग तो पावे जी।
म्हारा मोटा भाग के थाने मींडो मांग्यो आन जी।
मीडां ले जाओ भला मीणाजी जीमण करलो जान जी।
थांके चावे एक मींडा को, थे लै जावो चार जी।
अंग्रेजां की किला छावनी रीजो घण हुस्यार जी।
अतरी बातां सुणतां हंस ने बोल्यो मीणो जी।
भलो मल्यो रे हरिराम तू सेर गोयटे वाट जी।
हेरो ल्याओ तुं किला छावणी, थन्ने खातरी देवां जी।
ओट कोट को भेद ले आयो थन्ने साँची केवां जी।
तू हंडारी डूंगसिंह को जाणू थन्ने वीर जी।
आता वेरां थने मला देऊ मन माई राखो धीर जी।
हुक्म करो तो मूं बी चालू चंढू जान के लार जी।
म्हारो मालक पड़यो कैद माई डूंगसिंह सरदार जी।
बूढो थूं वैग्यो रे भाया , नी वेवे तरवारां जी।
थारा मालक जी मलवा देऊँ थने आवती वार जी।
एक कराडी वार हतकड़ी बटवा करू हजार जी।
एक वार में अस्सी काटूं जद धोरां करतार जी।
रेवड़ तो ताड़ी दी घर ने चढ़यो जान का लार जी।
गया चरावा की कराड़ी मेल खांद के बार जी।
पकड़ टांगड़ी मीडो लेग्या, बीच जान के माय जी।
दे मुक्का की मींडो मारयो, मुरदो लियो बणाय जी।
खाल बाल तो बार उड़ाया टांगा धरी मरोड़ जी।
आड़ी टेड़ी खीपटयां कीली सामेती जोड़ जी।
चार आठ घोड़ा का चाकर भद्धर लिया कराय जी।
चार जणा के कांधे धरयो संख बोलता जाय जी।
डूंगसिंह को बाल्यो नाई, मेल ऊँची ब्हार जी।

रोता जाय कल्पता जाय, मन में घणा हुस्यार जी।
कम्मर को तो खोल दुसालो कफन दियो ओडाय जी।
आगरा की अली-गली में घी मोलातां जाय जी।
आगे आगे मुरदो चाले लारां चाले बाराती जी।
लोटयो जाट सांवत्यो मीणो दोनों ई कूटे छाती जी।
वणी मीडां ने जाय उतारयो कबरां का अद भौमजी।
नारेलां की रथी चुणी नै नौ मण घी को होम जी।
अंगेजां का नजर बाग को चन्नण दियो कटाई जी।
अगर चंदण की चिता जुडाई लोठये लाह लगाई जी।
मींडा थारो भाग चेतग्यो नो मण घी में न्हाय जी।
नौ मण घी की चढी लीपंटा गरद पलटा खाय जी।
दूर दूर ताई गंध फेलगी, जाणै फूल्यो बाग जी
अगर चंदण मांई घी के साथै मींड सीघ को दाग जी।

अर्थात्:- एक रूपये की हल्दी ले आओ किसी भी जनेती को बीन्द बना लो। मीणाओं को चौकीदार लगा दो जान (बारात) बनाकर चलो। बीन्द के झूठ-मूठ का कांकड डोरडा बांध दो और सिर पर सोने का सेवरा बांध दो। एक तो बीन्द बना लो शेष बाराती बन जाओ कोई पूछे तो बताओ जोधपुर की तो जान है और रूवा परणीजण हेतू जा रही है। यदि कोई पूछे तो इस तरह बता देना जी, झूठी बनायी बारात झूठा सजाया पूरा सिणगार जी, अस्सी मोहर में नाचने वाली रंडी (औरत) लाओ जो जान के साथ-साथ नाचती चले। दूल्हे को पूरे सिणगार के साथ सजा दो जैसे किले के सरदार की तरह लगे। सेवरा मोतियों का बन्धवा दो और कंलगीदार तुरंगी वाला पहना दो और बंधवा दो, लाल रंग की पगड़ी बांधो, जिसके साथ लाल किनारी का धोती जोड़ा हो, हाथ में कंगन सिर पर मरोडीदार साफा और गर्दन में डोरा लगा दो, हाथ पेरों में कांकड़ डोरा व पैरो में लगड़ डोरा बांध दो। पेरों में मोचड़ियां (जूती) पहना दो जो चमकने वाली हो और आँखो में काजल डाल दो, जिसकी कढ़ाई हिरण की सी आँखों की तरह हो, हाथ-पैरो मैं मेहन्दी लगा दो और होठों को रंग दो। झूठ-मूठ का बीन्द बना लो तथा झूठी जान बना लो। अस्त्र-शस्त्र हथियार

बहुत सारे ले लो। जिनको बक्सों में डालकर बारात का सामान मानकर चलो। इस तरह डूंगसिंह शेर को छुडाने चले हमारी इज्जत राम रखना ऐसा कहकर चल दो। रात-रात को बारात चलनी चाहिए और दिन ऊगते ही रूकनी चाहिए। रास्ते में गोठ घूघरी उड़ाते चलो और ढोल मंजीरे बजाते चलो, तबला बांसुरी बजाते रंडिया नचाते चलो। आगरा के तीन कोस पर एक रेवड़ चरता हुआ जा रहा था। आगरा का खाल्डा में इस दल (बारात) को रोक लिया गया। लोटिया जाट ऊँचा होकर कहता है शेखावत जी बात सुनो, अंग्रेजों पर आक्रमण करना मामूली बात नहीं है। रेवड़ वाले गूजर को राजी करके एक मींडा मोल ले आओ, आगे की कहानी तो फिर बताऊँगा पहले तो मींडा मोल लेकर आओ जवाहर सिंह सोचकर बोला पहले यह काम करो फिर सोचेगें। एक मींडे की क्या बात बीस मींडे काट लो, जोर जबर्दस्ती नहीं करनी, यह हमारे वचन है।

श्योजी राम गूजर से मींडा मोल लाओ, यदि वह पांच रूपये मांगे तो आप बीस रूपये देना। पांच रूपये मोल का दिया और पन्द्रह रूपये बख्शीश देना, हरिराम गूजर बोला कहो बाराती क्या बात है आपकी बारात कौनसे गांव की है और कोनसी जात की है, जोधपुर की बारात है और रूवां परणीजण जा रही है। हरिराम गुर्जर को करणिया मीणा सही सही बता रहा है। यह बारात भी झूठी नजर आ रही है और झूठा ही बीन्द नजर आ रहा है। झूठी तो चढाई करी और करिया निवास जी, करणा मीणा आपको जानता हूँ। आप डूंगसिंह के साथी हो डूंगसिंह को छुड़ाने के लिए आप ये लाव लस्कर तैयार करके लाये हो, मींडा का क्या मांगना यदि कोई मीडा पेट दुख के भी मर सकता है। भले लोगों का मिलना पिछले जन्मों के कर्मो से है जो आप से मिलना हुआ। मेरा भाग्य अच्छा है आप मेरे से मींडा मांग रहे हो, मीणा जी आप मींडा ले जाओ और बारात के लिए जीमणा तैयार कर लो। आपको एक मींडा चाहिए आप दो चार ले जाओ, अंग्रेजों की किला छावनी से आप सचेत रहना, इतनी बात सुनते ही मीणा हँसकर बोला, भल्लो मिल्यो हरिराम जी तुम शेर की तरह बात कर रहे हो, आगरा की छावनी की खोज खबर लाऊँगा और खातरदारी भी दूंगा। पूरे किले का भेद लेकर आओ आप को सांची बात कहता हूँ। तुम डूंगसिंह को खोजने वाले हो, हे वीर आपको मैं जानता हूँ।

आते समय आपको डूंगसिह से मिला दूंगा आप क्या मन में रखते हो, आप धैर्य रखो यदि मीणा जी आपका आदेश हो तो में भी बारात के साथ हो जाऊ, मेरा मालिक कैद में पड़ा है डूंगसिंह सरदार जी, अरे भाया तुम बूढ़े हो गये हो आपसे तलवार नहीं चल सकती, आपके मालिक से आते समय मिलवा दूंगा। एक वार में ही हथकड़ी के टुकड़े हजार कर दूंगा। एक वार में अस्सी को काट दूंगा तब आप मुझे मानना। रेवड़ को तो छोड़ देता हूँ वह घर चला जायेगा और गुर्जर का लड़का बारात के साथ हो जाता है गाय चराने की लकड़ी व कुल्हाड़ी को कंधे के ऊपर रखकर चल दिया। मीणा टांग पकड़कर मीडा ले गया और बारात के बीच में ले जाकर खड़ा कर दिया, मींडा के मुक्का की देकर मार लिया और उसको मुर्दा बना लिया, खाल और बाल तो उखाड़ दिये और टांगो को सीधी कर दी, आड़ी तिरछी लकड़ी जोड़कर सनेथी बना ली, सात-आठ घोड़ो के सवारों को बाल काटकर कांधिया बना लिया, चार जनों के कंधों पर धर के चल दिये और राम नाम सत है सत बोल्या गत है व शंख बजाते हुए चल दिये। बालू नाई ने जोर से बार (रोना) घालना शरू कर दिया। रोते बिलखते कल्हाते जा रहे है परन्तु मन में बहुत होशियार रहकर चल रहे हैं। जो कपड़ा कमर के बांध रखा था। उसका तो दुशाला बना दिया, और उसी का कफन बना दिया तथा आगरा की गली मोहल्ले मे घी लेवते व भाव पूछते जा रहे है।

आगे-आगे मुर्दे को लेकर चल रहे है पीछे बाराती दाह संस्कार के भेष में चल रहे है लोटिया जाट सांवत्यो मीणो दोनों ही छाती कूटते बार घालते आगे-आगे चल रहे है। मुर्दा बने हुए मींडा को कबरां के अन्दर जाकर उतार दिया। नारियलों की चिता बना दी व नौमण घी का होम कर दिया, अंग्रेजों के कम्पनी बाग में से चन्दन की लकडी कटा दी, अगर चन्दन की चिता बना दी, लोटिया जाट ने आग लगा दी, मींढा तेरा भाग अच्छा है कि तुम नौ मण घी व चन्दन की लकड़ियों में तेरी अर्थी जल रही है नौ मण घी में जल रही आग की लपटें उठ रही है पलटे खा रही हैं। दूर-दूर तक चन्दन की लकडी नौ मण घी व अर्थी की खुशबू व बदबू फैलगी, जिससे कम्पनी सरदारको पता चल गया इस प्रकार अगर चन्दन व घी में मींढा सिंह का दाह

संस्कार कर दिया। इस प्रकार जनता की नजर में मेंढे को दुल्हे का मामा बनाया उस दुखमय वातावरण में कम्पनी बाग में मुखाग्नि दी गई। बारातियों ने नंगे पैर होकर राम नाम सत्य है बोला, यमुना के किनारे मुसलमान का बाग था, लोठू जाट ने चिता के चक्कर लगाया व आग लगा दी व ब्रहमा विष्णु महेश का स्मरण किया। मेंढा सिंह का दाह संस्कार होने के पश्चात योजना को मूर्त रूप देने का तेरह दिन का समय मिला। लोटू जाट व करणिया मीणा तथा जवाहर सिंह ने गुप्तगू की, आगरा का किला अभेद्य था। किले पर सीधे ही हमला करना बच्चों का खेल नहीं था। वे सुनहरे अवसर की तलाश करने लगे। दूसरे ही दिन लोटू जाट व करणा मीणा ने बहुरूपिये के वेश में आगरा शहर की छानबीन की। शहर में चारों तरफ खुशिया मनाई जा रही थी।

मोहर्रम के त्यौहार पर आगरा शहर दुल्हन की तरह सजाया हुआ था। सभी लोगों ने नये कपड़े पहन रखे थे। सड़कों पर इतनी भीड़ उमड़ पड़ी थी की पैर रखने के लिए जगह नहीं थी लोग ढोल बजा रहे थे भाले तलवार हाथों में लिए ताल में ताल मिला रहे थे। चारों तरफ चहल पहल थी। ताजिये बिल्कुल सजे धजे थे। अंग्रेज अधिकारी व सैनिक व्यवस्था के प्रति सजग थे, आगरा के किले में कुछ ही सैनिक बचे थे। मौका नहीं गवाया लोठू व साथियों ने भाण्ड वेश में घूम रहे विद्रोहियो ने वहाँ के निवासियों को खुशी का कारण पूछा। एक मुसलमान बालक ने बताया आज दोपहर बाद मुहर्रम का त्यौहार मनायेंगे। ताजिये मुख्य बाजार से निकाले जायेगें। शहर में सेंनिकों की टुकडियां लगी हुई थी। किसी भी प्रकार के दंगे से निपटने के लिए आगरा के किले के अंधिकांश सैनिक शहर में लगा दिये थे। करणा मीणा ने साथी से कहा कि हमें शीघ्र ही अपने डेरे में चलना चाहिए। जिस अवसर की हमें तलाश थी वो हमें भगवान की कृपा से मिल गया है। लोठू जाट व करणिया मीणा तत्काल डेरे में पहुँचे। सभी बातें नकली बारातियों को बताई। इस प्रकार मीडा सिंह के कारण आगरे के किले की जेल को तोडा गया।

26–ठाकुर खुमान सिंह लोढसर

एक बार ठाकुर डूंगसिंह विक्रम संवत् 1893 (सन् 1836) में सीकर राज्य के कतिपय गांवो पर धावे मारकर ठाकुर जवाहर सिंह के ससुराल लोढ़सर में ठाकुर खुमान सिंह के पास आ गया। बीकानेर राज्य की सेना ने ठाकुर हरनाथसिंह मघरासर और माणिक्य चन्द सुराना के नेतृत्व में लोढसर दुर्ग पर आक्रमण किया। तब ठाकुर जवाहर सिंह भीमसिंह और ठाकुर खुमान सिंह बीदावत लोढसर से निकलकर जोधपुर चले गये। बीकानेर का राजा रतनसिंह बीकानेर राज्य में हुई लूट खसोट के कारण डूंगजी जवाहरसिंह से काफी नाराज था इसलिए राजा रतनसिंह ने अंग्रेजों को तन मन और धन से भरपूर मदद की, और इधर लोढसर के ठाकुर खुमानसिंह को इस काम के लिए नियुक्त किया की आप विद्रोहियों की गतिविधि पर नजर रखोगे और मेरे तक सूचना पहुँचाओगे। खुमानसिंह जवाहरसिंह का साला था वो खुद अंग्रेजों से शख्त नफरत करता था। वह अंग्रेजों की गुप्त सूचना डूंगजी जवाहरजी व सांवताराम, करणाराम मीणा को दे देता था और फिरंगियों को इनकी गलत सूचना देकर गफलत में डाल देता था तथा आत्मा से इन स्वतत्रंता सेनानियों के साथ था व बाहरी दिखावा अंग्रेजों के साथ होने का करता था। संवत 1895 (सन 1838) में ठा. डूंगसिह जवाहर सिंह सांवता राम मीणा, करणा राम मीणा, लोठू जाट, ठाकुर खुमानसिह बीदावत, लोढसर, हरिसिंह बीदावत, अन्नजी बीदावत, भोजलाई तथा करण सिंह बीदावत आदि ने बीकानेर के लक्ष्मीसर आदि अनेक गांवो को लूट लिया और बीकानेर जोधपुर किशनगढ़ होते हुए अजमेर मेरवाड की ओर चले गये।

27–हणूतसिंह मेहडू

डूंगजी को आगरे के किले की जेल से जब लोटिया जाट व करणिया मीणा जवाहर सिंह व उनके साथी छूडाने गये थे तो उनके साथ हणूतसिंह कवि भी साथ थे। जब किले में आपस में युद्ध हुआ तब उसमें हणूतसिंह मेहडू वीर गति को प्राप्त हुए। उनकी यादगार में महाकवि शंकर दान सामोर ने एक सोरठा कहा जो इस प्रकार है:-

कोटडमल कवपात, कतियक लग महमा करू।

सूनू करग्यौ साथ, भोम भडोली भोमरा।
चित कर सुरग चलेंह, गठवी गढ भेल र गयौ।
महडूं रांण निलैह, अेक रा हणूता आवाजै।

28–ठाकुर सूरजमल

सन् 1824 में बीकानेर राज्य के गांव दड़ेवा के ठाकुर सूरजमल के कुछ राजपूतों को साथ लेकर अंग्रेजी इलाके के गांव हरियाणें को लूटा। इससे बहुत से सरदारो में जोश आ गया और उन्होंने भी अंग्रेजो को तंग करना शुरू कर दिया।

29–ठीकाना सींगरावट

सीगंरावट के पासवान भाइयों ने अंग्रेजी सरकार से विद्रोह किया तो उनकी निगाह बठोठ की ओर भी गयी। डूंगजी की आंखो के सामने एक चित्र उभर आया। उस दिन कम्पनी सरकार के जयपुर स्थित रेजीडेन्सी से सींगरावट दूत गया। डेरे में पासवानियां भाई बैठे थे। कम्पनी सरकार के दूत का स्वागत किया गया। उसने पासवानियां भाइयों को एक सन्देश दिया। उसमें लिखा था कि आप सिगरावट ठिकाना खाली कर दें। इसे कम्पनी सरकार चाहती है। दोनों भाईयों की मुटिठया कस गई। उन्होंने संदेश को फाड़ दिया। दूत लौट गया। सिंहरावट के खवासवाल ठाकुर बन्धु सीकर और अंग्रेज सरकार का विरोध कर रहे थे। इस स्थिति की विषमता का मूल्यांकन कर कर्नल एल्विस ने बीकानेर के महाराजा रतन सिंह से प्रबल अनुरोध किया कि ठाकुर डूंगसिंह को येन-केन प्रकारेण बन्दी बनाया जाए। डूंगसिंह की भी सिंहरावट के जागीरदारों के साथ सक्रिय सहानुभूति थी। रावराजा रामप्रताप सिंह की असमर्थताजन्य आपत्ति पर कर्नल सदर लैण्ड ने शेखावाटी ब्रिगेड के सर्वोच्च अंग्रेज अफसर फारेस्टर को जयपुर सीकर और अपनी अधीनस्थ सेना सहित आदेश दिया कि सिंहरावट दुर्ग को हस्तगत कर विद्रोह को समाप्त करें। मेजर फारेस्टर ने सिंहरावट को चारों ओर से घेर कर किले पर आक्रमण किया। ठाकुर मुंकदसिंह वगैरह एक माह तक सामुख्य कर अन्त में यकायक किला त्यागकर लड़ते हुए निकल गये। अंग्रेज सेना अंग्रेज एजेन्ट मेजर लडलो के नेतृत्व में सीकर राज्य में प्रवेश कर गई मेजर लडलो ने लाला हरदेव

हनुमंतसिंह को सेना के साथ सिंगरावट गढ पर कब्जा करने के लिए भेजा व जयपुर राज एवं ब्रिटिश सरकार के दूत ने युद्ध के नशे में डूबे सरदारो को बहुत समझाया कि युद्ध न करके आत्मसमर्पण कर दें। लेकिन पासवानियां बन्धुओं के सहयोगी बठोठ पाटोदा, गाड़ौदा के सामन्त भी युद्ध मैदान में आ धमके। रावराजा प्रताप आ गये, दोनों पक्षों में भयंकर लड़ाई छिड़ गई। दोनों तरफ से कई सैनिक एवं विद्रोही सरदार मारे गए। सिंगरावट का गढ ध्वस्त कर दिया। सायंकाल में लड़ाई रूक गई। रात के समय चोरी-छुपे मुकन्दसिंह, लोठुसिंह, जवाहर सिंह, करणा मीणा और सांवताराम मीणा भाग निकले। उसी रात को इन सरदारों ने सीकर शहर पर हमला कर गढ़ में लूट पाट की और भाग गये। सिंगरावट रामप्रतापसिंह के कब्जे में आ गया।

30–बीदावत राठौर रिसाला

सन् 1835 मे अंग्रेज सरकार ने बागी सरदारों से तंग आकर शेखावाटी में शान्ति व्यवस्था के लिए शेखावाटी कोर की स्थापना की जिसका मुख्यालय झुन्झुनू में रखा। बीदावतों के दमन के लिए बीदावत परगना अंग्रेजो ने अपने अधिकार में लेना चाहा जिसे महाराजा ने नहीं माना। अतः यह निर्णय हुआ कि शेखावाटी कोर के 6 रिसालों (कम्पनी) में से 2 रिसाले, बीदावतों के रहेगें और उनका खर्च 22 हजार वार्षिक बीकानेर राज्य देवे। बीदावत रिसाल की कमान रिसालदार ठाकुर संग्रामसिंह चाडवास के आधिन नायब रिसालदार ठा. हरिसिंह ठठावता तथा जमादार ठाकुर अनजी भोजोलाई के पास रखी गई। ठाकुर कानसिंह चरला को भी महाराजा ने इस रिसाले में भेजा। परन्तु कुछ ही समय में ठाकुर संग्रामसिंह अपने पुत्र कुँवर बख्तावरसिंह को भर्ती करा कर स्वयं लौट आया। ठाकुर कानसिंह भी वापस आया और हरिसिंह कोर कमाण्डर फोरस्टर से परेड में लड़कर आ गया। इस रिसाले के खर्च को महाराजा ने सभी बीदावत सरदारों से वसूल किया।इन्हीं दिनों बठोठ (सीकर) के ठाकुर डूंगसिंह अंग्रेजों के घोडे और ऊँट पकड़ ले गया इसी वर्ष अच्छी बरसात हुई और पैदावार भी हुई।

31–लार्ड वेलेजली की सहायक संधि

सन् 1818 में लार्ड वेलेजली की सहायक संधि को राजस्थान के अधिकतर शासक स्वीकर कर चुके थे। शासक अंग्रेजो के समर्थक भी थे। और इनके अधीनस्थ भी अंग्रेजों की आधीनता जिन स्वतंत्रता सेनानियों को सहन नहीं हुई उन्होंने अंग्रेजों की छावनियों पर हमला करना और खजाने लूटना जारी रखा। अंग्रेज यह कैसे बर्दास्त करते। उन्होंने शेखावाटी ब्रिग्रेड नामक एक पलटन बनाई और मेजर फोरेस्टर के नेतृत्व में इसे स्वतंत्रता सेनानियों का दमन करने के लिए भेज दिया। इस पलटन से लड़ते हुए गुढा के स्वतंत्रता सेनानी दुल्हेसिंह शेखावत शहीद हो गये। राजाओं द्वारा स्वीकार की गयी अंग्रेजों की गुलामी जनता को स्वीकार नहीं थी। जनता हर प्रकार से अंग्रेजों से असहयोग करती थी। अंग्रेज अधिकारियों ने राजस्थान के शासकों को इस आशय के पत्र लिखे कि आप अपनी जनता को अंग्रेजों का सहयोग करने का आदेश दे। डूंगजी, जवाहरजी, सांवता मीणा, करणा मीणा, लोठू जाट व उनके साथियों सहित जो अंग्रेजों के विरूद्ध वक्तव्य देते थे उस का दोहा इस प्रकार है:-

थोड़ा मै समझाऊँ थानै, घणी समझज्यौ इणनै।
आपां तो खूब लूटां उणनै, जग लूट्यौ है जिण नै।

भोग विलासी राजाओं की धार कुंद हो चुकी थी। लेकिन जनसाधारण में अंग्रेजों की गुलामी के विरूद्ध ज्वालामुखी का लावा फूट रहा था। कायर शासक यह प्रचारित करते थे कि अंग्रेजो का तो सातों समुद्रों पर पूरी पृथ्वी पर राज है-इन से हम नहीं जीत सकते। डूंगजी तथा उनके साथियों के पौरूष ने इस विचार धारा को स्वीकार नहीं किया और अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया।

32– मि. ब्लक की हत्या व शेखावाटी ब्रिगेड का गठन

राजस्थान राज्य में यहां के सरदार शासक और जागीरदार राजा ओर अंग्रेजों के बीच गठबंधन के पूरे खिलाफ थे। इसलिए सन् 1818 में जयपुर रियासत के साथ अंग्रेजों की संधि हुई तो शेखावाटी क्षेत्र के सभी जागीरदारों को यह बात पसन्द नहीं आई मुख्य तौर पर तो सीकर के रावराजा लक्ष्मीसिंह शाहपुरा का राव हणवत सिंह और बिसाऊ ठाकुर श्याम

सिंह शेखावत इस संधि के सख्त खिलाफ थे। इस वास्ते मौका देखकर जयपुर के पोलेटिकल एजेन्ट के सहायक अधिकारी मि. ब्लक की सरेआम हत्या करवा दी। इसके बाद शेखावाटी के अंग्रेजी इलाके के ऊपर हमला होने लग गये अंगेज सरकार सावधान हो गई और उन्होंने इसका मुकाबला करने वास्ते शेखावाटी ब्रिग्रेड नाम से यह एक नया सैनिक संगठन बना दिया। सन् 1834 में गवर्नर जनरल के एजेन्ट कर्नल एल्विस ने महाराजा से मिलने का अनुरोध किया। यह भेंट रतनगढ में हुई वहाँ सीमान्त इलाकों में शान्ति स्थापित करने के तरीकों और उपायों का निश्चय किया गया। यह निर्णय किया गया कि बारोटियो (डाकुओं) को क्षमा कर दिया जाए। शेखावाटी ब्रिगेड सेना बनाकर झुन्झुनू में मुख्यालय रखा जाए। और उसके खर्चे के लिए महाराजा प्रतिवर्ष 22000 रूपये प्रदान करे। इस सेना में एक सौ बीदावतों की पलटन सम्मिलित की जानी थी।

चिड़ावा के संग्रामसिंह को इस सेना का रिसालदार और भोजोलाई के आवाजी को जमादार नियुक्त किया गया। इस मुलाकात के समय महाराजा ने कर्नल एल्विस का ध्यान अंग्रेज सरकार की अन्याय पूर्ण कार्यवाही की ओर भी आकर्षित किया। जिसमें बीकानेर के 40 गांव अंग्रेजों ने ले लिए थे। कर्नल ने वचन दिया कि वह अन्याय को दूर करने के लिए सरकार से लिखा पढ़ी करेगा। तब महाराजा बीकानेर के लिए रवाना हो गया। मार्ग में उसनें विद्रोही जागीरदारों से जुर्माना वसूल किया। इस इलाके में अव्यवस्था फैली हुई थी और इन असंतुष्ट सरदारों और डाकुओं की कारवाइयां इतनी अधिक बढ़ गई थी कि वे मेहसर, घडसीसर और लूणकरणसर तक आते थे। शेखावत डूंगसिंह ने अपनी कारवाइयां सीकर के इलाके तक बढा दी और अंग्रेजी सेना के बहुत से ऊँट और घोड़े पकड़ लिए। अंग्रेजों द्वारा लिखे जाने पर महाराजा ने लोढसर के ठाकुर को अंग्रेजों की सेवा में भेजा। उसने डूंगसिंह के छुपने के स्थानों को बता दिया। अंग्रेजों ने महाराजा को 27 मार्च 1835 को एक खरीता भेजकर उसके सहयोग के लिए बहुत धन्यवाद दिया। सन् 1831–32 की कर्नल लाकेट की सिफारिश से शेखावाटी ब्रिग्रेड नामक फौज बनाई गई। इस फौज में अंग्रेज सैनिकों के साथ-साथ भारतीय सैनिकों को भी शामिल किया गया। शेखावाटी

अथवा जहवाडा क्षेत्र के अंग्रेजों के प्रति वफादार राजपुतों को शामिल किया गया। शेखावाटी के सैनिकों को शामिल करने के पीछे उद्देश्य यह था कि वे इस क्षेत्र के बारे में बखूबी जानते थे व विद्रोही लोगों की पहचान भी आसानी से कर सकते थे। शेखावाटी के अंग्रेजों के प्रति वफादार सैनिकों को उच्च पद भी बांटे गये। उच्च पद देने का मतलब देश के प्रति गद्दारी व राज्य के प्रति वफादारी की भावना पैदा करना था। शेखावाटी ब्रिगेड के नेतृत्व की जिम्मेदारी मेजर फारेस्टर को सौंपी गई। इस ब्रिग्रेड का मुख्यालय झुंझुनू में रखा। इस स्थान को झुंझुनू में आज भी फोरेस्टर गंज के नाम से जाना जाता है। सेना का खर्चा गरीब जनता से वसूल किया जाता था। इस समय पासवानिया बन्धुओं की बदमाशी से तगं आकर राव प्रतापसिंह ने सिंगरावट परगने के पचास गांवो को खालसे में तब्दील कर दिया। मुकुन्दसिंह परगने का मुखिया था, इस कारवाई पर मुकुन्दसिंह ने अंग्रेज सरकार व कर्नल सदर लेण्ड से शिकायत की फैसला मुकुन्दसिंह के खिलाफ हुआ। मुकुन्दसिंह सदर लैण्ड की अनुमति के बिना ही सिंगरावट चला गया। इस फैसले की खबर बठोठ ठिकाने को दी गई। लोठू जाट, जवाहरसिंह, करणा मीणा, सांवता मीणा ने अंग्रजो की तानाशाही के विरूद्ध कमर कसली।

I–शेखावाटी ब्रिगेड का उद्देश्य

शेखावाटी ब्रिगेड की स्थापना का उद्देश्य शेखावाटी, तंवरावाटी, चूरू, और लुहारू क्षेत्र में पनप रहे ब्रिटिश सता विरोधी विद्रोह को शान्त करना था। यद्यपि राजनैतिक परिस्थितियों से पीडित रियासती राजाओं ने अंग्रेजो से संधिया की थी। लेकिन वे भी अंग्रेजों के बढते हुए प्रभाव की पसन्द नहीं कर रहे थे और खुले रूप में उनका विरोध करने का साहस भी उनमें नहीं था। सबसे प्रबल कारण तो यह था कि मराठों ओर पिंडारियो की लूट खसोट ओर आए दिन के बखेडों से अंग्रेजों के माध्यम से छुटकारा मिला था। मराहठों की लोलुपता और अत्याचारों का धुआं थोड़ा-थोड़ा दूर ही हुआ था। इसलिए राजाओं के साथ साँप छछूंदर की सी स्थिति थी। ठिकानेदार छोटे भूस्वामी और जन-मानस अंग्रेजों के साथ हुए संधि समझोतों से क्षुब्ध थे। और वे अंग्रेजों की छत्र छाया को अमन चैन के नाम मानते थे। फलतः अंग्रेज सत्ता

और उनके प्रछन्न-अप्रछन्न समर्थक सहयोगियों से वीर अनवरत सक्रिय विरोध करते आ रहे थे। शेखावाटी बिग्रेड में शेखावाटी के ठाकुर अजमेरी सिंह पालडी और ठाकुर डूंगसिह पाटोदा प्रभावशाली व्यक्ति थें डूगसिंह पाटोदा तो अश्वारोही सेना रिसालदार के पद पर थे। डूंगसिंह इसी बिग्रेड की घुड़सवार सेना में रिसालदार के पद पर नौकरी कर रहा था। पर जब सीकर ठिकाणे के उत्तराधिकार के मामले में अंग्रेज बीच में टांग खिचाई करने लगे। (लाडे री भुआ बणनै डांग पटेली करण लाग्या) तो दूजा जागीरदारां के साथ अंग्रेजों के खिलाफ हो गये सन् 1834 में शेखावाटी ब्रिगेड का घोड़ा ऊँट और सत्तर पार्टी लेकर निकल गये और बारोठिया (डाकू) बन गये। शेखावाटी के जितने जागीरदार अंग्रेजों के विरूद थे। उन सभी का डूंगजी को भरपूर सहयोग मिलना शुरू हो गया। इस तरह एक नया संगठन बनकर तैयार हो गया जो ताकतवर संगठन था।

II–स्वतंत्रता सेनानियों को पकड़ने के लिए दल गठित

लोठू जाट, डूंगसिंह, सांवता राम मीणा , करणा मीणा व जवाहरसिंह को जनता का समर्थन प्राप्त थे। लोग उन्हें स्वतंत्रता सेनानी कहते थे। वे शेरों की तरह मांद मे रहते थे। उन्हैं पकडना कठिन काम था। रावराजा ने अंग्रेजों को जवाब दिया। सदर लैण्ड के बुलावे पर फोरेस्टर जो शेखावाटी बिग्रेड के प्रमुख थे, कैप्टेन शाक के साथ सेनाएं लेकर आ गए। लोठू जाट, डूगसिंह, जवाहरसिंह, सांवतामीणा, करणा मीणा और उनके साथी भी अंग्रेजी सेना से लोहा लेने को तैयार थे। राजद्रोही के नाम से पुकारे जाने वाले देश भक्त अपनी सारी शक्ति के साथ लड़ने के लिए तैयार हो गये। करणा मीणा, लोठू जाट व सेनानियों का जनता तहदिल से सहयोग करती थी। लोठू जाट, डूगसिंह, करणा मीणा, सांवता मीणा व जवाहर सिंह को पकंडने के लिए जनता में आंतक फैलाने के लिए लोढसर मींगणा, बोबासर, स्यानण व बीदावटी के इलाको में तोपों से गोले बरसाये गये। नसीराबाद की इस प्रसिद्ध छावनी तथा राजकीय कोष की परिहती से अंग्रेजों का राजस्थान से प्रभाव विलीन होकर चारों और अपार परिवाद फैल गया। स्वतंत्रता भिलाषी जन मानस में असीम गौरव का संचार हो गया। कवियों, याचकों और विरूद्ध वाचकों के

कण्ठों पर डूंगसिंह, जवाहर सिंह, लोठू जाट, सांवता मीणा और करणा मीणा के नाम नृत्य करने लगे। तब कर्नल जे सदर लैण्ड ने राजस्थान के राजाओं को डूंगसिंह, जवाहर सिंह, लोठू जाट, करणा मीणा और उनकी टीम को पकड़ने के लिए सशक्त आदेश भेजे और कैप्टन डिक्सन मेजर फास्तर कप्तान शा और बीकानेर के सेना नायक ठाकुर हरनाथसिंह नारणोत, मघरासर के नेतृत्व में सेनायें भेजी गई। जोधपुर के महाराजा तख्त सिंह ने मेहता विजयसिंह, कुशलराज सिंघवी तथा किलादार औनाड़सिंह के नेतृत्व में राजकीय सेना भेजी और जोधपुर के जागीरदारों को अपनी जमीयत के साथ इनकी सहायतार्थ सम्मिलित होने का आदेश भेजा फलतः ठाकुर इन्द्रभानू, जोधा भाद्राजून, ठाकुर केसरी सिंह मेड़तिया, जावला, ठाकुर बहादुरसिंह लाडनू, ठाकुर विजयसिंह लूणवा और ठाकुर शार्दूल सिंह पिपलाद आदि रियासती सेना में शामिल हुए। ब्रिटिश सेना के ई. एच. मेक मेसन तथा कप्तान हार्डकसल भी डीडवाना पहुँच कर सदल - बल उनसे जा मिले। घडसीसर ग्राम में उभय पक्षों में सामुख्य हुआ। दोनों ओर से जमकर लड़ने के बाद स्वतंत्राकांक्षी विद्रोही योद्धा शासकीय सेना के घेरे में फंस गए। परन्तु स्वतंत्रता सेनानी संख्या बल में कम होते हुए भी दुश्मनों की सेना बहुत अधिक होने पर भी इस तरह टूट पडे जिस तरह आकाश में विचरण करते हूए बाज को शिकार दिखाई पड़ जाती है और उसको अपना ग्रास बना लेता है परन्तु सामने वाली सेना अधिक होने से ये घेरे में आ गये फिर भी उन्होंने जबरदस्त वीरता दिखाई और दुश्मनों के काफी सैनिक काट गिराये।

33–रामगढ का संक्षिप्त परिचय

रामगढ़ की स्थापना राव देवी सिंह ने की थी जिन पर शासन काल संवत् 1820 (सन 1763) से 1852 था इन से चार पीढी पहले राव शिवसिंह ने चैत्र कृष्ण त्रयोदशी संवत् 1787 (सन् 1730) को फतेहपुर के मुसलमान शासक नवाब कायम खां पर तीसरा और अन्तिम हमला करके विजय प्राप्त की थी। चैत्र शुक्ल एकः संवत् 1788 (सन् 1731) को राव शिवसिंह फतेहपुर की राजगद्दी पर आसीन हुए। भविष्य में रामगढ़ जहाँ बसा वह भूमि इस तिथि से पहले 280 साल तक मुसलमान शासकों के अधीन थी। फतेह खां नामक नवाब ने संवत 1503 (सन् 1446) में हिसार से आकर फतेहपुर नगर बसाया था। इस नवाब का शासन चूरू राज्य की सीमा तक था जो वर्तमान रामगढ से सिर्फ एक किमी. दूर थी रामगढ के संस्थापक राव देवीसिंह से लेकर सीकर के अंतिम शासक कल्याण सिंह से रामगढ़ का कई घटनाओ से संबंध रहा इन राजाओं का शासन काल इस प्रकार है

1 श्री देवी सिंह - सन् 1763-1795
2 श्री लक्ष्मण सिंह - सन् 1795-1833
3 श्री राम प्रताप सिंह - सन् 1833 -1850
4 श्री भैरव सिंह - सन् 1851-1865
5 श्री माधव सिंह - सन् 1866-1922
6 श्री कल्याण सिंह - सन् 1922-1947

15 अगस्त 1947 के बाद सरदार पटेल के प्रयत्नों से जयपुर राज्य नवगठित राजस्थान प्रान्त में मिल गया था और गणतंत्र भारत का हिस्सा बन गया था। फिर भी राव कल्याण सिंह के पास जमींदारी आदि के कुछ अधिकार रह गये थे जो उन्होंने ने सन् 1950 में केन्द्रीय सरकार को सौंप कर मुआवजा प्राप्त किया। इस प्रकार सन् 1950 से सीकर रियासत का भू-भाग जिस में रामगढ भी शामिल था। पूर्ण रूप से भारत गणतंत्र. का अंग बना, राम के नाम पर बसे हुए इस शहर में मन्दिरों की अधिकता के कारण वातावरण धार्मिक और आस्तिकता रही। साथ ही यहाँ के निवासियों में दान परोपकार और सेवा की भावना रही। रामगढ जहां बसा वहां पहले समुद्र था रामगढ़ के टीलों की रेत में आज भी शंख, सीपी आदि समुद्री जीवों के अवशेष मिलते है। यह समुद्र भूगर्भीय उथल-पुथल के कारण हट गया था।

I–रामगढ़ क्यों बसा

रामगढ़ को राव देवीसिंह ने बसाया था। इनकी पत्नी का पीहर चूरू में था। राजरानी जब पीहर जाती तो फतेहपुर में विश्राम करने के बाद 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित चूरू पहुँचने से पहले कोई विश्राम स्थल नहीं था। उन दिनों यात्रायें बैल गाड़ियों और रथों से होती थी। राजघराने के लोगों के साथ सुरक्षा के लिए सैनिक और सेवा के लिए नौकर साथ चलते थे। यह काफिला बहुत धीरे चलता था और कुछ घंटों बाद मनुष्यों को ही नही पशुओं को भी भोजन पानी और विश्राम के लिए रूकने कि आवश्यकता होती थी। गर्मियों में गर्मी और लू के कारण दोपहर में चलना कष्टदायक रहता था। सर्दियों में सुबह शाम चलना मुश्किल होता था। यात्रा रात को नहीं होती थी, वाहन कुछ ही घंटे चल सकते थे इसलिए रास्ते में पड़ने वाले गाँव या नगर विश्राम स्थल होते थे।

फतेहपुर के बाद चूरू से पहले एक और नगर का बसाना भौगोलिक कारणों से आवश्यक था। उस समय राजा लोग कई कारणों से आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं थे, या तो वे किसी पर आक्रमण करते या कोई उन पर आक्रमण करता। परिणाम स्वरूप युद्धों में खजाना खाली हो जाता। अंग्रेज लोग मैत्री सन्धि के आधार पर कई ऐसी शर्तें लागू कर देते जिससे राजाओं कि आय का अच्छा खासा हिस्सा अंग्रेजों की जेब में चला जाता। मुसलमान शासकों ने अपनी विलासिता में डूबकर अर्थव्यवस्था का सत्यानाश कर दिया था। राजा लोग ऐश्वर्य, भोग, विलाश, नशे, आदि के चंगुल में ऐसे जकड़ चुके थे कि उन्हें अपना खर्च ही पूरा नही पड़ता था। उस समय राजाओं से लेकर महाराजा तक व्यापारियों से लाखों-उधार लेते थे। इस के उल्लेख इतिहास में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ऐसी स्थिति में दूसरे राज्यों से सेठों को बुलाकर अपने राज्य में बसाना आये दिन की बात थी। रामगढ़ के बसने का एक मुख्य कारण अर्थलाभ ही था। चूरू से चतुर्भुज पोद्दार को आग्रह कर के अपनी रियासत में लाकर बसाने के पीछे उन की अपार संपदा ही मुख्य कारण थी। अन्य व्यापारिक घराने एक सुरक्षित और समृद्ध नगर में मिलने वाली रियायतों और सहूलियतों के कारण आये थे। बाद में रामगढ़ की उर्वरा मिट्टी

ने इतने अधिक धनाढ्य उत्पन्न किये कि मुहावरे की भाषा में कह सकते हैं कि यहां तो पेड़ों पर रूपये लगते थे या छप्पर फाड़ के धन बरसता था। रामगढ़ के सेठ सीकर नरेश को भेंट में अच्छी खासी रकम दे देते थे। धनी लोग अनेक नगरों में हुए और आस-पास के गाँवों में भी लेकिन धन का जितना अंबार रामगढ़ के सेठों के पास लगा रहा उस की तुलना में सीकर रियासत के अन्य शहरों में धन रामगढ़ से कम था। ऊपर दिये गये सारे कारण अप्रकट थे। प्रकट रूप में रामगढ़ के बसने से संबंधित कई कथायें प्रचलित हैं। भारतीय और विदेशी इतिहासकारों, पर्यटकों, सरकारी अधिकारियों आदि ने इन सुनी-सुनायी कथाओं का ज्यों का त्यों उल्लेख कर दिया है। इन्हे ऐतिहासिक तथ्य के रूप में प्रमाणित करना असंभव है। इन कथाओं के पात्र चूरू के तत्कालीन शासक शिवजी सिंह, उन की पत्नी, उन की बहन चंदन कुंवरी (कान्हलोत) सीकर के तत्कालीन शासक देवी सिंह और चूरू के सेठ चतुर्भुज पोद्दार हैं। सब से छोटी कहानी यह है कि सेठ चतुर्भुज का भटिंडा में कारोबार था। वे बलूचिस्तान से पश्मीना मंगवाकर अन्य स्थानों के अलावा चूरू भी भेजते थे।

चूरू के तत्कालीन शासक शिवजी सिंह ने सेठ चतुर्भुज के माल पर बहुत ज्यादा जकात लगा दी थी। परिणामस्वरूप राजा और सेठ में अनबन हो गयी और बाद में देवी सिह के आमंत्रण पर सेठ चतुर्भुज रामगढ़ बसाने के लिये आ गये। दूसरी प्रचलित कहानी इस प्रकार है-चूरू कें तत्कालीन शासक शिवजीसिंह की पत्नी ने अपने पति की बहन चंदन कुंवरी (कान्हलोत) यानिकि अपनी ननद को ताना मारा कि तुम्हारी सीकर रियासत में चूरू जैसा कोई सुंदर शहर नहीं है। चंदन कुंवरी का विवाह सीकर के राजा राव देवी सिंह से हुआ था। ननद को भाभी का ताना सहन नहीं हुआ और उसने अन्न-जल त्याग दिया। राव देवीसिंह के पूछने पर चंदन कुंवरी ने बताया कि आप जब तक चूरू से अच्छा शहर सीकर रियासत में बसाने का वचन नहीं देते तब तक मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगी। चूरू से अच्छा शहर तभी बस सकता था जब चूरू से सेठ रामगढ़ आकर अपनी हवेलियां बनवाते। इसके लिये राव देवीसिंह ने एक चाल चली। उन्होंने अपने कुछ घुड़सवार चूरू भेजे

जो चतुर्भुज और उन के परिवार के सदस्यों की व्यापारिक बहियां जबरदस्ती उठाकर सीकर ले गये। चतुर्भुज के नेतृत्व में वे व्यापारी सीकर पहुँचे और राजा से बहियां लौटाने की प्रार्थना की। राजा ने कहा कि तुम्हारे गांव की बेटी अन्न-जल त्याग करके बैठी है। तुम लोग चूरू से अच्छा शहर बसाने का वचन देकर उस का अनशन भंग करवाओ। अगर रानी तुम लोगों की बात मान जाती है तो मै बहियां वापस कर दूंगा। सेठ लोगों ने रानी को वचन दिया कि वे एक ऐसा नया शहर बसायेंगे जिसका परकोटा चांदी का और हवेलियां सोने की होंगी। रानी ने अनशन त्याग दिया। सेठों को बहियां वापस मिल गयी। सेठों ने अपने वचन का पालन करने के लिये चूरू छोड़ा और रामगढ़ बसाया। चांदी के परकोटे और सोने के महल पूरी पृथ्वी पर कही नहीं हैं। उस समय चंदन कुंवरी की उम्र कोई गुड़ियों से खेलने की नहीं थी।

वह पूर्ण वयस्क, विवाहिता स्त्री थी और देवीसिंह जैसे प्रतापी और संपन्न राव राजा की पत्नी थी। 'तुम्हें सोने की गुड़िया ला देंगे' ऐसा कह कर छोटी बच्ची को बहलाया जा सकता है। चांदी के परकोटे और सोने की हवेलियां न बनने पर चंदन कुंवरी ने वचनभंग क्यों नहीं माना। रामगढ़ जब बसा था तो इस में न कोई गढ़ था न किला। गढ़ 8–10 साल बाद बना था। नगर के चारों तरफ परकोटा अवश्य था जो इस की सुरक्षा के लिये था। यह परकोटा पत्थर और गारे से बना था। चतुर्भुज ने अपनी दो हवेलियां बनवायी थी। उनके परिवार वालों या संबंधियों ने 5–10 हवेलियां उन के साथ बनवा ली होंगी लेकिन इतने मात्र से रामगढ़ चूरू से अच्छा शहर कैसे हो गया। राव देवी सिंह जैसे कुशल, प्रतापी और वीर शासक सेठों को रामगढ़ आकर बसने के लिये बाध्य करने के उपायस्वरूप अपने साले की राजधानी से बहियां जबरदस्ती उठवाकर मंगवा लेते-यह बात संगत नहीं लगती। ऐसा होता तो भी उन बहियों को छुड़वाने की जिम्मेदारी चूरू के राजा की थी। सेठ लोग प्रर्थना करते तो चूरू के राजा से करते न कि सीकर के। सेठ लोग बहियां ले जाने पर इतने विवश हो गये थे कि उन्होंने अपने बसे बसाये घरबार और व्यापार को छोड़कर नये नगर को बसाने की हां भर दी यह बात बिल्कुल असंगत लगती है।

तीसरी कहानी बिल्कुल भिन्न है जो पहली दो कहानियों की तुलना में सही और संगत लगती है। सेठ चतुर्भुज का भटिंडा में बहुत बड़ा कारोबार था। वे एक बार अपने गुरू से मुहूर्त पूछकर घर से निकले तो थोड़ी दूर जाने पर रास्ते में एक सांप को फन फैलाये हुए खड़ा देखकर वापस लौट आये। गुरू ने कहा कि सांप का मिलना शुभशकुन था, वे मुहूर्त निकलने से पहले तुरंत वापस चले जायें। उन्हें धन और राजकीय सम्मान मिलेगा। चतुर्भुज भटिंडा चले गये। वहां दुकान का मुहूर्त करते समय उन की पगड़ी के सिरे में पूजा के दीपक की लौ लग गयी। चतुर्भुज का ध्यान उधर नहीं गया। उन की दुकान के आगे से एक गर्भवती पनिहारिन पानी से भरे हुए दो कलश सिर पर रख कर ले जा रही थी। उस ने आग लगी हुई देखी तो चिल्लाई-'नौहरिया तोरी पगड़ी में लग गयी।' चतुर्भुज ने पगड़ी में लगी हुई आग बुझा दी लेकिन आग लगने को अपशकुन मानकर चिंतित हो गये। जिस ज्योतिषी ने पूजा का मुहूर्त बताया था उस ने कहा कि आग लगाना अपशकुन होता है लेकिन उसी समय एक सुहागिन, गर्भवती पनिहारिन का जल से भरे हुए दो कलश लेकर दुकान के आगे से निकलना इतना बड़ा शुभ शकुन है कि अपशकुन का अंधेरा शुभ शकुन के प्रकाश में नष्ट हो जायेगा।

चतुर्भुज ने उत्साह के साथ व्यापार शुरू कर दिया। एक दिन रात को दुकान बंद होने के बाद कुछ लोगों ने दरवाजा खटखटाया। सेठ चतुर्भुज ने दरवाजा खोला तो देखा कि कुछ घुड़सवार खड़े है। वे लोग हथियारों से लैस थे। उन्होंने खाने पीने की सामग्री मांगी। सेठ चतुर्भुज के पास उन की मुंहमांगी सामग्री निकाल कर देने के सिवा कोई चारा नहीं था। उनसे भुगतान मांगने की हिम्मत चतुर्भुज की नहीं हुई। उन आगंतुकों में से एक ने कहा कि हम लोगों ने नमक खरीदा है और किसी का नमक मुफ्त में नहीं खाना चाहिये इसलिये नमक का भुगतान कर देना चाहिये। दूसरे ने कहा कि मुफ्त का अन्न खाना भी अच्छा नहीं। उन के सरदार ने सेठ से कहा कि हमारे पास भुगतान के लिये नगद पैसा नहीं है हम तुम्हें बदले में ये बर्तन देते है। चतुर्भुज जब सुबह शौच करने के लिये बस्ती से बाहर खुले स्थान में गये तो उन्हों ने देखा कि कुछ टूटे हुए तंबुओं के पास सिपाही खड़े हैं। पूछने पर

पता चला कि रात कुछ डाकू आये थे जिन्होंने यहां तंबू लगाये थे। पहरा देने वाले सिपाहियों को पता चलने पर उन्होंने तंबुओं पर आक्रमण कर दिया। डाकू लोग सामान छोड़ कर भाग गये। सेठ चतुर्भुज समझ गये कि रात रसद मांगने वाले व्यक्ति यही डाकू थे। उन्होंने घर लौटकर डाकूओं के दिये बर्तन संभाले तो पता चला कि वे सोने चाँदी के है। उसी दिन शहर में ढिंढोरा पीटा गया कि डाकुओं के तंबुओं में बचा हुआ सामान निलाम किया जायेगा। सेठ चतुर्भुज ने अनुमान लगाया कि उनके सामान में सोने चाँदी के सिक्के और जवाहरात छुपाये हुए हो सकते है। उन्होंने सामान खरीद लिया। उस सामान को खोलने और उधेड़ने पर उन्हे सोने की मोहरे और जवाहरात मिले। सेठ चतुर्भुज रातों रात महाधनी बन गये। यह धन छुपाना आवश्यक था। सेठ चतुर्भुज भठिंडा छोड़कर तत्काल चूरू आ गये। चतुर्भुज का कारोबार बहुत बड़ा था। उन्होंने व्यापार में बहुत पैसा कमाया था। इस बार डाकुओं से अनायास धन हाथ लग गया था। इस धन की बात छुपी नहीं रह सकी।

चतुर्भुज ने अपनी हवेली बनवानी शूरू की तो चुगलखोरों ने राजा के कान भर दिये कि सेठ अनायास मिला धन लेकर आये हैं जिसमें से आपको उचित नजराना नहीं दिया। राजा ने सेठ को बुलावा भेजा। राजा ने इस धन में मोटा हिस्सा मांगा। सेठ चतुर्भुज धन को छुपाने के लिए विवश थे। उन्होंने कहा कि वे पसीना बहाकर चार पैसे कमाकर लाये है। उनके पास कोई अनायास मिला हुआ लूट का धन नहीं है। राजा को अपने विश्वस्त व्यक्तियों से सूचना मिल चुकी थी इसलिए उसने चतुर्भुज की बात मानने से इन्कार कर दिया। चतुर्भुज ने राजा को विश्वास दिलाने के लिए कहा 'राजा साहब आपकी सौगंध मेरे पास ऐसा कोई धन नहीं है'। राजा को गुस्सा आ गया। उसने कहा 'एक तो झूठ बोलते हो, ऊपर से मेरी सौगंध खाते हो। निकल जाओ मेरे राज से।' उन दिनों राजा की झूठी सौगंध खाना एक दण्डनीय अपराध था। चतुर्भुज मन में तो जानते ही थे कि उन्होंने सौगंध झूठी खायी है उन्होंने सोचा कि राजा पीछे पड़ जायेगा तो एक न एक दिन गुप्त धन का भेद खुल जायेगा। धन तो देना ही पड़ेगा, दण्ड भी मिल सकता है। बेहतर है चूरू से और कहीं निकल चले। उन्ही दिनों रावदेवीसिंह नया नगर

बसाने कि सोच रहे थे। उन्होंने चतुर्भुज से सम्पर्क किया अथवा चतुर्भुज ने उन से सम्पर्क किया लेकिन दोनों को मुह मांगी मुराद मिल गई। ऊपर दी हुई कथाओं में से कोई भी सच हो इतना निश्चित है कि या तो रावदेवीसिंह ने चतुर्भुज को छूट और सुविधाओं का प्रलोभन दिया होगा अथवा चतुर्भुज ने छूट और सुविधायें मांगी होगी जिनको देवीसिंह ने स्वीकार किया होगा। देवीसिंह के पुत्र लक्ष्मणसिंह कहा करते थे कि "रामगढ़ में दुहाई म्हाकी छै, राज सेंठा को छै।"

II–डूँगजी की रामगढ़ के सेठों से मदद मांगना

डूंगजी, जवाहरजी, लोठू जाट, करणा मीणा की पार्टी (दल)दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी, अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने के लिए मन में पूरी ठान ली, लड़ने के लिए तैयार हो गये, मरने के लिए तैयार हो गये, मन में उत्साह हो गया हाथों में ताकत आ गयी। शरीर में गर्म खून उल्लास मार रहा था। परन्तु मनुष्यों के लिए अनाज नहीं था। ऊँट घोड़ों के लिए चारा पानी नहीं था। जो था सो खा गये थे। डूंगजी चिन्ता में पड़ गया। सोच विचार कर रामगढ के सेठों के पास लोठू जाट व करणा मीणा के द्वारा समाचार पहुँचाया कि हमने फिरंगियों को देश के बहार निकालने की योजना बनाई है। क्योंकि इन परदेशियों के यदि यहां पर पैर जम गये तो निकालना मुश्किल हो जायेगा। तथा यहां के लोगों का रोजगार खत्म हो जायेगा, और हमारा राज आपका व्यापार सभी इनके हाथ में चले जायेगें, और हम अपने देश में ही नौकर बनकर रह जायेंगे। इसलिए आप हमारी मदद करो हमारे घोडों और ऊँटों वास्तै दाना, घास आदि का प्रबंन्ध करो। जिस तरह से आप हमें देगें उसी तरह हम आपको वापस लौटा देंगे। रामगढ के सेठों ने मन में सोची की ये डाकू तो दो दिन की कूद-फांद करके रह जायेगें। अंग्रेजों के सामने व उनकी तोपों के आगे ये ठाकुर (बारोठिया) इतने है जो अंगुलियों पर गिने जा सकते है उनके सामने कितने दिन रूक सकते है। तथा उनका क्या बिगाड़ देंगे। यदि इनके साथ हो लिए तो हम सेठ और खराब हो जायेगे। इनको तो अंग्रेजों द्वारा पकड़ाने से पूरे कार्य सिद्ध हो सकते है। अंग्रेज तो उदय होते सूर्य के समान है! और ये छिपते सूर्य है। सेठों ने सहायता करने से मना

कर दिया और कहा ठाकुर साहब हम तो व्यापारी है हमे लड़ाई झगड़े से क्या काम। यदि अंग्रेजों को पता चल गया तो हमें मरवा देंगें उस समय ठाकुर साहब आप काम नहीं आवोगे। इस तरह सेठों ने मदद करने से मना कर दिया।

III–करणा राम मीणा व लोटू जाट के द्वारा रामगढ़ में जासूसी

लोटियो जाट करणियो मीणौ अकलां माय उजीर।
भेख पलट वे चल्या रामगढ जाणै छूट्यौ तीर।
लोटयो लिनी ढोलकी स कांई करण्यै लीनौ बांस।
घर घर घालै ख्याल तमासा घर घर भालै मार।
रामगढ के सेठां री वे लदी कतारां जाय।
सोना री पूतलिया मरदा मायं मूंगिया भार।
घुरसामलजी अणतामलजी वा सेठा रौ माल।
रामगढ सू चली कतारां अजमेरां न जायै।
लोटयो जाट करणियो मीणो हेरो दियौ लगाय।
लूटै छै तो लूट डूंगजी आडावलै रे माय।
आडावलौ डाकिया पाछै बस का रैसी नाय।।

अर्थात् :- लोटयो जाट व करणिया मीणा दोनों अक्ल में बहुत होशियार थे इनको डूंगजी ने रामगढ के सेठों के धन व अनाज की जासूसी हेतु रामगढ भेजा, वहां उन्होंने अपना भेष बदलकर लोटिया जाट ने तो ढोलकी ली व करणिया ने बांस लिया और रामगढ पहुँच गये और घर-घर जाकर ख्याल (नाटक) तमाशा दिखाते घूमने लगे। जासूसी में पता लगाया कि रामगढ के सेठों की कतारे (ऊँटो का सामान) लद कर जिनमें अनाज व खजाना लाद कर अजमेर ले जा रहे है तथा सोने की छड व पूतलिया मर्दो के पास मूगों से भरी कतार थी। रामगढ के सेठों में दो प्रमुख थे एक का नाम घुरसामल और दूसरे का ताम अणतमल था दोनों सेठ पेसै वाले थे। कम्पनी सरकार के गुर्गे थे उन्है देश के लोगों की कोई चिन्ता नही थी इनकी कतारों में जो माल अजमेर जा रहा था। उसकी जासूसी लगा ली थी। इस तरह पूरी जासूसी करके लोटयो जाट व करणा मीणा डूंगजी के पास आकर बताते है कि सरदार आडावल के पास लूटना है तो लूट लो वर्ना आडावल से कतार निकल गयी तो फिर मालहाथ नहीं आयेगा।

IV–दूर निमटण जाने का टैक्स

एक बार रामगढ का एक पोद्दार सेठ, नगर के बाहर टीबों में दूर निमटण को गया। उस जगह सरदार डूंगजी और उनके साथी करणिया मीणा लोठू जाट सांवता राम मिल गये। डूंगजी व उनकी रोबिली टीम को देखकर सेठ के पसीने छूट गये और सेठ जी उनको देखकर हक्के-बक्के रह गये। डूंगजी बोले सेठजी बाई की शादी के वास्ते रूपया की आवश्यकता है इसलिए आपसे थोड़े से रूपये चाहिए। सेठजी धूजते हूए बोले, यहां रूपया कहां है आप को रूपया ही चाहिए तो मेरी हवेली पर चलो वहां आपको रूपया मिल जायेगा। डूंगजी ने कहा कि वहां हमारे जैसे वीर लडाके पहरे दार बैठे है। युद्ध होगा मौते होंगी हम इसे टालना चाहते है। आप ऐसा करिये अपने मुनीम के नाम एक रूक्का लिखकर रकम देने का आदेश लिख दो। एक ठीकरी पर कोयला से रूपया देने की बात लिख दी डूंगजी का आदमी उस ठीकरी को लेकर हवेली पहुँचा। सेठजी के हाथ की लिखावट ठीकरी पर पढ़कर मुनीम जी ने उनको रूपये दे दीये। डूंगजी का आदमी रूपया लेकर आ गया। डूंगजी के पास रूपया पहुचते ही सेठजी को छोड़ दिया। सेठजी तुरन्त हवेली में पहुँचे तो मुनीम जी पूरी बात जानकर सेठजी से पूछ बैठा। सेठजी रूपया कौनसे खाते मे लिखू सेठजी थोड़ी देर सोच में पड़ गये फिर बोले यह रूपया दूर निमटण जाण वाला खाता में लिख द्यो। यह यहाँ के सेठों की उदारता व तुरत-फुरत निर्णय और हाजिर जवाबी नमूना है। इस तरह सेठजी से हुण्डी के माध्यम भी लेन देन करते थे।

V–सेठ घुरसामल व अणतमल के गोदाम लूटना

सन् 1837 के आस - पास जब अंग्रेजों द्वारा जनता पर अत्याचार बढ गये थे। डूंगजी व उनके साथी करणा मीणा , लोटू जाट सांवता मीणा जवाहर सिंह दुखी जनता की मदद करने के लिए आगे आये रामगढ सेठ घुरसामल और अणतमल अंग्रेजो के दवाब में थे। अकाल के समय जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। इन दोनों सेठों ने अनाज के गोदाम भर रखे थे। तथा अंग्रेजों की फौज वास्ते अनाज के बोरे अजमेर भेजने की तैयारी कर रखी थी।

परन्तु डूंगजी ने अपने साथियों सहित उस पूरे अनाज की कतारों पर एक साथ आक्रमण करके लूट लिया और भूखी जनता में उसका वितरण कर दिया इस प्रकार डूंगजी व उसके साथी जनता के दुख दर्द में हमेशा साथ निभाते थे।

VI–अंग्रेजों ने डूंगजी के दल को डाकू करार दिया

रामगढ के सेठों का काफिला जब लूट लिया गया, तब डूंगसिंह सांवता मीणा करणा मीणा लोठू जाट जवाहर सिंह सभी अपने साथियों सहित फरार हो गये। रामगढ के सेठों ने लूट की खबर अंग्रेज एजेन्ट के पास पहुँचाई। सेठों ने जोर देकर कहा " अंग्रेजों के राज में लूट होना काफी गंभीर मामला है। इन विद्रोहियों का मन बढ गया है कोई मजबूत कारवाई होनी चाहिए। हम आपके सेवक है आप हमारे मालिक है आप उन लुटेरों को पकड़कर कडी से कड़ी सजा दें। अंग्रेज सरकार ने रामगढ के सेठों की लूट को गंम्भीर माना। अंग्रेज कम्पनी ने डूंगरसिंह, लोठू जाट, सांवता मीणा, करणा मीणा और जवाहर सिंह को डाकू करार दिया। अंग्रेज एजेन्ट ने ऐलान किया कि ये सभी डाकू है। उन्हे पकड़ना प्रत्येक वफादार व्यक्ति का फर्ज है। पकड़ने वाले या पकड़वाने वाले को ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ओर से तौहफा दिया जायेगा। कम्पनी के वफादार लोग डाकूओं की खोज में लग गये।

VII–सेंठों का बड़े अंग्रेज साहब को पत्र लिखना

रामगढ का सेठानै जद खबर पड़ी है जाय।
सेठां लिख परवानो भेज्यौ दिल्ली रे दरबार।
लूटी म्हांरी लदी कतांरा लूटयो नौ लख माल।
म्हारी धरा में हिल्यो डूंगजी लूट लूट के खाय।
अबकै तो बै लूटी कतारां अब लूटेगा हेली।
आसामी ठस पड़गी होगी रूपिया की धेली।
सेठां लिख परवानो भेज्यो बड़ै साब नै देणा।
डूंगसिंह म्हारे लारै पडग्यो पकड़ कैद र लेणा।

अर्थात् :- रामगढ के सेठों को जब खबर पड़ी तो सेठों ने एक पत्र लिखकर दिल्ली के दरबार में (अंग्रेजों के पास) भेजा। हमारी लदी हूई कतारों को लूट लिया, नौ लाख का माल लूट लिया, यह डूंगजी हमारी धरती से परच गया है,

इसे लूट-लूट कर खाता है इस बार तो उसने कतारें लूटी है, अब की बार तो हवेली को भी लूट लेगा, आसामियां सब ठस पड़ गयी है, रूपये की धेली रह गयी है। इस प्रकार पत्र लिखकर सेठों ने भेजा और कहा ले जाकर बडे साहब को देना और कहना डूंगसिंह हमारे पीछे पड़ गया है, इसे पकड़कर कैद कर लेना।

VIII–संवाद:- डूंगजी, सेठजी और अंग्रेज अफसर के बीच वार्ता

-सेठ-

इसड़ी मुख सूं मतना भाखो दिल में बात बात विचार।
टोपी वालौ तपै फिरंगी इण में फरक न फार।
कितराई डाकू गेरया कैद में छीन छीन हथियार।
छीन लिया हथियार के मुस्कल छूटणा।
ओ अंग्रेरजा रौ माल निगै कर लूटणा।

- डूंगजी-

लूटया बिना जाण नी पावै धीमौ बोल किराड़।
बीकानेर, जोधपुर, जैपुर राणै की मेवाड।
जो कोई अडयो मेरे सूं जड सूं दियौ उखाड़।
जड सूं दियो उखाडं जगत छानी नहीं।
अग्रेजां की आणेदा मानी नहीं।

- अंग्रेज-

अेसा जुल्मी कुण है जगत में देख्या सूणया न कान।
मेरे बिना हुक्म नी चालै दरखत का इकपान।
कुण से मूलक का रेवण वाला, कांई है बी को नाम।
अैक पलक में सर करूं म्है सगलौ हिन्दुंस्तान।

IX–डूंगजी के दल द्वारा नारी का सम्मान

डूंगजी का दल कहीं भी डाका डालता था वहां स्त्री जाति का बड़ा सम्मान करता था। किसी पराई स्त्री की ओर आँख उठाकर नहीं देखते थे। जिस घर में जाते थे वहाँ उस घर की महिलाओं को बाई या माँ के सम्बोधन से ही पुकारा करते थे। जिस घर में डाका मारते वहां कभी महिलाओं

को परेशान नहीं किया। ये सभी डाकू जहां भी गये और लूट-पाट की नारी जाति के सम्मान का पूरा ध्यान रखा। अंग्रेजों की छावनी लूटते समय अंग्रेज अधिकारियों को निर्ममता से मारा पीटा और वध भी कर दिया पर उनकी औरत को जीवनदान दिया। इसी तरह सेठों को खूब लूटा उनको अपमानित करने में कोई कसर नही छोड़ी, परन्तु उनकी सेठानियों को परेशानियां नहीं आने दी और यहां तक उनके विनती करने से सेठों को छोड़ जाते थे।

X–सेठों के द्वारा डूंगजी की जासूसी

रामगढ के सेठों को जब इस बात का पता लगा कि डूंगजी अपनी ससुराल झड़वासा में है। उन्होंने भी शीघ्र अजमेर एक सन्देश वाहक के हाथ सन्देश भेजा तब हवा से बात करने वाली ऊँटीनियां हुआ करती थी। एक अच्छे ऊँट सवार को ऊँटनी देकर सेठों ने दूत के रूप में एक व्यक्ति को अजमेर भेजा जो अजमेर पहुँच कर अंग्रेज अफसर को डूंगजी के विषय में सारी जानकारी दी। जिस पर अंग्रेज अधिकारी हिन्दुस्तानी फौज के साथ चल पड़े। वे जितना जल्दी हो सके झड़वास पहुँचे। अंग्रेजों ने कोई शोर गुल नहीं किया सारी कार्यवाई गुप्त रखी थी।

XI–डूंगजी के दल द्वारा सेठों के साथ दो दो हाथ

रामगढ में घणा जुझारा कोईनी धन की टोट जी।
रामगढी लाखीणो लूटी, सोल्हा पकड़या सेठ जी।
दीन दुख्या को रगत चूस कै, व्हैरया मोटा पेट जी।
जाड़ा जाडा देख वाण्यिां, ज्यां पर धरी वेगार जी।
काको काको करे सेठ जी, धन लेले मत मार जी।
घुरसामाल जी अणतामलजी, नगर सेठ को माल जी।
हाथ जोड़ अर कवे बापणी,बकसो दीन दयाल जी।
आला वेंत की उड़े कामड़ी, गोरी चमड़ी मांय जी।
आड्या खावे करे तमासा,अतरी हीम्मत नाय जी।
सेठा की सेठाण्या बोली,सुणो डूंगजी वात जी।
अतरी मार खमी नी जावे, काची वाण्या जात जी।
सेठा की रे भला रांघड़ा इज्जत मती बगाड़जी।

थने ओलखे भलो मालवो,सगलो मारवाड़ जी।
अणी खूट ती वणी खूंट तक गाज्यो बाज्यो डूंगजी।
ऊंटा का असवार राघड़ा,माफी बक्शो डूंगजी।
धन दौलत को भूखो व्हे तो, पाछा घर ने चाल जी।
रत्ना को न्यौछावर कर द्या माणक सोना थाल जी।
मोत्या का तो ऊँट लदा देऊँ,घरा ने दे दूं सीख जी।
सेठा की सेठाणियां ऊपर करो दया छन्नीक जी।
बीजवाड़ का बीड़ माइने वाण्या ने दै दी सीख जी।
छूट महाजन केवा लागा,सुणो डूंगजी वात जी।
कांकड़ कर दी फारवती पण पछे वतावां हात जी।
थू मत जाण कोरो वाण्यो अंग्रेजां में पायो जी।
तीन दना में पकड़ मंगा दूं जद बणियाणी जायोजी।

अर्थात् :- रामगढ़ में लड़ने वाले कोई नहीं है और वहां धन की कमी नहीं है। रामगढ लाख रूपयो वाली लूटी, वहां से सोलह सेठों को पकड़ा, वो सेठ गरीबों, दुखियारों का खून चूस - चूस कर मोटे पेट कर रखे थे। मोटा पैसे वाले बणिया देखकर उनसे धन प्राप्त करने की पेशकश की,सेठजी डूंगजी को काका - काका कर रहे थे और कह रहे थे कि आप धन भी लूट रहे हो और पीट भी रहे हो,इसलिए मारो मत,रामगढ़ के घूसामलजी अणतामलजी नगर सेठ का माल था। दोनों बणियां हाथ जोड़कर डूंगजी को कह रहे है कि काकाजी दीनदयालजी दुखियों के सहारे हम को बक्सो,डूंगजी ने आला बेत की एक लकड़ी (चामटी) ली और सेठों की गोरी पीठ पर मार करने लग गये और सेठों के एक दो चामटी मारी तो वे उछल कूद करने लग गये। सेठों की सेठानियां बोली सुणो डूंगजी म्हारी बात जी, इतनी मार सेठ जी सहन नहीं कर सकते इनकी काया कोमल है। सेठजी कह रहे है कि ठाकुर साहब म्हारी इज्जत मत बिगाड़ो, डूंगजी चारों कूटों (दिशाओं) में आपका डंका बजता है। हे ऊँटो के असवार ठाकुर साहब हमें माफ करो। यदि आप को धन दौलत की जरूरत हो तो हमारे घर चलो वहां रत्नो की वर्षा कर देंगे तथा माणक मोतियों के थाल भर देंगे व मोतियों के ऊँटो की कतार भर देंगे, परन्तु सेठों की इज्जत बख्शो

तथा आप सेठों की सेठाणियों पर थोड़ी दया करो, बीजवाड़ के जंगल में वणियो को शिक्षा दे दी, वहां से सेठ लोग छूट कर कहने लगे डूंगजी आप हमें कांकड़ के बाहर होने दो उसके बाद में आपको समझेंगे! आप यह मत समझो की हम निरे वणिक ही है। हमारी पैठ अंग्रेजों में बहुत ज्यादा है। तुझे तीन दिन में पकड़ कर नहीं ला दूं तो बणियाणी का बेटा मत समझना।

XII-डूंगजी द्वारा सेठों को धमकाना

डूंगजी अपने साथी करणा मीणा, सांवता मीणा और लोठू राम जाट के साथ घोड़ा दौड़ाता हुआ सीकर से रामगढ आया। मीणा बोला डूंगजी ये सेठ ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भक्त है और ये आप पर गुस्सा हो रहे है। हम लोग यहां आ गये इनसे दो बात करते चले। ये सेठ फिरंगियों से मिले हुए हैं। ये सेठ चोर और अंग्रेज चोर दोनों मिलकर देश को चूंट खा गये है। घोड़ों की कतार गांव की तरफ मोड़ ली। डूंगजी को गांव में आते देख कर सेठ कांप गये। सेठ अपने बही खातों का काम कर रहे थे लेकिन डाकुओं को देखकर उनके हाथों से बही व कलम छूट गये और सेठों की हवेलियों में सन्नाटा छा गया। डूंगजी अपने साथियों सहित बाजार के बीच में आकर दहाड़ मारी और कहा फिरंगियों के लाड़ले पुत्रो अब बाहर आओ। डूंगजी बाहर खड़ा है। बुला लावो तुम्हारे हिमाइतियों को यदि उन फिरंगियों में हिम्मत है तो हमें पकड़ कर दिखाएं। डूंगजी के डर से सेठों की धोतियां कमर से खिसक गई और धोती खराब हो गई। सेठों ने हाथ जोड़ डूंगजी के पैर पकड़ लिये और बोले ठाकुर सा हम तो आपके ही है। डूंगजी सोळह सेठां ने पकड़ धमकाया जो रूपये वाले थे। बाजार में सफाया हो गया चारों तरफ सन्नटा छा गया। एक दो बूढे सेठों ने हवेली में सेठाणियों से कहा कि तुम जाओ और डूंगजी से अरदास करो वह औरतों पर हाथ नहीं उठाता है और सेठाणियों यदि हाथ जोड़कर खड़ी हो जाये तो डूंगजी का गुस्सा ठण्डा पड़ जायेगा। बुजुर्ग सेठों की बात मानकर सेठाणियां डूंगजी के सामने जाकर हाथ जोड़कर खड़ी हो गई और कहा कि ठाकुर आप ही हमारे मालिक हो। हमें फिंरगियों से क्या लेना देना। हम तो आपके पांव की रेत हैं। हम तो आपके भरोसे ही यहां रामगढ में बसे हुए हैं। हमारा गुनाह माफ करो। सेठाणियां डूंगजी के पैरों में गिर पड़ी और हाथ जोड़ खड़ी हो गई।

डूंगजी का गुस्सा ठण्डा हो गया और सेठों को छोड़ दिया। सेठ अपने आप को दूसरा जन्म लिया हुआ मान रहे थे और घोड़ा की वाण पकड़ और डूंगजी के पगड़ी रख कर मनुवारा करने लगे और कहने लगे डूंगजी आप गोठ करके ही जाना।

XIII– अग्रवाल सेठों के डकेती डालना

अन्त में आगरा दुर्ग से मुक्त होने के कुछ समय पश्चात् सीकर राज्य के सेठों के रामगढ के धनाढय सेठ अनंत राम, घुर्सामल पोद्दार गोत्र के अग्रवाल वेश्यो से पन्द्रह हजार की नगद राशि प्राप्त कर ऊँट,घोड़े और अस्त्र-शस्त्रों की खरीद कर राजस्थान के मध्य में अजमेर के निकट सैनिक छावनी नसीराबाद पर आक्रमण किया। शेखावाटी, बीकानेर और मारवाड़ के अंग्रेज विरोधी वीरों को सुनिश्चित स्थान समय तथा कार्यक्रम की सूचना देकर ठाकुर जवाहरसिंह व डूंगर सिंह अपने साथी करणा मीणा व लोठूजाट के साथ बठौठ पाटोदा से प्रस्थान किया। अंग्रेजों के आदेश पर बीकानेर नरेश रतन सिंह ने शाह केशरीमल को डूंगसिंह को पकड़ने के लिए सेना देकर भेजा। बीकानेर के पूंगल तथा बरसलपुर के पास दोनों पक्षो में मुठभेड़ हुई उसमें नव विद्रोही पकड़े गए और शेष लड़ते हुए सेना को चीर कर निकल गए।

34–नसीराबाद छावनी में डाका

राजस्थान के अजमेर जिले के नसीराबाद में पूरे राजपूताना में निगरानी रखने हेतु फौजी छावनी का गढन किया। इसका बनाने का मुख्य लक्ष्य यही था कि इसके जोर से पूरे प्रदेश में अंग्रेजों का दबदबा कायम रह सके। यह फौजी छावनी राजस्थान में अंग्रेजों की शक्ति का प्रतीक थी। स्वंतत्रता सेनानी डूंगजी, जवाहरजी, सांवताराम मीणा, करणाराम मीणा और लोठू जाट आदि ने अंग्रेजों की बेइज्जती करने और उनका मनोबल गिराने वास्ते छावनी लूटने की योजना बनाई। इस योजना के लिए धन की जरूरत पड़ी तो इसके लिए रामगढ के सेठ मायापत, अनंत राम, घुसीमत पोद्धार के पास से एक हजार रूपिया लिया और इस धन से ऊँट, घोड़ा और हथियार आदि मोल लिये। लोठू जाट, करणा मीणा नट के वेश में नसीराबाद शहर में प्रवेश कर गए। ढोलक व बांस लिए खेल-तमाशा करने गली-गली घूमे व

अन्त में छावनी में पहुँच गए। जिसको भोपों ने गाया है:-

अलयां गलयां मीणा फिरगा सुवा बाजरा जाट।
शैल डूबती माया देखी, अंग्रेजों के पास।
तेरह देख्या खड्या सन्तरी पन्द्रह खड़े पहरेदार।
नंगी तलवार हाथ में पहरो बड़ो होशियार।

अर्थात्:- छावनी की गलियों में करणा मीणा ने जासूसी की जबकि लोठू जाट ने खुले बाजार में, उन्होंने अंग्रेजों के पास आलमारियां धन की भरी देखी धन के चारों तरफ सन्तरी व सैनिक खड़े थे। उनके हाथों में तलवार व बन्दूकें थी। रोकड़ रूपयों से बक्से भरे थे व सोने के बिस्कुटों व मोहरों से लॉकर्स भरे थे। सोने की पुतली देखी, रोकड़ भरी मंजूस कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच लोठू व करणा मीणा ने छावनी की सारी जासूसी ली। खजाने तक जाने का रास्ता व सुरक्षा प्रहरियों को देख लिया। नसीराबाद रेलवे स्टेशन को भी अच्छी तरह से देखा। दोनों धरती पुत्र वापिस डेरे में लौटे। इन्हें ना राज की भूख थी ना ही नाम की। इनका मकसद दुश्मन को हिन्दुस्तान की धरती से भगाना था। दोनों ने सारी छावनी की जासूसी की। छावनी लूटना मामूली खेल नहीं था। नसीराबाद के आक्रमण में सेनानियों ने तीन समूहों में विभिन्नदिशाओं से कूच किया था।

एक दल शेखावाटी की ओर से प्रस्थान कर जयपुर राज्य के मालपुरा खण्ड से होते हुए रात्रि को डिग्गी ठिकाने के ग्राम में ठहरा और वहां से प्रस्थान कर किशनगढ़ राज्य के करकेड़ी, रामसर होता हुआ नसीराबाद पहुँचा। डिग्गी ठिकाने के ग्राम में रात्रि विश्राम करने के कारण अंग्रेजों ने डिग्गी के ठाकुर मेघसिंह के दो ग्राम जप्त कर लिए थे। दूसरा मारवाड़ की ओर का दल अजमेर नांद रामपुरा, पिसांगन होता हुआ मसूदा के पास से गुजरा और तीसरा दल मेवाड़ के बनेड़ा के वनों से निकल कर नसीराबाद आया। तीनों दल जिनके पास एक सौ ऊँट और चार सौ घोड़े थे। तीनों मिल कर अर्द्धनिशा में जनरल ब्यौरसा द्वारा सुरक्षित छावनी पर धावा मारा और छावनी के प्रहरियों में से छह को मारा तथा सात को गिरफ्तार कर बक्षीखाने के कोष से कोई 27000 रूपये लूट लिए। सेना के तम्बू जला दिए,यह राशि सैनिकों को वेतन

चुकाने के लिए एक दिन पूर्व नसीराबाद छावनी के कोष में जमा हुई थी, यू लूट मार कर जांगड़ी दोहों के सस्वर बोल सुनाते हुए शाहपुरा राज्य के प्रसिद्ध माताजी के मन्दिर धनोष में देवी के द्रव्य भेंट कर मेवाड़, मारवाड़, सांभर तथा नावां की ओर यत्र-तत्र निकल गए। नसीराबाद के आक्रमण में स्वतंत्रता सेनानियों में दूजोद का कालूसिंह चांद सिहोल भी शामिल था। नसीराबाद के सरकारी खजाने की लूट की रकम सीकर दरबार को अदा करनी पड़ी थी। विरोधी दल को बिखेरने की साजिश रचने लगे। जिसके लिए आदेश निकाल दिया कि छावनी लूट से उनकी जीत पर डूंगजी, सांवता मीणा, करणा मीणा, जवाहरजी, लोठू जाट का नाम चारों दिशाओं में गूंजने लगा। जनता में खुशी की लहर छा गयी। कवि तथा लोक कलाकारों द्वारा उनकी प्रशंसा भरे गीत गाये जाने लगे। चारण भाट घर-घर जाकर उनकी यश गाथा जन-जन तक पहुँचाने का काम करने लगे। देशी रजवाड़ों में डर बैठ गया तथा अंग्रेज इनके नाम से कांपने लगे। नसीराबाद छावनी लूटने से अंग्रेजो की इज्जत आबरू मिट्टी में मिल गई, राजस्थान से उनकी पैठ भी खराब हो गयी छावनी की लूट से कम्पनी के अधिकारी बहुत ही अधिक घबरा गये।

35–अजमेर का प्रथम सुपरिटेन्डेन्ट कर्नल निक्सन

25 जून 1818 ई को ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराजा आली जाह सिंधिया के मध्य हुई संधि के अनुसार अजमेर अंग्रेजों को प्राप्त हुआ। अगले माह अंग्रेजों ने अजमेर का कार्यभार सम्भाला उन्होंने अजमेर शहर को वीरान पाया। मराठों व पिंडारियों के अत्याचारों और दमन के कारण इसकी हालत अत्यन्त दयनीय हो गई थी। अजमेर का प्रथम सुपररिटेन्डेन्ट कर्नल निक्सन था। जिसने केवल 9 दिनों तक काम किया। उसके बाद फ्रांशिश विल्डर अजमेर का सुपरिटेन्डेन्ट बना। चूंकि अंग्रेज मूलतः व्यापारी थे और आर्थिक समृद्धि के लिए व्यापार की बढ़ोतरी को अत्यावश्यक मानते थे। इसलिए विल्डर ने कार्यभार सम्भालते ही अजमेर को एक व्यापारिक केन्द्र बनाने की दिशा में प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये। अजमेर को व्यापारिक मण्डी का रूप देने के लिए उसने देशी राज्यों में बसने वाले समृद्ध व्यापारियों को अजमेर में आकर बसने एवं कारोबार करने के लिए प्रोत्साहित किया। एक कागज

गुरसहायमल मिजमिल के नाम से रामगढ़ लिखा गया है। जिसमें इनके अजमेर आने के समाचार पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए सरकार की ओर से दो सवार इन्हें लाने हेतु भेजे गये थे। वो इस प्रकार था। थे लिखो मुकर मी. चेत बद 2 ने वासते मुलाकत हुजूर में अजमेर कानी रवाना होंसा अर अजमेर में रहकर दिसावर को गेलो जारी करसां, सो जाहर हुवो अर हजूर को मिजाज थांकी कोसिस वा दौलत खुवाई से बहोत खुश हुवो अर सवार दो थाकी साथ वास्ते सरकार से भेज्या छै। सो या सवांरा कै साथै खातर जमां सू सवार होय हजूर में हाजर होज्यो। उस समय तक राजस्थान के अधिकांश राजा अंग्रेज ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ आधीन संधियो में बंध चुके थे। अतः एक कागज जमा खातिरी के रूप में मिर्जामल को लिखा गया है कि निर्भय होकर कहीं भी जाए व्यापार करें। उन्हें कोई क्षति नहीं पहुँचायेगा और यदि कोई ऐसा करेगा तो सरकार की ओर से उसका बदला लिया जाएगा। कागज 24 मई 1822 को लिखा गया है। जिस पर विल्डर की मोहर व हस्ताक्षर है। मिर्जामल जिस स्थान में अपनी दुकानें खोलते थे, प्रायः वहां के राजा या पदाधिकारी से पहले ही अपनी शर्तें तय कर लेते थे। वे लिखित रूप मे अपनी शर्तें पेश करते थे और उनकी स्वीकृति के ढंग से संतुष्ट होने पर ही वे अपनी दुकान वहां स्थापित करते थे।

इस प्रकार के कई शर्तनामे, उन पर दिये गये आदेशों सहित संग्रह में मिले है। मिर्जामिल व उनके भतीजे हरभगत की और से दिनांक 20 दिसम्बर 1822 ई. को विल्डर के समक्ष भी 10 शर्तो वाला एक शर्तनामा प्रस्तुत किया गया था। जिसकी सभी शर्तें संतोषजनक ढंग से स्वीकार करके उन पर यथोचित आदेश दिया गया था और शर्तनामे में सबसे ऊपर पुनः लिखा गया था, हुक्म हुआ कि सारे निम्नलिखित मतालिब ताजिबुलअर्ज तुम्हारे तथा तुम्हारी बिरादरी, कबाईल आदि के अजमेर जाने आदि के बाद सब स्वीकृत दिनांक 29 दिसंम्बर 1822 ई. शर्तनाम पर महकमे की बड़ी गोल मोहर व हस्ताक्षर है। विल्डर की ओर से अन्य अंग्रेज पदाधिकारियों को लिखे गये पत्रों से ज्ञात होता है कि मिर्जामल ने अजमेर में कई दुकानें खोली थी और अजमेर की व्यापारिक उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न किया था (संग्रह की मोटी बही

के अनुसार अजमेर में मिर्जामल की चार दुकानें व दो नोहरे थे) फ्रांशिश विल्डर के बाद हेनरी मिडलटन उसके स्थान पर नियुक्त हुआ। मिडलटन के भी बहुत से कागजात संग्रह में है जिनसे ज्ञात होता है कि उसके साथ भी मिर्जामल के घनिष्ठ व मधुर संबंध रहे।

सन् सत्तावन सूं पे ली ई अे जोत जगावण वाला हा।
आजादी वाले दिवले री बलती लौ रा रखवाला हा।
जा जगां जगां छापा मारया, सिरकार कंपनी धूजै ही।
गोरा री जात डरी अेहड़ी ईसा मरियम नै पूजै ही।
बरसा लग जूझया बैरया सूं धरती पर अमर नाम कियौ
चक्कर खागा फिरंगीड़ा, जद हिला नसीराबाद दियौ।

36–भैरू सिंह झड़वासा

डूंगजी अपने साथियों के साथ नसीराबाद लूटने व पुष्कर जाने के उपरान्त सभी लोग वापिस बठोठ आ रहे थे। परन्तु जवाहरजी का दल दूसरी तरफ चला गया। डूंगजी का दल एक तरफ चल रहा था। अजमेर व बठोठ के रास्ते में झड़वासा गांव पड़ता था। जिससे डूंगजी ने अपने साथियों से कहा आप सभी घर चलो मैं तो मेरी सुसराल जा कर आऊँगा मुझे काफी दिन हो गये सुसराल गये और मेरा साला भैरूसिंह बहुत नाराज हो रहा है। इसलिए आप बठोठ चलो। करणा मीणा व लोठू जाट उसके परम मित्र एक साथ बोले सरदार आप झड़वासा मत जाओ आपका साला भैरूसिंह बहुत धूर्त है वह इन्सान नहीं है वह हैवान है। आप हमारा कहना मान जाओ और गांव चले चलो परन्तु डूंगजी ने एक भी साथी की बात नहीं मानी और अपने साथियों का साथ छोड़कर झड़वासा के लिए रवाना हो गया। झड़वासा की सीमा आ गयी। डूंगजी ने चारों तरफ देखा गमछे से अपना चेहरा पोंछा। अपनी बड़ी-बड़ी मूछें पर बल दिये। फिर वे अपने सुसराल की और बढ गये। जब डूंगजी सुसराल पहुँचा तब तक उसके साले भैरूसिंह ने उसकी बड़ी अगवानी की आदर भाव से अपने भवन में ले गया। वहां ढोलनियों ने बधाई गीत गाये। भैरू सिंह ने डूंगजी से कहा धन्य भाग्य हैं। हमारे कि आप यहां पधारे। अब मै आपको यहां से जल्दी नहीं जाने दूँगा फिरंगियों से लड़ते-लड़ते आप थक गए है कुछ दिन

यहीं आराम करिए! " भैरूसिंह जी! लड़ना तो वीरों का काम है। लड़कर मर जाना वीरो का धर्म है। फिर इन फिरंगियों ने बड़ा ही बाबेला मचा रखा है। मै इनको वापस सात समन्दर पार भेजकर ही दम लूंगा। इनके खिलाफ का नारा सारे हिन्दुस्तान का नारा होना चाहिए कि इन फिरंगियों को देश से बाहर निकालो मै समझता हूँ इससे हम गुलाम कभी नहीं बनेगें" हम संगठित होकर स्वतंत्रता पा लेंगे । भैरूसिंह अंग्रेजों से भयभीत था वह उनका चमचा था। चापलूस था। गुर्गा भी था। वह लालची बहुत था। वह रूपया देखते ही अपना धर्म और कर्तव्य भूल जाता था। अंग्रेजों की वह यदाकदा जासूसी भी करता था। वह गंभीर होकर बोला "पर बहनोई सा अंग्रेजों का सामना करना बहुत कठिन है उनके साथ राजपूताने के बड़े-बड़े राजा महाराजा है। उनके पास तोपें है, आप उनसे कैसे लड़ेगे।

डूंगजी ने भैरूसिंह से कहा "हजारों चूहों को एक बिल्ली भगा देती है। बड़ी संख्या से युद्ध नहीं होते। युद्ध होते है -शक्ति और बुद्धि से! मै आपको साफ-साफ बताये देता हूँ कि फिरंगियों के अच्छे इरादे नहीं है। वे हमारी मातृभूमि को बेड़ियों में जकड़कर हमें गुलाम बनाना चाहते है। यह हमारी धरती माँ को भूखा बना डालेंगे। जिस जाति का कोई चरित्र नहीं है, कोई नैतिकता नहीं है, वह शक्तिशाली होते भी राक्षस हो जाती है। भैरूसिंह डूंगजी के भीतर की आग को समझ गया वह आशंकाओं से घिरकर बोला "बहनोई सा, आप उनसे नहीं लड सकते। वे बड़े शक्तिशाली है। मै लडूँगां और जरूर लडूगा अब तो इनके विरूद्ध जगह-जगह घृणा भी फैला गयी है। यह घृणा जल्दी ही आग की ज्वाला बनकर इन फिरंगियों को जलाकर राख कर देगी। आप स्वतत्रंता की आग को नही पहचानते यदि वह हृदय में एक बार जल जाती है तो शत्रु को राख बना देती है। आप अपनी न सोचकर सारे देश की सोच रहे है। मेरी समझ में यह ठीक नहीं है। साले सा। यदि वीर और बुद्धिमान आदमी अपने बारे में सोचता रहे तो फिर उसमें और जानवर में क्या अन्तर रह जाता है। भैरू चुप हो गया। वह अंग्रेजों से बहुत ही डरता था। उसे बार-बार लग रहा था कि कही अंग्रेज सेना लेकर उसके गांव में न आ धमके अंग्रेज सेना आ गयी तो उसके डेरे की ईंट से ईंट बजा देगी।

I–झड़वासा में अंग्रेजों द्वारा डूगसिंह को पकड़ने की योजना बनाना

बड़ा साहब बैढयो कुर्सी पर, बोल न बोल्यो जाय।
डूंगसिंह की धाड़ ढाबवा की तरकीब लगाय जी।
ये जड़वासा का हलकारा की सुणता हगरी वात जी।
लाट साहब ने वार न लागो कढे लगाणी घात जी।
भड़ भड़ कागज बांचता चढया रसाला चार जी।
आधी राखी छावणी, घड़ी घड़ी तैयार जी।
रात रात की कीदी मंजिल चाल्या एकज तार जी।
चाली एकज तार पलटणा पेदल ने असवार जी।
सीकर को परताप सींघ जी, डूंगसिंघ को काको जी।
जड़वासा की गेल बताड़ी बता दिया सब नाका जी।
एक जीव के कारणे फौजा चढी हजार जी।
धिक भैरूसींघ गौड़ करायो, रजपूती को कार जी।
पांच से तो कारी पलटण गोरा एक हजार जी।
गस्त मस्त घोड़ा की चढगी ऊँटा की भणकार जी।
बावन थाणा चढया रांघड़ा डूंगसिंह का नाम जी।
फौज चढगी लो हम गाती ऊजड़ करती गाँव जी।

अर्थात् :- बड़ा अफसर अपनी कुर्सी पर बैठा था और उसके मुँह से बोल नहीं निकल रहे थे। डूंगसिंह को पकड़ने लिए सभी सलाह मशविरा कर रहे थे व तरकीब लगा रहे थे कि किस प्रकार पकड़ा जाये। झड़वासा का हलकारा जब अंग्रेज को डूंगजी की बात बताई तब उनकी बात सुनकर बहुत क्रोध हुआ। कागज को फटाफट पढा गया और उसके बाद चार चौकीदार तैयार किये गये आधी छावनी की फौज तैयार की गई। सभी को समय के अनुसार तैयार किया गया। रात रात को मंजिल तय की सभी एक कतार में चल पड़े पूरी पलटन एक कतार से चल पड़े पैदल असवार सभी सीकर का प्रताप सिंह व डूंगसिंह का काका जी ने बताया की झड़वासा की ओर जाने के सभी रास्ते अंग्रेजों को बता दिए। सभी रास्तों पर फौज को लगा दिया। एक जीव के लिए एक हजार फौज चढा दी धिक्कार है भैरूसिंह ठाकुर गौड़ को जो रजपूती दूध को लजा दिया।

पांच तरह की तो फौज तैयार की और एक हजार अंग्रेज फौजें भेजी गई मस्त ऊँट घोड़ो की कतार चढगी जिसमें ऊँटो की आवाज डूगसिंह भणकार सुनाई दे रही थी। बावन थानों की पुलिस चढ़ गई डूगसिंह को पकड़ने के लिए फौज रास्ते मे पड़ने वाले गांवो को ऊजाड़ती जा रही थी।

II–अंग्रेजी सेना द्वारा झड़वासा को घेरना

एक सूचना के मुताबिक अंग्रेज अपनी फौज जिसमें हिन्दुस्तानी अधिकारी शामिल थे को साथ लेकर झड़ावासा पहुँचे। सैनिकों ने बिना शोर गुल किए सारी कार्यवाही बड़ी गुप्त रखी। एक गुप्त संदेश भैरूसिंह के पास पहुँचा। दूत ने उसे खबर दी कि अंग्रेज सेना ने झड़वासा को घेर लिया है। चारों ओर सिपाही फैल गये है। उन्होंने मजूबत घेरा डाल दिया है। भैरूसिंह ने जैसे ही यह खबर सुनी। उसका हौसला पस्त हो गया अपने को ठीक करने के लिए उसने अफीम खाई। ललाट पर से पसीना पोंछा। गुप्त दूत को हाथ जोड़कर कहा "आप अभी पधारो। मै रात के अंधेरे में गोरे साहब से मिलूंगा। उन्हें हाथ जोड़ मेरी तरफ से कहना कि वे मुझे न मारे ? मुझे कोई हानि न पहुँचाए। मैं तो उनका दास हूँ। दूत वापस चला गया। रात के अंधेरे में भैरूसिंह अंगेजों के तम्बू में पहूँचा। उसने मुजरा किया। अंग्रेज कर्नल ने अपनी मूछें पर ताव देकर कहा भैरूसिंह हम तुम्हारे झड़वासे की ईट से ईंट बजा देंगे। खेतों को जला डालेंगे। सारे ठिकाने को लूट लेंगे। भैरूसिंह! नहीं! बापजी नही, मेरा क्या कसूर है। भैरूसिहं गिड़गिडया। तुमने एक डाकू को अपने यहां पनाह दी है उसने कम्पनी सरकार का खजाना लूटा है। व्यापारियों का अनाज लूटा है। वह डाकू है हत्यारा है। उसने घृणा से कहा। साहब बहादूर जी मेरी भी सुनिए। वह डाकू मेरा बहनोई है" बहनोई हो या बाप, डाकू आखिर डाकू ही होता है। कर्नल ने गरज कर कहा सुनो भैरूसिंह हम तुमसे एक सौदा करना चाहते है। फरमाईये कर्नल ने अपने पास रखे एक संदूक को खोला। उसमें से सिक्को की थैली निकाली। उसे उसके सामने रख दिया। फिर कर्नल ने अपनी बदूंक उठायी। उसकी नली को उसकी छाती पर रखा। वह घृणा से बोला, काले आदमी, यदि तुम थैली नही लेगा तो हम तुम्हें और तुम्हारे सारे परिवार की गोलियों से भून देगा। मुझे क्या करना होगा ? भैरूसिंह! हाथ जोड़कर गोरे के

सामने नाक रगड़ने लगा। तुम डूंगजी को हमें पकड़वा दो हम तुम्हें मालामाल कर देंगे। साहब बहादुर से तुम्हें कोई अच्छा ठिकाना दिलवा देंगें। एक हिन्दुस्तानी अफसर ने कहा। अच्छा मैं कल रात उन्हें पकड़वा दूगां आप मुझे बर्बाद मत किजीए। तुमने डाकू को पकड़वा दिया तो हम तुम्हे खूब पैसा देगा। इज्जत देगा। कर्नल ने उसकी पीठ थप थपायी। आप मेरे इशारे का ध्यान रखिएगा लालची और कायर भैरूसिंह ने कहा मैं जैसे ही मशाल जलाऊ आप चुपचाप आ जाइयगा। तुम कम्पनी सरकार का वफादार आदमी हो। हम तुम्हें इनाम दिलाएगा। कर्नल ने उसे फिर लालच दिया। भैरूसिंह वापस अपने महल में आ गया।

III–अंग्रेजों द्वारा झड़वासे के भैरूसिंह को धमकी देना

सीकर हूँ बै चाली फौजां झड़वासै में आयी।
आसै पासै खड़या सिपाही घेरो दियो लगायी
झड़वासै का भैरूसिंहं तू झट दे बायर आव।
कै पकड़ा दै डूगं न्हार नहि धरा कैद के मांय।
रोळो वैधो मत करो कोई ना गलवै का काम।
जीजो लागै डूंगजी स मै हाथा दूं पकड़डाय।

अर्थात् :- तब वे फौजे सीकर से चली और झड़वासै में आयी आस-पास सिपाही खड़े हो गये, चारों और घेरा लगा दिया और कहा हे झड़वासे के भैरूसिंह झटपट बाहर आ या तो डूंगसिंह को हमें पकड़वा दे नहीं तो तुझे कैद में डालते है, भैरूसिंह बोला हल्ला-गुल्ला मत करो झगड़े झंझट का कोई काम नहीं डूंगजी मेरा जीजा लगता है अपने हाथो से उसे पकडवा दूंगा।

IV– भैरूसिंह व बिचोलिया के बीच वार्ता

जब भैरूसिंह के घर पर डूंगसिंह रूका हुआ था। भैरूसिंह को यह भी पता था की राज अंग्रेंजों का है। यदि डूंगसिंह का पता अग्रेंजो को चल गया तो वे मूझे छोड़ेगे नहीं यदि अंग्रेजों की फौज आ गयी तो पूरे शहर को चकना चूर कर देंगे। तब तेरा बहनोई तेरे काम नहीं आयेगा। भैरूसिंह मन में डरा परन्तु मूछें के आंटी देता हुए बोला मै कोई प्याज का छिलका नहीं हूँ। जो हवा की तरह उड़ जाऊँगा रजपूती का जाया हूँ राजपूतनी का दूध पिया है।

साथ में तलवार रखता हूँ। बीचोलिया कहता है, इतनी रजपूतानी बातों की डींग मत मारो आप इन मूछों पर आटी लगाना भूल जाओगे। यह तलवार कमर पर लटकती रह जायेगी। तेरे जैसे बहुत देखे हैं, राजपूतानी का दूध पिये हुए। अंग्रेजों के सामने बड़े-बड़े राजाओं ने घूटने टेक दिए है तेरी क्या औकात है, समय बहुत कम है। एक तोप का गोला आयेगा सब कुछ साफ हो जायेगा तेरे महल की एक भी ईट नजर नहीं आयेगी। इस तरह भैरूसिंह सोच में पड़ गया। मै तो तेरा भला चाहता हूँ। मौके का लाभ उठाओ अंग्रेजों का साथ दो और सुख पावो। यह कह कर बिचोलिया एक हजार रूपये की थैली भैरूसिंह के हाथ में थमा दी। रूपये की थैली हाथ में लेते ही भैरूसिंह के हाथ धूजने लगे व दबिया श्वास में बोला जीजा को पकड़ा कर कहाँ मुँह दिखाऊँगा। बिचोलिया ने कहा कौन कहता है तूम पकड़ावो अचानक फौज आकर पकड़ ले जाये तो आप क्या कर सकते हो। तो मै क्या करू? आप को कुछ नहीं करना फौज आपके घर से पकड़ ले जायेगी आप दूर रहना।

V–भैरूसिंह द्वारा झड़वासे में डूंगजी की मनुहार

झड़वासै का नौलसिंह जी भैरूसिंह जी घणी करी मनवार।
घणा दिनां सूं आया पावणा गोठ जीमता जाय।
दूधा धोये 'र' चावल रांध्या घिरता धोय र दाल।
बोरी भर भर खांड मंगायी घिरत चलाया खाल।

अर्थात् :-झडवासे के नवलसिंह और भैरूसिंह ने खूब अतिथि सत्कार किया। कहा पाहुने बहुत दिनां से आये हो, गोठ जीमते जाओ। दूध से धोकर चावल बनाये है घी से धोकर दाल बनाई है, बोरिया भर-भर कर शक्कर मंगायी और घी के नाले बहा दिये।

VI–भैरूसिंह द्वारा कलालण से नशीली शराब बनवाने की योजना

झडवासा का गौड भैरूड़े, दग्गो लियो विचार जी।
मुआ खेड़ी में घणा मऊडा, बूंदी घणां कलार जी।
उठ कल्लालण दारू दे दे, आक धतूरा जेर जी।
म्हाका आया जेरी पामणा , जेरी भट्टी गेर जी।
कल्लालण सुण केवा लागी, सुण लो ठाकुर वात जी।

धन माया की घणी लोभजी कल्लारां की जात जी।
डूगसिंह का खाया म्हाने आला गीला घास जी।
तू चावे तो भले मारले कर दे गाम निकाल जी।
डूगांसिघ को निम्मक पाणी पडया पेट के मांय जी।
मरणो तो मजूंर गौड़जी दगो करूंगी नाय जी।
कल्लालण तो नटगी साबत हाथा बण्या कलाल जी।

अर्थात् :- झड़वासे का भैरूसिंह गौड अपने मन में दग्गा विचार लिया इस गांव में कलाल बहुत ज्यादा थे। भैरूसिंह ने कलालण को कहा तुम उठो आकड़ा और धतूरा की शराब दे दो जो जहर की तरह हो। मेरे जीजाजी पावणा आया है जिनके लिए भट्टी लगा दो। कलालण बात सुन कर कहने लगी सुन लो ठाकुर मेरी बात जी। हम धन माया के बहुत लोभी होते है कलाल जाति के लोग, परन्तु डूंगसिंह का नमक मैने खाया है आज तक काफी माल लुटाया है। जिसमे माल मलीदा खाया है, भैरूसिंह तुम चाहो तो मुझे मार सकते हो अपने ठिकाने से निकाल सकते हो, मैने डूंगसिंह का नमक पानी खाया पिया है। जो मेरे पेट में अब तक है। मुझे मरना पसन्द है। परन्तु मै डूगसिंह से धोखा नहीं करूंगी। कलालण के मना करने पर खुद भैरूसिंह शराब लाने को तैयार होता है। भैरूसिंह के घर में शराब की भट्टी लगा रखी थी जिसमें बाँस की नाली में से शराब के टपके टपक रह थे। भट्टी में जलाने हेतु लकड़ी लाई हुई थी वो वही पड़ी थी। भट्टी में से एक लकड़ी खींच कर भैरूसिंह ने नौकर से कहा शराब निकलने की धार धीमी हो गयी है, जो पानी गर्म हो गया उसको बाहर निकाल। नौकर ने गर्म पानी निकाल कर उसमें ठण्डा पानी डाला, शराब की नाल में तर-तर शराब गिरने लगी। डूंगजी वहाँ आ गया और बोला। चाहे जो भी हो शराब तो हमारे यहां शेखावाटी के मेहणसर की है उसकी बराबरी नहीं कर सकती। इस भट्टी में से एक प्याला मुझे दिखाओ। उसको देखकर कहा यह शराब मेहणसर की शराब के नजदीक भी नहीं लग सकती। मेहणसर की शराब को जीभ पर रखते ही कालजे तक तीर की सी लगती है, देखा अब दिखाओ। यह तीसरा उफान आ रहा है, दिखाओ कैसा है? भट्टी नाल में सगर्म-गर्म धार का प्याला भर डूंगजी ने एक घूंट भर कर भट्टी के पास बैठ गया।

पूरा प्याला भरा हुआ डूंगजी के सामने रखा गया। डूंगजी ने कहा अच्छा है।

भोपाओं द्वारा गाया गया है:-

केवा को तो सालो लागे मन में घणो मलाल जी।
आक धतूरा घोटा ल्या ने, मन का काड़्या जेर जी।
राम धर्म ने भाटी मेल्यो, बोतल भर ल्यो वेरजी।
बोर जड़ी की फास लगाई, आंगण भट्टी जुड़ाई जी।
जाजम नाखी दरवाजा में सोबत घणी जड़ाई जी।
दो पड़दा की दारू बोतल, भैरूसिंह के हाथ जी।
ऊपर ती तो गीलो बोले, घणी कालजे घात जी।
भाई भतीजा बैठग्या जुड, एक लेण की लेण जी।
ढोलण बैठी मुजरो गावे मीठा मीठा वेण जी।
दूधा धोया चोका रांध्या, घिरता धोयी दाल जी।
भरी चंगेड़्या खांड उडेली घिरत निकालयो खाल जी।
साला जीजा जीमण बैठग्या गाई दग्या की बात जी।
कुवै कुवै पै चढी बोतला वैगी आधी रात जी।
एक प्यालो मदवो भरयो दूजे भर्‌यो जेर जी।
भाई भतीजे मदवो पावे डूंगसींह ने जेर जी।
जेर नसा को चड़वा लागो बढवा लागी रात जी।
सात बोतलां पाई जेर की करी देश की वात जी।
करी देस की बात जोड़ गोडा सूं गोडा बोल्ये जी।
मीठी मीठी बात करे जाणे कोई इमरत घोले जी।
साला जीजा साथ चलांगा लूटागा अजमेर जी।
दिल्ली लूटा, लूटा जोधपुर, लूटा बीकानेर जी।
मार काट के अंग्रेजा ने कर दे पेले पार जी।
म्हारा हगरा भाई भतीजा कर दू थाके लार जी।
सतरा बोतला खुटगी दारू नस्सा में भरपूर जी।
भाई भतीजा सप्पट भूल्या वै ग्या धूरम धूर जी।

ऊथल पुथल जाजम कर दी प्यालो नाख्यो फोड़ जी।
डूंगसिंह धुड़वाया लागा मचगी रापा रोल जी।
दारू में दग्यो घणो हीटा कर दे धुर जी।
नाहर ने हीयार बणा दे पीजो मती हजूर जी।
भंडूरा सीगति बगाड़े जीमण करे खराब जी।
भोपा की तो वीनती सुणजो माई बाप जी।
सुण लीजो सरदार बावलो वेयो पटोदा राव जी।
दग्गादार भैरूसिंह को चल ग्यो दगे डाव जी।
अंग्रेजो में धुड़क न्हारड़ो हज्जारा में एक जी।
ऊभी पलटणा लूट छावणी खडडग राखी टेक जी।
गेर गच्च वैग्या बावला मारवाड़ का वीर जी।
पीता पीता बेसुध वै ग्या नेणा वैग्या चोल जी।
मदमाल्यो वे डूगसीध बोले कई अटपट कोल जी।
जीजा चालो मेड़ी उपरे घणी करां मनुआर जी।
हाथ पकड़ मेड़ी पर लै ग्या तालो दी दो मार जी।
देख कोटड़ी घणी एकली पलंग दियो बिछाय जी।
डूंगसिंह की मसक्या बांधी दियो तुरत गुड़ाया जी।
छाने से कागज लिखड़ायो बड़ा लाट का पास जी।
थाकीं लूटी घणी छावणी ऊहे डूंगो खास जी।
म्हारी औट में डूंग धाड़वी हांथा दू बन्धवाय जी।
बेड़ी तो लीदी लूट छावनियां जण मै मेली लाय जी।
बड़ा लाट की बड़ी कम्पनी अदल चुकावे नाम जी।
डूगसिंह ने कैद कराई दूमल हजाती गाम जी।

अर्थात् :- भैरूसिंह गोड़ कहने का तो साला लगता है। परन्तु मन का बड़ा ही बेईमान है। शराब में आंकड़ा, धतूरा घोट लाया अपने मन से शराब को जहर की बना ली। धर्म कर्म सभी भूल गया यानि की पत्थर के नीचे दबा दिया और दुश्मनी की पूरी बोतल भर ली, तथा राम धर्म को भूल गया। झाड़ की जड़ का रांगजड़ लगाया और शराब निकालने के लिए अपने आंगन में भट्टी लगा

दी। अपने दरवाजा में जाजम लगा और मनुवार हेतु सभी को बुला लिया। दो पड़त की शराब की बोतल निकाल कर भैरूसिंह ने हाथ में ले रखी थी। ऊपर से तो मीठी मीठी बात करे परन्तु मन में बहुत ही ज्यादा बईमान चोर दिल का बुरा था जिसमें घात लगाये बैठा था गोड़ के भाई भतीजा सभी जाजम पर बैठ गये और एक लम्बी लाईन बनाली नाच गान करने वाली ढोलण अपना मुजरा कर रही थी तथा मीठी-मीठी वाणी में राग सुना रही थी। गीत गाने वाली जंवाई गीत गा रही थी। दूध से धोये चावल बनाये घी से दाल, धोकर बनाई दाल चावल बनने पर चवरी भरी खाण्ड डाली गयी और ऊपर घी भरकर डाला गया। साला जीजा भोजन करने बैठ गये और मन में धोखा करने की ठान ली। एक-एक व्यक्ति के हाथ में बोतल थमा दी शराब पीते-पीते आधी रात हो गई। भैरूसिंह एक गिलास में शराब डालता व दूसरे गिलास में जहरीली शराब डाल रहा था। अपने भाई बन्धुओं को शराब पिला रहा था तथा डूंगसिंह को जहरीली शराब पिला रहा था।

नशे का जहर चढ़ने लगा उधर रात भी बढ रही थी। सात बोतल जहरीली शराब की पिला दी साथ में ही दुनियां भर की फालतू बातें करते रहे। देश की बात करते-करते आपस में गोड़ा से गोड़ा मिला लिया। जीजा से मीठी मीठी बात कर रहा था ऐसे लग रहा था जैसे अमृत बरस रहा हो। कह रहा था साला जीजा साथ चलेंगे और अजमेर को लूटेगे तथा उसी के साथ दिल्ली लूटां जोधपुर लूटां तथा लूटां बीकानेर जी और अंग्रेजों को मार काट कर देश बाहर सात समन्दर पार भगा देंगे। मेरे सारे भाई बन्धु आपके साथ कर दूंगा। इस तरह बाते करते करते 17 बोतल शराब की पी गये। जिससे नशा भरपूर हो गया। भाई भतीजा सब को भूल गये और शराब के नशे में चूर हो गये। दारू के नशे में जाजम को ऊलट पलट कर और शराब का प्याला फोड़ दिया। डूगसिंहजी इधर-उधर पड़ने लगा और सारी सुध-बुध खो गया। शराब ऐसी चीज है। यह धोखा करवा देती है और हीरा को भी मिट्टी में मिला देती है। सिंह को सियार बना देती है। हे मालिक इसको कोई भी मत पीना। कुत्ते जैसी हालत बना देती है और भोजन करने जैसा छोड़ती नहीं है। दशा खराब कर देती है। भोपाओं ने गाया है कि म्हारी हाथ जोड़ कर विनती

है। इसको कोई मत पीना तुम सभी सुन लो शराब पीकर पाटोदा का सरदार पागल हो गया। भैरूसिंह दगा बाज का धोखा चल गया जबकि डुंगसिंह जी दहाड़ मारता है तो हजारों में अकेला नजर आता है। अंग्रेज की छावनी उनकी फौज के सामने लूटकर लाया था जिसमें डूंगजी के हथियारों ने बाजी रखी थी। परन्तु इतनी शराब पीकर मारवाड़ का यह सरदार पागल हो गया। जहरीली शराब पीये हुए व्यक्ति को नींद बहुत अच्छी आती है तथा नींद भी उसकी दुश्मन हो जाती है। शराब पीता पीता बेसुध हो गया और आंख उसकी लाल हो गयी। मदमस्त डूंगसिंह जी कई अटपटे सवाल जवाब कर रहा था। भैरूसिंह कह रहा था जीजा आप महल पर मेड़ी (चौबारा) बनी हुई है मेड़ी के भीतर चलो आपकी खातिरदारी बहुत अच्छी तरह करूगां। भैरूसिंह जीजा का हाथ पकड़ छत ऊपर बने कमरे में ले गया। वहां चारपाई पर लिटा कर सुला दिया तथा डूंगसिंह के हाथ पैर बाँध दिये और उसको तुरन्त लुड़का दिया तथा कमरे को ताला लगा दिया धीमे से अपनी जेब से कागज निकाला और अंग्रेज सरदार के पास भेजा। कि आपकी छावनी लूटने वाला डूगसिंह ऊंघ रहा है, वह मेरी शरण में पड़ा है आपको हाथ से पकड़ा दूंगा। इन्होंने बड़ी-बड़ी छावनियां लूटी है और जन-जन तक अपना नाम फैलाया। डूंगसिंह से ताकतवर और कोई नहीं है जो छावनी को लूट कर जा सकता है। बड़ा साहब की बड़ी कम्पनी जिसका नाम भी बड़ा है। मै डूंगसिंह को पकड़ा दूं तो मुझे हजार गाँव मिलने चाहिए।

VII–भैरूसिंह द्वारा डूंगजी के लिए मीट बनाना

भैरू सिंह व डूगंजी शराब पी रहे थे वहां दो चार सरदार और आ गये, बैठने को माचा लेकर सभी भट्टी के आस पास बैठ गये। शराब को सभी टेस्ट करने लगे। भैरूसिंह ने अपने छोटे भाई को बुलाया और कहा अब तक क्या कर रहा था जा जल्दी जा एक बकरा लेकर आ। जीजाजी के लिए ताजा मीट बनायें, उसने एक बढ़िया किस्म का बकरा लाकर खड़ा कर दिया। वह खाजरू मेहमानों के लिए ही तैयार किया हुआ था। बकरा देख शराब पीने वालो के मुँह में पानी आ गया लार टपकने लगी। हाँ बहुत बढिया चरा हुआ खाजरू है, अच्छा मांस निकलेगा। एक सरदार ने तलवार उठाई और बकरे के सिर पर मारी और खोपड़ी के दो ढेर हो गये। खाजरू एक मिनट

टांग-पूछड़ी हिला कर ठण्डा हो गया। एक सरदार ने उसकी खाल उत्तारी फिर दो व्यक्ति उसके मांस को छून्दने लगे। दो जने भट्टी में से आग निकालकर उसके सूला आग मे सेकने लगे दारू (शराब) से ही सूले अच्छे लग रहे थे। दमामणियां ढोल को लेकर आ गयी, और जवाई राजा के गीत गाने लग गयी और गर्म गर्म शराब घी से भरे हुए सूला करारे हो रह थे। चार गिलास शराब पीते ही आंखो मे रंगत आ गयी। भैरूसिह ने एक गिलास शराब का भर कर डूंगजी की ओर दे दिया तथा पांच रूपये दमामणियो को बक्सीस किये। फिर सभी सरदार डूंगजी को एक एक प्याला भर कर शराब देने लगे भैरूसिंह ने अपनी सौगन्ध देकर डूंगजी को काफी शराब पिला दी। जिससे डूंगजी के पैर लड़खड़ाने लगे। डूंगजी बोला बस रहने दो दुश्मन छाती पर घूम रहे हैं। भैरूसिंह ने कहा दुश्मन-दुश्मन घूमे दुश्मन की छाती पर। इस घर में ? यह भैरूसिंह का घर है। भैरूसिंह के जीते जी इस घर में कोई पैर नहीं दे सकता मेरी छाती के ऊपर से ही आगे बढ सकता है ऐसे एक पैर भी आगे नहीं बढ सकता। भैरूसिंह की यह गर्जना सुनते ही दूसरे सरदार भी बोले, इस गांव का नाम झड़वासा है झडवासा, हमारे मरने के उपरान्त ही कोई इसमें पैर दे सकता है ऐसे नहीं। फिर बोतल का डाटा खोलदिया प्याले फिरने लगे और डूंगजी जांगड़ दोहे कानों में अंगुली देकर गाने लगा। सभी ने फिर एक-एक प्याला डूंगजी को और दिया।

VIII- भैरूसिंह द्वारा डूगसिंह को हथकड़ी डलवाना

हाथ में हथकड़ी राब दी पांवन में पग बेड़ी जी।
तोख जंजीरा जड़या कमर में गळे पड़ी सुरनाय जी।
बा रे मण री सांकल गै री डावै पांव रै मांय जी।
नव जागा सू बाध्या सेर ने धरयो पींजरै इ मांय जी।
झटका लागा सांकला रा ने भड़के उडगी नींद जी।
रांड्या ठाकर भैरू सीध थे करी दगै री बात जी।
धरम डूबगो हिन्दू लोग रो करी दगै री बात जी।
काकड़ वालो सेर हतो थे दगै दियो पकड़ाय जी।
बंधा मरावो बाकरा स बे छूटा लड़ै सिरदार जी।

हाथन की हथकड़ी झाड़ म्हारी पांवन की पगबेड़ी जी।
हेक घड़ी री छूटी दे तू देख सेर का इ हाथ जी।

अर्थात् :- हाथों में हथकड़ी लगा दी, पांवो में पग बैड़ी जी कमर में तोख जंजीर लगा दी और गले मे सुरनाल डाल दी बारह मण की सांकल डूंगजी के बाँये पैर में लगा दी, नौ जगहों से शेर को बाँध लिया और पिंजरे के अन्दर डाल दिया। जब साँकलों के झटके लगे तब उसकी नींद उड़ गयी। डूंगसिंह ने कहा भैरूसिंह तूने मेरे साथ धोखा किया है आपने हिन्दू धर्म को ही डुबो दिया जीजा को गिरफ्तार कराके। जो तूने मेरे साथ यह धोखा किया है यह बहुत बड़ी बात है मैं इस कांकड़ का शेर था, परन्तु तूने धोखे से पकड़ा दिया है। बन्धे को तुम मरावा रहे हो यदि मै छूट जाऊँ तो सरदार की तरह लड़ाई करूं। मेरे हाथों की हथकड़ी पांवो की बेंड़ी खोल दो फिर देखो मै आपको क्या दिखाता हूँ। तुम मूझे एक घड़ी के लिए खोल दो फिर इस शेर की करामात को देखो।

IX– भैरूसिंह पर अंग्रेज अफसर की लताड़

भैरूसिंह को परवाणो ले ग्यो नसीरा बादजी।
भैरूसिंह को खास भतीजो, मुजरो झेलो साहब जी।
बड़ा साहब थे फौरन चढजो, डूंग द्या पकड़या जी।
जागीरी में गाम काढ दो पट्टो दे ओ बणाय।
बड़ा साहब सुणता यूं बोल्यो धिक रजपूती ढाढ जी।
अस्सो माळो म्हारो वेतो माथो लेतो काट जी।

अर्थात् :- भैरूसिंह का पत्र लेकर उसका भतीजा अंग्रेज अफसर के पास नसीराबाद पहुँचा तथा अफसर को जाकर मुजरा किया और कहा की बड़े साहब आप जल्दी चढाई करो आपको डूंगसिंह सरदार पकड़ा देते है। आप हमे अपनी जागीर मे से कुछ गांव निकाल दो और पट्टा बणाय दो अंग्रेज अफसर सुनते ही कड़क कर बोला, धिक्कार है आपकी रजपूती को यदि ऐसा साला मेरे होता तो उसका सिर काट लेता।

X–भैरू सिंह ने अपनी आत्मा को कोसा

भैरू सिंह छत पर खड़ा हो गया। पल भर के लिए उसे आत्माने धिक्कारा, अरे नीच तू अपने ही हाथों से अपनी बहिन के सुहाग को मिटाने चला है राजपूत होकर अपनी मान मर्यादा पर कलंक लगा रहा है आन बान पर बट्टा लगा रहा है, धिक्कार है तुझे और मेरी मां को जिसने ऐसा कपूत बेटा पैदा किया। भैरूसिंह की आत्मा कराह उठी। पल भर के लिए उसने अपना निर्णय बदल लिया। सोचा डूंगजी से गद्दारी नहीं करूँगा। तभी उसे रूपयो की थैली और बन्दूक की नली याद हो आयी। उसे लगा कि अंग्रेज सेना ने उसका घर संसार मिटा डाला है। वह भयभीत हो गया है बड़ी देर तक वह भय लालच और धर्म की नाव पर डोलता रहा बाद में उसने मशाल का संकेत कर दिया। अंग्रेज अफसर व हिन्दूस्तानी सिपाही एक साथ आगे बढ़े उन्होंने भैरूसिंह के डेरे को घेर लिया। चार अंग्रेज सैनिक नीचे बंदूके लेकर खडे हो गए। चार अंग्रेज डूंगजी को गिरफ्तार करने के लिए आगे बढे। चारों और सन्नाटा था। अंधेरी रात के कारण आकाश तारों से जड़ा हुआ लग रहा था। डेरे में दीये जल रहे थे डूंगजी गहरी नींद में सोया हुआ था। अंग्रेज सैनिकों के साथ हिन्दूस्तानी सैनिक थे। उनके पास हथकड़ी बेड़िया जजीर रस्सिया आदि थी। वे डूंगजी को जिन्दा पकड़ना चाहते थे। सारे सैनिक धीरे-धीरे ऊपर चढ़े। उन्होंने मैड़ी को घेर लिया।

कर्नल ने इशारा किया तो सबसे पहले डूंगजी के पैरों में बेड़ी डाल दी फिर हाथों में हथकड़ी इसके बाद रस्सियों से डूंगजी को मजबूती से बाँध दिया ताकि होश में आने पर वह भाग न सके चारों ओर फिरंगियों का पहरा था। भैरूसिंह का मुँह उतर गया था चेहरा काला लगने लगा। शायद यह उसकी आत्मा की धिक्कार हो जब डूंगजी की आँख खुली उसने अपने को बेड़ी हथकड़ियों में जकड़े पाया तो वह गरज उठा, क्रोध में उसके दाँत कड़-कड़ बजने लगे आँखें अंगारों की तरह जलने लगी। वह घृणा से बोला कमीने भैरूसिंह तू आदमी नहीं कुत्ता है, तूने राजपूतानी का नहीं किसी गोली का दूध पिया है मै तेरी मां को गाली देता हूँ तेरे बाप को धिक्कारता हूँ। फिर डूंगजी ने कर्नल व फिरंगी सैनिकों की और मुड़कर कहा, ओ धोखेबाज

फिरंगियों मैं तुम गीदड़ो को भी धिक्कारता हूँ। तुम मैं जरा भी साहस होता तो सोये हुये सिंह को नहीं पकड़ते मै तुम सब लोगों को ललकारता हूँ कि मै अकेला ही सारी पलटन से लड़ने को तैयार हूँ। कर्नल खी-खी हँसने लगा डूंगजी ने फिर गरज कर अपने साले से कहा। खूब बहनोई को विदाई का नारियल दिया। तुने अपना मुँह काला कराया सो कराया पर यह कालापन तेरे कुटुम्ब पर भी लगेगा। लोग तुझे दगाबाज साला कहेंगे।

XI–पंडित रामनेरश द्वारा भैरूसिंह को फटकारना

डूंगजी की गिरफ्तारी का समाचार जंगल की आग की तरह चारों और फैल गया। बड़े-बड़े सांमत, उमराव, राजा-महाराजा, जागीरदार, ठिकानेदार एवं पंडितों ने भैरूसिंह को धिक्कारा। भैरूसिंह तो जीते जी मर गया। वह तो अपना काला मुँह लेकर तहखाने में पड़ा रहता था। उसी गांव के पंडित रामनरेश ने उसे एक दिन फटकारा आपने स्वंतत्रता की चिंगारी को बुझा दिया। आपने उस हवा के रूख को बदल दिया जो नया झंडा फहराने वाली थी। आपको धिक्कार है। भैरूसिंह कुछ भी जवाब नहीं देता था।

XII–भैरूसिंह की माँ व डूंगजी की सास को बड़ा दुख हुआ

डूंगजी को पकड़ पिंजरे में बैठाया गया। गांव के आदमी भैरूसिंह को धूल धूल कहले लगे। रूपये का लोभी! जवाँई को अच्छी जुवारी दी और पावणा का मान रखा बाप-दादा के नाम को मिट्टी में मिला दिया। गाँव की इज्जत माट्टी में मिला दी। भैरूसिंह की माँ ने पेट पर मुक्का मार कर कहा कि म्हारै यो कुलखणो जन्मयो। ऐसे पुत्र के बिना तो बांझड़ी ही रह जाती तो ही अच्छा था। इसने चारों तरफ थू-थू करा दी और इज्जत मिट्टी में मिला दी।

XIII– भैरूसिंह का माथा (सिर) डूंगजी द्वारा काटना

डूंगसीघ की फौजा चढगी, जड़वासा का ग्राम जी।
रजपूती पर कर्‌यो दागचो, आझ मिटाणू नाम जी।
घोड़ा ने डपटाय रांघड़ा गया जड़वासे सेर जी।
थे पकड़ाओं डूंग न्हार ने जीवो कतरा पेर जी।
जड़वासे के औले दोले घेरो नाख्यो घाल जी।
राड़ी में तो आग वता दी, ऊँची उठी झाल जी।

जड़वासा का भैरूसिंह ने काना पड़ी आवाज जी।
कीट कूट राड़ी में हुयो जान बचे नी आज जी।
पड़ता गुडता अवरा आडा भैरू भाग्यो जावै जी।
गौड़ ठाकरो पंगा उबाणा ऊबो नदी धावै जी।
ढूको ढूको जाय गौड़लो पाग ओढयो लूगड़ो जी।
भडूरा का ऊकेड़ा में डूक्यो ठाकर नूगरों जी।
नजरां आईग्यो जवारसींघ के, डप्टयो घोड़ी डाल जी।
कठे गया थारा राम धरम अर, कठे कन्हैया लाल जी।
जाई दबोच्यो नदी माइने, पकड़ खींचत्त बाल जी।
तू कोइनी रजपूत कमीनो , भैरूड़ो कल्लाल जी।
घास पूस ल्या मूंडो माइने थारी कारी गाऊ जी।
अबके जिंदो छोड़ रांगड़ा, थ्हारे आडिया खांऊ जी।
डूंगसिंह घूड़की ने बोल्यो जारे लोटया जाट।
बेरी ती वाता नी करणी माथो लेणो काट जी।
थाको लागू सग्गो साळो अब के बक्सो जान जी।
एक दाण का जान बक्स दो, अतरी अरजा मान जी।
डूंगसींघ जी घणा करांज्या माथो लेवो काट जी।
माथो लेवो काट जहावरजी देओ जमी में डाट जी।
आधी नदी गूंदूरो ने आधी नदी कीच जी।
भैरूसिंह को माथो काट्यो जड़वासा का बीच जी।
आले चामड़े दड़ीगूथ ली दही खेलता जाय जी।
भैरूसिंघ को माथो पड़यो घणी ठोकरां खाय जी।
पावां तोड़ो बाँध लोथने दी बड़ले लटकाया जी।
नीचे भूके घणा टेगड़ा चीला नोचे खाये जी।
ऊझकी ऊझकी पड़े टेगड़ा भाई भतीजा कोनी जी।
वगता माथो कूण कटाड़े कूण वटारे जोनी जी।
करणी करणी घणो फरक है, मनक मनक आई फेर जी।
ऊँ बारोठयो ऊँ घातकी ऊँ हियार ऊँ सेर जी।

अर्थात् :-डुंगजी की फौज झड़वासा गांव में पहुँच गयी। राजपूती पर दगा (धोखा) किया, आज उसका नाम ही मिटा देता हूँ। घोड़ों को दौड़ाते हुए ठाकुर

झड़वासे शहर में पहुँच गये, हे भैरूसिंह तुम डूंगसिंह को पकड़ाकर कितने दिन जी सकते हो। झड़वासा के आस-पास चारों तरफ घेरा डाल दिया। उसके घर में आग लगा दी आग की लपट काफी उठ रही थी। जिसकी आवाज झड़वासा के भैरूसिंह को लगी, वह वहां से भाग छूटा और सोचने लगा कि आज तेरी जान नहीं बचेगी। भैरूसिंह पड़ता गुड़ता लुढकता खेतो में से भागा जा रहा था। ठाकुर गौड़ पैरो से नगा नदी के बीच में जाकर खड़ा हो गया जी। झुकते झुकते घोड़ले की तरह जा रहा था और पगड़ी की जगह औरत की लुगड़ी ओढ रखी थी। इस प्रकार के खानदान में इस प्रकार के ठाकुर का जन्म होना जो नुगरा हुआ है जवाहर सिंह के नजर आ गया तो घोड़े को रोक कर खड़ा हो गया। जवाहर सिंह ने कहा भैरूसिंह कहां गया तेरा राम धर्म कहां गया तेरा भगवान जी नदी में जाकर उसको पकड़ लिया और बाल पकड़ कर खींच लिया और कहा तुम राजपूत नहीं हो तू कमीना भैरूड़ा कल्लाल है। भैरूसिंह घास उठाकर अपने मुँह पर लगाकर कहता है कि मै आपकी काली गाय हूँ।

एक बार जिन्दा छोड़ दो आपका अहसान मानूगा, डूंगजी गुस्से से बोला अरे लोटिया जाट जाओ इस दुश्मन से बात नहीं करनी है इसका सिर काट कर लाओ। भैरूसिंह कहता है आपका सगा साला लगता हूँ एक बार प्राण बख्श दो। एक बार जान बख्श दो, इतनी अरजी मान लो, डूंगजी क्रोध ा में होकर बोला सिर काट लो इस नीच का, यह बोले ही जा रहा है साथ में जवाहर जी को कहता है इसका सिर काट लो और जमीन में गाड़ दो। इस तरह से गाड़ो जिसमें आधी नदी बह रही हो तथा आधा कीचड़ हो, इस तरह भैरूसिंह का सिर काटकर झड़वासा शहर के बीच में लाया गया तथा उसके चमड़े की गेंद बना ली जिससे खेलते ही जा रहे थे तथा भैरूसिंह का सिर कटा पड़ा था। सभी उसको ठोकर मार रहे थे और उसके पांव हाथ तोड़कर गाठली बांध कर बड़ के पेड़ से लटका दी। नीचे से कुत्ते बिल्ली खा रहे थे तथा ऊपर से चील कोवे नोच रहे थे। जिस समय कुत्ता बिल्ली खा रहे थे कोई भाई भतीजा नजदीक नहीं आया उस समय अपना सिर कटाने कौन आये और कौन उसकी पैरवी करे अपनी अपनी करनी सब जाते है और मिनख मिनख में फर्क होता है, वो डाकू और वो धोखेबाज वो सियार और डूंगजी जैसे शेर थे।

37– जोधपुर नरेश तख्तसिहं

नसीराबाद छावनी लूट की खबर मिलते ही राजस्थान में स्थित सारे अंग्रेज अफसर तथा उनकी फौज ने उनका पीछा किया। राजाओं को भी मदद के लिए लिखा गया। जोधपुर के राजा तख्त सिंह ने मेहता विजयसिंह मिधवी कुशल राज तथा किलेदार अनाडसिंह को नेतृत्व में एक फौज भेजी। कैप्टन मेशन तथा कैप्टेन हार्ड कसाल भी साथ थे। शेखावाटी तथा बीकानेर की सरहद पर रखी हुई अंग्रेजी सेना मेजर फॉरेस्टर तथा कप्तान शाक के नेतृत्व मे पूर्व की ओर से बढी। बीकानेर की ओर से बीकानेर राज्य की सेना आई। घडसीमर गाँव के पास वे तीनों ओर से सेना से घिर गये तथा मुकाबला हुआ। फिर भी वे बडी वीरता से लडते हुए वहां से निकल गये। जवाहरजी वहाँ से सीधे बीकानेर के राजा रतनसिंह के पास पहुँचे और अंग्रेजों के माँगने पर उन्होंने उसे सौंपा नहीं। जवाहरसिंह के ठहरने की उचित व्यवस्था कर दी गई और अंग्रेजों को आश्वासन दिया गया कि भविष्य में वे जवाहर सिंह की ओर से निश्चित रहे। जोधपुर तथा अंग्रेजी फौज ने मिल कर डूंगजी का पीछा किया और अंत में जैसलमेर के गिरादडा गांव के पास वे पकडे गये पर जोधपुर के राजा तख्तसिंह ने डूंगजी को अंग्रेजों के हाथों सौंपना उचित नहीं समझा और अंग्रेजों से लिखा पढी करके उन्हें जिन्दगी भर अपने किले में ही इज्जत के साथ रखा।

ठाकुर डूंगसिंह को पकड़ने के लिए महाराजा तख्तसिंह का पत्र

मोहर

।। श्री नाथजी ।।

मुणोत विजैमल दीसे सुप्रसाद वाचजे तथा बंदगी आछी तरे करै सो मालुम है। सेखावत डूगा जवाहरा नै (ने) सजा आछीतरा दीजे थारी हाजरी मालू होसी। असाद बद 12 (स 1904 विक्रम)

ठाकुर डूंगसिंघ रै पकड़ीजणै पर विजैमल मेहता रै नाम पत्रः-

बंदगी पोती सो मालुम।सारा ने खातरी कीजे महाराज तख्त सिंह जोधपुर स्वारूप श्री मेताजी श्री विजैमल जी जोग्य जोधपुर था मूता लिखमी चन्द लिखावत जुहार बांचजो। अठारा समाचार श्री जर रा तेज प्रताप सूं भला छै राज रा सदा भला चाहिजे। अपरंच बठोठ रा शेखावत डूंगसिंह ने पकड़ियों तिण रा कागद आया सो श्री हजूर मालुम हुआ। राज इण काम री

खेवट कर काम पेस चढायो जिणसू श्री हजूर सूं राज ने खातरी फुरमाई है। राज नै (ने) भादरा जण राठौड़ इन्दर भाण बखतावर सिघोत ने (नै) जावला रा राठौड़ केसरीसिंघ बाघसिघोत ने (नै) रायपुर रा पिंडों ठाकर ने (नै) भोमसिंह माधोसिंह ने (नै) रास रा राठौड़ारा भीमसिघ भोमसिंघोत ने (नै) लाडणूं बहादूरसिंघ मंगल सिघोत ने (नै) पीपलाद राठौड़ शादूलसिंघ, रतन सिघोत ने लूणवा रा राठौड़ विजयसिंघ उदै भाणोत ने (नै) चांदावत जोधसिंघ राम सिघोत ने (नै) राठौड़ लिछमण सिंघ परताप सिंघोत ने (नै) चांपावत करणसिंघ, कायमखानी मानतखां भी कुरवां, जोधो थानसिंघ उदैसिंघोत ने (नै) सेयद अकबर अली तालके रो कायम खानी है दरखा, रसालदार मुन्नालाल तलाके रो रिजो आईदास परताप मल रो वगैरे सारा हमगीर रया नै लाडणू रा बहादूरसिंघ मंगल सिघोत ने (नै) लिछमण सिघ पदम सिघोत इण काम में विशेष हमगीर रया ने (नै) फेर इण काम में तेहदिल, जिणो ने पांच रूपया देण री राज खातरी कीवी सो सारी मालूम हुई, सो पाछे जाब (जवाब) आवे आवे जितरे डूंगसिंघ ने दौलतपुरा रा किला मे जाबता सूं राखसो।

बड़ा साहब रो जाब आयो अठा सूं लिखा जिण ढब की जो ने (नै) राज ने याद फरमावसी सु अठे कदमा आवसो जद राज री अरज सूं राज खातरी कीवी है, जिणो रो बरदास होय देवरासी ने (नै) राज बंदगी आछी तरे कीवी जिण सम श्री हजूर साहब घणी मेरबानी फुरमाई है सो घणी खुशी रखावसो। स. विक्रमी 1904 रा काती सुद 6 (सन् 1847) रूबकार मेजर डिवसन की कचहरी में दिनाकं 23 जून 1847 के अंश की प्रति लिपि बा इल्लत गारसगिरी 27000 रूपये सिवसये कम्पनी से खजाना बख्शी खाना और मरदूमाम हमराही दोनों डकैत मुद्दायला सरकार वाकै छावनी नसीराबद से और कत्ल 5 आदमी और जख्मी करने 7 मुहाफजाम बख्शी खाना के जमी 400 अश्व, 100 सुतर सवार जुमले 500 सवारो के तीन तरफ से आये नजर आया है कि किस तौर से मुरदुमाम ब तरकीब शादी वगैरा के आये और अपने खतूत भेजते है कि फला वक्त फला मिति सैबत में हाजिर होना। इस तौर पर इन डाकुओं ने फराहम होकर डाका डाला।

38– बीकानेर के राजा रत्नसिंह

सन् 1831 में महाराजा रत्नसिंह को अनके खरीते मिले। इनमें कहा गया था कि वह विद्रोहियों को दंड दे और इलाके में पुनः शान्ति स्थापित कर दे। दिल्ली स्थित रेजिडेंट सर एड वर्ड कोल बुक ने बरसलपुर के जागीरदारों के विरूद्ध शिकायत की जिन्होंने जोधपुरी इलाके पर हमला किया था और जो पशु और सम्पति उठा ले गये थे। 24 मार्च 1831 को मि. डब्लू बी मार्टिन ने महाराजा को सूचित किया कि बैलों सहित गुड़ से भरी 10 गाड़िया जिनका मूल्य 1425 रूपये था लूट ली गई थी और बीकानेर के इलाके में कुछ लोग मार डाले गये थे। महाराजा से कहा गया कि या तो वह सामान दिलावे या उसकी कीमत चुकाये। साथ ही वह ध्यान रखे कि भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों। 28 मार्च सन् 1831 को मार्टिन ने पुनः महाराजा को लिखा कि वह विद्रोहियों (प्रतापसिंहऔर लक्ष्मणसिंह) को सजा दे एक अप्रेल सन् 1831 को मार्टिन ने बीकानेर जयपुर सीमा पर बड़े पैमाने पर होने वाली लूट मार का उल्लेख किया और महाराजा को सूचित किया कि जयपुर के महाराजा से भी अनुरोध किया गया है कि अपने इलाके में वह इन कारवाइयों को रोके। दिनांक 7 अप्रेल 1831 के मार्टिन के खरीते से पता चलता है कि बीकानेर इलाके के कुछ लोगों ने शेखावाटी में लूटमार और हत्याएं की।

अपराधियों को दण्ड देने और लूटी हुई सम्पति अथवा पीड़ित व्यक्तियों को इसका मूल्य चुकाने बीकानेर के इलाके में अनाज और घी लूटे जाने का उल्लेख भी खरीते में है मार्टिन ने 18 अप्रेल 1831 को महाराजा को सूचित किया कि गर्वनर जनरल ने लूट के हमलों के बारे में जाँच करने के लिए कर्नल अब्राहम लाकेर को भेजा है। तारीख 27 अप्रेल 1831 के मार्टिन के खरीते में लोठसर में लूटी हुई सम्पत्ति सहित 18 डाकुओं की गिरफ्तारी का उल्लेख है। इसी प्रकार 21 मार्च सन् 1831 को महाराजा को कहा गया कि वह बीकानेर के इलाके में उसके द्वारा बन्दी बनाये गये अपराधियों को सौंप दें। 25 मई 1831 के मार्टिन के खरीते में महाराजा को एक विशेष निर्देश दिया गया। उसे कहा गया कि वह अनुभवी आदमी भेजे क्योंकि बिसाऊ और सीकर के शेखावात और सांवता मीणा, लोठू जाट, करणा मीणा व उनके साथी बीकानेर के इलाके में लूटमार के लिए हमले कर रहे थे। इन हमलों के कारण कुछ गांव खाली हो गये थे और कुछ स्त्री पुरूषों को पकड़ कर ले जाया गया

था। विद्रोही सरदारों की लूटमार की कारवाईयों से सम्बन्धित मिस्टर मार्टिन के खरीतों की कोई कभी नहीं। सन् 1831 में महाराजा द्वारा प्राप्त इन खरीतों का विवेचनात्मक विश्लेषण करने से प्रमाणित होता है कि उपद्रवी सरदार स्थापित सत्ता के विरूद्ध विद्रोह कर रहे थे तब अल्पाधिक समस्त क्षेत्र भय की दशा में था इन अविनित सरदारों और डाकुओं का दमन राजपूताना के राजाओं और अंग्रेज सरकार दोनों के लिए एक गम्भीर समस्या बन गया था। इन सब अविनीत सरदारों ने उस सामान्य असुरक्षा की स्थिति का लाभ उठाया जो आमतौर पर सक्रान्तिकाल में हुआ करती है। स्थिति इतनी गम्भीर हो गई थी कि शेखावाटी बिग्रेड (सेना) को कई बार इन डाकू सरदारों के किले को घेरना पड़ा और बहुत अधिक कठिनाई से पुनः शान्ति स्थापित की जा सकी। विद्रोही अत्यधिक शक्तिशाली हो गये थे और ऐसा लगता है कि आम जनता भी भय के कारण अथवा सहानुभूति के कारण उन्हें सहायोग देती थी।

इन डाकुओं में से कुछ लगभग निजन्धरी (कहावती) व्यक्ति बन गये थे। वे लोगों का ध्यान आकर्षित कर इतने लोकप्रिय हो गये कि वे अजेय माने जाने लगे। डूंगजी, जवाहरजी सांवताराम मीणा, करणा मीणा और लोठू जाट जैसे लोकप्रिय डाकू जो अंग्रेजों द्वारा डाकू घोषित किये जा चुके थे, प्रतिष्ठित नागरिकों द्वारा भी संरक्षण प्राप्त कर सकते थे। 25 सितम्बर 1837 को मेजर फोरस्टर ने महाराज से शाह हुक्म चन्द को शीघ्रातिशीघ्र भेजने का अनुरोध किया ताकि निजी बातचीत के बाद प्रबन्ध किया जा सके। 26 जनवरी 1838 को उसने पुनः महाराजा से प्रार्थना की कि रिसालदार शेख रहीमुल्ला को सेना के साथ भेज दिया जाय। तारीख 13 फरवरी 1838 के फोरस्टर के खरीतें में कुछ डाकू अंग्रेजों को सौपने की मांग की गई थी। मई में उसने महाराजा को सूचित किया कि अंग्रेजी सेना कारवाई करने के लिए पूर्णत तैयार है। कार्तिक बदी दशमी को फोरस्टर ने पुनः मारवाड़ में डाकूओं को दबाने के लिए सेना भेजने पर कृतज्ञता प्रकट की। जनवरी सन् 1839 में उसने मारवाड़ के डाकूओं को दबाने के लिए सुजानगढ़ से सेना भेजने की महाराजा से पुन प्रार्थना की। 10 मार्च सन् 1839 के उसके खरीते में हरिसिंह और जोधासिंह की गिरफ्तारी का उल्लेख है अगस्त सन् 1839 में हम पुनः फॉरेस्टर को

महाराजा से सहायता मांगते हुए देखते है इस प्रकार उस क्षेत्र में शान्ति और व्यवस्था पुन स्थापित करने के अंग्रेजों के प्रयत्नों में महाराजा ने उनकी पूर्ण सहायता की। सन् 1830 से 1847 तक बीकानेर का समस्त क्षेत्र अत्याधिक अव्यवस्था की स्थिति में रहा। बीकानेर की सेना ने अंग्रेजों को हार्दिक सहयोग दिया और उसी की सहायता से प्रसिद्ध डाकू जवाहरसिंह पकड़ा जा सका। यद्यपि डाकूओं ने महाराजा रत्नसिंह के शासन को काफी सीमा तक अशान्त बना दिया था पर महाराजा ने अपना परम्परागत गौरव नहीं छोड़ा। समस्त राजस्थान में शरणागत नहीं चाहे वह उसका सबसे बुरा शत्रु भी क्यों न हो, रक्षा करना प्रत्येक राजपूत का धर्म माना जाता है। जवाहरसिंह ने महाराजा को आत्म समर्पण करके उसके चरणों में शरण मांगी तो महाराजा रत्नसिंह ने उसे अंग्रेजों को देने से इनकार कर दिया। केन्द्रीय सताओं से बीकानेर के संबन्ध के इतिहास में यह उदारता प्रदर्शन हमेशा एक उज्ज्वल नक्षत्र की भांति आलोकित रहेगा। यह घटना आने वाली पीढ़ियों को याद दिलायेगी कि उस पतन और विनाश के युग में भी बीकानेर के राजघराने ने युवराज के जीवन के मूल्य पर भी राजपूती शौर्य के गुणों की मशाल को जलाये रखा। जब अंग्रेजों ने जवाहरसिंह को सौपने के लिए बहुत दवाब डाला तो महाराजा रतनसिंह ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और अंग्रेजों से कहा कि बन्धक के रूप में वह अपने पुत्र सरदारसिंह को सौंपने को तैयार है। अन्धकार युग में यह वीरता और साहस का उदाहरण बीकानेर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

I–रतनसिंह के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या न करने की प्रतिज्ञा कराना

वि.स. 1892 फाल्गुण सुदि 9 (तारीख 26 फरवरी 1836) को अपने पुज्य पिता की स्मृति में देवी कुण्ड पर एक छत्री की प्रतिष्ठा एवं अन्य पूर्वजों की छत्रियों का जीर्णोदार कराके महाराजा रत्नसिंह ने वि.स. 1893 कार्तिक सुदि 10 तारीख (18 नवम्बर 1836) को छः हजार साथियों एवं जनाने सहित गया यात्रा के लिए प्रस्थान किया इस अवसर पर उसके साथ एक अंग्रेज अफसर भी रहा। मथुरा, वृन्दावन, प्रयाग तथा काशी की यात्रा करता हुआ पौष सुदि 14 (सन् 20 जनवरी 1837) को महाराजा गया पहुँचा। वहां रहते समय उसने अपने सरदारों से पुत्रियों को न मारने की प्रतिज्ञा कराई।

II–रतनसिंह द्वारा दहेज प्रथा पर पाबन्दी लगाना

राजपूत सरदारों को अपनी लडकियों के विवाह के समय दहेज आदि में बड़ा खर्च उठाना पड़ता था जिससे वे कर्ज के बोझ से दब जाया करते थे। इसमे तंग आकर राजपूत बहुधा अपनी लडकियों को मार डालते थे। इस पर रोक करने के लए महाराजा ने स. वि. 1893 (सन् 1837) में गया में ही अपने सरदारों से प्रतिज्ञा करा ली थी कि भविष्य में अपनी लडकियों को नहीं मारेंगे वि.स. 1901 (सन् 1844) में अंग्रेज सरकार की ओर से इस कुप्रथा को मिटाने के सम्बन्ध में खरीता पहुँचा। महाराजा ने उसके अनुसार इस विषय में ये नियम बनाकर राज्य में प्रचलित कराये कि सब सरदार अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार विवाह में खर्चा करेगें, जिस सरदार के पास भूमि नहीं होगी वह विवाह में केवल सौ रूपये खर्च करेगा, जिसमें से त्याग के 10 रूपये होगें तथा चारण लोग न तो किसी के साथ त्याग के सम्बन्ध में झगड़ा करेंगे और न दूसरे इलाके में त्याग मांगने जायेगें।

III–डूंगसिंह के साथियों को पकड़ने के लिए पुरस्कार की घोषणा करना

रावजी के डूंगसिंह आदि बागी कैद कर अंग्रेज सरकार द्वारा आगरे के जेल खाने में रखे गये थे वि.स. 1904 (सन् 1847) में मानसिंह आदि ने उक्त जेल खाने पर हमला कर उन्हें निकाल ले गये। इस सम्बन्ध में सूचना आने पर महाराजा ने अपने सब जागीरदारो एवं विभिन्न परगनो के हाकिमों को आज्ञा दी कि डूंगसिंह आदि तथा उनके भगाने वाले मानसिंह और उसके साथियों में से यदि कोई व्यक्ति बीकानेर इलाके में प्रवेश करे तो वह अविलम्ब गिरफ्तार कर लिया जाय। ऐसा करने वाले को राज्य की और से पुरस्कार दिये जाने तथा इसके विरूद्ध उनमें से किसी को भी आश्रय देने वाले का पट्टा आदि जब्त कर लिये जाने की सूचना भी दरबार की ओर से प्रकाशित हुई। उन्ही दिनों लुटेरों की सहायता करने का झूठा दोषारोपण मेहता हिन्दूमल पर अखबारों द्वारा किया गया, जिस पर वह अपनी सफाई देने के लिए शिमला में गर्वनर जनरल की सेवा में उपस्थित हुआ। जब अंग्रेज सरकार की तरफ से मि. फास्टर डूंगसिंह आदि को पकड़ने के लिए आया तो महाराजा ने उसकी सहायतार्थ शाह केसरी चन्द को उसके पास भेज दिया। डूंगरसिंह तथा जवाहरसिंह आदि जेल से भागकर रामगढ़ गये जहां के अग्रवालों से 15000

रूपये ठहराकर जुहारसिंह अपने साथियों सहित बीकानेर गया। इसकी सूचना मिलते शाह केसरी चन्द ने उसका पीछा किया और पूंगल तथा बरसलपुर की तरफ लुटेरों से झगड़ाकर उनमें से नौ को गिरफ्तार कर लिया। रामगढ़ के अग्रवालों ने बीकानेर इलाके के अग्रवालों के नाम रूपयों की हुंडियां लिखकर लुटेरों को दी थी। जब वे रूपये वसूलकर लौटने लगे तो बीकानेर के सैनिकों ने उन्हें पकड़कर रूपये छीन लिए। जवाहर जी बीकानेर नरेश के संरक्षण में आने के पीछे अंग्रेज जवाहर को नही सौपने को कहा। रतनसिंह ने साफ मना कर दिया। उन्होंने अंग्रेजों को समझाया कि मैं आपका मित्र राजा हूँ। आपके मेरे प्रति विश्वास रखना जरूरी है। जवाहरसिंह चाहे आपके पास रहे या मेरे पास रहे इसमें कोई फर्क वाली बात नहीं इसकी सारी जिम्मेदारी मेरी है। रतन सिह ने कहा जवाहरजी मेरे पास रहते ब्रिटिश सरकार के खिलाफ कोई कार्य नहीं करेगा इस बात के लिए मै वचनबद्ध हूँ। इसलिए मै जवाहर जी को नहीं छोडूंगा। रतनसिह के इस नैतिक पूर्ण काम की पूरे जन मानस में अच्छी प्रशंसा की गई। कवियों रतनसिंह के विषय में डिंगल भाषा में कई गीत लिखे गये। जवाहरजी तीन वर्ष तक बीकानेर में नजरबंद रहे।

IV–राजा रतनसिंह का देहान्त

7 अगस्त सन् 1851 को महाराज रतनसिंह की मृत्यु हो गई। महाराज के दो पुत्रों में से ज्येष्ठ महाराज कुमार शेर सिह की उसके जीवन काल में निः सन्तान मृत्यु हो गयी थी। अतः गद्दी का स्वामी उसका तैतीस वर्षीय द्वितीय पुत्र सरदार सिह हुआ। 16 अगस्त सन् 1851 को सरदार सिह बीकानेर के 19 वें शासक के रूप में सिंहासन पर बैठा। महाराज रत्नसिह की मृत्यु के समय बीकानेर की स्थिति में अधिक सुधार नहीं हुआ था अतः महाराज सरदारसिंह का शासन विद्रोहों और उनके दमन की म्लान कथा की छाया में आरम्भ हुआ। फलस्वरूप अंग्रेज सरकार का धीरे-धीरे प्रभाव बढ़ता गया। भावलपुर, जोधपुर, जयपुर, शेखावाटी और मारवाड़ की सीमा समस्याओं के कारण सेना पर खर्च बढ़ गया था। असन्तुष्ट सरदार शान्ति से नहीं रहते थे और जागीरदार और ठाकुर राज्य के लिए निरन्तर चिन्ता का कारण बने हुए थे। लोगों की आर्थिक दशा तो सामान्यतः और भी खराब थी।

सन्दर्भ

1. डॉ. प्रहलाद सिह मीणा दौसा – (अरावली उद्घोष)
2. डूंगजी जवाहरजी (यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र)
3. स्वतन्त्रता सेनानी डूंगजी जवाहरजी (लेखक सौभाग्यसिंह शेखावत
4. अमर शहीद लोठू जाट (मनसुख रणवां)
5. स्वतंत्रता आन्दोलन की राजस्थानी प्रेरक रचनाएं (डॉ. नारायणसिंह भाटी)
6. सीकर का इतिहास (पं. झाबर मल्ल शर्मा)
7. बीकानेर राज्य का इतिहास दूसरा भाग (डॉ. औझा)
8. राजस्थानी गंगा – (लेखक डॉ किरण नाहटा)
9. कृष्ण कुमार पुरोहित सीकर
10. आपणो रामगढ़ (लक्ष्मण भारद्वाज)
11. मालाराम मीणा कंवरपुरा समाज के प्रबुद्द नागरिक (उम्र 90वर्ष)
12. बही भाट प्रभु जी हनुमानसहाय जागा आमेर जयपुर
13. भारतीय स्वंतत्रता संग्राम राजस्थानी कविया रौ योगदान (डॉ नृसिंह राजपुरो)
14. बलजी, भूरजी इतिहास (लेखक शैतानसिंह शेखावत)
15. अमोलक बांता – (रानी लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत)
16. जगनाराम प्रजापत मंगलूना (सालासर) (उम्र 90 वर्ष)
17. बीदावत राठौड़ो का इतिहास – (कुंवर राजेन्द्र सिंह)
18. बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध
19. मीणा जाति और स्वतंत्रता का इतिहास (स्वतंत्रता सेनानी लक्ष्मीनारायण)
20. सीताराम मीणा मंगलूना लक्ष्मणगढ़
21. मीणा इतिहास (रावत सारस्वत)